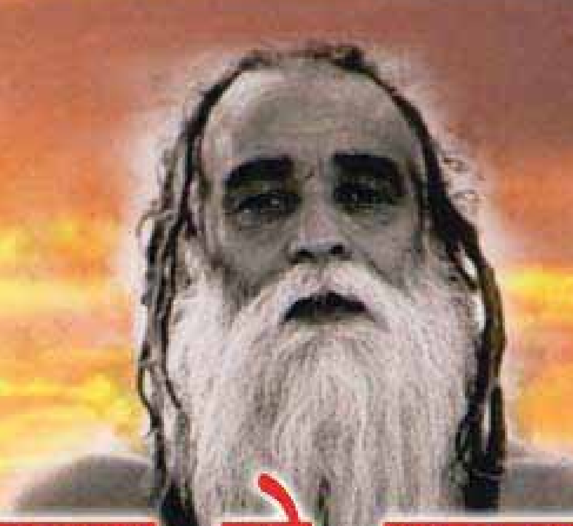

।। अनुसुइया के परमहंसजी ।।

(परमहंस स्वामी श्री परमानंद जी महाराज)

ईश्वरीय आदेशों से संचालित एक योगी की अमर चित्रकथा

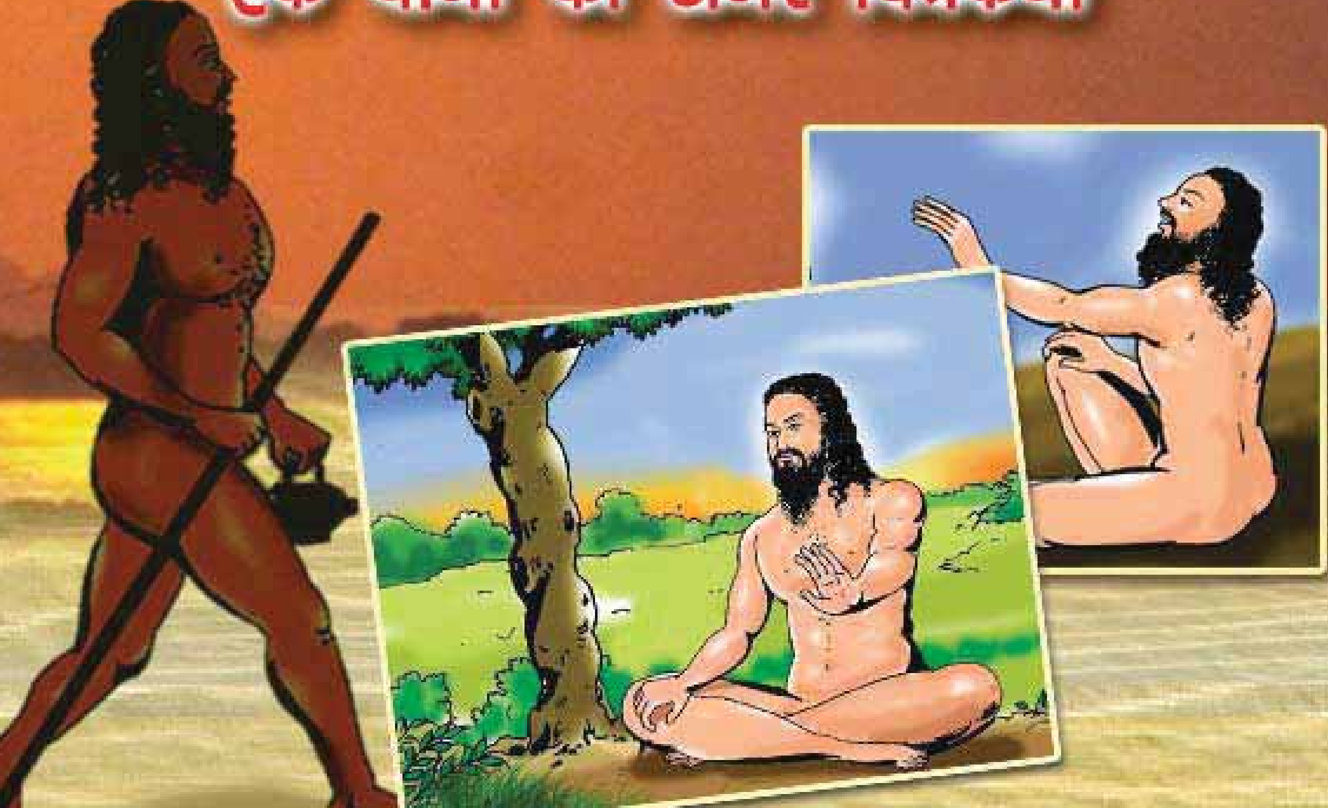

ॐ

परमहंस, तत्वदर्शी, योगेश्वर एवं सद्गुरुओं की परंपरा में

पूज्य श्री परमानन्द जी महाराज (परमहंस जी)

की जीवनी, उनकी साधनात्मक जीवनचर्या, अनुभूतियाँ एवं उपदेश
इस अनुभवगम्य चित्रकथा में प्रस्तुत है
जिससे साधना में सहयोग मिले
आबाल-बृद्ध, नर-नारी, मानव मात्र में साधना की जागृति आ जाये !
यही इस चित्रकथा का उद्देश्य है !

***

जो नहिं देखा नहिं सुना,जो मनहूँ न समाय।
सो सब अद्भुत देखेउँ,बरनि कवन विधि जाय ॥

प्रकाशक : श्री परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्दजी आश्रम ट्रस्ट
न्यू अपोलो स्टेट, गाला नं. 5 एवं 11, मोगरा लेन
(रेलवे सब वे के पास) अंधेरी (पूर्व), मुंबई - 400069
फोन : (022) 28255300
ई-मेल : contact@yatharthgeeta.com
वेब साईट : www.yatharthgeeta.com
कापीराईट : © प्रकाशक
संस्करण : प्रथम- महाशिवरात्रि, मार्च 2022
नवंबर 2022 10,000 प्रतियाँ
मूल्य : 100/-
चित्रांकन : ब्रजराज सिंह राजावत, जयपुर
मुद्रक : जॅक प्रिण्टर्स प्रा.लि., मुंबई

***

ॐ ॐ

॥ उद्‌बोधन ॥

सृष्टि के आरम्भ से प्रसारित महापुरुषों की परंपरा में ही श्री सद्‌गुरुदेव भगवान,परमहंस स्वामी श्री परमानन्द जी का आविर्भाव हुआ। वे एक पूर्ण योगी... योगेश्वर थे। चित्रकूट क्षेत्र, अनुसुइया और जन - मानस में आप 'अनुसुइया के परमहंस जी' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि पूज्य गुरुदेव भगवान की चित्रात्मक जीवनी 'अनुसुइया के परमहंस जी' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस चित्रकथा में आप पायेंगे- ''एक साधक, भगवान के निर्देशन में कैसे साधना में प्रवृत्त होता है, रास्ते में कैसे-कैसे विघ्न आते हैं, आदेशों की अवहेलना पर भगवान ताड़ना भी देते हैं, लेकिन भगवान के आदेशों का पालन करते हुए वह निर्विघ्न साधन-पथ पर चलता हुआ अपने स्वरूप तक की दूरी तय कर लेता है।''

उसी का क्रमबद्ध विवरण चित्रकथा में प्रस्तुत है।
आप सभी को एवम् आत्म कल्याण के प्रार्थी साधकों को इससे बहुत प्रेरणा मिलेगी।
आपका जीवन मंगलमय हो !

सद्‌गुरु कृपाश्रयी
स्वामी अड़गड़ानन्द महाराज

॥ प्रकाशकीय निवेदन ॥

पूज्य गुरुदेव स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से इस अमर चित्रकथा का प्रकाशन संभव हुआ है। इस अमर चित्रकथा के सारे कथानक एवं प्रकरण, आप द्वारा रचित श्री गुरुदेव भगवान की जीवनी 'जीवनादर्श एवं आत्मानुभूति', 'अनुसुइया के परमहंस जी' एवं आपके प्रवचनों पर ही आधारित हैं।

श्री परमहंस जी की लौकिक शिक्षा तो कुछ भी नहीं थी पर आध्यात्मिक शिक्षा के आप शिरोमणि हैं। ऐसे अलौकिक एवं विलक्षण महापुरुष की विलक्षण जीवनी को सचित्र प्रस्तुत करने का यह एक विनम्र प्रयास है। किसी भी त्रुटि के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

प्रस्तुत कृति में उनकी सधुक्कड़ी भाषा को यथावत प्रस्तुत किया गया है। आपकी वाणी एवं सधुक्कड़ी भाषा का अपना एक सौन्दर्य है और निहितार्थ भी है। व्याकरणीय शुद्धता से परे इसमें साधना के गूढ़ सिद्धान्त भी सरलता से स्पष्ट हो जाते हैं। इसकी दो-तीन आवृत्ति एवं मनन से साधना सहायक रहस्यों का उद्‌घाटन होने लगता है। चित्रकथा के सारे कथानक साधनात्मक शिक्षाओं से ओत-प्रोत हैं,और साधना में सहायक हैं।

पढ़ कर और चल कर तो देखें !
शुभ कामनाओं सहित

प्रकाशक

श्रीकृष्ण जिस स्तर की बात करते हैं, क्रमशः चलकर उसी स्तर पर खड़ा होनेवाला कोई महापुरुष ही अक्षरशः बता सकेगा कि श्रीकृष्ण ने जिस समय गीता का उपदेश दिया था, उस समय उनके मनोगत भाव क्या थे? मनोगत समस्त भाव कहने में नहीं आते। कुछ तो कहने में आ पाते हैं, कुछ भाव-भंगिमा से व्यक्त होते हैं और शेष पर्याप्त क्रियात्मक हैं- जिन्हें कोई पथिक चलकर ही जान सकता है। जिस स्तर पर श्रीकृष्ण थे, क्रमशः चलकर उसी अवस्था को प्राप्त महापुरुष ही जानता है कि गीता क्या कहती है। वह गीता की पंक्तियाँ ही नहीं दुहराता, बल्कि उनके भावों को भी दर्शा देता है; क्योंकि जो दृश्य श्रीकृष्ण के सामने था, वही उस वर्तमान महापुरुष के समक्ष भी है। इसलिये वह देखता है, दिखा देगा; आपमें जागृत भी कर देगा, उस पथ पर चला भी देगा।

'पूज्य श्री परमहंस जी महाराज' भी उसी स्तर के महापुरुष थे। उनकी वाणी तथा अन्तःप्रेरणा से मुझे गीता का जो अर्थ मिला, उसी का संकलन '**यथार्थ गीता**' है।

- स्वामी अड़गड़ानन्द

अनन्तश्री विभूषित,

योगिराज, युग पितामह

परमपूज्य श्री स्वामी परमानन्द जी

श्री परमहंस आश्रम अनुसुइया-चित्रकूट

के परम पावन चरणों में

सादर समर्पित

अन्तःप्रेरणा

ॐ ॐ

गुरु-वन्दना

।। ॐ श्री सद्गुरुदेव भगवान् की जय ।।

जय सद्गुरुदेवं, परमानन्दं, अमर शरीरं अविकारी।
निर्गुण निर्मूलं, धरि स्थूलं, काटन शूलं भवभारी।।

सूरत निज सोहं, कलिमल खोहं, जनमन मोहन छविभारी।
अमरापुर वासी, सब सुख राशी, सदा एकरस निर्विकारी।।

अनुभव गम्भीरा, मति के धीरा, अलख फकीरा अवतारी।
योगी अद्वैष्टा, त्रिकाल द्रष्टा, केवल पद आनन्दकारी।।

चित्रकूटहिं आयो, अद्वैत लखायो, अनुसुइया आसन मारी।
श्री परमहंस स्वामी, अन्तर्यामी, हैं बड़नामी संसारी।।

हंसन हितकारी, जग पगुधारी, गर्व प्रहारी उपकारी।
सत्-पंथ चलायो, भरम मिटायो, रूप लखायो करतारी।।

यह शिष्य है तेरो, करत निहोरो, मोपर हेरो प्रणधारी।
जय सद्गुरु.........भारी।।

।। ॐ ।।

ॐ ॐ

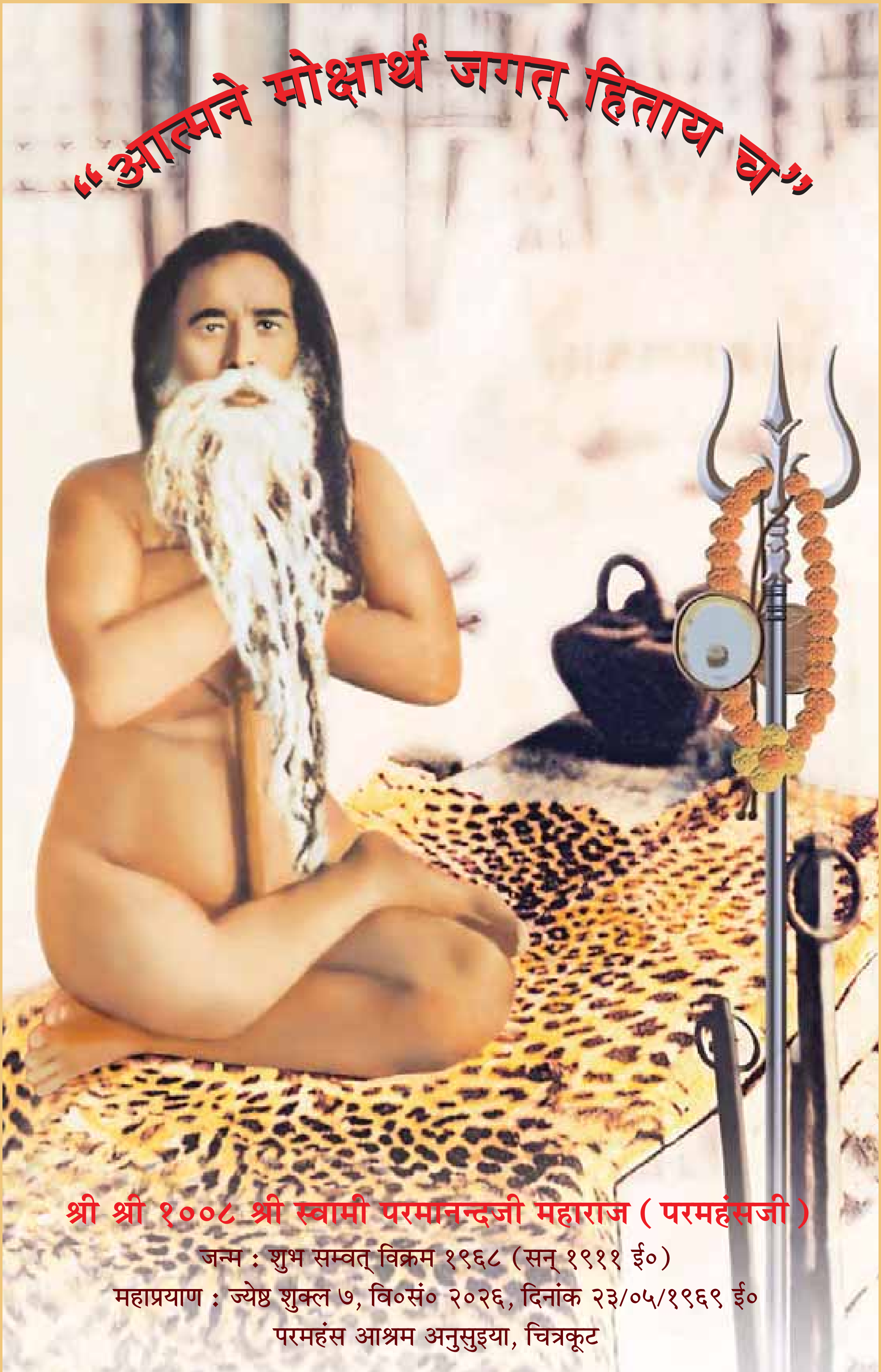

श्री श्री १००८ श्री स्वामी परमानन्दजी महाराज (परमहंसजी)

जन्म : शुभ सम्वत् विक्रम १९६८ (सन् १९११ ई०)

महाप्रयाण : ज्येष्ठ शुक्ल ७, वि०सं० २०२६, दिनांक २३/०५/१९६९ ई०

परमहंस आश्रम अनुसुइया, चित्रकूट

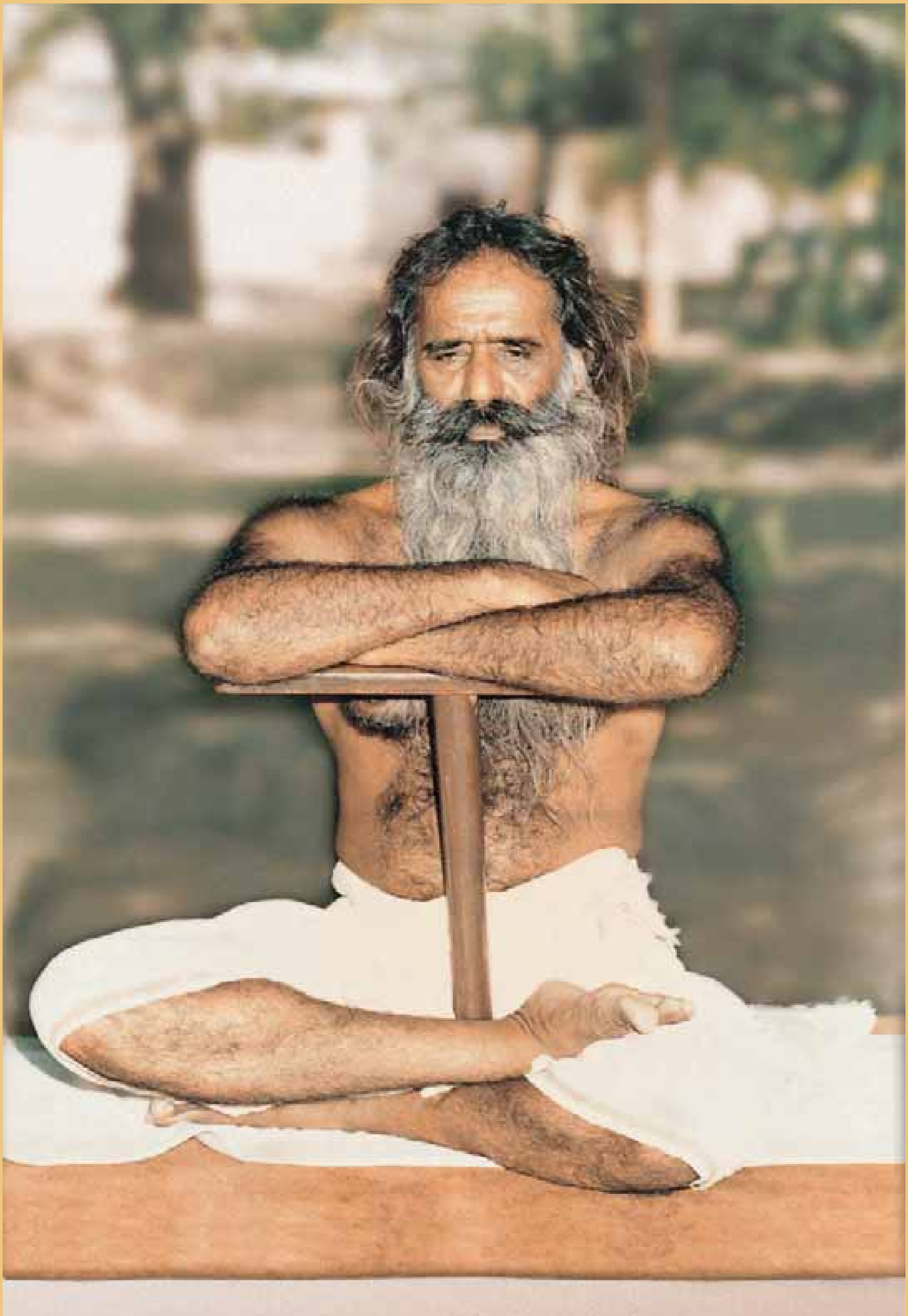

श्री स्वामी अड़गड़ानन्दजी महाराज

(परमहंस महाराज का कृपा-प्रसाद)

हमारे प्रकाशन

पुस्तकें		भाषा
यथार्थ गीता	❖ भारतीय भाषायें	हिन्दी, मराठी, पंजाबी, गुजराती, उर्दू, संस्कृत, उड़िया, बंगला, तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, आसामी, सिन्धी।
	❖ विदेशी भाषायें	अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, नेपाली, स्पेनीश,फारसी,डच, जापानी, इन्डोनेशियन, नार्वेजीयन, चायनीज, इटालियन, रूसी, पुर्तगाली, अरबी।
शंका समाधान		हिन्दी, मराठी, गुजराती, नेपाली, अंग्रेजी।
जीवनादर्श एवं आत्मानुभूति		हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगला, अंग्रेजी।
अंग क्यों फड़कते हैं? क्या कहते हैं?		हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी , जर्मन।
अनछुये प्रश्न		हिन्दी, मराठी, गुजराती।
एकलव्य का अंगूठा		हिन्दी, मराठी, गुजराती।
भजन किसका करें?		हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगला, अंग्रेजी, नेपाली।
योगशास्त्रीय प्राणायाम		हिन्दी, मराठी, गुजराती।
षोडशोपचार पूजन-पद्धती		हिन्दी, मराठी, गुजराती।
योगदर्शन-प्रत्यक्षानुभूत व्याख्या		हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, अंग्रेजी।
ग्लोरिस् ऑफ योगा		अंग्रेजी।
प्रश्न समाज के – उत्तर गीता से		हिन्दी, मराठी।
गीता के प्रमुख प्रश्न		हिन्दी।
भगवान सद्गुरु		हिन्दी।
बारहमासी		हिन्दी।
अहिंसा का स्वरुप		हिन्दी, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी।
अमृतवाणी १-७		हिन्दी।

ऑडियोसीडीज् (Mp3)

यथार्थ गीता	हिन्दी, गुजराती, मराठी, उर्दू, तमिल, तेलगू, अंग्रेजी, जर्मन, बंगला, मलयालम, पंजाबी, कन्नड़।
अमृतवाणी (श्री स्वामीजीके प्रवचन)	हिन्दी।
गुरुवंदना	हिन्दी।

विडियोसीडीज्

(श्री स्वामीजीके प्रवचन)	हिन्दी।

© सर्वाधिकार-लेखक

(उपरोक्त पुस्तकों का कोई भी अंश प्रकाशन, रिकार्डिंग, प्रतिलिपि प्रकाशन तथा संशोधन बिना लेखक की अनुमति के वर्जित है।)

चित्रकथा- अनुक्रमणिका

क्र.		पृष्ठ संख्या
1.	शिशुरूप अलौकिकता	1
2.	बाल्य जीवन की विलक्षण घटना	2
3.	शालेय शिक्षा	3
4.	व्यायाम की प्रेरणा	4
5.	वैवाहिक जीवन	5
6.	आकाशवाणी, संत मिलन एवं आशीर्वाद प्राप्ति	6
7.	वृद्धा द्वारा तरूणी का सन्देश	6
8.	सद्गुरु दर्शन	7
9.	भजन की शुरूआत	9
10.	भजन की जागृति	10
11.	प्रभात-फेरी	10
12.	इष्ट की व्यापकता में विश्वास	10
13.	नल पर गुरुदेव का स्नान व चेतावनी	11
14.	धर्मपत्नी को उपदेश	12
15.	गृह में भयंकर उत्पात	13
16.	भजन-परीक्षा की कसौटी पर	15
17.	बगीचे में ममता पर इष्ट का आदेश	16
18.	प्रयाग की घटना व वस्त्र त्याग	17
19.	गंगा तट पर सतत विचरण	19
20.	परिभ्रमण काल में जौनपुर	19
21.	जौनपुर के कब्रिस्तान में	19
22.	रामनगर में भक्तों के बीच	22
23.	कर्मनाशा के किनारे देवी मंदिर में	21
24.	देहाध्यास का त्याग	21
25.	संतों के संग माघ मेले में सिपाही द्वारा हाथ मरोड़ना	22
26.	वैष्णव संतो द्वारा धूना तापने से रोकना	23
27.	मेले में सेठों का निमंत्रण व जलवृष्टि	24
28.	रेलयात्रा में सिन्धियों से विवाद	25
29.	कुंभ में शंकराचार्य मठ द्वारा दीक्षा संस्कार आमंत्रण	26
30.	भण्डारे से बिना प्रसाद लिए लौटना	26
31.	उज्जैन मेले में नौ दिवसीय भण्डारा	27
32.	यमुना किनारे विचरण/भगवान द्वारा भोजन प्रबंध	27
33.	फकीर के साथ भोजन	28
34.	यमुना तट पर माताओं द्वारा भजन	28
35.	आगरा के मंडी में व कुपात्र को दान	29
36.	कंचन-कामिनी से निवृत्ति	30
37.	हरिद्वार से प्रस्थान, साधु की अंत्येष्टि	30
38.	हिमालय की तलहटी में- सिपाही द्वारा दूध लाना	31
39.	मधवापुर में चतुर्मासा	32
40.	बालकों का उपद्रव	33
41.	पूर्वजन्म की स्मृति	34
42.	करसोलवा पासी को शिक्षा	35
43.	बिल्व-फलों का उद्धार	36
44.	अयोध्या में बैरागी महन्त द्वारा दुर्व्यवहार	36
45.	बम्बई में जलेबी एवं नारियल खाने की इच्छा	37
46.	दूध भिक्षा में मछली	38
47.	बम्बई से वापसी	38
48.	राजकुंवरी का विवाह	39
49.	मधवापुर पुनरागमन एवं बंशीदास के आश्रम में	39
50.	भविष्य द्रष्टा महाराज जी	39
51.	हैजा का प्रकोप एवं मरणासन्न को जीवनदान	40
52.	मधवापुर से जन्मभूमि की ओर	40
53.	रामकोला स्टेशन पर ईश्वरीय चेतावनी	41
54.	ट्रेन द्वारा कश्मीर की ओर	42
55.	भगवान के आदेश से चित्रकूट प्रस्थान	42
56.	जौनपुर में ज्योतिषी पर कृपा	43
57.	काशी विश्वनाथ मंदिर में	44
58.	काशी में हरिहर बाबा का दर्शन	44
59.	कर्बी स्टेशन पर विचित्र स्वप्न	44
60.	चित्रकूट में महाराज जी	45
61.	द्रोपदी बाई	45
62.	सिद्ध बाबा का करामाती तख्त	46
63.	शेर का निवास	46
64.	हिंसक पशुओं एवं बर्बर डाकुओं के बीच	47
65.	भोजन का आदेश	48
66.	डाकुओं का हृदय परिवर्तन	49
67.	भजन की पराकाष्ठा	50
68.	गर्भवास व यमराज से छुटकारा	50
69.	स्वरूप की प्राप्ति	51
70.	माता अनुसुइया द्वारा भोजन व लक्ष्मी द्वारा सेवा	51

क्र.		पृष्ठ संख्या
71.	अनुसुइया से काशी की रामलीला का दर्शन	51
72.	नेहरू के बारे में भविष्यवाणी	51
73.	गम्भीर रोगियों पर कृपा	52
74.	रामलखान दास जी का आगमन	52
75.	अयोध्या से वेदान्ती जी का आगमन	53
76.	रामलखानदास जी का जातिगत मोह	54
77.	सिद्ध बाबा	55
78.	सच्चिदानंद जी का आगमन (श्री धारकुण्डी महाराज)	56
79.	13 वर्षीय बालक का आना	57
80.	आगरा यात्रा व अत्रि जी का दर्शन	57
81.	दर्शन की छात्रा चित्रकूट में	58
82.	छात्रा आश्रम में	59
83.	साधकों पर सतर्क दृष्टि	60
84.	बालकों द्वारा सिंह शावक लाना	60
85.	ब्रह्मचारी बन्दर	61
86.	आश्रम में सुग्गा	62
87.	सुग्गी का कन्यारूप में जन्म	63
88.	शेर का बंदर पर हमला	63
89.	शहद के लिए कोल-भीलों का उपद्रव	63
90.	कोल-भीलों की क्षमा याचना	64
91.	अखाण्डानंद जी का आगमन	65
92.	भगवानानंद जी का आगमन	65
93.	शिवानंद जी का आगमन	66
94.	बग्गड़ बाबा का आगमन	67
95.	छड़ी कमण्डल का लुढ़कना	67
96.	साधकों का वैराग्य	68
97.	योगक्षेम का वहन	69
98.	वैष्णव संत का सिद्ध बाबा के तख्त पर बैठना	70
99.	संत स्वरूपदास का उपद्रव	70
100.	पण्डों द्वारा सामूहिक विरोध	70
101.	आश्रमीय व्यवस्था	71
102.	पशुओं की मूक भाषा पहचानना	71
103.	चोरी के लोटे की वापसी	71
104.	पाडे जी का फोड़ा ठीक होना	71
105.	कामतनाथ महंत का लड़का, शीतल पंडित को आशीर्वाद	72
106.	चित्रकूट में उच्चकोटि के महात्मा	72
107.	महाराज द्वारा नागा महात्माओं को हाथी दान	73
108.	आश्रमीय खर्चे पर चर्चाएं	73
109.	बॉदा एस.पी. का शिकार पर आना	73
110.	द्रोपदीबाई का त्रिया चरित्र व षड्यंत्र	75
111.	आश्रम में डॉ. रामकुमार वर्मा	76
112.	प्रलयकारी बाढ़ का रुकना	77
113.	भजन 'चोलिया काहे न धुलाई'	77
114.	अड़गड़ानंद जी का आगमन	78
115.	अड़गड़ानंद जी का समर्पण	79
116.	गुरु महाराज जी की विद्या	80
117.	अनुभव में शस्त्रागार	81
118.	आश्रम में प्रथम निर्माण व 'अड़गड़ानंद' नामकरण	82
119.	भजन 'अड़गड़ मत है पूरों का'	84
120.	अड़गड़ानंद जी की रक्षा	84
121	आश्रम में एकादशी	85
122.	वृद्ध दम्पत्ति को पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद	85
123.	स्वामी राम का आगमन	86
124.	कामरूप कामाख्या का पण्डा	87
125.	मृतप्राय व्यक्ति को जीवनदान	88
126.	आश्रम में रेडियो	88
127.	स्वरूपदास जी एवं रामानंद जी का आगमन	89
128.	आश्रम में गाछी-बाछी-दासी	90
129.	ब्राह्मणों द्वारा आश्रम में भागवत व भोज	90
130.	आदिवासी महिलाओं द्वारा भोजन से इन्कार	91
131.	गीताप्रेस वाली गीता का मिलना	92
132.	गीता लिखने का आदेश	93
133.	बारहमासी का अवतरण	94
134.	शरीर छोड़ने से पूर्व महाराज की चेतावनी	94
135.	बंदूक व ट्रैक्टर के संबंध में	95
136.	शिष्यों को आशीर्वाद	96
137.	शरीर त्यागने से पूर्व महाराज का उपदेश	97
138.	महाराज जी का महाप्रयाण एवं समाधि	98

।। अनुसुइया के परमहंस जी ।।

(परमहंस स्वामी श्री परमानंद जी महाराज)

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर अंचल स्थित देवरिया जिले के 'रामकोला' ग्राम के एक सामान्य परिवार में, आज से लगभग 111 वर्ष पूर्व सन् 1911 में, एक बालक का जन्म हुआ। पिता श्री जगरूप शर्मा व माता फूलमानी देवी का जीवन खुशियों से भर गया। घर वालों ने उनका नाम कान्हा रखा और प्यार से कन्हई बुलाते थे। एक दिन गांव से गुजर रहे ज्योतिषियों की नजर बच्चे पर पड़ी....

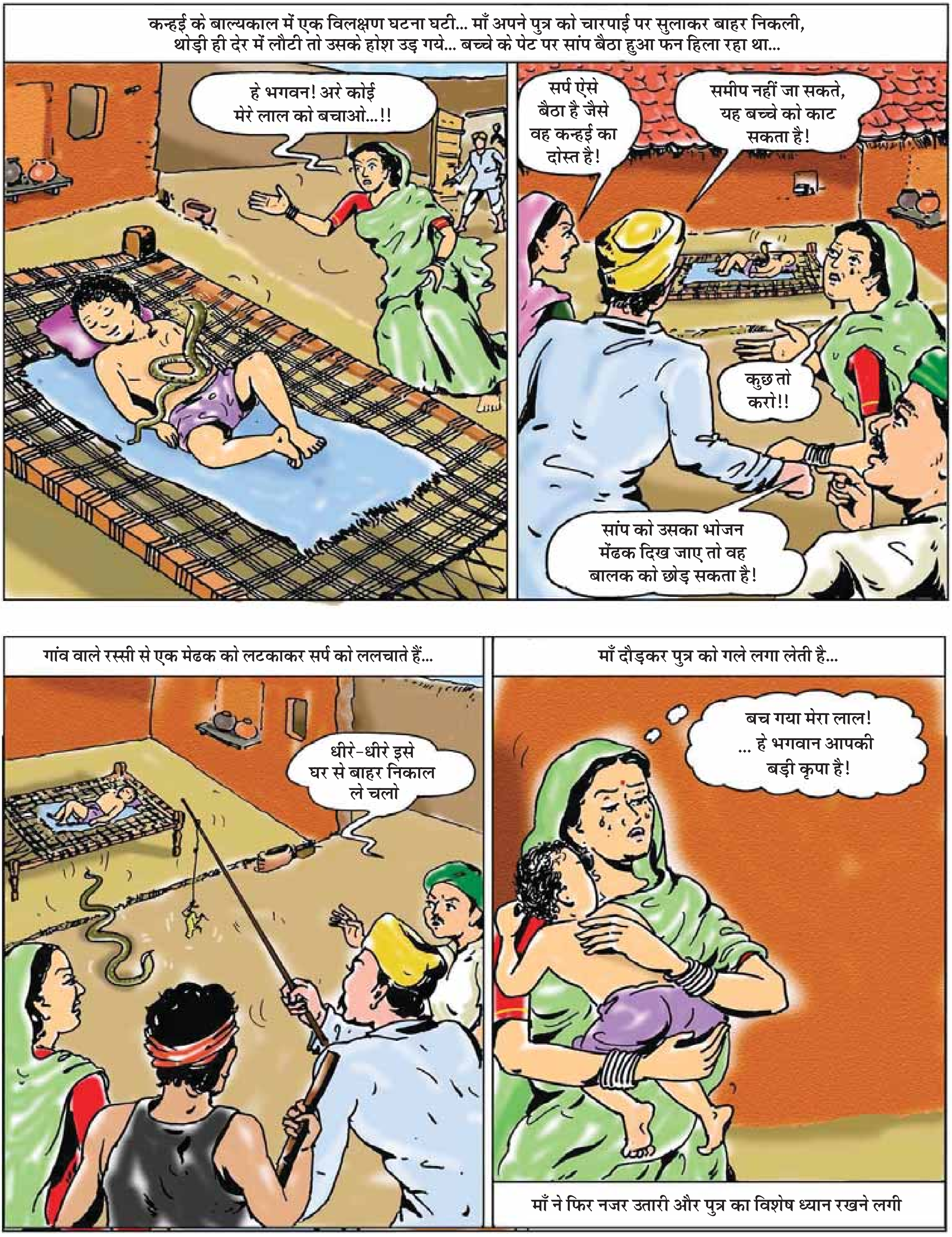
कन्हई के बाल्यकाल में एक विलक्षण घटना घटी... माँ अपने पुत्र को चारपाई पर सुलाकर बाहर निकली, थोड़ी ही देर में लौटी तो उसके होश उड़ गये... बच्चे के पेट पर सांप बैठा हुआ फन हिला रहा था...
हे भगवन! अरे कोई मेरे लाल को बचाओ...!!
सर्प ऐसे बैठा है जैसे वह कन्हई का दोस्त है!
समीप नहीं जा सकते, यह बच्चे को काट सकता है!
कुछ तो करो!!
सांप को उसका भोजन मेंढक दिख जाए तो वह बालक को छोड़ सकता है!
गांव वाले रस्सी से एक मेढक को लटकाकर सर्प को ललचाते हैं...
धीरे-धीरे इसे घर से बाहर निकाल ले चलो
माँ दौड़कर पुत्र को गले लगा लेती है...
बच गया मेरा लाल! ... हे भगवान आपकी बड़ी कृपा है!
माँ ने फिर नजर उतारी और पुत्र का विशेष ध्यान रखने लगी

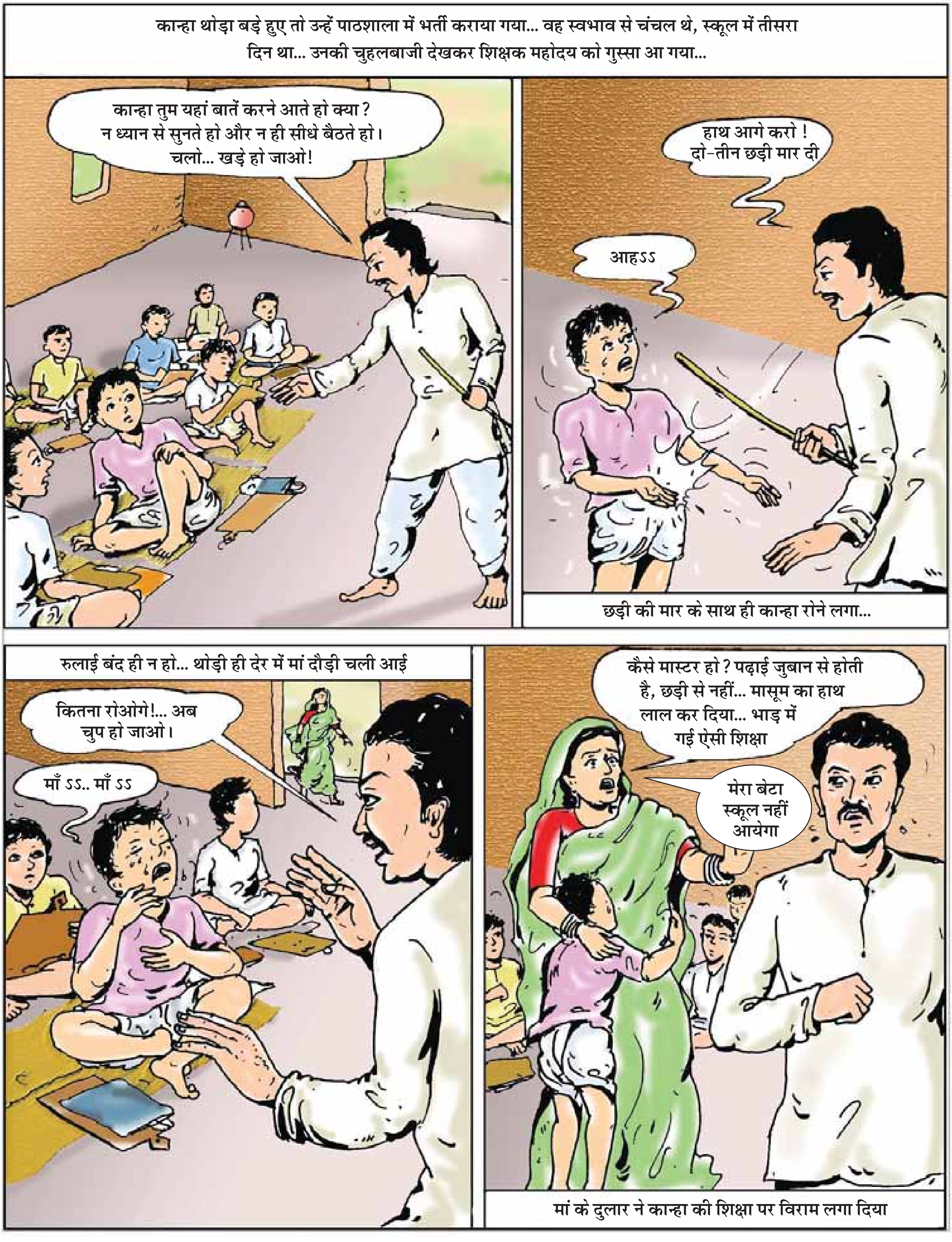

कान्हा थोड़ा बड़े हुए तो उन्हें पाठशाला में भर्ती कराया गया... वह स्वभाव से चंचल थे, स्कूल में तीसरा दिन था... उनकी चुहलबाजी देखकर शिक्षक महोदय को गुस्सा आ गया...
कान्हा तुम यहां बातें करने आते हो क्या ? न ध्यान से सुनते हो और न ही सीधे बैठते हो। चलो... खड़े हो जाओ!
हाथ आगे करो ! दो-तीन छड़ी मार दी
आहऽऽ
छड़ी की मार के साथ ही कान्हा रोने लगा...
रुलाई बंद ही न हो... थोड़ी ही देर में मां दौड़ी चली आई
कितना रोओगे!... अब चुप हो जाओ।
माँ ऽऽ.. माँ ऽऽ
कैसे मास्टर हो ? पढ़ाई जुबान से होती है, छड़ी से नहीं... मासूम का हाथ लाल कर दिया... भाड़ में गई ऐसी शिक्षा
मेरा बेटा स्कूल नहीं आयेगा
मां के दुलार ने कान्हा की शिक्षा पर विराम लगा दिया

कान्हा अब स्कूल न जाकर गांव में इधर उधर निकल जाते... गांव में कुश्ती के बारह अखाड़े थे... वह अखाड़ों में पहुँच जाते और कुश्ती का आनन्द लेते ...
इनका शरीर कितना मजबूत है।... पहलवानों का गांव में सम्मान भी है...। मुझे भी बड़ा होकर पहलवान ही बनना है।
चूल्हे की गर्मी में क्यों उठक बैठक कर रहा है ?
इसकी गर्मी से पसीना जल्दी आता है मां ! कसरत करते समय पसीना आएगा तभी मैं पहलवान बन पाऊँगा
अभी से कुश्ती का भूत चढ़ गया।... चल दूध पी ले!
कन्हई, पहलवानों की तरह शरीर पर पीली मिट्टी पोतकर निकलता... कोई उससे विनोद करता तो कोई प्रशंसा भी...
वो देखो! पहलवान जी जा रहे हैं!
लोग कुछ भी कहें, यह लड़का बड़ा लगनी है... अखाडों में कुश्ती देखने भी आता है... इसे प्रशिक्षण मिलना चाहिए।
यह शुभ कार्य आप ही करिए... अखाड़े में बुलाकर सिखाइये कुश्ती के दांव-पेंच।
बालक की लगन ने उसके पहलवान बनने की राह खोल दी
आज से यह बालक भी तुम सब के साथ व्यायाम करेगा और कुश्ती सीखेगा...
बालक व्यायाम में मेहनत करता, उस्ताद से दांव-पेंच लगन से सीखता... 18 वर्ष की आयु तक तो पक्का पहलवान हो गया

कन्हई अब नामी पहलवान हो गये... 27 की उम्र तक अपराजित रह कर कई दंगल जीते...
अरे-रे! बाप
पहलवानी को समर्पित कन्हई विवाह नहीं करना चाहते थे किंतु परिवार के दबाव में विवाह करना पड़ा...
मैं देख रही हूँ तू बहू से दूर-दूर रहता है... इसे दुःख देकर तू ठीक नहीं कर रहा, गृहस्थ धर्म तो निभाना ही होगा।
कन्हई ने पहलवानी के साथ ही गृहस्थी की गाडी भी आगे बढ़ाई... उनके तीन लड़के व एक लड़की हुई।
सन 1938 में, एक दिन आपके जीवन में विशेष घटना हुई... उस समय आप 27 वर्ष के थे। आप बाजार जा रहे थे। अचानक सड़क पर एक महात्मा झंडी लिये हुए दौड़ते चले जा रहे थे...
सीताराम ऽऽ सीताराम सीताराम ऽऽ सीताराम
महात्मा कान्हा के बगल से निकले.... उसी समय आकाशवाणी सुनाई दी...बहुत जोर की आवाज थी
इन महात्मा को भोजन कराओ
पास के किसान से पूछा
भाई! तुमने कुछ सुना ?... अभी तेज आवाज आई थी
कैसी आवाज ? मैंने तो नहीं सुना
लगता है यह कोई दैवीय आवाज है। उनको भोजन अवश्य कराना चाहिए... उन्हें ढूँढता हूँ
महात्मा को ढूँढकर उनका चरण पकड़ा, आदर पूर्वक बैठाकर विधिवत भोजन कराया और पान खिलाया
महात्मा ने सात दिन बाद भोजन किया था... उनका प्रण था कि भगवान खिलायेंगे तब ही भोजन करूंगा...

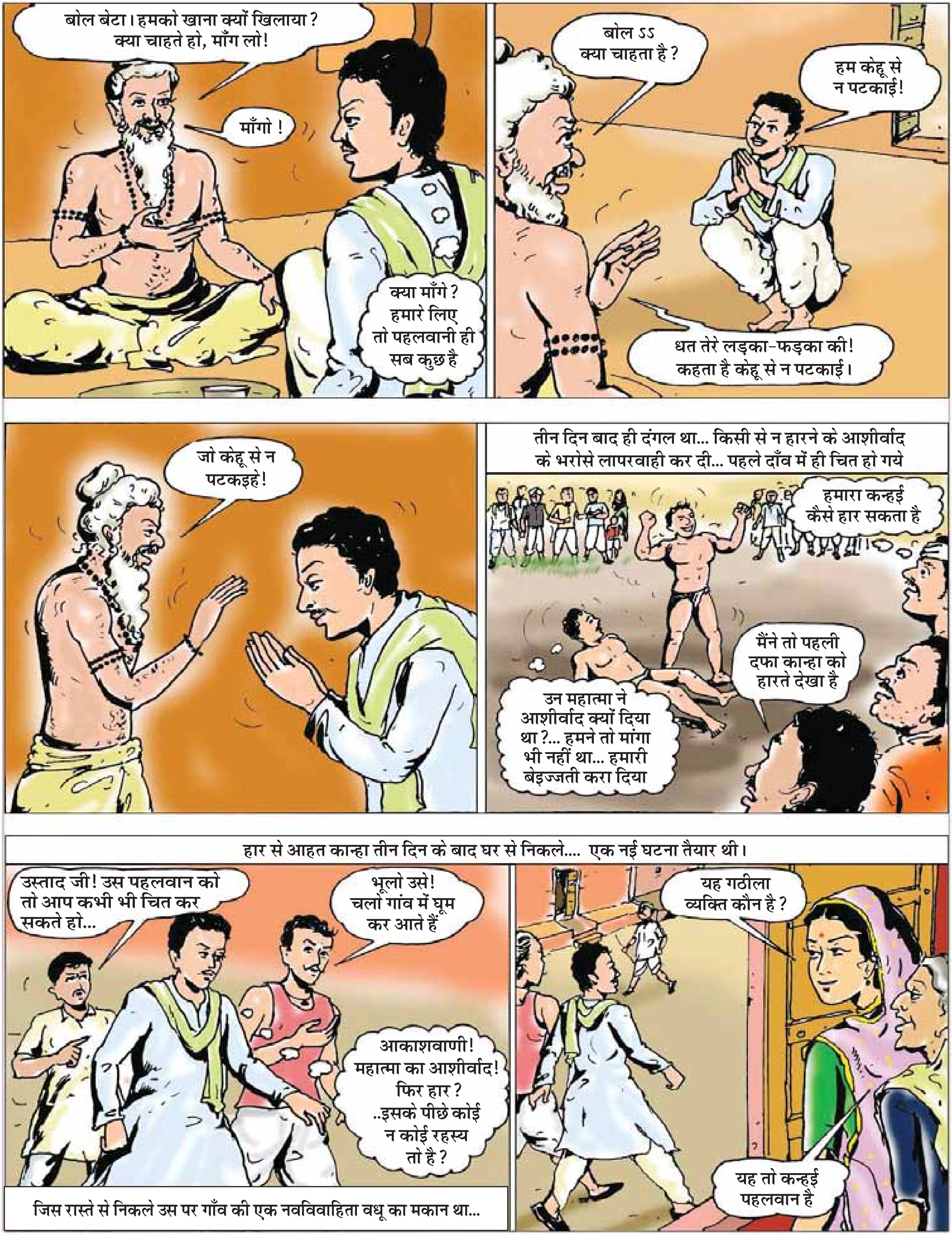

बोल बेटा। हमको खाना क्यों खिलाया? क्या चाहते हो, माँग लो!
माँगो !
क्या माँगे? हमारे लिए तो पहलवानी ही सब कुछ है
बोल ऽऽ क्या चाहता है?
हम केहू से न पटकाई!
धत तेरे लड़का-फड़का की! कहता है केहू से न पटकाई।
जो केहू से न पटकइहे!
तीन दिन बाद ही दंगल था... किसी से न हारने के आशीर्वाद के भरोसे लापरवाही कर दी... पहले दाँव में ही चित हो गये
हमारा कन्हई कैसे हार सकता है
मैंने तो पहली दफा कान्हा को हारते देखा है
उन महात्मा ने आशीर्वाद क्यों दिया था?... हमने तो मांगा भी नहीं था... हमारी बेइज्जती करा दिया
हार से आहत कान्हा तीन दिन के बाद घर से निकले.... एक नई घटना तैयार थी।
उस्ताद जी! उस पहलवान को तो आप कभी भी चित कर सकते हो...
भूलो उसे! चलो गांव में घूम कर आते हैं
आकाशवाणी! महात्मा का आशीर्वाद! फिर हार? ..इसके पीछे कोई न कोई रहस्य तो है?
जिस रास्ते से निकले उस पर गाँव की एक नवविवाहिता वधू का मकान था...
यह गठीला व्यक्ति कौन है?
यह तो कन्हई पहलवान है

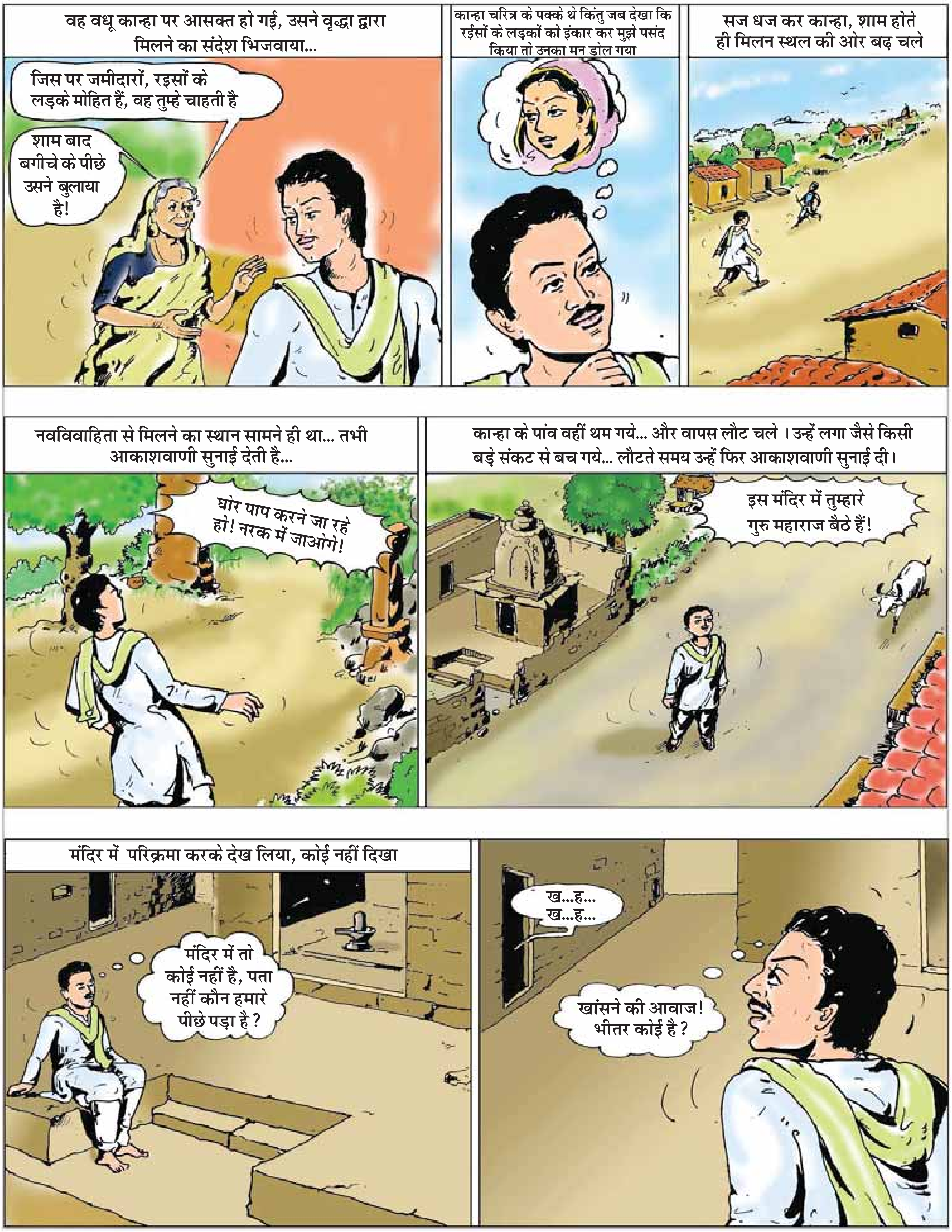

वह वधू कान्हा पर आसक्त हो गई, उसने वृद्धा द्वारा मिलने का संदेश भिजवाया...
जिस पर जमीदारों, रइसों के लड़के मोहित हैं, वह तुम्हे चाहती है
शाम बाद बगीचे के पीछे उसने बुलाया है!
कान्हा चरित्र के पक्के थे किंतु जब देखा कि रईसों के लड़कों को इंकार कर मुझे पसंद किया तो उनका मन डोल गया
सज धज कर कान्हा, शाम होते ही मिलन स्थल की ओर बढ़ चले
नवविवाहिता से मिलने का स्थान सामने ही था... तभी आकाशवाणी सुनाई देती है...
घोर पाप करने जा रहे हो! नरक में जाओगे!
कान्हा के पांव वहीं थम गये... और वापस लौट चले । उन्हें लगा जैसे किसी बड़े संकट से बच गये... लौटते समय उन्हें फिर आकाशवाणी सुनाई दी।
इस मंदिर में तुम्हारे गुरु महाराज बैठे हैं!
मंदिर में परिक्रमा करके देख लिया, कोई नहीं दिखा
मंदिर में तो कोई नहीं है, पता नहीं कौन हमारे पीछे पड़ा है ?
ख...ह... ख...ह...
खांसने की आवाज! भीतर कोई है ?

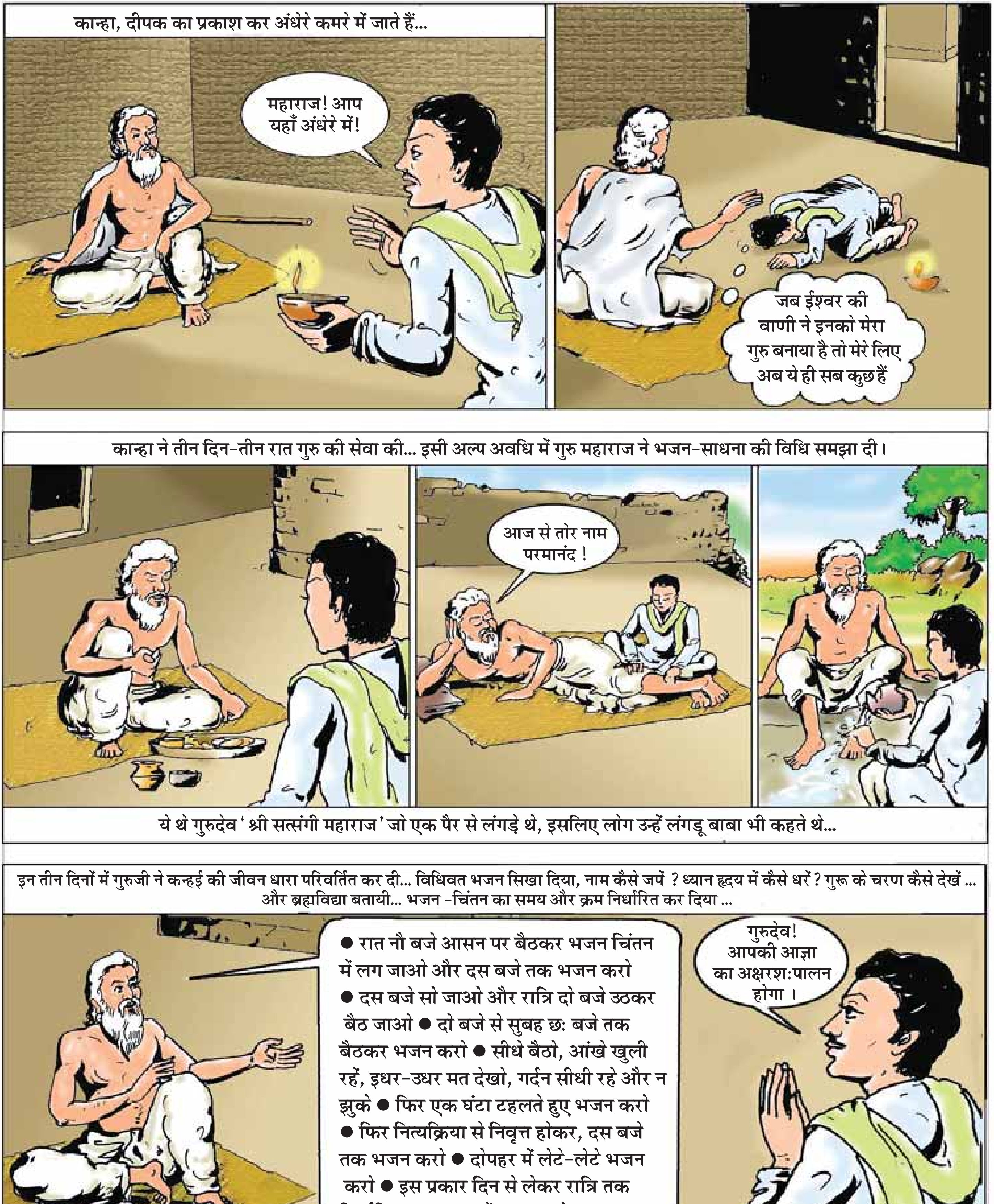
कान्हा, दीपक का प्रकाश कर अंधेरे कमरे में जाते हैं...
महाराज! आप यहाँ अंधेरे में!
जब ईश्वर की वाणी ने इनको मेरा गुरु बनाया है तो मेरे लिए अब ये ही सब कुछ हैं
कान्हा ने तीन दिन-तीन रात गुरु की सेवा की... इसी अल्प अवधि में गुरु महाराज ने भजन-साधना की विधि समझा दी।
आज से तोर नाम परमानंद !
ये थे गुरुदेव 'श्री सत्संगी महाराज' जो एक पैर से लंगड़े थे, इसलिए लोग उन्हें लंगडू बाबा भी कहते थे...
इन तीन दिनों में गुरुजी ने कन्हई की जीवन धारा परिवर्तित कर दी... विधिवत भजन सिखा दिया, नाम कैसे जपें ? ध्यान हृदय में कैसे धरें ? गुरू के चरण कैसे देखें ... और ब्रह्मविद्या बतायी... भजन -चिंतन का समय और क्रम निर्धारित कर दिया ...
● रात नौ बजे आसन पर बैठकर भजन चिंतन में लग जाओ और दस बजे तक भजन करो ● दस बजे सो जाओ और रात्रि दो बजे उठकर बैठ जाओ ● दो बजे से सुबह छः बजे तक बैठकर भजन करो ● सीधे बैठो, आंखे खुली रहें, इधर-उधर मत देखो, गर्दन सीधी रहे और न झुके ● फिर एक घंटा टहलते हुए भजन करो ● फिर नित्यक्रिया से निवृत्त होकर, दस बजे तक भजन करो ● दोपहर में लेटे-लेटे भजन करो ● इस प्रकार दिन से लेकर रात्रि तक निर्धारित भजन क्रम में लग जाओ !
गुरुदेव! आपकी आज्ञा का अक्षरशः पालन होगा ।

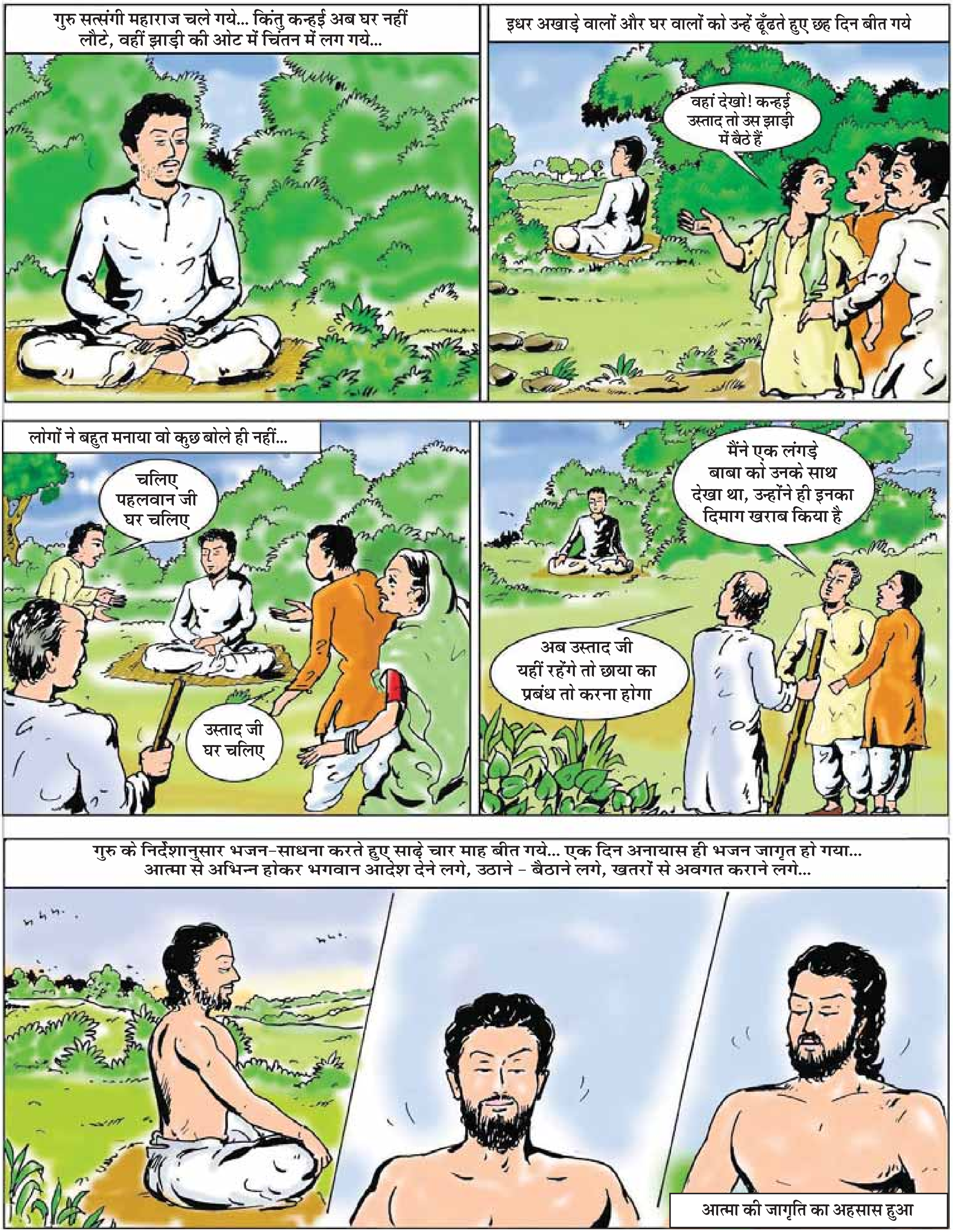
गुरु सत्संगी महाराज चले गये... किंतु कन्हई अब घर नहीं लौटे, वहीं झाड़ी की ओट में चिंतन में लग गये...
इधर अखाड़े वालों और घर वालों को उन्हें ढूँढते हुए छह दिन बीत गये
वहां देखो! कन्हई उस्ताद तो उस झाड़ी में बैठे हैं
लोगों ने बहुत मनाया वो कुछ बोले ही नहीं...
चलिए पहलवान जी घर चलिए
उस्ताद जी घर चलिए
मैंने एक लंगड़े बाबा को उनके साथ देखा था, उन्होंने ही इनका दिमाग खराब किया है
अब उस्ताद जी यहीं रहेंगे तो छाया का प्रबंध तो करना होगा
गुरु के निर्देशानुसार भजन-साधना करते हुए साढ़े चार माह बीत गये... एक दिन अनायास ही भजन जागृत हो गया... आत्मा से अभिन्न होकर भगवान आदेश देने लगे, उठाने - बैठाने लगे, खतरों से अवगत कराने लगे...
आत्मा की जागृति का अहसास हुआ

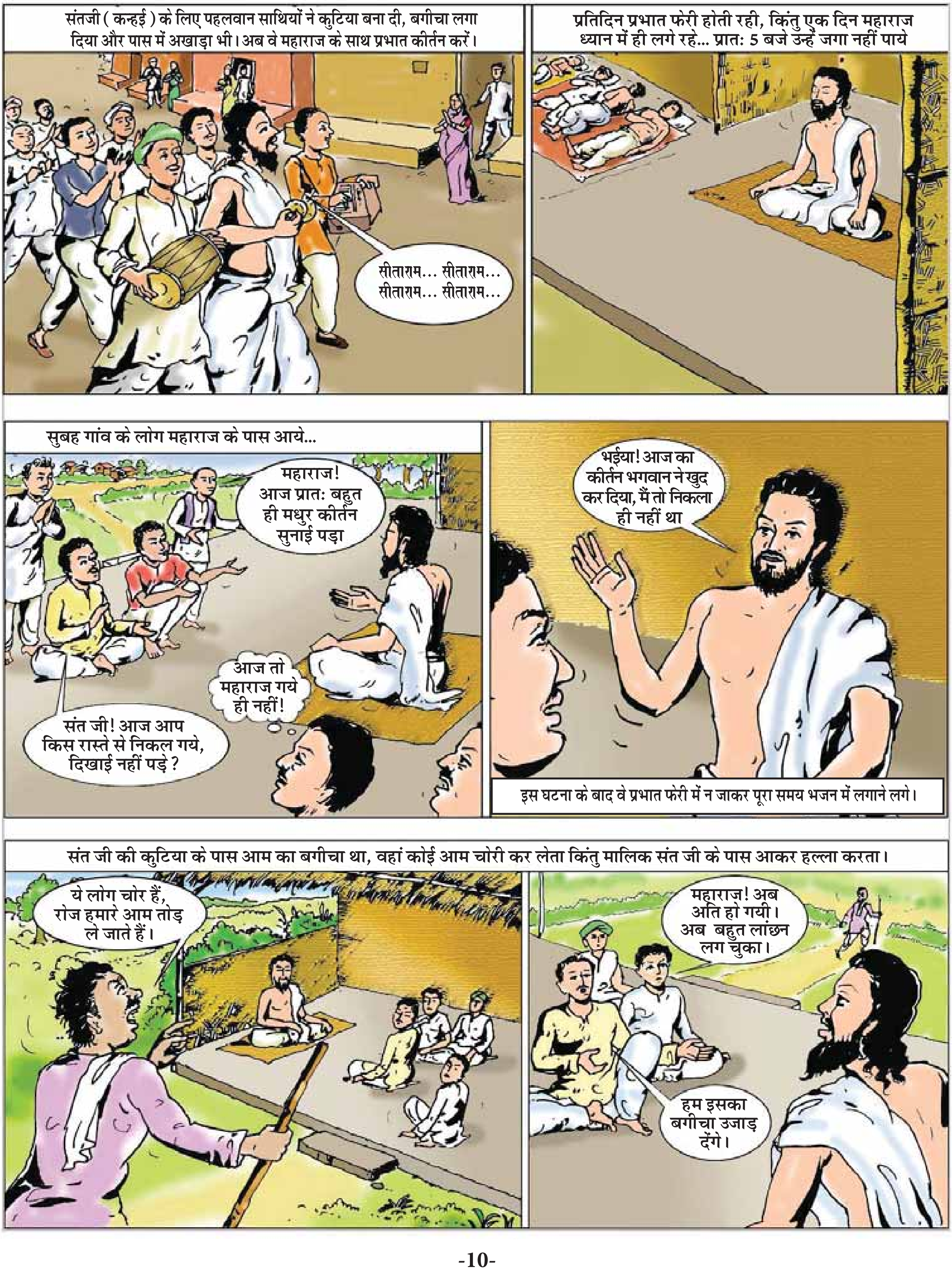
संतजी (कन्हई) के लिए पहलवान साथियों ने कुटिया बना दी, बगीचा लगा दिया और पास में अखाड़ा भी। अब वे महाराज के साथ प्रभात कीर्तन करें।
सीताराम... सीताराम... सीताराम... सीताराम...
प्रतिदिन प्रभात फेरी होती रही, किंतु एक दिन महाराज ध्यान में ही लगे रहे... प्रातः 5 बजे उन्हें जगा नहीं पाये
सुबह गांव के लोग महाराज के पास आये...
महाराज! आज प्रातः बहुत ही मधुर कीर्तन सुनाई पड़ा
संत जी! आज आप किस रास्ते से निकल गये, दिखाई नहीं पड़े ?
आज तो महाराज गये ही नहीं!
भईया! आज का कीर्तन भगवान ने खुद कर दिया, मैं तो निकला ही नहीं था
इस घटना के बाद वे प्रभात फेरी में न जाकर पूरा समय भजन में लगाने लगे।
संत जी की कुटिया के पास आम का बगीचा था, वहां कोई आम चोरी कर लेता किंतु मालिक संत जी के पास आकर हल्ला करता।
ये लोग चोर हैं, रोज हमारे आम तोड़ ले जाते हैं।
महाराज! अब अति हो गयी। अब बहुत लांछन लग चुका।
हम इसका बगीचा उजाड़ देंगे।

संतजी के शिष्यों ने बाग उजाड़ने की ठान ली...
संतजी, जब आप रात 2 बजे भजन में बैठें तो हमें उठा दीजिएगा!
रात दो बजे संत जी भजन के लिए उठे...
इन्हें जगाऊँ या नहीं ?
उसी समय एक व्यक्ति मानस की चौपाई बोलते हुए उधर से गुजरता है...
जननी सम जानहिं, पर नारी ऽऽ धनु पराव विष ते विष भारी.. ऽ
अरे! ... पराया धन विष से भी अधिक घातक, हम तो पाप करने जा रहे हैं... हमारा बायां अंग क्यों फड़क रहा है ?...
ठीक है भगवन! इनको नहीं जगायेंगे
अरे संत जी! आपने हमें जगाया नहीं ?
अरे चुप-चुप! भगवान ने मना कर दिया था
संत जी ! भगवान आये थे क्या ?
हाँ!
सत्संगी महाराज जब भी भ्रमण से लौटते कन्हई उनकी सेवा में लगे रहते, एक दिन गुरु जी को स्नान करा रहे थे कि हैण्डपंप पर एक लड़की आ गई...
थोड़ा धीरज रख! गुरु जी स्नान कर लें
कन्हई युवती को देख रहा है ?
घड़ा भर ले! जा ! भाग यहां से !
गुरु जी नाराज क्यों हो गये ?

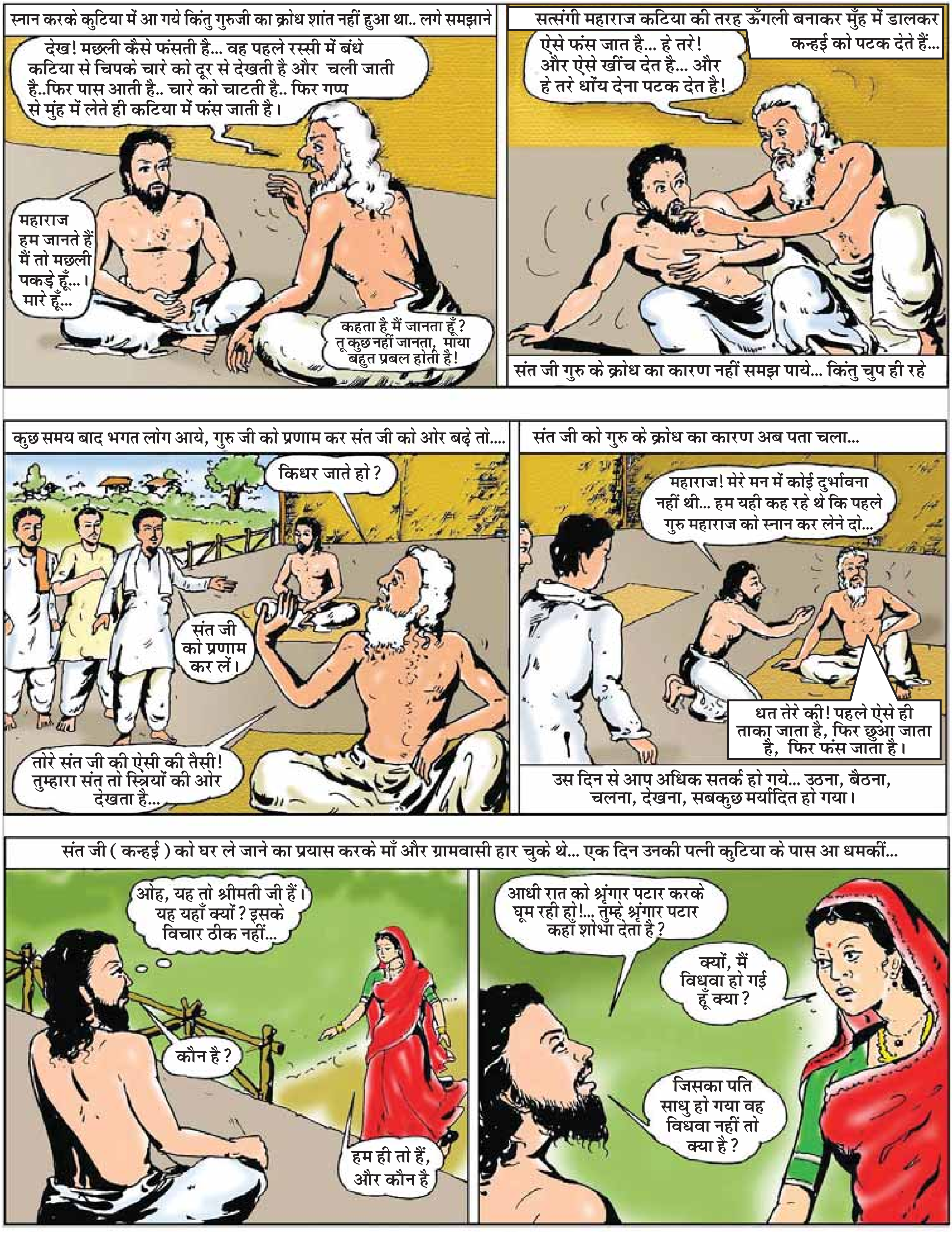
स्नान करके कुटिया में आ गये किंतु गुरुजी का क्रोध शांत नहीं हुआ था.. लगे समझाने
देख! मछली कैसे फंसती है... वह पहले रस्सी में बंधे कटिया से चिपके चारे को दूर से देखती है और चली जाती है..फिर पास आती है.. चारे को चाटती है.. फिर गप्प से मुंह में लेते ही कटिया में फंस जाती है।
महाराज हम जानते हैं मैं तो मछली पकड़े हूँ...। मारे हूँ...
कहता है मैं जानता हूँ? तू कुछ नहीं जानता, माया बहुत प्रबल होती है!
सत्संगी महाराज कटिया की तरह ऊँगली बनाकर मुँह में डालकर कन्हई को पटक देते हैं...
ऐसे फंस जात है... हे तरे! और ऐसे खींच देत है... और हे तरे धोंय देना पटक देत है!
संत जी गुरु के क्रोध का कारण नहीं समझ पाये... किंतु चुप ही रहे
कुछ समय बाद भगत लोग आये, गुरु जी को प्रणाम कर संत जी को ओर बढ़े तो....
किधर जाते हो?
संत जी को प्रणाम कर लें।
तोरे संत जी की ऐसी की तैसी! तुम्हारा संत तो स्त्रियों की ओर देखता है...
संत जी को गुरु के क्रोध का कारण अब पता चला...
महाराज! मेरे मन में कोई दुर्भावना नहीं थी... हम यही कह रहे थे कि पहले गुरु महाराज को स्नान कर लेने दो...
धत तेरे की! पहले ऐसे ही ताका जाता है, फिर छुआ जाता है, फिर फंस जाता है।
उस दिन से आप अधिक सतर्क हो गये... उठना, बैठना, चलना, देखना, सबकुछ मर्यादित हो गया।
संत जी (कन्हई) को घर ले जाने का प्रयास करके माँ और ग्रामवासी हार चुके थे... एक दिन उनकी पत्नी कुटिया के पास आ धमकीं...
ओह, यह तो श्रीमती जी हैं। यह यहाँ क्यों? इसके विचार ठीक नहीं...
कौन है?
हम ही तो हैं, और कौन है
आधी रात को श्रृंगार पटार करके घूम रही हो!... तुम्हे श्रृंगार पटार कहाँ शोभा देता है?
क्यों, मैं विधवा हो गई हूँ क्या?
जिसका पति साधु हो गया वह विधवा नहीं तो क्या है?

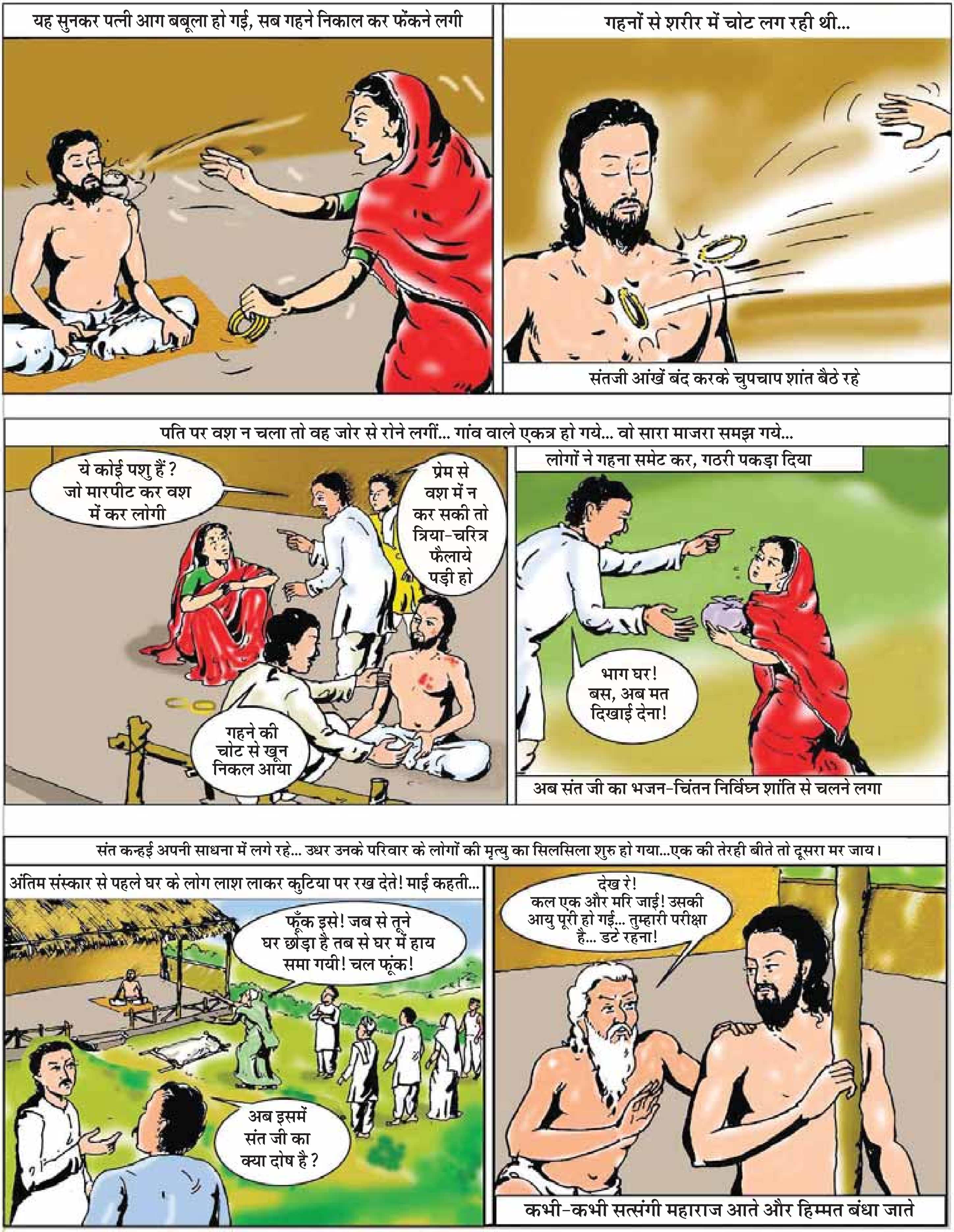
यह सुनकर पत्नी आग बबूला हो गई, सब गहने निकाल कर फेंकने लगी
गहनों से शरीर में चोट लग रही थी...
संतजी आंखें बंद करके चुपचाप शांत बैठे रहे
पति पर वश न चला तो वह जोर से रोने लगीं... गांव वाले एकत्र हो गये... वो सारा माजरा समझ गये...
ये कोई पशु हैं ? जो मारपीट कर वश में कर लोगी
प्रेम से वश में न कर सकी तो त्रिया-चरित्र फैलाये पड़ी हो
गहने की चोट से खून निकल आया
लोगों ने गहना समेट कर, गठरी पकड़ा दिया
भाग घर! बस, अब मत दिखाई देना!
अब संत जी का भजन-चिंतन निर्विघ्न शांति से चलने लगा
संत कन्हई अपनी साधना में लगे रहे... उधर उनके परिवार के लोगों की मृत्यु का सिलसिला शुरु हो गया...एक की तेरही बीते तो दूसरा मर जाय।
अंतिम संस्कार से पहले घर के लोग लाश लाकर कुटिया पर रख देते! माई कहती...
फूँक इसे! जब से तूने घर छोड़ा है तब से घर में हाय समा गयी! चल फूंक!
अब इसमें संत जी का क्या दोष है ?
देख रे! कल एक और मरि जाई! उसकी आयु पूरी हो गई... तुम्हारी परीक्षा है... डटे रहना!
कभी-कभी सत्संगी महाराज आते और हिम्मत बंधा जाते

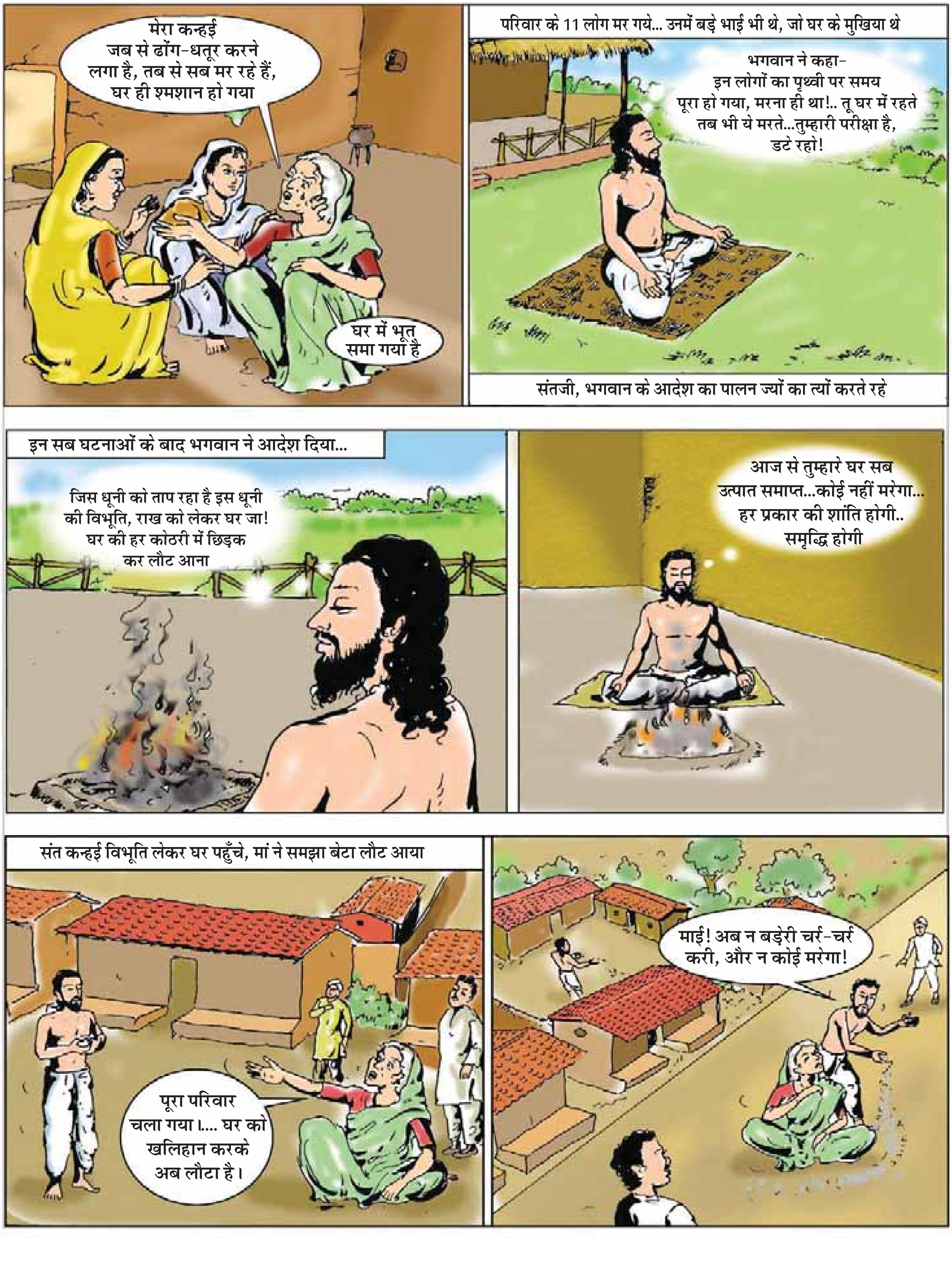
मेरा कन्हई जब से ढोंग-धतूर करने लगा है, तब से सब मर रहे हैं, घर ही श्मशान हो गया
घर में भूत समा गया है
परिवार के 11 लोग मर गये... उनमें बड़े भाई भी थे, जो घर के मुखिया थे
भगवान ने कहा- इन लोगों का पृथ्वी पर समय पूरा हो गया, मरना ही था!.. तू घर में रहते तब भी ये मरते...तुम्हारी परीक्षा है, डटे रहो!
संतजी, भगवान के आदेश का पालन ज्यों का त्यों करते रहे
इन सब घटनाओं के बाद भगवान ने आदेश दिया...
जिस धूनी को ताप रहा है इस धूनी की विभूति, राख को लेकर घर जा! घर की हर कोठरी में छिड़क कर लौट आना
आज से तुम्हारे घर सब उत्पात समाप्त...कोई नहीं मरेगा... हर प्रकार की शांति होगी.. समृद्धि होगी
संत कन्हई विभूति लेकर घर पहुँचे, मां ने समझा बेटा लौट आया
पूरा परिवार चला गया।.... घर को खलिहान करके अब लौटा है।
माई! अब न बड़ेरी चर्र-चर्र करी, और न कोई मरेगा!

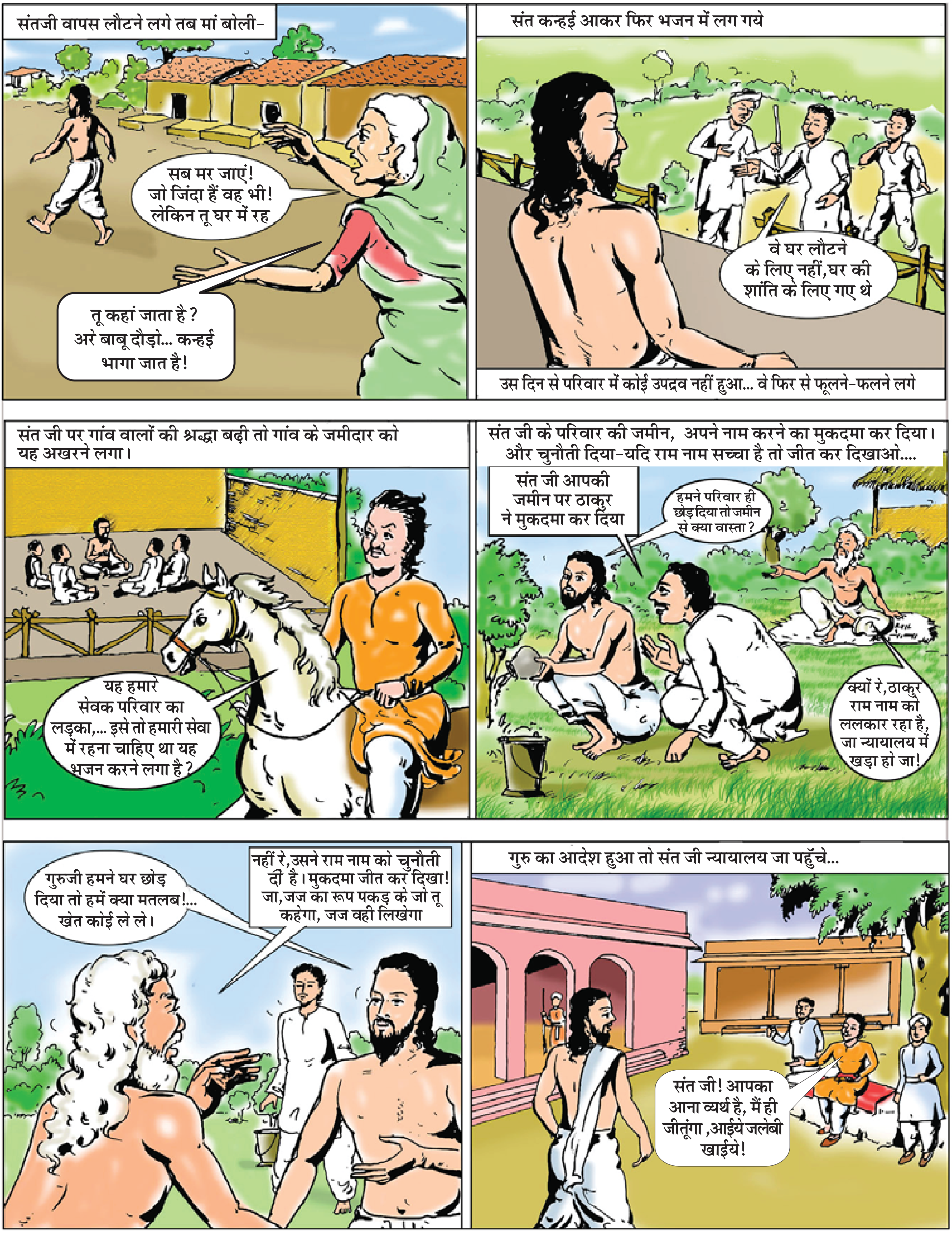
संतजी वापस लौटने लगे तब मां बोली-
सब मर जाएं! जो जिंदा हैं वह भी! लेकिन तू घर में रह
तू कहां जाता है ? अरे बाबू दौड़ो... कन्हई भागा जात है!
संत कन्हई आकर फिर भजन में लग गये
वे घर लौटने के लिए नहीं, घर की शांति के लिए गए थे
उस दिन से परिवार में कोई उपद्रव नहीं हुआ... वे फिर से फूलने-फलने लगे
संत जी पर गांव वालों की श्रद्धा बढ़ी तो गांव के जमीदार को यह अखरने लगा।
यह हमारे सेवक परिवार का लड़का,... इसे तो हमारी सेवा में रहना चाहिए था यह भजन करने लगा है ?
संत जी के परिवार की जमीन, अपने नाम करने का मुकदमा कर दिया। और चुनौती दिया-यदि राम नाम सच्चा है तो जीत कर दिखाओ....
संत जी आपकी जमीन पर ठाकुर ने मुकदमा कर दिया
हमने परिवार ही छोड़ दिया तो जमीन से क्या वास्ता ?
क्यों रे, ठाकुर राम नाम को ललकार रहा है, जा न्यायालय में खड़ा हो जा!
गुरुजी हमने घर छोड़ दिया तो हमें क्या मतलब!... खेत कोई ले ले।
नहीं रे, उसने राम नाम को चुनौती दी है। मुकदमा जीत कर दिखा! जा, जज का रूप पकड़ के जो तू कहेगा, जज वही लिखेगा
गुरु का आदेश हुआ तो संत जी न्यायालय जा पहुँचे...
संत जी! आपका आना व्यर्थ है, मैं ही जीतूंगा, आईये जलेबी खाईये!

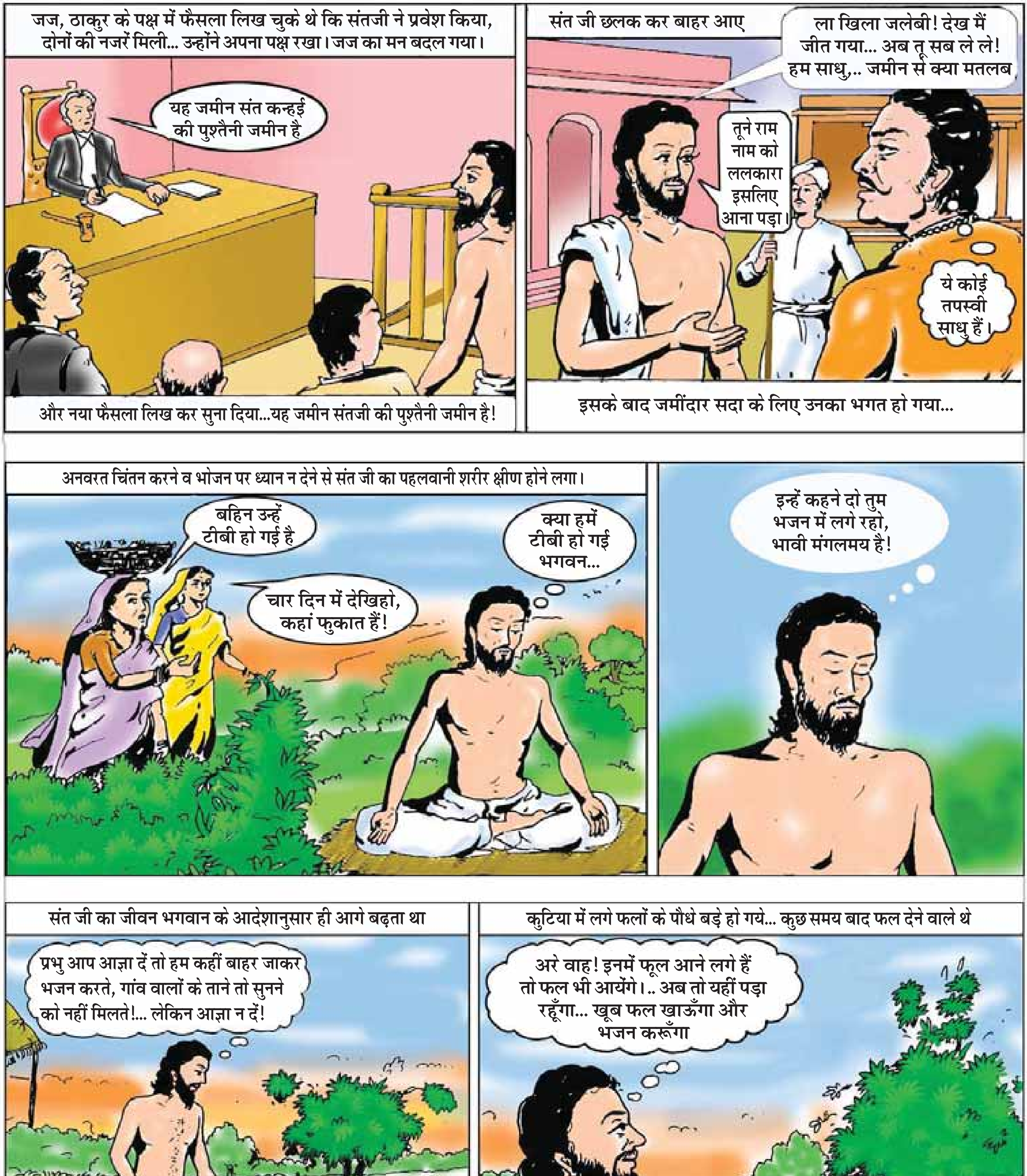
जज, ठाकुर के पक्ष में फैसला लिख चुके थे कि संतजी ने प्रवेश किया, दोनों की नजरें मिली... उन्होंने अपना पक्ष रखा। जज का मन बदल गया।
यह जमीन संत कन्हई की पुश्तैनी जमीन है
और नया फैसला लिख कर सुना दिया...यह जमीन संतजी की पुश्तैनी जमीन है!
संत जी छलक कर बाहर आए
ला खिला जलेबी! देख मैं जीत गया... अब तू सब ले ले! हम साधु,.. जमीन से क्या मतलब
तूने राम नाम को ललकारा इसलिए आना पड़ा।
ये कोई तपस्वी साधु हैं।
इसके बाद जमींदार सदा के लिए उनका भगत हो गया...
अनवरत चिंतन करने व भोजन पर ध्यान न देने से संत जी का पहलवानी शरीर क्षीण होने लगा।
बहिन उन्हें टीबी हो गई है
चार दिन में देखिहो, कहां फुकात हैं!
क्या हमें टीबी हो गई भगवन...
इन्हें कहने दो तुम भजन में लगे रहो, भावी मंगलमय है!
संत जी का जीवन भगवान के आदेशानुसार ही आगे बढ़ता था
प्रभु आप आज्ञा दें तो हम कहीं बाहर जाकर भजन करते, गांव वालों के ताने तो सुनने को नहीं मिलते!... लेकिन आज्ञा न दें!
कुटिया में लगे फलों के पौधे बड़े हो गये... कुछ समय बाद फल देने वाले थे
अरे वाह! इनमें फूल आने लगे हैं तो फल भी आयेंगे।.. अब तो यहीं पड़ा रहूँगा... खूब फल खाऊँगा और भजन करूँगा

बगीचे के प्रति ममता जागते ही भगवान ने आदेश दे दिया
प्रयागराज जाओ !
संत जी प्रभु का आदेश पाकर अत्यन्त खुश हुये... जैसे पंछी पिजड़े से उड़ चला हो...
संत जी ! कहाँ की तैयारी ?
प्रयागराज ।... बगीचे के प्रति जरा सी ममता हुई कि भगवान बोले- उठ यहाँ से !
हम लोग भी चलेंगे!
संत जी 5 वर्ष तक उस कुटिया में रहकर पहली बार निकले...
संत जी भगतों के साथ प्रयाग आ गये... घूमे फिरे, स्नान किया, नाव में बैठ गये... उसमें दो संत बैठे थे... उनका सुंदर लोटा रखा हुआ था
आपका लोटा बहुत सुन्दर है!
अरे, इसे क्यों भर रहे हैं ? यह फूटा हुआ है, पानी टिकता ही नहीं
संतजी ने लोटे को मांजकर, जल भरकर रख दिया...
संतजी और शास्त्रों के जानकार वैष्णव संतों में ज्ञान चर्चा शुरु हो गयी, प्रश्न-उत्तर चल ही रहे थे कि वैष्णव संत की नजर लोटे पर गई...
महाराज! आप जो कुछ कह रहे हैं, सही है!
हम लोग तो शास्त्रों से पढ़कर रटकर बोलते हैं.. आपको ज्ञान भगवान से मिला है
लोटे में पानी ज्यों का त्यों भरा था
देखिए! यह लोटा दो साल से फूटा हुआ है, पन्द्रह मिनट में खाली हो जाता है... आपने इसे छू दिया तो पानी नहीं गिरा ।... जब फूटे लोटे में पानी टिक सकता है तो आपकी बात बिल्कुल सत्य है
भगवान ही अपने भक्त की मर्यादा रखते हैं...

शाम होने पर संत जी भक्तों के साथ रेत में चद्दर बिछाकर विश्राम करने लगे... शीघ्र ही भक्तों को नींद आ गई
भगवन्! प्रयागराज तो आ गये, अब क्या करें ?
इन लोगों का साथ छोड़ दो! कमण्डल और छड़ी उठाओ... निकल जाओ इस दिशा में!
संत जी उसी समय सब को सोता छोड़कर चुपचाप गंगा किनारे-किनारे निकल गये, काशी की ओर...
रातभर पैदल चलते रहे... सवेरा हो गया...
भगवन! साथ भी छोड़ दिया, अब क्या आदेश है
शरीर पर जो वस्त्र है उसे उतार कर यहीं रख दो
भगवान ने लंगोटी भी उतरवा ली... संत जी गंगा में डुबकी लगाकर आये और पुनः पूछा...
भगवन! अब ?
बस! कपड़ा यहीं पड़ा रहने दो, छड़ी कमण्डल उठाओ, निकल जाओ आगे, इसी दिशा में
निर्वस्त्र संत जी की अज्ञात यात्रा शुरु हो गई... अब दो-तीन दिन का उपवास आये दिन की बात थी... किंतु संत जी कभी भिक्षा नहीं किए
भगवान ने हमारा कान पकड़ कर घर छुड़ाया है,वही भोजन की व्यवस्था करें! मैं क्यों भीख मांगू ?

संत जी किसी गांव या मंदिर में नहीं जाते थे... रात्रि में किसी वृक्ष के नीचे बैठ कर विश्राम ध्यान कर लेते... कोई स्वेच्छा से दे दे तो भोजन कर लेते
ठण्डी के दिन आ गये तो...रात में बांस की कोठी में बैठ कर भजन करते, जब ध्यान लग जाता तो अन्दर से गर्मी आ जाती। ऐसे ही आगे बढ़ते गये..
कभी रात को ध्यान उचट जाये तो इतनी ठण्ड लगे जैसे शरीर छूट जायेगा... तब उठकर सपाट दौड़ लगायें।
इस ठंड से बचने का यही उपाय है कि सपाट दौड़कर शरीर में गर्मी पैदा करूं
इस प्रकार भ्रमण करते हुए आप जौनपुर पहुँचे। एक सेठ ने उन्हें रोककर श्रद्धा से भोजन कराया...
महाराज! रात होने वाली है... यहीं कमरे में विश्राम करें यहां एकांत भी है
नहीं, इस एकांत से हमारा काम नहीं चलेगा... हम जाएंगे और कहीं शांत एकांत में, जहां मकान भी न हो
अंधेरा हो गया...वो शहर के बाहर सुनसान स्थान पर एक कुएं से सट कर बैठ गये, यह कब्रिस्तान था।... संत जी अब भजन (ध्यान) में बैठे... भजन में उनकी आंखें खुली रहती थीं... तभी दूर से कंकाल समीप आते दिखने लगे, उन्होंने ओम जपते हुए अपने चारों ओर एक गोला खींच दिया
ये आत्मायें गिड़ गिड़ा रहीं थी, जैसे आशीर्वाद मांग रही हों।
भगवान ने बताया- ये आत्माएं तुमसे सम्बधित रही हैं।... जन्म-मृत्यु का सिलसिला पीछे लगा है...
भगवान! इन्हें शांति प्रदान करें।
धीरे-धीरे दृश्य समाप्त हो गया

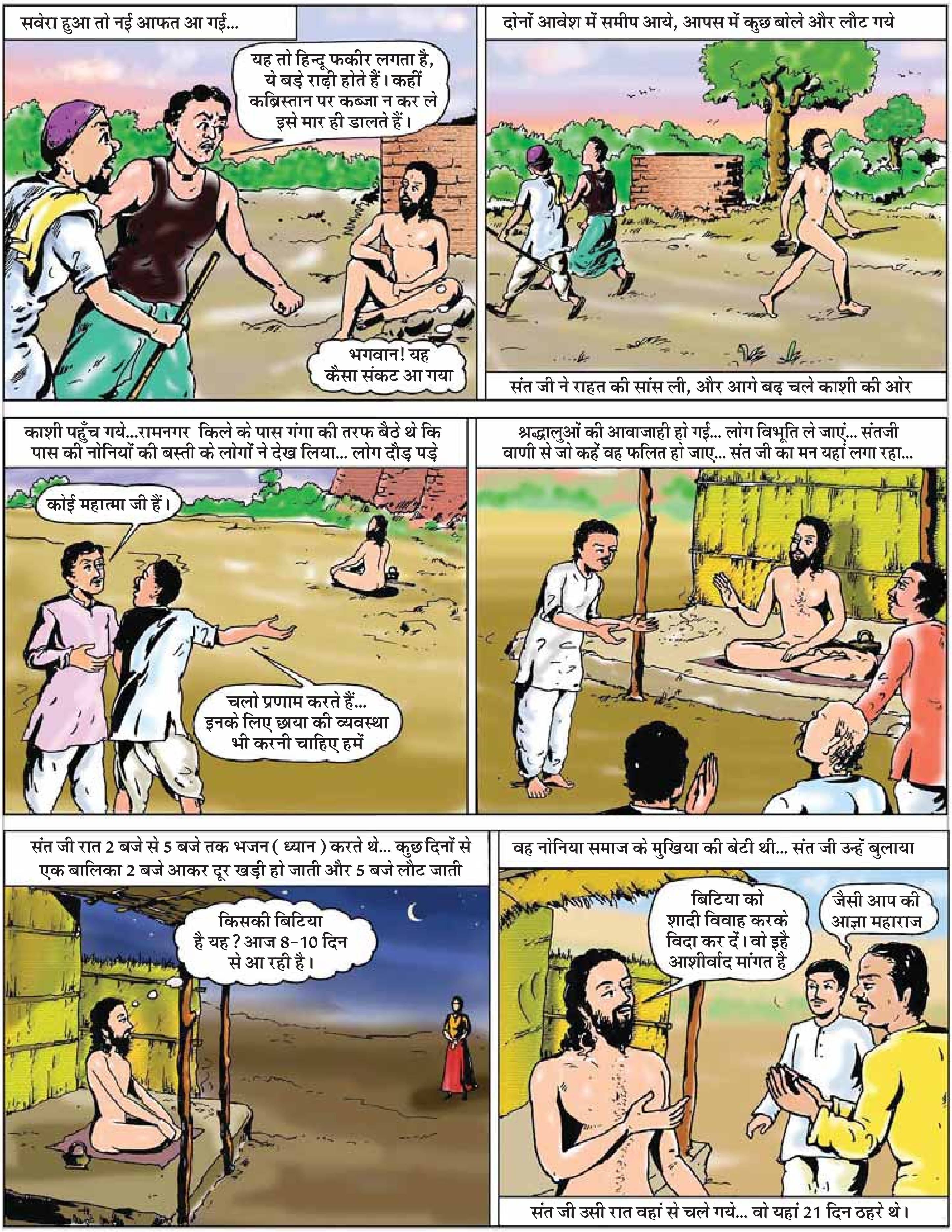
सवेरा हुआ तो नई आफत आ गई...
यह तो हिन्दू फकीर लगता है, ये बड़े राढ़ी होते हैं। कहीं कब्रिस्तान पर कब्जा न कर ले इसे मार ही डालते हैं।
भगवान! यह कैसा संकट आ गया
दोनों आवेश में समीप आये, आपस में कुछ बोले और लौट गये
संत जी ने राहत की सांस ली, और आगे बढ़ चले काशी की ओर
काशी पहुँच गये...रामनगर किले के पास गंगा की तरफ बैठे थे कि पास की नोनियों की बस्ती के लोगों ने देख लिया... लोग दौड़ पड़े
कोई महात्मा जी हैं।
चलो प्रणाम करते हैं... इनके लिए छाया की व्यवस्था भी करनी चाहिए हमें
श्रद्धालुओं की आवाजाही हो गई... लोग विभूति ले जाएं... संतजी वाणी से जो कहें वह फलित हो जाए... संत जी का मन यहां लगा रहा...
संत जी रात 2 बजे से 5 बजे तक भजन (ध्यान) करते थे... कुछ दिनों से एक बालिका 2 बजे आकर दूर खड़ी हो जाती और 5 बजे लौट जाती
किसकी बिटिया है यह ? आज 8-10 दिन से आ रही है।
वह नोनिया समाज के मुखिया की बेटी थी... संत जी उन्हें बुलाया
बिटिया को शादी विवाह करके विदा कर दें। वो इहै आशीर्वाद मांगत है
जैसी आप की आज्ञा महाराज
संत जी उसी रात वहां से चले गये... वो यहां 21 दिन ठहरे थे।

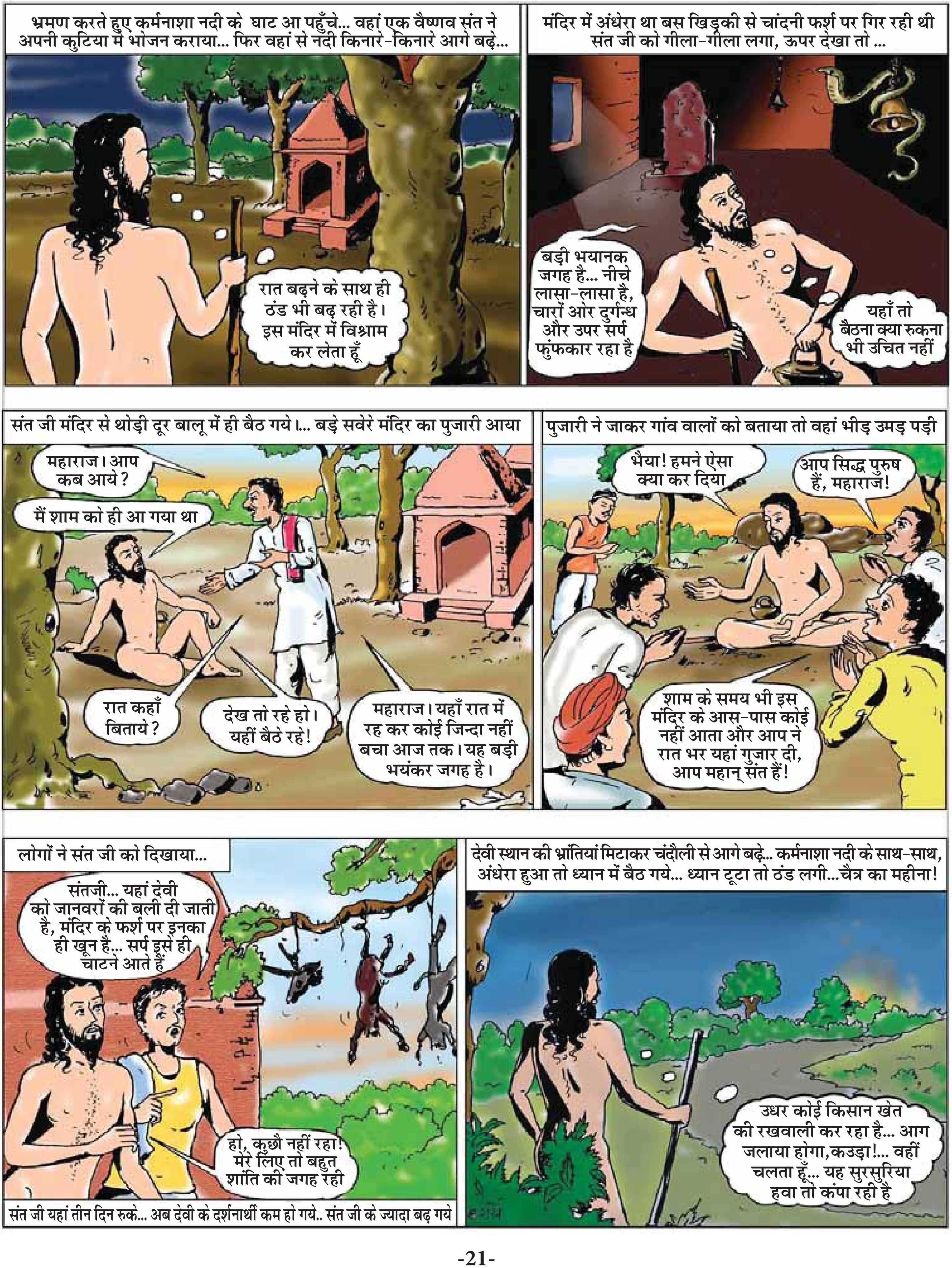
भ्रमण करते हुए कर्मनाशा नदी के घाट आ पहुँचे... वहां एक वैष्णव संत ने अपनी कुटिया में भोजन कराया... फिर वहां से नदी किनारे-किनारे आगे बढ़े...
रात बढ़ने के साथ ही ठंड भी बढ़ रही है। इस मंदिर में विश्राम कर लेता हूँ
मंदिर में अंधेरा था बस खिड़की से चांदनी फर्श पर गिर रही थी संत जी को गीला-गीला लगा, ऊपर देखा तो ...
बड़ी भयानक जगह है... नीचे लासा-लासा है, चारों ओर दुर्गन्ध और उपर सर्प फुंफकार रहा है
यहाँ तो बैठना क्या रुकना भी उचित नहीं
संत जी मंदिर से थोड़ी दूर बालू में ही बैठ गये।... बड़े सवेरे मंदिर का पुजारी आया
महाराज। आप कब आये ?
मैं शाम को ही आ गया था
रात कहाँ बिताये ?
देख तो रहे हो। यहीं बैठे रहे!
महाराज। यहाँ रात में रह कर कोई जिन्दा नहीं बचा आज तक। यह बड़ी भयंकर जगह है।
पुजारी ने जाकर गांव वालों को बताया तो वहां भीड़ उमड़ पड़ी
भैया! हमने ऐसा क्या कर दिया
आप सिद्ध पुरुष हैं, महाराज!
शाम के समय भी इस मंदिर के आस-पास कोई नहीं आता और आप ने रात भर यहां गुजार दी, आप महान् संत हैं!
लोगों ने संत जी को दिखाया...
संतजी... यहां देवी को जानवरों की बली दी जाती है, मंदिर के फर्श पर इनका ही खून है... सर्प इसे ही चाटने आते हैं
हो, कुछौ नहीं रहा! मेरे लिए तो बहुत शांति की जगह रही
संत जी यहां तीन दिन रुके... अब देवी के दर्शनार्थी कम हो गये.. संत जी के ज्यादा बढ़ गये
देवी स्थान की भ्रांतियां मिटाकर चंदौली से आगे बढ़े... कर्मनाशा नदी के साथ-साथ, अंधेरा हुआ तो ध्यान में बैठ गये... ध्यान टूटा तो ठंड लगी...चैत्र का महीना!
उधर कोई किसान खेत की रखवाली कर रहा है... आग जलाया होगा, कउड़ा!... वहीं चलता हूँ... यह सुरसुरिया हवा तो कंपा रही है

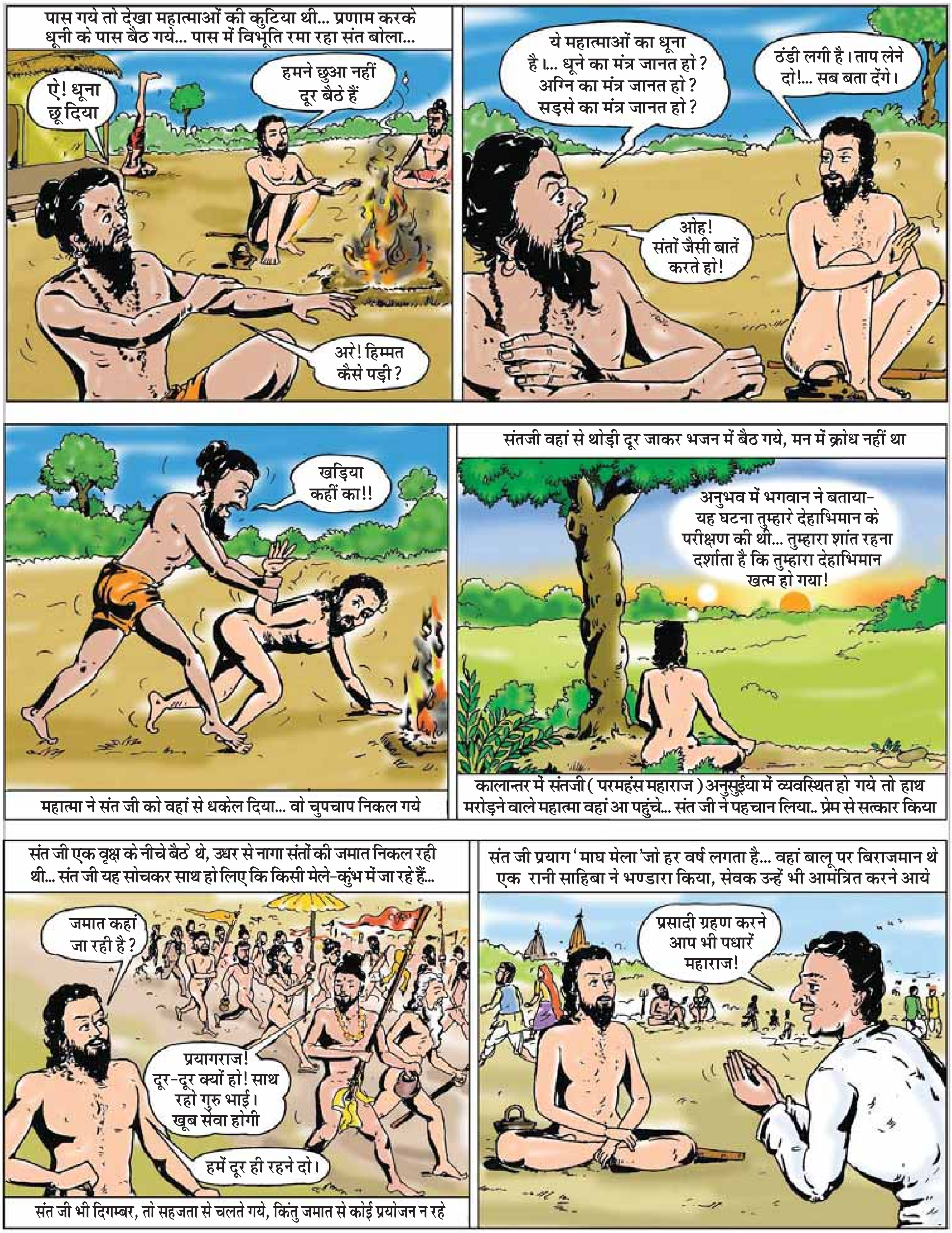
पास गये तो देखा महात्माओं की कुटिया थी... प्रणाम करके धूनी के पास बैठ गये... पास में विभूति रमा रहा संत बोला...
ऐ! धूना छू दिया
हमने छुआ नहीं दूर बैठे हैं
अरे! हिम्मत कैसे पड़ी?
ये महात्माओं का धूना है।... धूने का मंत्र जानत हो? अग्नि का मंत्र जानत हो? सड़से का मंत्र जानत हो?
ठंडी लगी है। ताप लेने दो!... सब बता देंगे।
ओह! संतों जैसी बातें करते हो!
खड़िया कहीं का!!
महात्मा ने संत जी को वहां से धकेल दिया... वो चुपचाप निकल गये
संतजी वहां से थोड़ी दूर जाकर भजन में बैठ गये, मन में क्रोध नहीं था
अनुभव में भगवान ने बताया- यह घटना तुम्हारे देहाभिमान के परीक्षण की थी... तुम्हारा शांत रहना दर्शाता है कि तुम्हारा देहाभिमान खत्म हो गया!
कालान्तर में संतजी (परमहंस महाराज) अनुसुईया में व्यवस्थित हो गये तो हाथ मरोड़ने वाले महात्मा वहां आ पहुंचे... संत जी ने पहचान लिया.. प्रेम से सत्कार किया
संत जी एक वृक्ष के नीचे बैठे थे, उधर से नागा संतों की जमात निकल रही थी... संत जी यह सोचकर साथ हो लिए कि किसी मेले-कुंभ में जा रहे हैं...
जमात कहां जा रही है?
प्रयागराज! दूर-दूर क्यों हो! साथ रहो गुरु भाई। खूब सेवा होगी
हमें दूर ही रहने दो।
संत जी भी दिगम्बर, तो सहजता से चलते गये, किंतु जमात से कोई प्रयोजन न रहे
संत जी प्रयाग 'माघ मेला' जो हर वर्ष लगता है... वहां बालू पर बिराजमान थे एक रानी साहिबा ने भण्डारा किया, सेवक उन्हें भी आमंत्रित करने आये
प्रसादी ग्रहण करने आप भी पधारें महाराज!

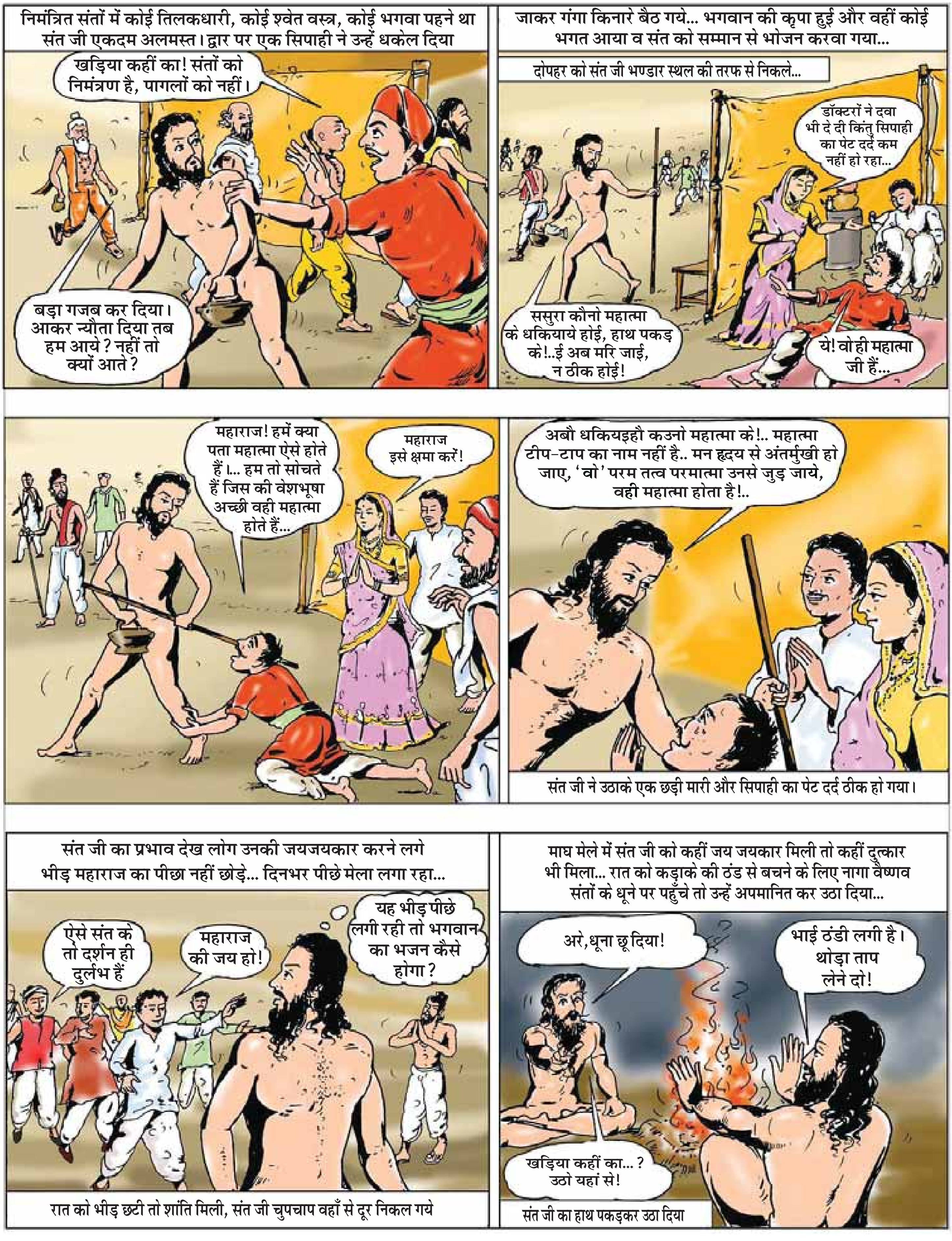

निमंत्रित संतों में कोई तिलकधारी, कोई श्वेत वस्त्र, कोई भगवा पहने था
संत जी एकदम अलमस्त। द्वार पर एक सिपाही ने उन्हें धकेल दिया
खड़िया कहीं का! संतों को निमंत्रण है, पागलों को नहीं।
बड़ा गजब कर दिया। आकर न्यौता दिया तब हम आये? नहीं तो क्यों आते?
जाकर गंगा किनारे बैठ गये... भगवान की कृपा हुई और वहीं कोई भगत आया व संत को सम्मान से भोजन करवा गया...
दोपहर को संत जी भण्डार स्थल की तरफ से निकले...
डॉक्टरों ने दवा भी दे दी किंतु सिपाही का पेट दर्द कम नहीं हो रहा...
ससुरा कौनो महात्मा के धकियाये होई, हाथ पकड़ के!..ई अब मरि जाई, न ठीक होई!
ये! वो ही महात्मा जी हैं...
महाराज! हमें क्या पता महात्मा ऐसे होते हैं।... हम तो सोचते हैं जिस की वेशभूषा अच्छी वही महात्मा होते हैं...
महाराज इसे क्षमा करें!
अबौ धकियइहौ कउनो महात्मा के!.. महात्मा टीप-टाप का नाम नहीं है.. मन हृदय से अंतर्मुखी हो जाए, 'वो' परम तत्व परमात्मा उनसे जुड़ जाये, वही महात्मा होता है!..
संत जी ने उठाके एक छड़ी मारी और सिपाही का पेट दर्द ठीक हो गया।
संत जी का प्रभाव देख लोग उनकी जयजयकार करने लगे भीड़ महाराज का पीछा नहीं छोड़े... दिनभर पीछे मेला लगा रहा...
ऐसे संत के तो दर्शन ही दुर्लभ हैं
महाराज की जय हो!
यह भीड़ पीछे लगी रही तो भगवान का भजन कैसे होगा?
रात को भीड़ छटी तो शांति मिली, संत जी चुपचाप वहाँ से दूर निकल गये
माघ मेले में संत जी को कहीं जय जयकार मिली तो कहीं दुत्कार भी मिला... रात को कड़ाके की ठंड से बचने के लिए नागा वैष्णव संतों के धूने पर पहुँचे तो उन्हें अपमानित कर उठा दिया...
अरे, धूना छू दिया!
भाई ठंडी लगी है। थोड़ा ताप लेने दो!
खड़िया कहीं का...? उठो यहां से!
संत जी का हाथ पकड़कर उठा दिया

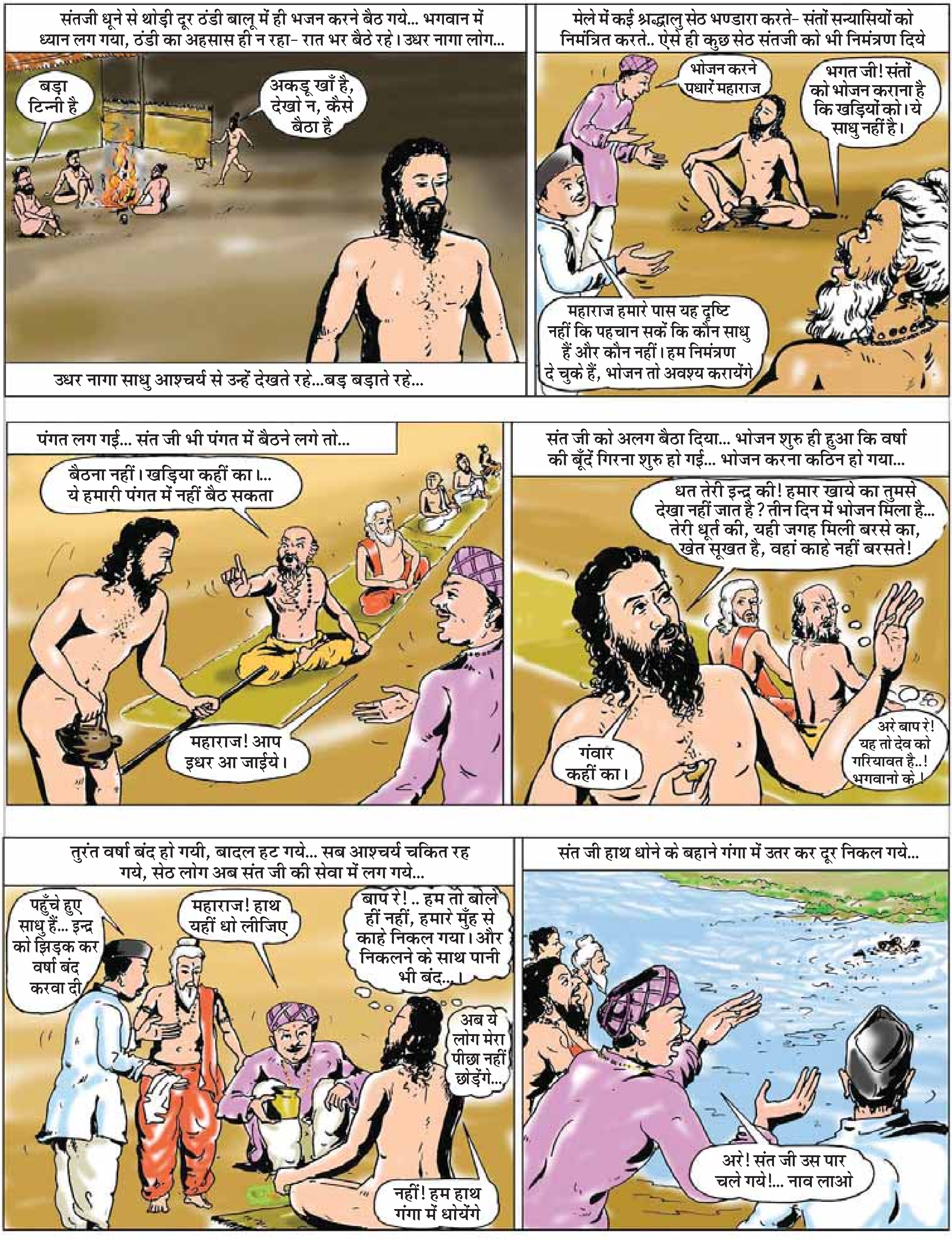
संतजी धूने से थोड़ी दूर ठंडी बालू में ही भजन करने बैठ गये... भगवान में ध्यान लग गया, ठंडी का अहसास ही न रहा- रात भर बैठे रहे। उधर नागा लोग...
बड़ा टिन्नी है
अकड़ू खाँ है, देखो न, कैसे बैठा है
उधर नागा साधु आश्चर्य से उन्हें देखते रहे...बड़ बड़ाते रहे...
मेले में कई श्रद्धालु सेठ भण्डारा करते- संतों सन्यासियों को निमंत्रित करते.. ऐसे ही कुछ सेठ संतजी को भी निमंत्रण दिये
भोजन करने पधारें महाराज
भगत जी! संतों को भोजन कराना है कि खड़ियों को। ये साधु नहीं है।
महाराज हमारे पास यह दृष्टि नहीं कि पहचान सकें कि कौन साधु हैं और कौन नहीं। हम निमंत्रण दे चुके हैं, भोजन तो अवश्य करायेंगे
पंगत लग गई... संत जी भी पंगत में बैठने लगे तो...
बैठना नहीं। खड़िया कहीं का।... ये हमारी पंगत में नहीं बैठ सकता
महाराज! आप इधर आ जाईये।
संत जी को अलग बैठा दिया... भोजन शुरु ही हुआ कि वर्षा की बूँदें गिरना शुरु हो गई... भोजन करना कठिन हो गया...
धत तेरी इन्द्र की! हमार खाये का तुमसे देखा नहीं जात है? तीन दिन में भोजन मिला है... तेरी धूर्त की, यही जगह मिली बरसे का, खेत सूखत है, वहां काहे नहीं बरसते!
गंवार कहीं का।
अरे बाप रे! यह तो देव को गरियावत है..! भगवानो के!
तुरंत वर्षा बंद हो गयी, बादल हट गये... सब आश्चर्य चकित रह गये, सेठ लोग अब संत जी की सेवा में लग गये...
पहुँचे हुए साधु हैं... इन्द्र को झिड़क कर वर्षा बंद करवा दी
महाराज! हाथ यहीं धो लीजिए
बाप रे! .. हम तो बोले हीं नहीं, हमारे मुँह से काहे निकल गया। और निकलने के साथ पानी भी बंद...।
अब ये लोग मेरा पीछा नहीं छोड़ेंगे...
नहीं! हम हाथ गंगा में धोयेंगे
संत जी हाथ धोने के बहाने गंगा में उतर कर दूर निकल गये...
अरे! संत जी उस पार चले गये!... नाव लाओ

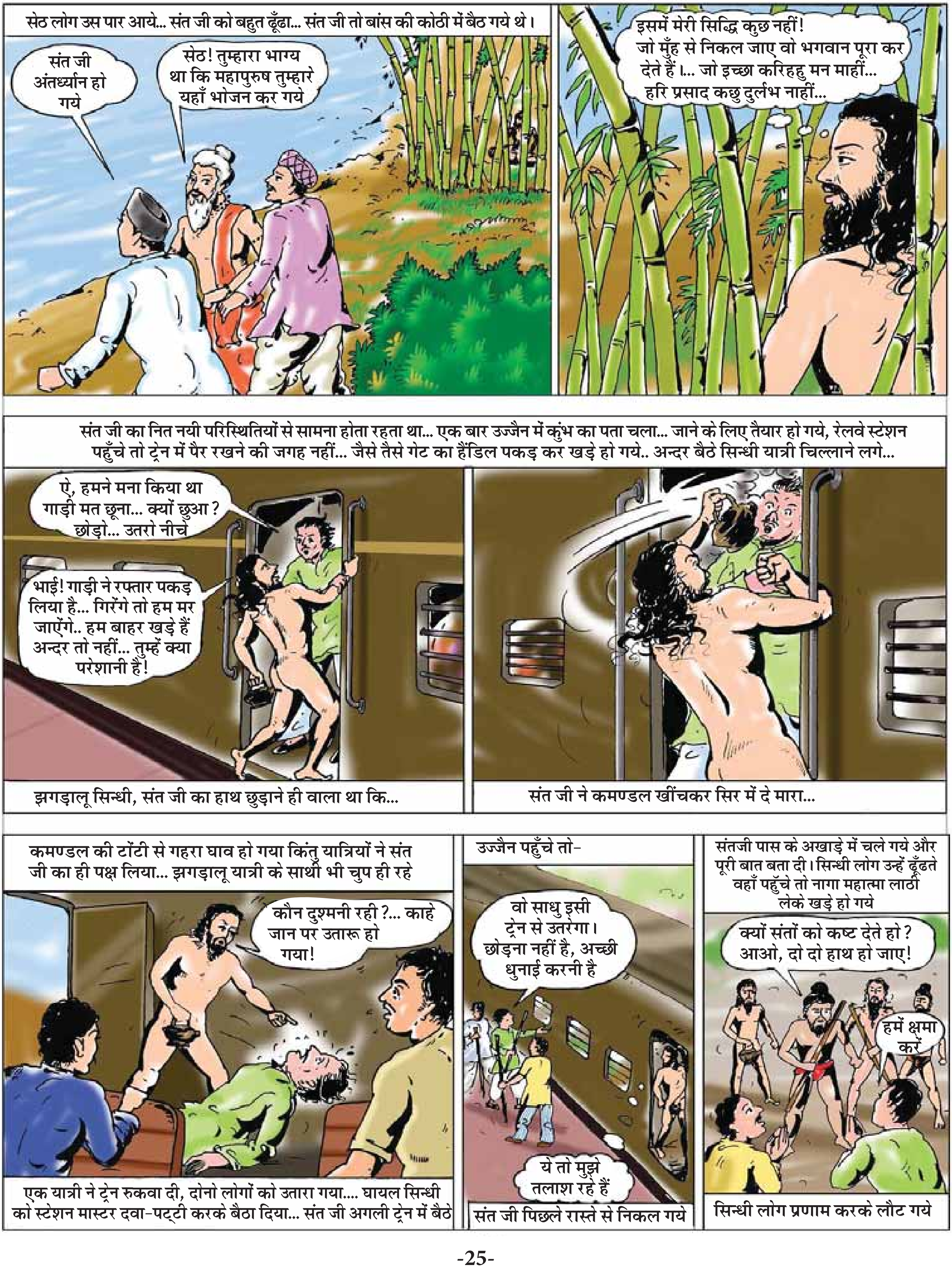
सेठ लोग उस पार आये... संत जी को बहुत ढूँढा... संत जी तो बांस की कोठी में बैठ गये थे।
संत जी अंतर्ध्यान हो गये
सेठ! तुम्हारा भाग्य था कि महापुरुष तुम्हारे यहाँ भोजन कर गये
इसमें मेरी सिद्धि कुछ नहीं! जो मुँह से निकल जाए वो भगवान पूरा कर देते हैं।... जो इच्छा करिहहु मन माहीं... हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं...
संत जी का नित नयी परिस्थितियों से सामना होता रहता था... एक बार उज्जैन में कुंभ का पता चला... जाने के लिए तैयार हो गये, रेलवे स्टेशन पहुँचे तो ट्रेन में पैर रखने की जगह नहीं... जैसे तैसे गेट का हैंडिल पकड़ कर खड़े हो गये.. अन्दर बैठे सिन्धी यात्री चिल्लाने लगे...
ऐ, हमने मना किया था गाड़ी मत छूना... क्यों छुआ? छोड़ो... उतरो नीचे
भाई! गाड़ी ने रफ्तार पकड़ लिया है... गिरेंगे तो हम मर जाएंगे.. हम बाहर खड़े हैं अन्दर तो नहीं... तुम्हें क्या परेशानी है!
झगड़ालू सिन्धी, संत जी का हाथ छुड़ाने ही वाला था कि...
संत जी ने कमण्डल खींचकर सिर में दे मारा...
कमण्डल की टोंटी से गहरा घाव हो गया किंतु यात्रियों ने संत जी का ही पक्ष लिया... झगड़ालू यात्री के साथी भी चुप ही रहे
कौन दुश्मनी रही?... काहे जान पर उतारू हो गया!
एक यात्री ने ट्रेन रुकवा दी, दोनो लोगों को उतारा गया.... घायल सिन्धी को स्टेशन मास्टर दवा-पट्टी करके बैठा दिया... संत जी अगली ट्रेन में बैठे
उज्जैन पहुँचे तो-
वो साधु इसी ट्रेन से उतरेगा। छोड़ना नहीं है, अच्छी धुनाई करनी है
ये तो मुझे तलाश रहे हैं
संत जी पिछले रास्ते से निकल गये
संतजी पास के अखाड़े में चले गये और पूरी बात बता दी। सिन्धी लोग उन्हें ढूँढते वहाँ पहुँचे तो नागा महात्मा लाठी लेके खड़े हो गये
क्यों संतों को कष्ट देते हो? आओ, दो दो हाथ हो जाए!
हमें क्षमा करें
सिन्धी लोग प्रणाम करके लौट गये

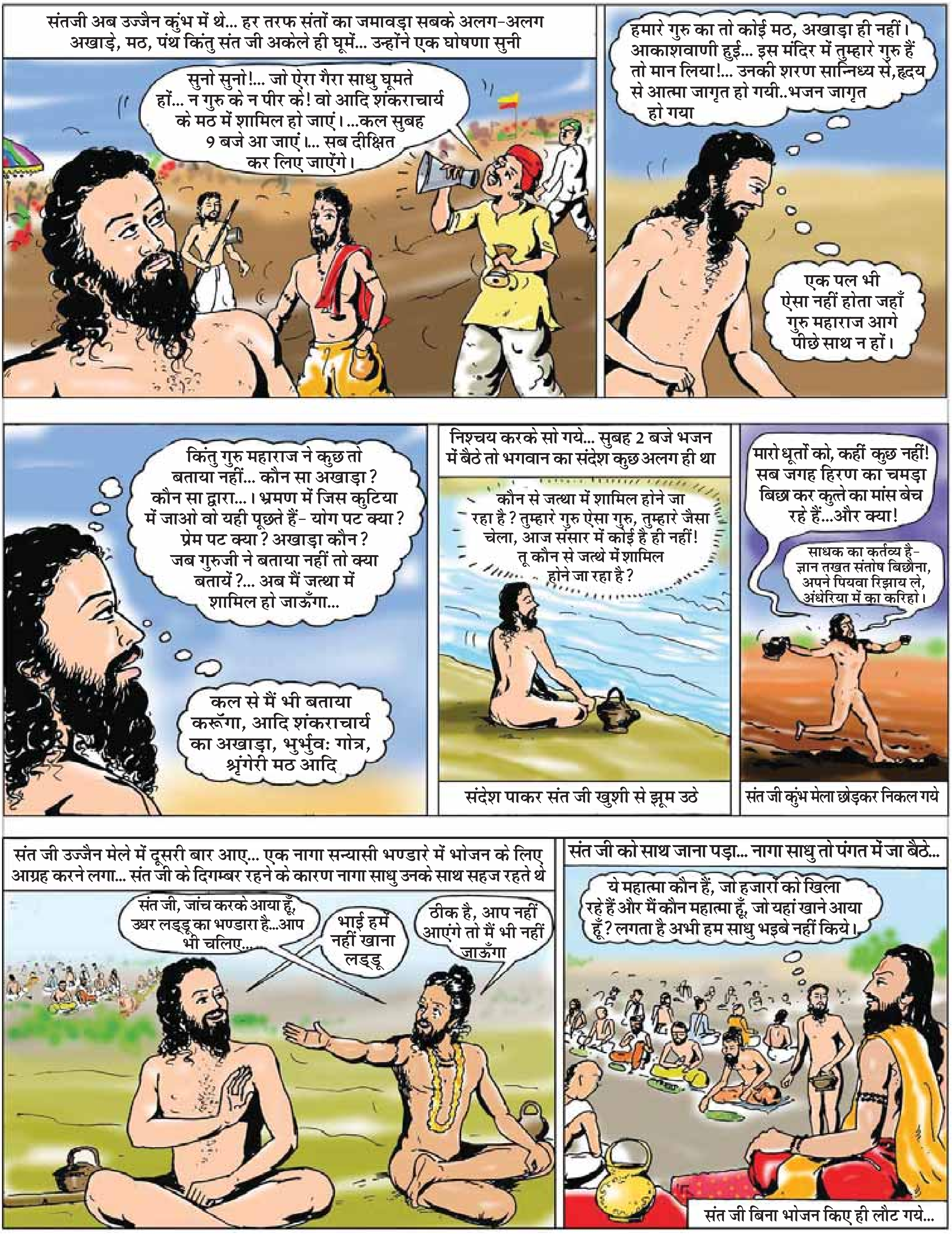
संतजी अब उज्जैन कुंभ में थे... हर तरफ संतों का जमावड़ा सबके अलग-अलग अखाड़े, मठ, पंथ किंतु संत जी अकेले ही घूमें... उन्होंने एक घोषणा सुनी
सुनो सुनो!... जो ऐरा गैरा साधु घूमते हों... न गुरु के न पीर के! वो आदि शंकराचार्य के मठ में शामिल हो जाएं। ...कल सुबह 9 बजे आ जाएं।... सब दीक्षित कर लिए जाएंगे।
हमारे गुरु का तो कोई मठ, अखाड़ा ही नहीं। आकाशवाणी हुई... इस मंदिर में तुम्हारे गुरु हैं तो मान लिया!... उनकी शरण सान्निध्य से, हृदय से आत्मा जागृत हो गयी..भजन जागृत हो गया
एक पल भी ऐसा नहीं होता जहाँ गुरु महाराज आगे पीछे साथ न हों।
किंतु गुरु महाराज ने कुछ तो बताया नहीं... कौन सा अखाड़ा? कौन सा द्वारा...। भ्रमण में जिस कुटिया में जाओ वो यही पूछते हैं- योग पट क्या? प्रेम पट क्या? अखाड़ा कौन? जब गुरुजी ने बताया नहीं तो क्या बतायें?... अब मैं जत्था में शामिल हो जाऊँगा...
कल से मैं भी बताया करूँगा, आदि शंकराचार्य का अखाड़ा, भुर्भुवः गोत्र, श्रृंगेरी मठ आदि
निश्चय करके सो गये... सुबह 2 बजे भजन में बैठे तो भगवान का संदेश कुछ अलग ही था
कौन से जत्था में शामिल होने जा रहा है? तुम्हारे गुरु ऐसा गुरु, तुम्हारे जैसा चेला, आज संसार में कोई है ही नहीं! तू कौन से जत्थे में शामिल होने जा रहा है?
संदेश पाकर संत जी खुशी से झूम उठे
मारो धूर्तों को, कहीं कुछ नहीं! सब जगह हिरण का चमड़ा बिछा कर कुत्ते का मांस बेच रहे हैं...और क्या!
साधक का कर्तव्य है- ज्ञान तखत संतोष बिछौना, अपने पियवा रिझाय ले, अंधेरिया में का करिहो।
संत जी कुंभ मेला छोड़कर निकल गये
संत जी उज्जैन मेले में दूसरी बार आए... एक नागा सन्यासी भण्डारे में भोजन के लिए आग्रह करने लगा... संत जी के दिगम्बर रहने के कारण नागा साधु उनके साथ सहज रहते थे
संत जी, जांच करके आया हूँ, उधर लड्डू का भण्डारा है...आप भी चलिए...
भाई हमें नहीं खाना लड्डू
ठीक है, आप नहीं आएंगे तो मैं भी नहीं जाऊँगा
संत जी को साथ जाना पड़ा... नागा साधु तो पंगत में जा बैठे...
ये महात्मा कौन हैं, जो हजारों को खिला रहे हैं और मैं कौन महात्मा हूँ, जो यहां खाने आया हूँ? लगता है अभी हम साधु भइबे नहीं किये।
संत जी बिना भोजन किए ही लौट गये...

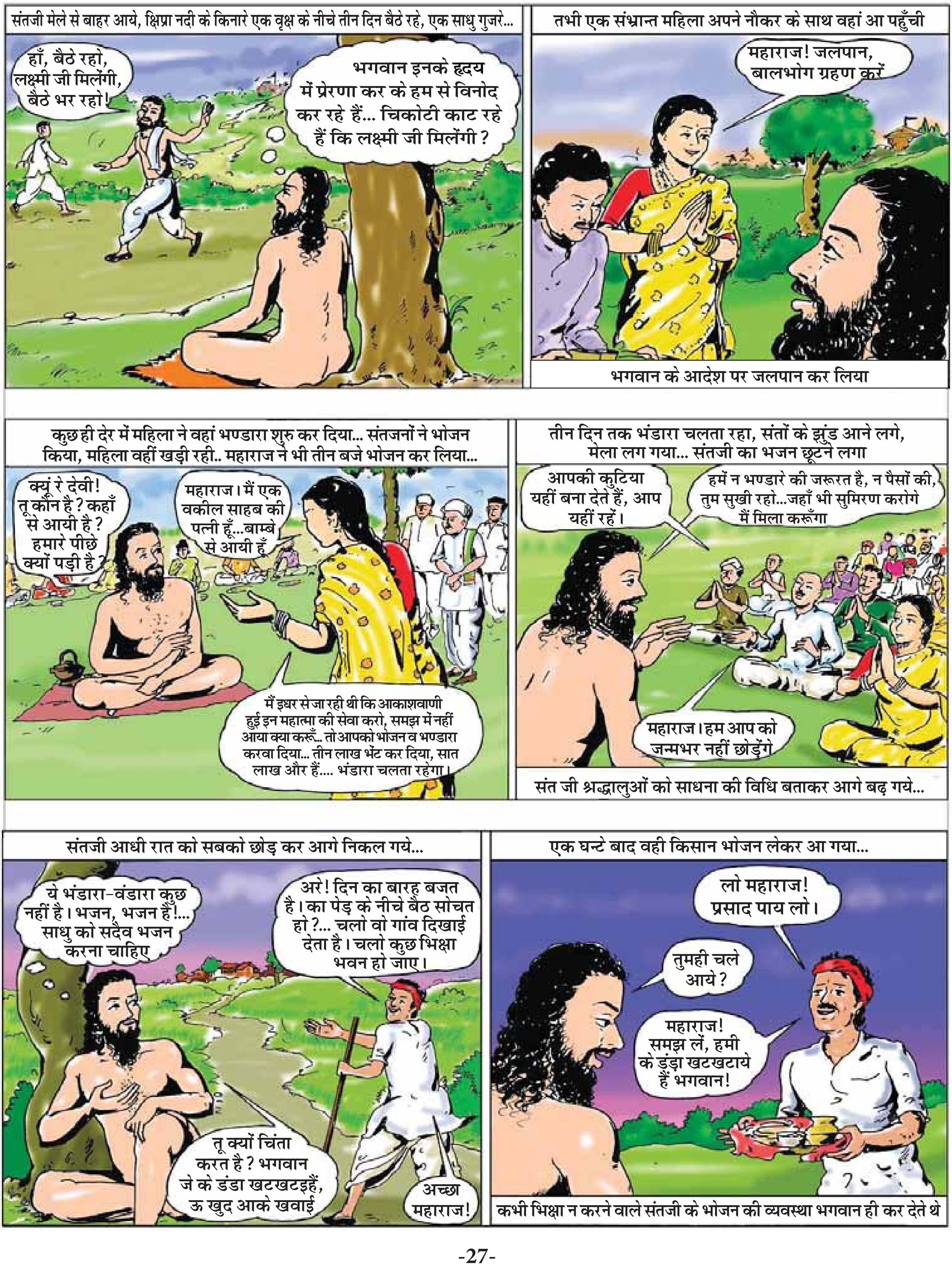
संतजी मेले से बाहर आये, क्षिप्रा नदी के किनारे एक वृक्ष के नीचे तीन दिन बैठे रहे, एक साधु गुजरे...
हाँ, बैठे रहो, लक्ष्मी जी मिलेंगी, बैठे भर रहो!
भगवान इनके हृदय में प्रेरणा कर के हम से विनोद कर रहे हैं... चिकोटी काट रहे हैं कि लक्ष्मी जी मिलेंगी ?
तभी एक संभ्रान्त महिला अपने नौकर के साथ वहां आ पहुँची
महाराज! जलपान, बालभोग ग्रहण करें
भगवान के आदेश पर जलपान कर लिया
कुछ ही देर में महिला ने वहां भण्डारा शुरु कर दिया... संतजनों ने भोजन किया, महिला वहीं खड़ी रही.. महाराज ने भी तीन बजे भोजन कर लिया...
क्यूं रे देवी! तू कौन है ? कहाँ से आयी है ? हमारे पीछे क्यों पड़ी है ?
महाराज। मैं एक वकील साहब की पत्नी हूँ...बाम्बे से आयी हूँ
मैं इधर से जा रही थी कि आकाशवाणी हुई इन महात्मा की सेवा करो, समझ में नहीं आया क्या करूँ... तो आपको भोजन व भण्डारा करवा दिया... तीन लाख भेंट कर दिया, सात लाख और हैं.... भंडारा चलता रहेगा।
तीन दिन तक भंडारा चलता रहा, संतों के झुंड आने लगे, मेला लग गया... संतजी का भजन छूटने लगा
आपकी कुटिया यहीं बना देते हैं, आप यहीं रहें।
हमें न भण्डारे की जरूरत है, न पैसों की, तुम सुखी रहो...जहाँ भी सुमिरण करोगे मैं मिला करूँगा
महाराज। हम आप को जन्मभर नहीं छोड़ेंगे
संत जी श्रद्धालुओं को साधना की विधि बताकर आगे बढ़ गये...
संतजी आधी रात को सबको छोड़ कर आगे निकल गये...
ये भंडारा-वंडारा कुछ नहीं है। भजन, भजन है!... साधु को सदैव भजन करना चाहिए
अरे! दिन का बारह बजत है। का पेड़ के नीचे बैठ सोचत हो ?... चलो वो गांव दिखाई देता है। चलो कुछ भिक्षा भवन हो जाए।
तू क्यों चिंता करत है ? भगवान जे के डंडा खटखटइहैं, ऊ खुद आके खवाई
अच्छा महाराज!
एक घन्टे बाद वही किसान भोजन लेकर आ गया...
लो महाराज! प्रसाद पाय लो।
तुमही चले आये ?
महाराज! समझ लें, हमी के डंड़ा खटखटाये हैं भगवान!
कभी भिक्षा न करने वाले संतजी के भोजन की व्यवस्था भगवान ही कर देते थे

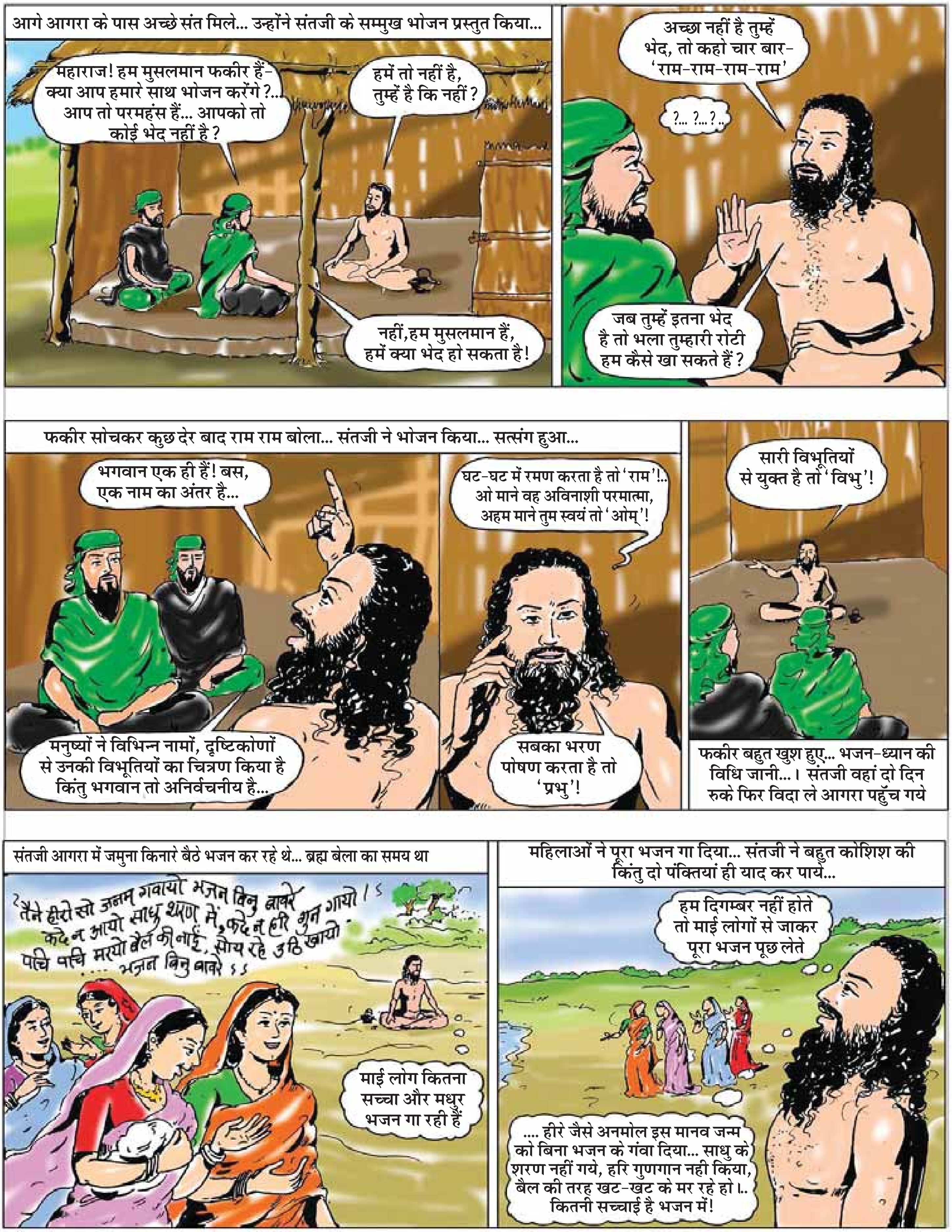
आगे आगरा के पास अच्छे संत मिले... उन्होंने संतजी के सम्मुख भोजन प्रस्तुत किया...
महाराज! हम मुसलमान फकीर हैं- क्या आप हमारे साथ भोजन करेंगे?... आप तो परमहंस हैं... आपको तो कोई भेद नहीं है?
हमें तो नहीं है, तुम्हें है कि नहीं?
नहीं,हम मुसलमान हैं, हमें क्या भेद हो सकता है!
अच्छा नहीं है तुम्हें भेद, तो कहो चार बार- 'राम-राम-राम-राम'
?... ?... ?..
जब तुम्हें इतना भेद है तो भला तुम्हारी रोटी हम कैसे खा सकते हैं?
फकीर सोचकर कुछ देर बाद राम राम बोला... संतजी ने भोजन किया... सत्संग हुआ...
भगवान एक ही हैं! बस, एक नाम का अंतर है...
मनुष्यों ने विभिन्न नामों, दृष्टिकोणों से उनकी विभूतियों का चित्रण किया है किंतु भगवान तो अनिर्वचनीय है...
घट-घट में रमण करता है तो 'राम'!.. ओ माने वह अविनाशी परमात्मा, अहम माने तुम स्वयं तो 'ओम्'!
सबका भरण पोषण करता है तो 'प्रभु'!
सारी विभूतियों से युक्त है तो 'विभु'!
फकीर बहुत खुश हुए... भजन-ध्यान की विधि जानी...। संतजी वहां दो दिन रुके फिर विदा ले आगरा पहुँच गये
संतजी आगरा में जमुना किनारे बैठे भजन कर रहे थे... ब्रह्म बेला का समय था
तैने हीरो सो जनम गवायो भजन बिनु बावरे
कदे न आयो साधु शरण में, कदे न हरि गुन गायो
पचि पचि मरयो बैल की नाईं, सोय रहे उठि खायो
... भजन बिनु बावरे
माई लोग कितना सच्चा और मधुर भजन गा रही हैं
महिलाओं ने पूरा भजन गा दिया... संतजी ने बहुत कोशिश की किंतु दो पंक्तियां ही याद कर पाये...
हम दिगम्बर नहीं होते तो माई लोगों से जाकर पूरा भजन पूछ लेते
.... हीरे जैसे अनमोल इस मानव जन्म को बिना भजन के गंवा दिया... साधु के शरण नहीं गये, हरि गुणगान नही किया, बैल की तरह खट-खट के मर रहे हो।.. कितनी सच्चाई है भजन में!

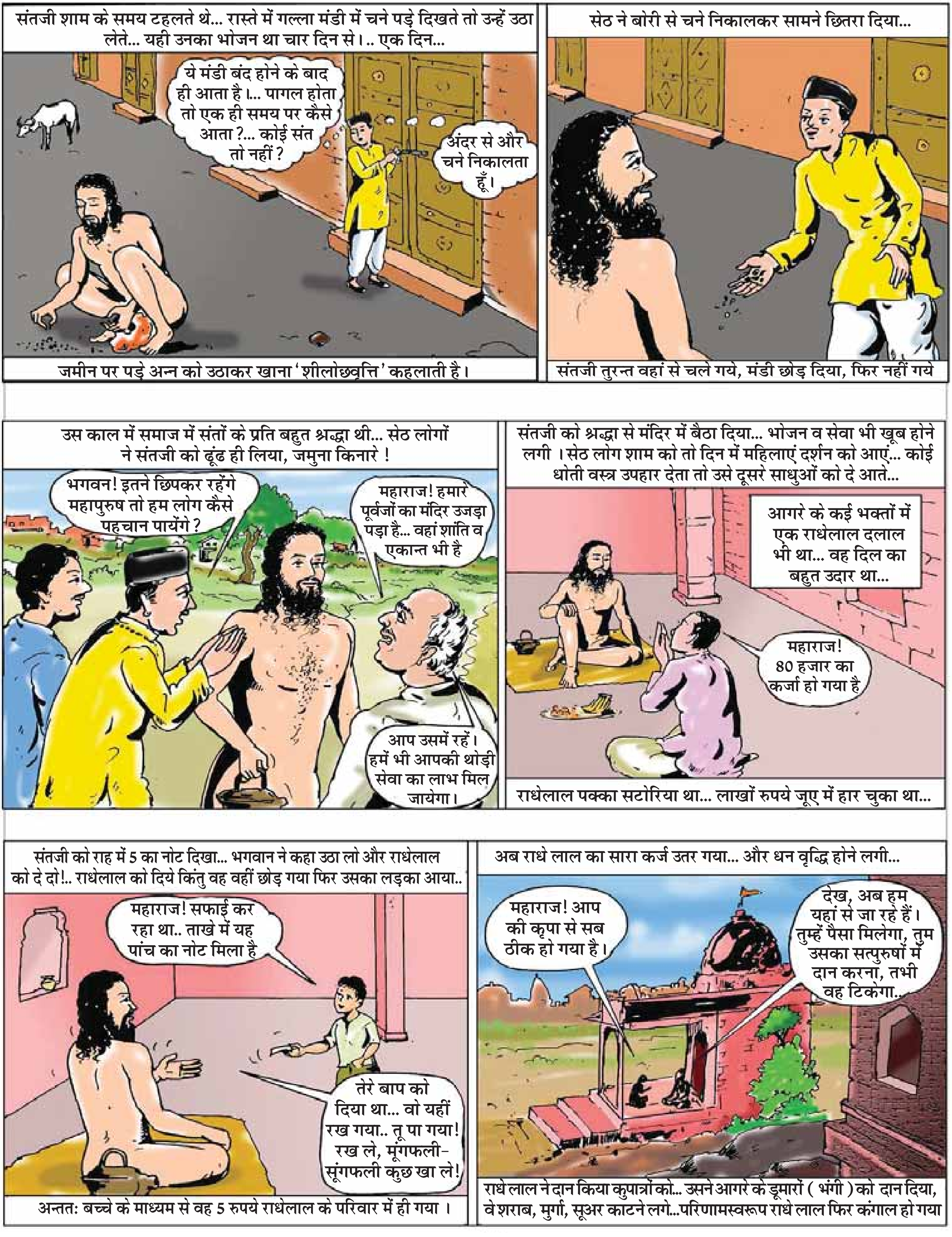
संतजी शाम के समय टहलते थे... रास्ते में गल्ला मंडी में चने पड़े दिखते तो उन्हें उठा लेते... यही उनका भोजन था चार दिन से।.. एक दिन...
ये मंडी बंद होने के बाद ही आता है।... पागल होता तो एक ही समय पर कैसे आता?... कोई संत तो नहीं?
अंदर से और चने निकालता हूँ।
जमीन पर पड़े अन्न को उठाकर खाना 'शीलोछवृत्ति' कहलाती है।
सेठ ने बोरी से चने निकालकर सामने छितरा दिया...
संतजी तुरन्त वहां से चले गये, मंडी छोड़ दिया, फिर नहीं गये
उस काल में समाज में संतों के प्रति बहुत श्रद्धा थी... सेठ लोगों ने संतजी को ढूंढ ही लिया, जमुना किनारे!
भगवन! इतने छिपकर रहेंगे महापुरुष तो हम लोग कैसे पहचान पायेंगे?
महाराज! हमारे पूर्वजों का मंदिर उजड़ा पड़ा है... वहां शांति व एकान्त भी है
आप उसमें रहें। हमें भी आपकी थोड़ी सेवा का लाभ मिल जायेगा।
संतजी को श्रद्धा से मंदिर में बैठा दिया... भोजन व सेवा भी खूब होने लगी। सेठ लोग शाम को तो दिन में महिलाएं दर्शन को आएं... कोई धोती वस्त्र उपहार देता तो उसे दूसरे साधुओं को दे आते...
आगरे के कई भक्तों में एक राधेलाल दलाल भी था... वह दिल का बहुत उदार था...
महाराज! 80 हजार का कर्जा हो गया है
राधेलाल पक्का सटोरिया था... लाखों रुपये जूए में हार चुका था...
संतजी को राह में 5 का नोट दिखा... भगवान ने कहा उठा लो और राधेलाल को दे दो!.. राधेलाल को दिये किंतु वह वहीं छोड़ गया फिर उसका लड़का आया..
महाराज! सफाई कर रहा था.. ताखे में यह पांच का नोट मिला है
तेरे बाप को दिया था... वो यहीं रख गया.. तू पा गया! रख ले, मूंगफली-सूंगफली कुछ खा ले!
अन्तत: बच्चे के माध्यम से वह 5 रुपये राधेलाल के परिवार में ही गया।
अब राधे लाल का सारा कर्ज उतर गया... और धन वृद्धि होने लगी...
महाराज! आप की कृपा से सब ठीक हो गया है।
देख, अब हम यहां से जा रहे हैं। तुम्हें पैसा मिलेगा, तुम उसका सत्पुरुषों में दान करना, तभी वह टिकेगा...
राधे लाल ने दान किया कुपात्रों को... उसने आगरे के डूमारों (भंगी) को दान दिया, वे शराब, मुर्गा, सूअर काटने लगे...परिणामस्वरूप राधे लाल फिर कंगाल हो गया

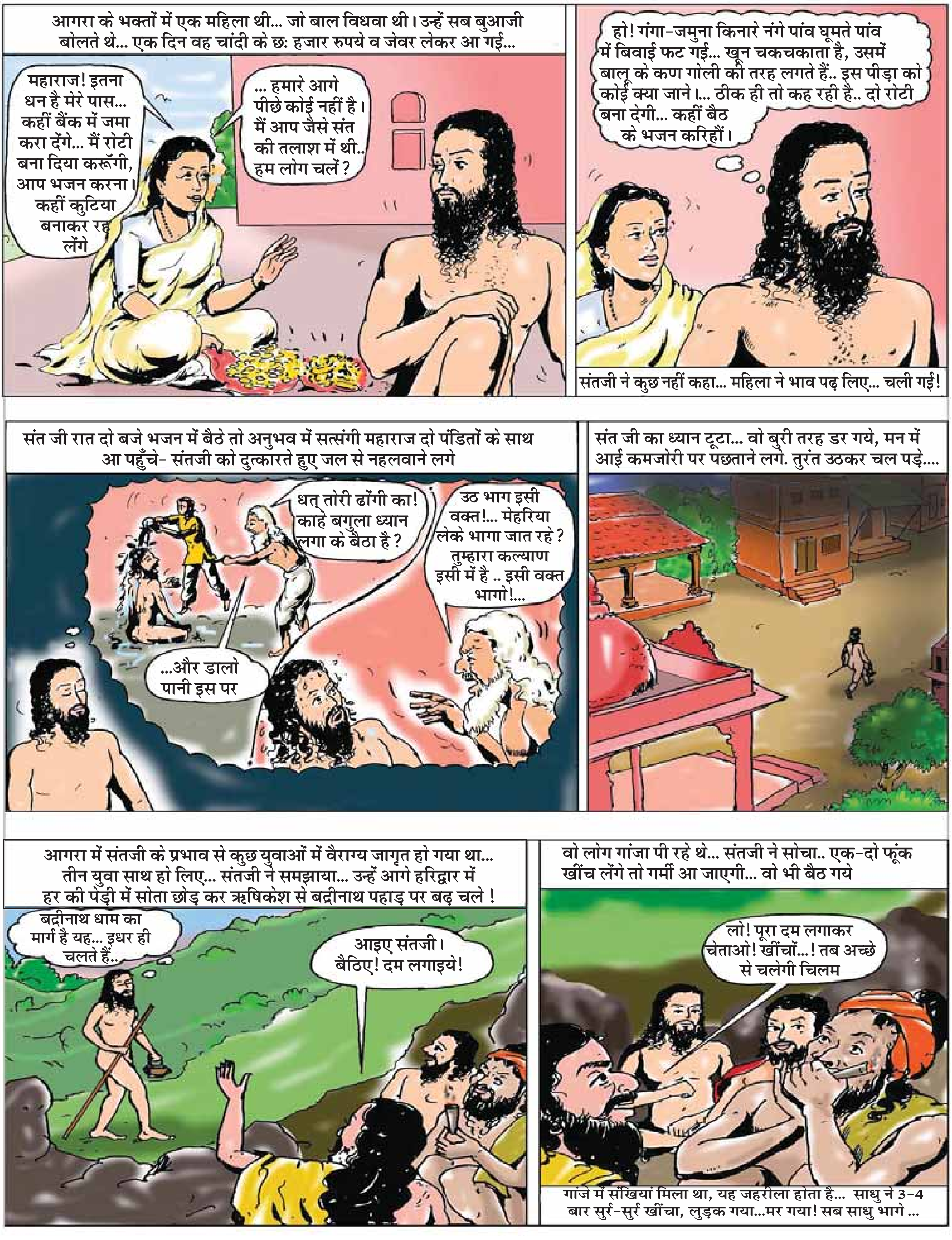
आगरा के भक्तों में एक महिला थी... जो बाल विधवा थी। उन्हें सब बुआजी बोलते थे... एक दिन वह चांदी के छः हजार रुपये व जेवर लेकर आ गई...
महाराज! इतना धन है मेरे पास... कहीं बैंक में जमा करा देंगे... मैं रोटी बना दिया करूँगी, आप भजन करना। कहीं कुटिया बनाकर रह लेंगे
... हमारे आगे पीछे कोई नहीं है। मैं आप जैसे संत की तलाश में थी.. हम लोग चलें?
हो! गंगा-जमुना किनारे नंगे पांव घूमते पांव में बिवाई फट गई... खून चकचकाता है, उसमें बालू के कण गोली की तरह लगते हैं.. इस पीड़ा को कोई क्या जाने।... ठीक ही तो कह रही है.. दो रोटी बना देगी... कहीं बैठ के भजन करिहौं।
संतजी ने कुछ नहीं कहा... महिला ने भाव पढ़ लिए... चली गई!
संत जी रात दो बजे भजन में बैठे तो अनुभव में सत्संगी महाराज दो पंडितों के साथ आ पहुँचे- संतजी को दुत्कारते हुए जल से नहलवाने लगे
धत् तोरी ढोंगी का! काहे बगुला ध्यान लगा के बैठा है?
उठ भाग इसी वक्त!... मेहरिया लेके भागा जात रहे? तुम्हारा कल्याण इसी में है .. इसी वक्त भागो!...
...और डालो पानी इस पर
संत जी का ध्यान टूटा... वो बुरी तरह डर गये, मन में आई कमजोरी पर पछताने लगे. तुरंत उठकर चल पड़े....
आगरा में संतजी के प्रभाव से कुछ युवाओं में वैराग्य जागृत हो गया था... तीन युवा साथ हो लिए... संतजी ने समझाया... उन्हें आगे हरिद्वार में हर की पेड़ी में सोता छोड़ कर ऋषिकेश से बद्रीनाथ पहाड़ पर बढ़ चले !
बद्रीनाथ धाम का मार्ग है यह... इधर ही चलते हैं..
आइए संतजी। बैठिए! दम लगाइये!
वो लोग गांजा पी रहे थे... संतजी ने सोचा.. एक-दो फूंक खींच लेंगे तो गर्मी आ जाएगी... वो भी बैठ गये
लो! पूरा दम लगाकर चेताओ! खींचों...! तब अच्छे से चलेगी चिलम
गांजे में संखियां मिला था, यह जहरीला होता है... साधु ने 3-4 बार सुर्र-सुर्र खींचा, लुढ़क गया...मर गया! सब साधु भागे ...

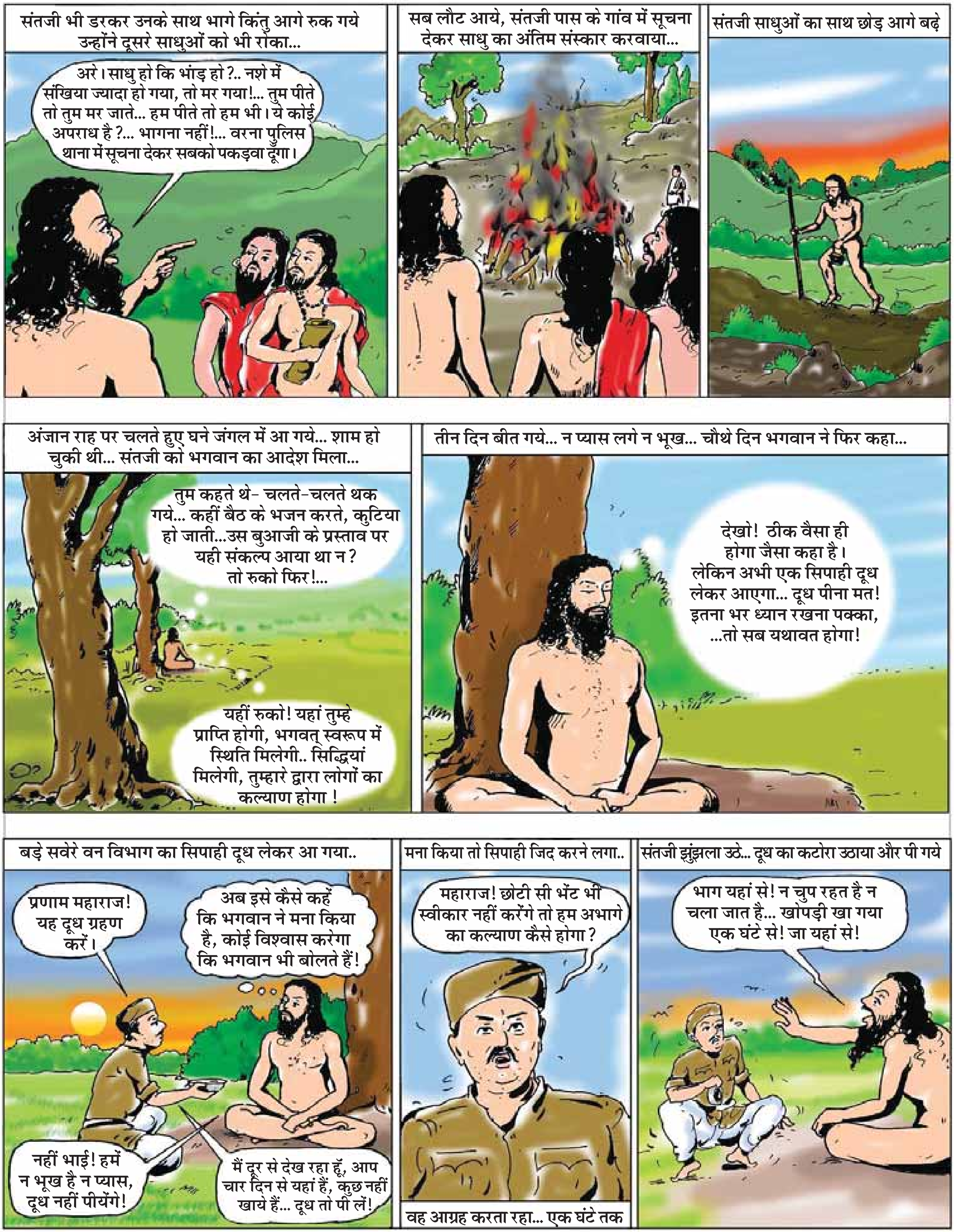

संतजी भी डरकर उनके साथ भागे किंतु आगे रुक गये उन्होंने दूसरे साधुओं को भी रोका...
अरे। साधु हो कि भांड़ हो ?.. नशे में संखिया ज्यादा हो गया, तो मर गया!... तुम पीते तो तुम मर जाते... हम पीते तो हम भी। ये कोई अपराध है ?... भागना नहीं!... वरना पुलिस थाना में सूचना देकर सबको पकड़वा दूँगा।
सब लौट आये, संतजी पास के गांव में सूचना देकर साधु का अंतिम संस्कार करवाया...
संतजी साधुओं का साथ छोड़ आगे बढ़े
अंजान राह पर चलते हुए घने जंगल में आ गये... शाम हो चुकी थी... संतजी को भगवान का आदेश मिला...
तुम कहते थे- चलते-चलते थक गये... कहीं बैठ के भजन करते, कुटिया हो जाती...उस बुआजी के प्रस्ताव पर यही संकल्प आया था न ? तो रुको फिर!...
यहीं रुको! यहां तुम्हे प्राप्ति होगी, भगवत् स्वरूप में स्थिति मिलेगी.. सिद्धियां मिलेगी, तुम्हारे द्वारा लोगों का कल्याण होगा !
तीन दिन बीत गये... न प्यास लगे न भूख... चौथे दिन भगवान ने फिर कहा...
देखो! ठीक वैसा ही होगा जैसा कहा है। लेकिन अभी एक सिपाही दूध लेकर आएगा... दूध पीना मत! इतना भर ध्यान रखना पक्का, ...तो सब यथावत होगा!
बड़े सवेरे वन विभाग का सिपाही दूध लेकर आ गया..
प्रणाम महाराज! यह दूध ग्रहण करें।
अब इसे कैसे कहें कि भगवान ने मना किया है, कोई विश्वास करेगा कि भगवान भी बोलते हैं!
नहीं भाई! हमें न भूख है न प्यास, दूध नहीं पीयेंगे!
मैं दूर से देख रहा हूँ, आप चार दिन से यहां हैं, कुछ नहीं खाये हैं... दूध तो पी लें!
मना किया तो सिपाही जिद करने लगा..
महाराज! छोटी सी भेंट भी स्वीकार नहीं करेंगे तो हम अभागे का कल्याण कैसे होगा ?
वह आग्रह करता रहा... एक घंटे तक
संतजी झुंझला उठे... दूध का कटोरा उठाया और पी गये
भाग यहां से! न चुप रहत है न चला जात है... खोपड़ी खा गया एक घंटे से! जा यहां से!

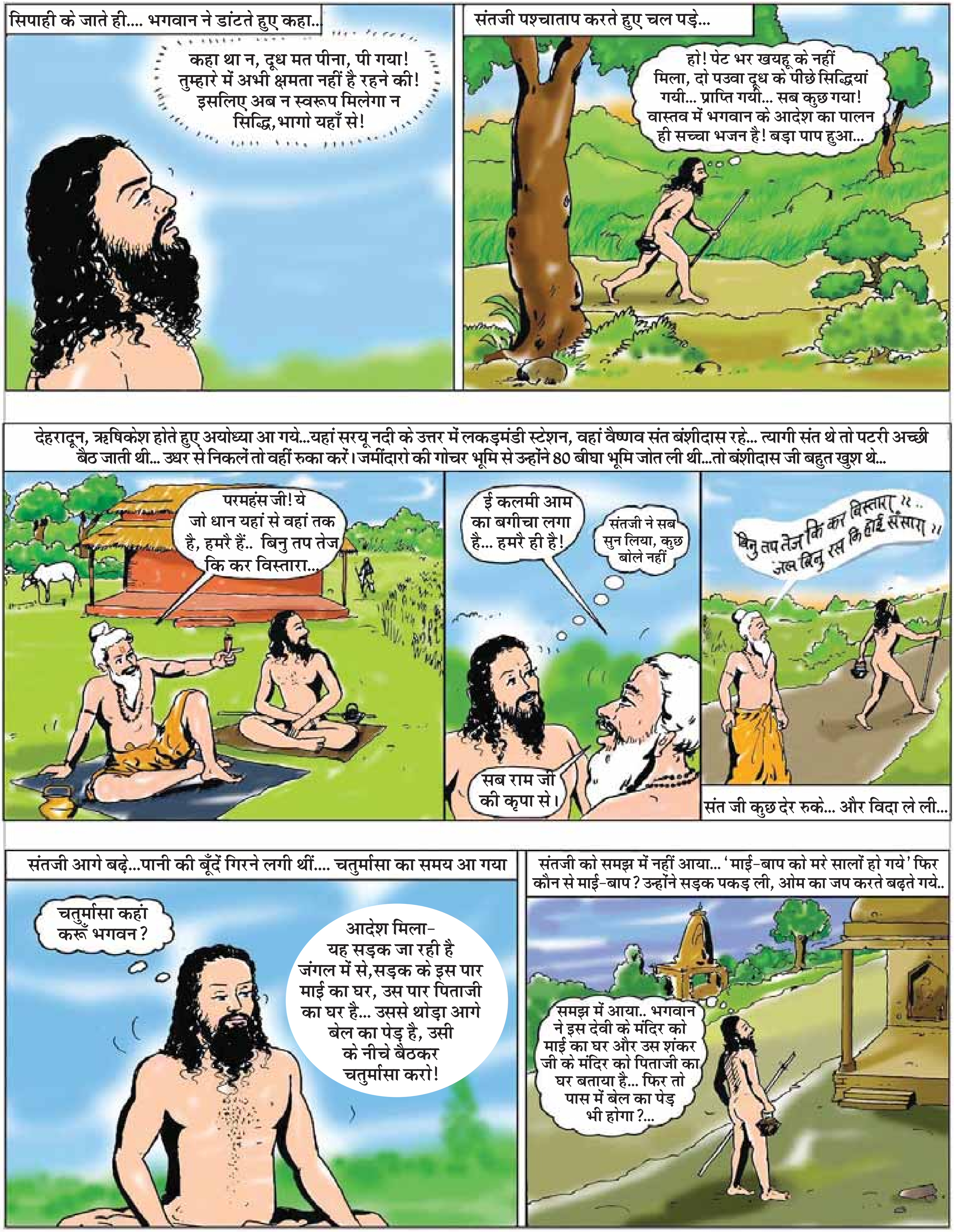
सिपाही के जाते ही.... भगवान ने डांटते हुए कहा...
कहा था न, दूध मत पीना, पी गया! तुम्हारे में अभी क्षमता नहीं है रहने की! इसलिए अब न स्वरूप मिलेगा न सिद्धि,भागो यहाँ से!
संतजी पश्चाताप करते हुए चल पड़े...
हो! पेट भर खयहू के नहीं मिला, दो पउवा दूध के पीछे सिद्धियां गयी... प्राप्ति गयी... सब कुछ गया! वास्तव में भगवान के आदेश का पालन ही सच्चा भजन है! बड़ा पाप हुआ...
देहरादून, ऋषिकेश होते हुए अयोध्या आ गये...यहां सरयू नदी के उत्तर में लकड़मंडी स्टेशन, वहां वैष्णव संत बंशीदास रहे... त्यागी संत थे तो पटरी अच्छी बैठ जाती थी... उधर से निकलें तो वहीं रुका करें। जमींदारो की गोचर भूमि से उन्होंने 80 बीघा भूमि जोत ली थी...तो बंशीदास जी बहुत खुश थे...
परमहंस जी! ये जो धान यहां से वहां तक है, हमरै हैं.. बिनु तप तेज कि कर विस्तारा...
ई कलमी आम का बगीचा लगा है... हमरै ही है!
संतजी ने सब सुन लिया, कुछ बोले नहीं
सब राम जी की कृपा से।
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा ।। जल बिनु रस कि होई संसारा ।।
संत जी कुछ देर रुके... और विदा ले ली...
संतजी आगे बढ़े...पानी की बूँदें गिरने लगी थीं.... चतुर्मासा का समय आ गया
चतुर्मासा कहां करूँ भगवन?
आदेश मिला– यह सड़क जा रही है जंगल में से,सड़क के इस पार माई का घर, उस पार पिताजी का घर है... उससे थोड़ा आगे बेल का पेड़ है, उसी के नीचे बैठकर चतुर्मासा करो!
संतजी को समझ में नहीं आया... 'माई-बाप को मरे सालों हो गये' फिर कौन से माई-बाप? उन्होंने सड़क पकड़ ली, ओम का जप करते बढ़ते गये..
समझ में आया.. भगवान ने इस देवी के मंदिर को माई का घर और उस शंकर जी के मंदिर को पिताजी का घर बताया है... फिर तो पास में बेल का पेड़ भी होगा?...

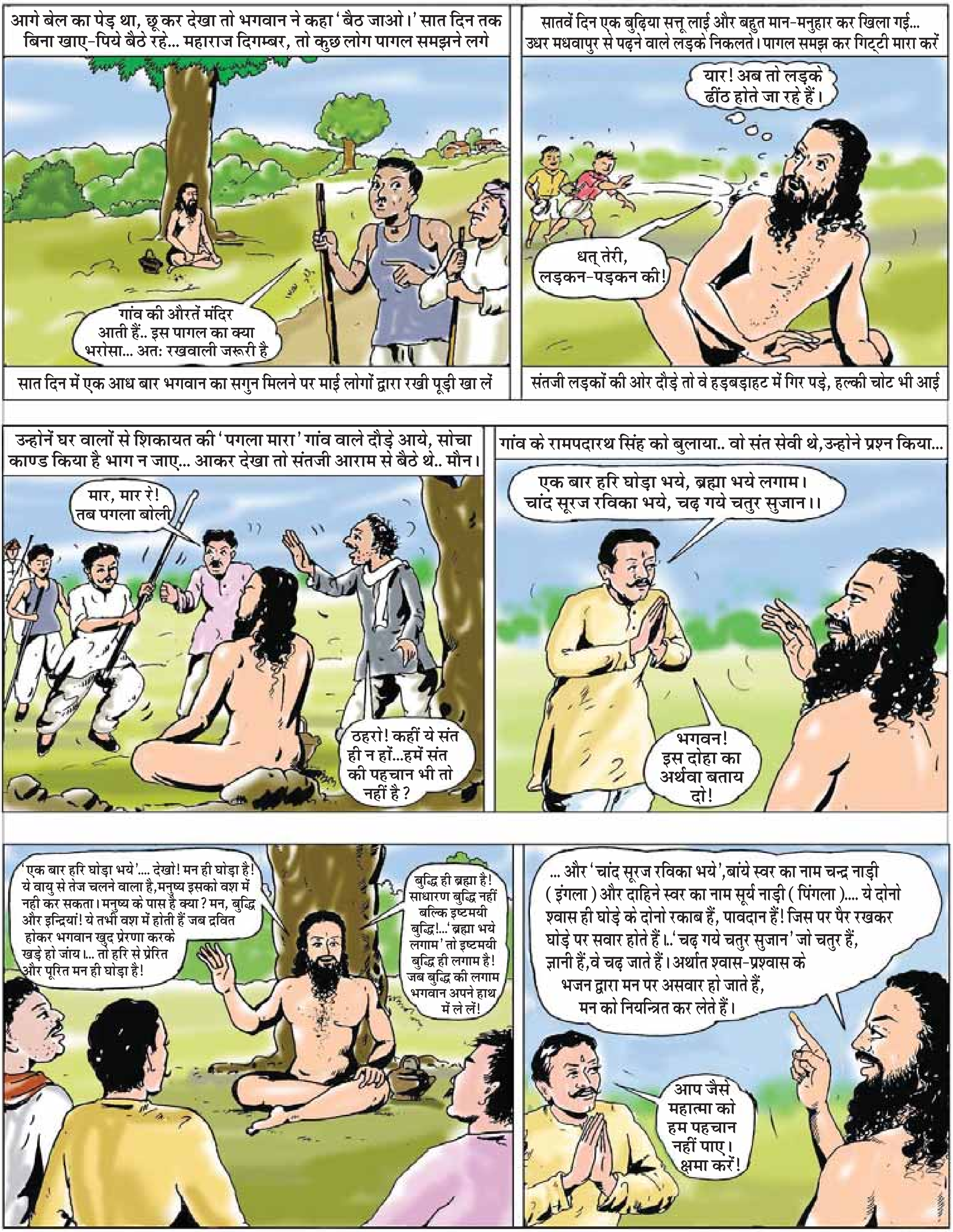
आगे बेल का पेड़ था, छू कर देखा तो भगवान ने कहा 'बैठ जाओ।' सात दिन तक बिना खाए-पिये बैठे रहे... महाराज दिगम्बर, तो कुछ लोग पागल समझने लगे
गांव की औरतें मंदिर आती हैं.. इस पागल का क्या भरोसा... अत: रखवाली जरूरी है
सात दिन में एक आध बार भगवान का सगुन मिलने पर माई लोगों द्वारा रखी पूड़ी खा लें
सातवें दिन एक बुढ़िया सत्तू लाई और बहुत मान-मनुहार कर खिला गई... उधर मधवापुर से पढ़ने वाले लड़के निकलते। पागल समझ कर गिट्टी मारा करें
यार! अब तो लड़के ढींठ होते जा रहे हैं।
धत् तेरी, लड़कन-पड़कन की!
संतजी लड़कों की ओर दौड़े तो वे हड़बड़ाहट में गिर पड़े, हल्की चोट भी आई
उन्होनें घर वालों से शिकायत की 'पगला मारा' गांव वाले दौड़े आये, सोचा काण्ड किया है भाग न जाए... आकर देखा तो संतजी आराम से बैठे थे.. मौन।
मार, मार रे! तब पगला बोली
ठहरो! कहीं ये संत ही न हों...हमें संत की पहचान भी तो नहीं है ?
गांव के रामपदारथ सिंह को बुलाया.. वो संत सेवी थे, उन्होने प्रश्न किया...
एक बार हरि घोड़ा भये, ब्रह्मा भये लगाम। चांद सूरज रविका भये, चढ़ गये चतुर सुजान।।
भगवन! इस दोहा का अर्थवा बताय दो!
'एक बार हरि घोड़ा भये'.... देखो! मन ही घोड़ा है! ये वायु से तेज चलने वाला है, मनुष्य इसको वश में नही कर सकता। मनुष्य के पास है क्या? मन, बुद्धि और इन्द्रियां! ये तभी वश में होती हैं जब द्रवित होकर भगवान खुद प्रेरणा करके खड़े हो जांय।... तो हरि से प्रेरित और पूरित मन ही घोड़ा है!
बुद्धि ही ब्रह्मा है! साधारण बुद्धि नहीं बल्कि इष्टमयी बुद्धि!...'ब्रह्मा भये लगाम' तो इष्टमयी बुद्धि ही लगाम है! जब बुद्धि की लगाम भगवान अपने हाथ में ले लें!
... और 'चांद सूरज रविका भये', बांये स्वर का नाम चन्द्र नाड़ी (इंगला) और दाहिने स्वर का नाम सूर्य नाड़ी (पिंगला).... ये दोनो श्वास ही घोड़े के दोनो रकाब हैं, पावदान हैं! जिस पर पैर रखकर घोड़े पर सवार होते हैं।..'चढ़ गये चतुर सुजान' जो चतुर हैं, ज्ञानी हैं, वे चढ़ जाते हैं। अर्थात श्वास-प्रश्वास के भजन द्वारा मन पर असवार हो जाते हैं, मन को नियन्त्रित कर लेते हैं।
आप जैसे महात्मा को हम पहचान नहीं पाए। क्षमा करें!

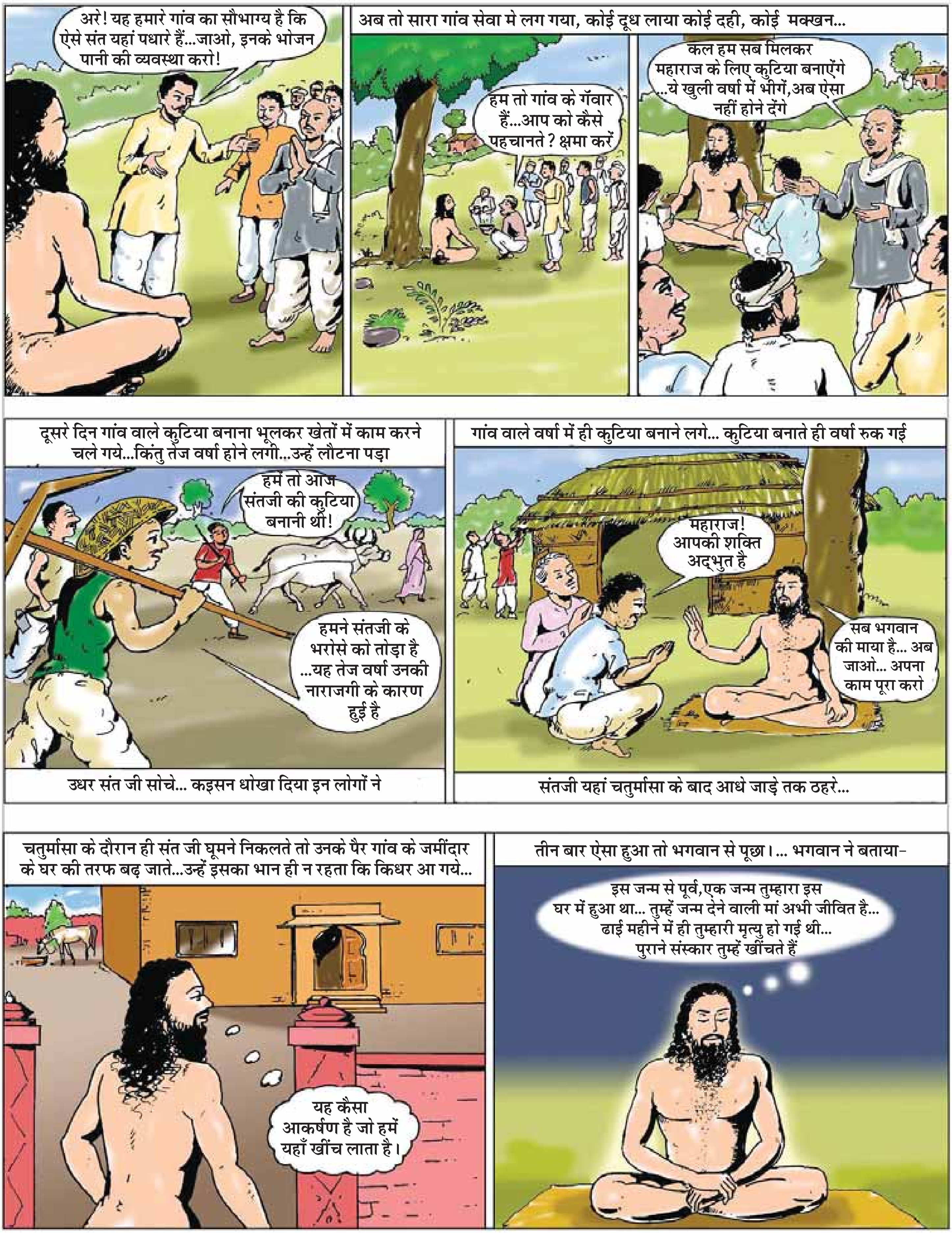

अरे! यह हमारे गांव का सौभाग्य है कि ऐसे संत यहां पधारे हैं...जाओ, इनके भोजन पानी की व्यवस्था करो!
अब तो सारा गांव सेवा मे लग गया, कोई दूध लाया कोई दही, कोई मक्खन...
हम तो गांव के गॅवार हैं...आप को कैसे पहचानते ? क्षमा करें
कल हम सब मिलकर महाराज के लिए कुटिया बनाऐंगे ...ये खुली वर्षा में भीगें,अब ऐसा नहीं होने देंगे
दूसरे दिन गांव वाले कुटिया बनाना भूलकर खेतों में काम करने चले गये...किंतु तेज वर्षा होने लगी...उन्हें लौटना पड़ा
हमें तो आज संतजी की कुटिया बनानी थी!
हमने संतजी के भरोसे को तोड़ा है ...यह तेज वर्षा उनकी नाराजगी के कारण हुई है
उधर संत जी सोचे... कइसन धोखा दिया इन लोगों ने
गांव वाले वर्षा में ही कुटिया बनाने लगे... कुटिया बनाते ही वर्षा रुक गई
महाराज! आपकी शक्ति अद्‌भुत है
सब भगवान की माया है... अब जाओ... अपना काम पूरा करो
संतजी यहां चतुर्मासा के बाद आधे जाड़े तक ठहरे...
चतुर्मासा के दौरान ही संत जी घूमने निकलते तो उनके पैर गांव के जमींदार के घर की तरफ बढ़ जाते...उन्हें इसका भान ही न रहता कि किधर आ गये...
यह कैसा आकर्षण है जो हमें यहाँ खींच लाता है।
तीन बार ऐसा हुआ तो भगवान से पूछा। ... भगवान ने बताया-
इस जन्म से पूर्व,एक जन्म तुम्हारा इस घर में हुआ था... तुम्हें जन्म देने वाली मां अभी जीवित है... ढाई महीने में ही तुम्हारी मृत्यु हो गई थी... पुराने संस्कार तुम्हें खींचते हैं

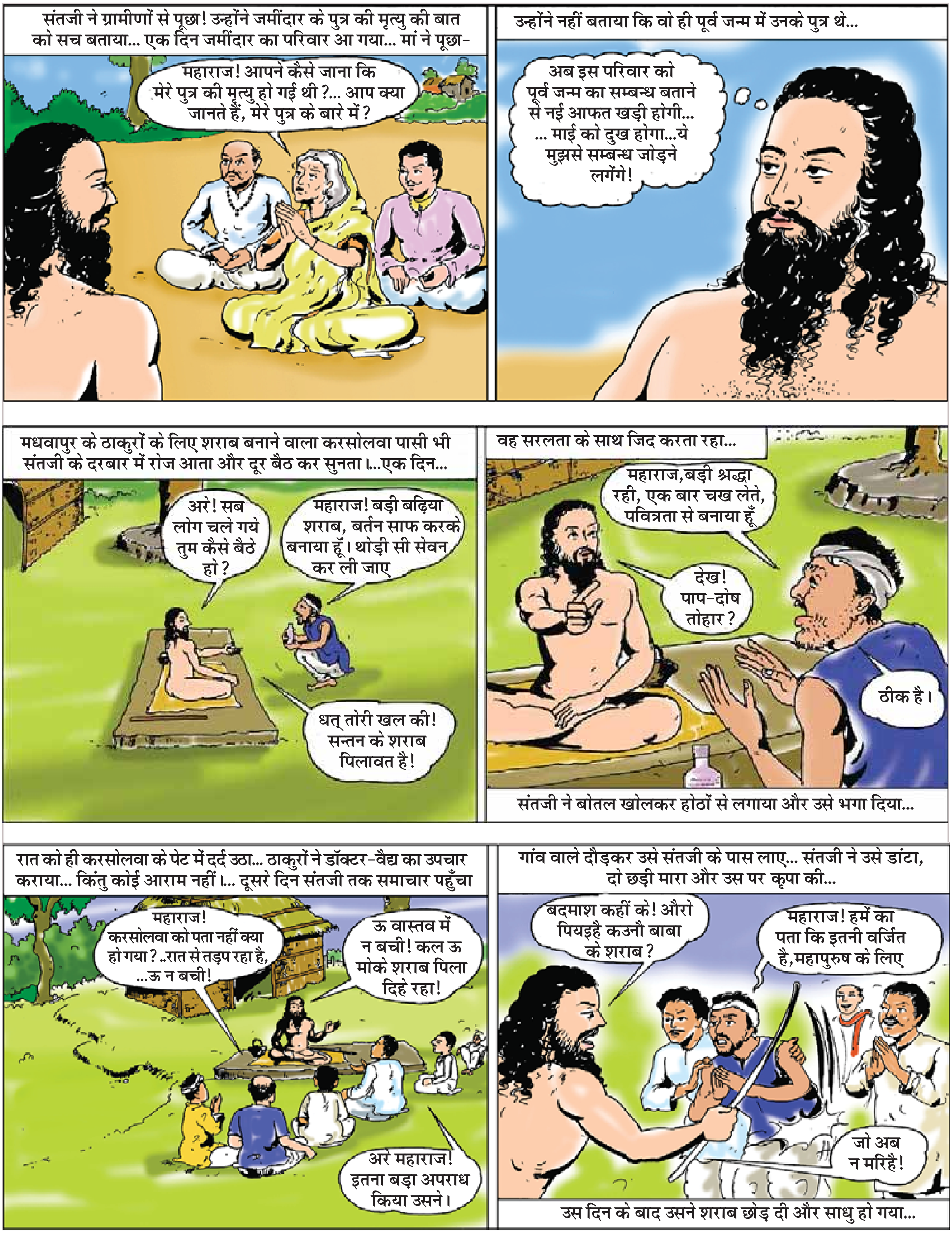
संतजी ने ग्रामीणों से पूछा! उन्होंने जमींदार के पुत्र की मृत्यु की बात को सच बताया... एक दिन जमींदार का परिवार आ गया... मां ने पूछा-
महाराज! आपने कैसे जाना कि मेरे पुत्र की मृत्यु हो गई थी?... आप क्या जानते हैं, मेरे पुत्र के बारे में?
उन्होंने नहीं बताया कि वो ही पूर्व जन्म में उनके पुत्र थे...
अब इस परिवार को पूर्व जन्म का सम्बन्ध बताने से नई आफत खड़ी होगी... ... माई को दुख होगा...ये मुझसे सम्बन्ध जोड़ने लगेंगे!
मधवापुर के ठाकुरों के लिए शराब बनाने वाला करसोलवा पासी भी संतजी के दरबार में रोज आता और दूर बैठ कर सुनता।...एक दिन...
अरे! सब लोग चले गये तुम कैसे बैठे हो?
महाराज! बड़ी बढ़िया शराब, बर्तन साफ करके बनाया हूँ। थोड़ी सी सेवन कर ली जाए
धत् तोरी खल की! सन्तन के शराब पिलावत है!
वह सरलता के साथ जिद करता रहा...
महाराज,बड़ी श्रद्धा रही, एक बार चख लेते, पवित्रता से बनाया हूँ
देख! पाप-दोष तोहार?
ठीक है।
संतजी ने बोतल खोलकर होठों से लगाया और उसे भगा दिया...
रात को ही करसोलवा के पेट में दर्द उठा... ठाकुरों ने डॉक्टर-वैद्य का उपचार कराया... किंतु कोई आराम नहीं।... दूसरे दिन संतजी तक समाचार पहुँचा
महाराज! करसोलवा को पता नहीं क्या हो गया?..रात से तड़प रहा है, ...ऊ न बची!
ऊ वास्तव में न बची! कल ऊ मोके शराब पिला दिहे रहा!
अरे महाराज! इतना बड़ा अपराध किया उसने।
गांव वाले दौड़कर उसे संतजी के पास लाए... संतजी ने उसे डांटा, दो छड़ी मारा और उस पर कृपा की...
बदमाश कहीं के! औरो पियइहै कउनौ बाबा के शराब?
महाराज! हमें का पता कि इतनी वर्जित है,महापुरुष के लिए
जो अब न मरिहै!
उस दिन के बाद उसने शराब छोड़ दी और साधु हो गया...

मधवापुर व आस पास के लोगों में उनके प्रति श्रद्धा बढ़ती जा रही थी... एक बार भक्तों ने भागवत कथा करवायी, अंतिम दिन भण्डारा था... संतजी बेल के वृक्ष के नीचे बैठे थे,एक बेल गिरा
अरे महात्मा जी के सिर पर बेल गिर पड़ा... सम्भालो उन्हें!
इतनी जगह रही चारों तरफ, मोरै कपार रहा गिरै के तोहके?
बेल के फल तो आते थे किंतु उसमें कीड़े लग जाते... वो खराब हो कर गिर जाते...थोड़ी देर बाद संतजी उठे और बेल का उपचार कर दिया
बिगड़ पड़े! आज से सड़ा तो हम सधुअई छोड़ देब!
सटाक
उन्होंने पेड़ को तीन सड़सा मारा... धूने में से विभूति लेकर बेल की जड़ों में डाल दिया... उसके बाद बेल में कीड़े लगने बंद हो गये...
मधवापुर से संतजी रात को ही निकल कर अयोध्या आ गये।... वे सुबह अँधेरे स्टेशन जा रहे थे कि बूंदें गिरने लगीं... वो पास के ही एक बरामदे में बैठ गये...
ऐं! कौन ?... तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ी यहाँ बैठने की? जानता नहीं,किस महंत का अखाड़ा है?
बूंदे थम जाए, तो हम चले जाएंगे। हमें यहां रहना भी नहीं...न ही कुछ लेना है
हूं। संतों की तरह बातें करता है... चल उठ!
यह किसी महंत का आवास था... वह संतजी का गरदन पकड़ कर उठाने लगा
खड़िया कहीं का!
ई अब धक्का देई त हम गिर जाब, हमार हाथ-पांव टूट जाई... हमें कौन पट्टी बांधी?
संतजी पहलवान थे... महंत धक्का देता उससे पहले ही पैंतरे से उठा लिया ..
हमें गिराएगा?
...फिर नीचे पटक दिया...
तोरे खल की! हम जा रहे हैं तो काहे पटकत रहा रे? तोर हम क्या बिगाड़े रहे? हमरे चोट लग जाती त के हल्दी छोपत!
बचाओ रे! बचाओ रे! पगला मारा !

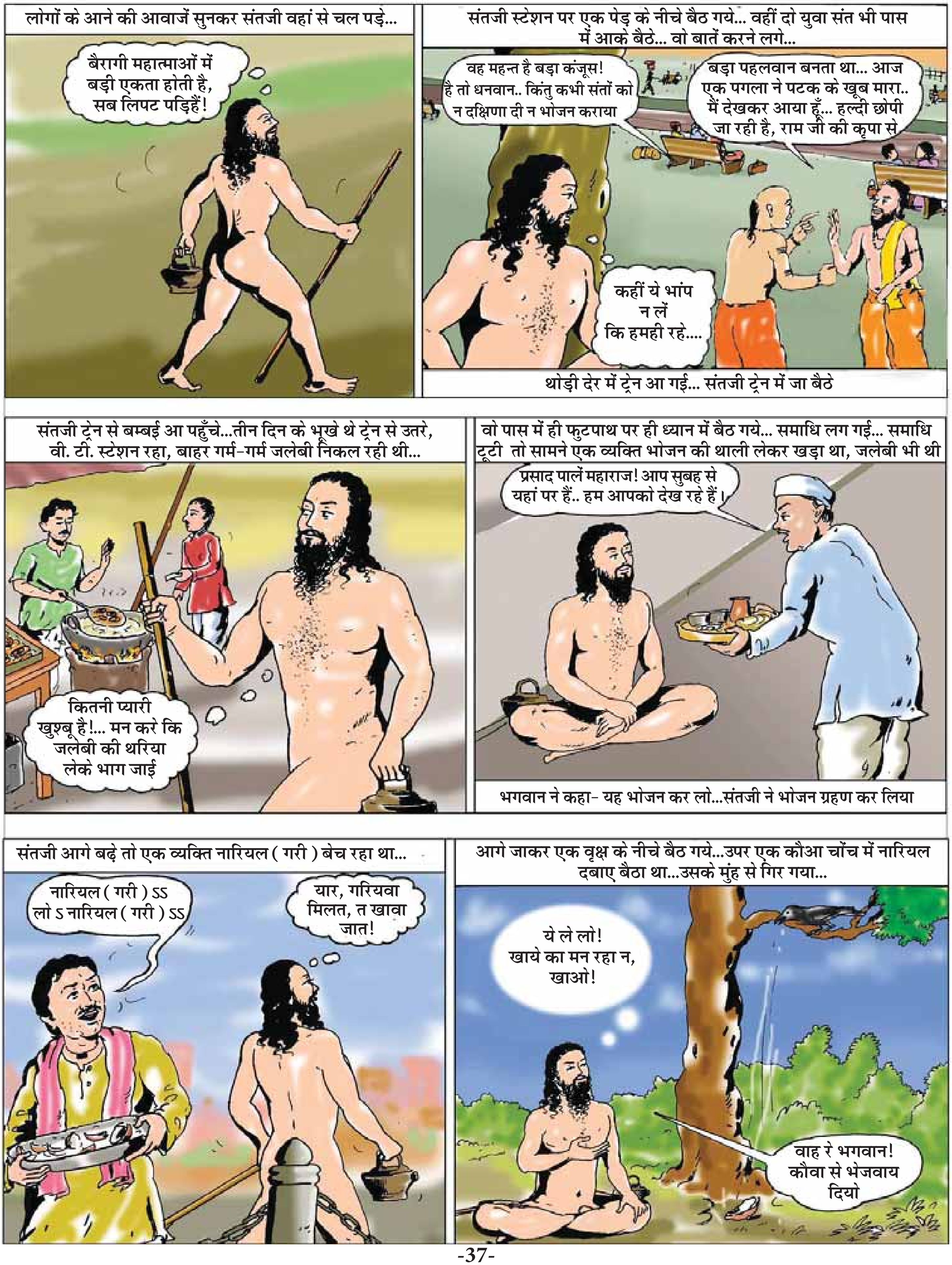
लोगों के आने की आवाजें सुनकर संतजी वहां से चल पड़े...
बैरागी महात्माओं में बड़ी एकता होती है, सब लिपट पड़िहैं!
संतजी स्टेशन पर एक पेड़ के नीचे बैठ गये... वहीं दो युवा संत भी पास में आके बैठे... वो बातें करने लगे...
वह महन्त है बड़ा कंजूस! है तो धनवान.. किंतु कभी संतों को न दक्षिणा दी न भोजन कराया
बड़ा पहलवान बनता था... आज एक पगला ने पटक के खूब मारा.. मैं देखकर आया हूँ... हल्दी छोपी जा रही है, राम जी की कृपा से
कहीं ये भांप न लें कि हमही रहे....
थोड़ी देर में ट्रेन आ गई... संतजी ट्रेन में जा बैठे
संतजी ट्रेन से बम्बई आ पहुँचे...तीन दिन के भूखे थे ट्रेन से उतरे, वी. टी. स्टेशन रहा, बाहर गर्म-गर्म जलेबी निकल रही थी...
कितनी प्यारी खुश्बू है!... मन करे कि जलेबी की थरिया लेके भाग जाई
वो पास में ही फुटपाथ पर ही ध्यान में बैठ गये... समाधि लग गई... समाधि टूटी तो सामने एक व्यक्ति भोजन की थाली लेकर खड़ा था, जलेबी भी थी
प्रसाद पालें महाराज! आप सुबह से यहां पर हैं.. हम आपको देख रहे हैं।
भगवान ने कहा- यह भोजन कर लो...संतजी ने भोजन ग्रहण कर लिया
संतजी आगे बढ़े तो एक व्यक्ति नारियल (गरी) बेच रहा था...
नारियल (गरी) ऽऽ लो ऽ नारियल (गरी) ऽऽ
यार, गरियवा मिलत, त खावा जात!
आगे जाकर एक वृक्ष के नीचे बैठ गये...उपर एक कौआ चोंच में नारियल दबाए बैठा था...उसके मुंह से गिर गया...
ये ले लो! खाये का मन रहा न, खाओ!
वाह रे भगवान! कौवा से भेजवाय दियो

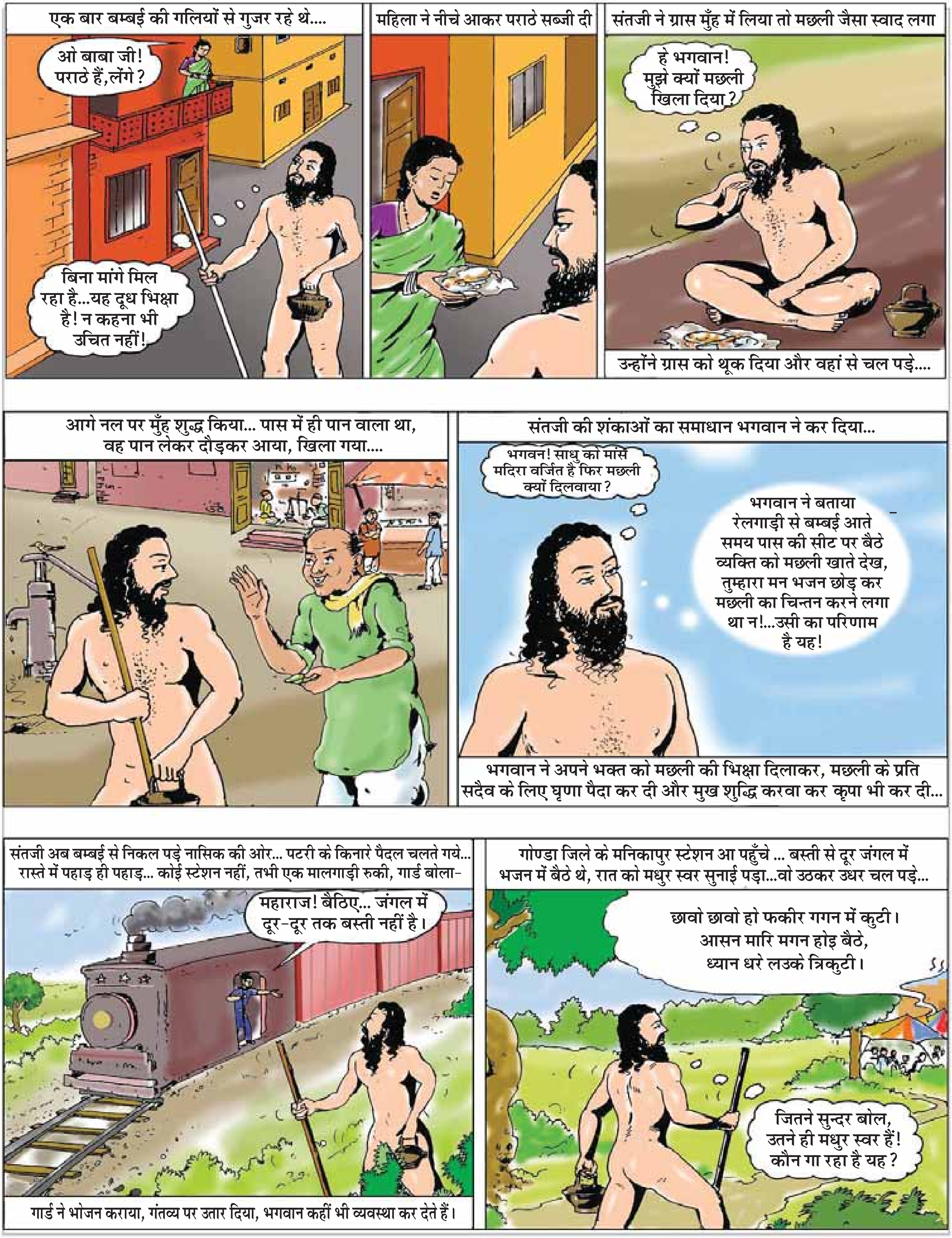
एक बार बम्बई की गलियों से गुजर रहे थे....
ओ बाबा जी! पराठे हैं, लेंगे ?
बिना मांगे मिल रहा है...यह दूध भिक्षा है! न कहना भी उचित नहीं!
महिला ने नीचे आकर पराठे सब्जी दी
संतजी ने ग्रास मुँह में लिया तो मछली जैसा स्वाद लगा
हे भगवान! मुझे क्यों मछली खिला दिया ?
उन्होंने ग्रास को थूक दिया और वहां से चल पड़े....
आगे नल पर मुँह शुद्ध किया... पास में ही पान वाला था, वह पान लेकर दौड़कर आया, खिला गया....
संतजी की शंकाओं का समाधान भगवान ने कर दिया...
भगवन! साधु को मांस मदिरा वर्जित है फिर मछली क्यों दिलवाया ?
भगवान ने बताया - रेलगाड़ी से बम्बई आते समय पास की सीट पर बैठे व्यक्ति को मछली खाते देख, तुम्हारा मन भजन छोड़ कर मछली का चिन्तन करने लगा था न!...उसी का परिणाम है यह!
भगवान ने अपने भक्त को मछली की भिक्षा दिलाकर, मछली के प्रति सदैव के लिए घृणा पैदा कर दी और मुख शुद्धि करवा कर कृपा भी कर दी...
संतजी अब बम्बई से निकल पड़े नासिक की ओर... पटरी के किनारे पैदल चलते गये... रास्ते में पहाड़ ही पहाड़... कोई स्टेशन नहीं, तभी एक मालगाड़ी रुकी, गार्ड बोला-
महाराज! बैठिए... जंगल में दूर-दूर तक बस्ती नहीं है।
गार्ड ने भोजन कराया, गंतव्य पर उतार दिया, भगवान कहीं भी व्यवस्था कर देते हैं।
गोण्डा जिले के मनिकापुर स्टेशन आ पहुँचे ... बस्ती से दूर जंगल में भजन में बैठे थे, रात को मधुर स्वर सुनाई पड़ा...वो उठकर उधर चल पड़े...
छावो छावो हो फकीर गगन में कुटी।
आसन मारि मगन होइ बैठे,
ध्यान धरे लउके त्रिकुटी।
जितने सुन्दर बोल, उतने ही मधुर स्वर हैं! कौन गा रहा है यह ?

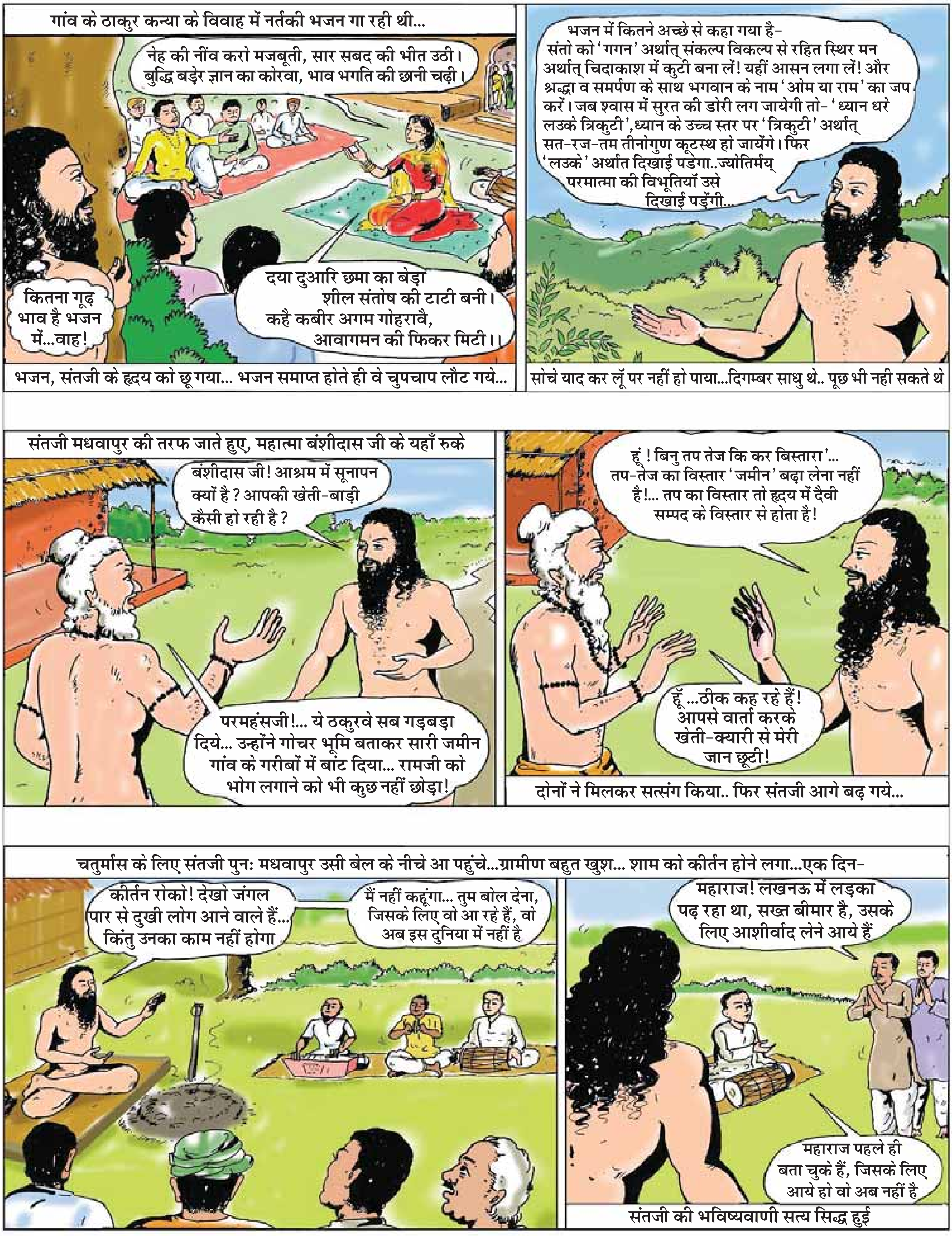
गांव के ठाकुर कन्या के विवाह में नर्तकी भजन गा रही थी...
नेह की नींव करो मजबूती, सार सबद की भीत उठी। बुद्धि बड़ेर ज्ञान का कोरवा, भाव भगति की छानी चढ़ी।
कितना गूढ़ भाव है भजन में...वाह!
दया दुआरि छमा का बेड़ा शील संतोष की टाटी बनी। कहै कबीर अगम गोहरावै, आवागमन की फिकर मिटी।।
भजन, संतजी के हृदय को छू गया... भजन समाप्त होते ही वे चुपचाप लौट गये...
भजन में कितने अच्छे से कहा गया है- संतो को 'गगन' अर्थात् संकल्प विकल्प से रहित स्थिर मन अर्थात् चिदाकाश में कुटी बना लें! यहीं आसन लगा लें! और श्रद्धा व समर्पण के साथ भगवान के नाम 'ओम या राम' का जप करें। जब श्वास में सुरत की डोरी लग जायेगी तो- 'ध्यान धरे लउके त्रिकुटी', ध्यान के उच्च स्तर पर 'त्रिकुटी' अर्थात् सत-रज-तम तीनोगुण कूटस्थ हो जायेंगे। फिर 'लउके' अर्थात दिखाई पडेगा..ज्योतिर्मय् परमात्मा की विभूतियाँ उसे दिखाई पड़ेंगी...
सोचे याद कर लूँ पर नहीं हो पाया...दिगम्बर साधु थे.. पूछ भी नही सकते थे
संतजी मधवापुर की तरफ जाते हुए, महात्मा बंशीदास जी के यहाँ रुके
बंशीदास जी! आश्रम में सूनापन क्यों है? आपकी खेती-बाड़ी कैसी हो रही है?
परमहंसजी!... ये ठकुरवे सब गड़बड़ा दिये... उन्होंने गोचर भूमि बताकर सारी जमीन गांव के गरीबों में बांट दिया... रामजी को भोग लगाने को भी कुछ नहीं छोड़ा!
हूं! बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा'... तप-तेज का विस्तार 'जमीन' बढ़ा लेना नहीं है!... तप का विस्तार तो हृदय में दैवी सम्पद के विस्तार से होता है!
हूँ ...ठीक कह रहे हैं! आपसे वार्ता करके खेती-क्यारी से मेरी जान छूटी!
दोनों ने मिलकर सत्संग किया.. फिर संतजी आगे बढ़ गये...
चतुर्मास के लिए संतजी पुनः मधवापुर उसी बेल के नीचे आ पहुंचे...ग्रामीण बहुत खुश... शाम को कीर्तन होने लगा...एक दिन-
कीर्तन रोको! देखो जंगल पार से दुखी लोग आने वाले हैं... किंतु उनका काम नहीं होगा
मैं नहीं कहूंगा... तुम बोल देना, जिसके लिए वो आ रहे हैं, वो अब इस दुनिया में नहीं है
महाराज! लखनऊ में लड़का पढ़ रहा था, सख्त बीमार है, उसके लिए आशीर्वाद लेने आये हैं
महाराज पहले ही बता चुके हैं, जिसके लिए आये हो वो अब नहीं है
संतजी की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई

उन्हीं दिनों हैजा का प्रकोप हो गया... और संतजी के भगत, वन अधिकारी मिश्राजी भी रोग की चपेट में आ गये...
महाराज! आपके मिश्राजी तो मर गये!
प्रभो! इतनी सेवा किया हमारी और मर गये? तो साधु सेवा करने से क्या फायदा?
उनका घर दो ढाई किमी दूर था... पता लगवाये तो मालुम हुआ कि मिश्रा जी अभी अंतिम सांस गिन रहे हैं....
यह विभूति उनके मुँह में डाल देना, शरीर में लगा देना। यदि जियत यह विभूति पा जाई तो मरिहै ना!
संतजी ने सब को घर भेज दिया... लोगों को संदेह हो गया...
विभूति से हैजे का मरीज तो ठीक होने से रहा?
कहीं संतजी लाज के मारे गांव छोड़कर ना चले जाय? ...मिश्राजी भले ही मर जाएं किंतु हम संतजी को नही जाने देंगे
हम रात भर छिप कर संतजी पर नजर रखेंगे!
संतजी रातभर धूने पर बैठे रहे, ग्रामीण छिपकर उनकी रखवाली करते रहे।
सुबह लोग आ पहुँचे... सबकी उत्सुकता मिश्राजी के समाचार जानने की थी... तभी स्वयं मिश्राजी अपने बेटे के साथ आ पहुँचे...
कैसे हो मिश्राजी?
हमें आपने ही तो ठीक किया है! किंतु आप कब चले आये यहाँ पर?
रात भर आप हमारी खटिया पर बैठे सिर से पांव तक हाथ घुमाते रहे,... सवेरे हमें थोड़ी झपकी लग गयी.. आंख खोली तो आप नहीं थे!...इतनी जल्दी यहाँ कैसे पहुँचे गुरुदेव?
अरे! महाराज तो रातभर धूने पर थे, हम तो बारी-बारी से पहरा दे रहे थे?
संतजी की दिव्य शक्ति को जानकर सब आश्चर्यचकित हो गये...
मधवापुर में कई आश्चर्यजनक घटनाएं हुई... जिससे लोगों में संतजी की,एक पहुँचे हुए साधु के रूप में सम्मान बढ़ गया।... संतजी को अपना गांव याद आने लगा...
गांव के लोग कहते थे... घर में खट-पट की वजह से साधु बना है... टीबी हो गई है, चार दिन में फूंका जाएगा...।और अब यहां रोगी ठीक हो रहे हैं,मुरदे जी रहे हैं... बेल से फल झड़ना बन्द हो गये...
अब तो हमारी सधुआई में बहुत रौनक आ गई। ...अब जाऊं... गांव वालों को दिखा दूं कि हम सचमुच में साधु हूँ। दिखावटी नहीं!
संतजी गांव जाने को तैयार होते और हर बार भगवान मना कर देते... एक दिन एक भगत ने घोड़े के बालों का चंवर भेंट किया... तो जाने का बहाना मिल गया।
इस चँवर से गुरु महाराज अपने टूटे पैर के घाव की मक्खी उड़ाया करेंगे, उन्हें भेंट करूंगा।... गांव वाले आजू-बाजू मिल ही जाएंगे।...कोई न कोई देख ही लेगा... फिर लौट आऊंगा...

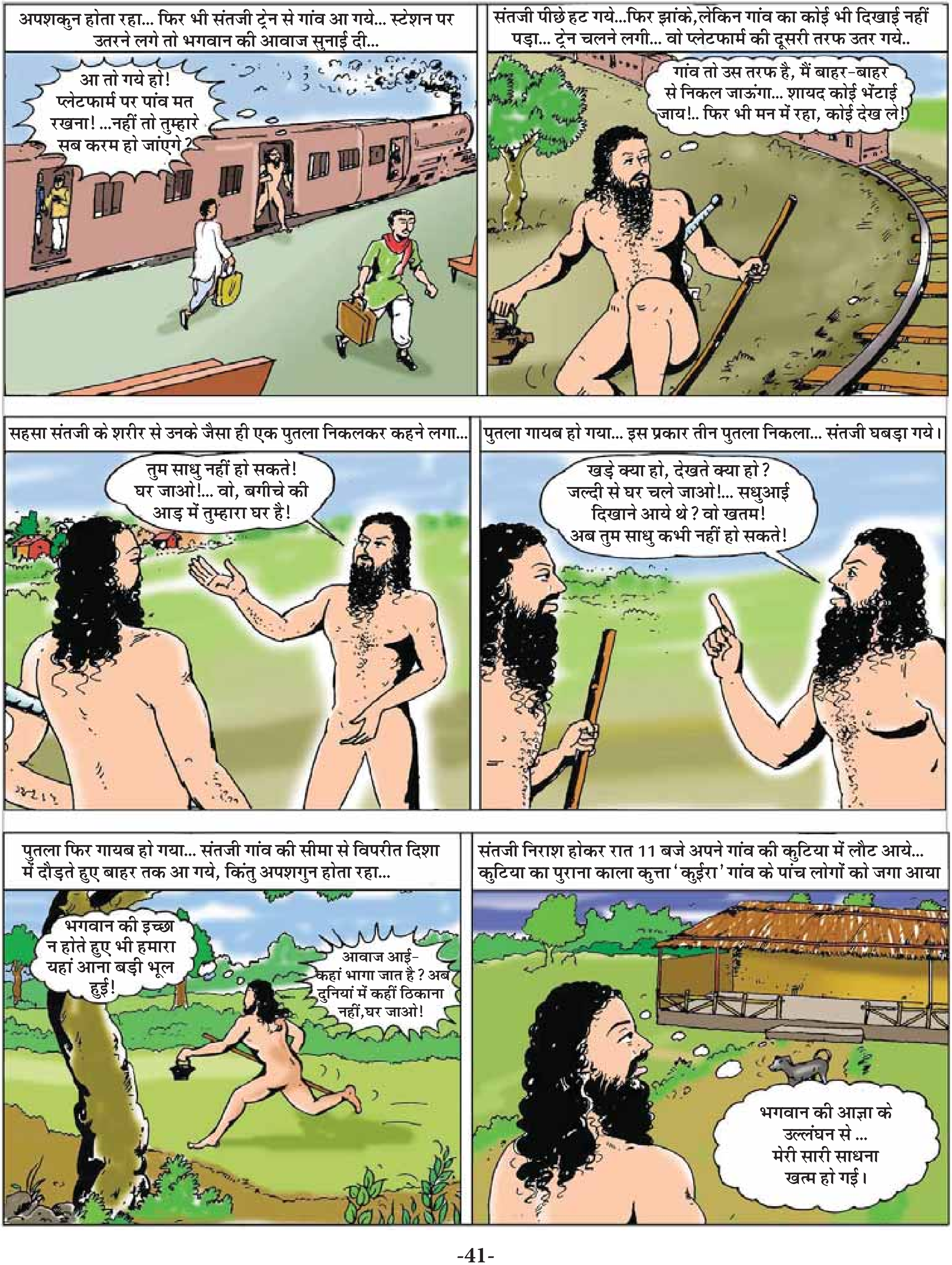
अपशकुन होता रहा... फिर भी संतजी ट्रेन से गांव आ गये... स्टेशन पर उतरने लगे तो भगवान की आवाज सुनाई दी...
आ तो गये हो! प्लेटफार्म पर पांव मत रखना! ...नहीं तो तुम्हारे सब करम हो जाएंगे ?
संतजी पीछे हट गये...फिर झांके,लेकिन गांव का कोई भी दिखाई नहीं पड़ा... ट्रेन चलने लगी... वो प्लेटफार्म की दूसरी तरफ उतर गये..
गांव तो उस तरफ है, मैं बाहर-बाहर से निकल जाऊंगा... शायद कोई भेंटाई जाय!.. फिर भी मन में रहा, कोई देख ले!
सहसा संतजी के शरीर से उनके जैसा ही एक पुतला निकलकर कहने लगा...
तुम साधु नहीं हो सकते! घर जाओ!... वो, बगीचे की आड़ में तुम्हारा घर है!
पुतला गायब हो गया... इस प्रकार तीन पुतला निकला... संतजी घबड़ा गये।
खड़े क्या हो, देखते क्या हो ? जल्दी से घर चले जाओ!... सधुआई दिखाने आये थे ? वो खतम! अब तुम साधु कभी नहीं हो सकते!
पुतला फिर गायब हो गया... संतजी गांव की सीमा से विपरीत दिशा में दौड़ते हुए बाहर तक आ गये, किंतु अपशगुन होता रहा...
भगवान की इच्छा न होते हुए भी हमारा यहां आना बड़ी भूल हुई!
आवाज आई- कहां भागा जात है ? अब दुनियां में कहीं ठिकाना नहीं,घर जाओ!
संतजी निराश होकर रात 11 बजे अपने गांव की कुटिया में लौट आये... कुटिया का पुराना काला कुत्ता 'कुईरा' गांव के पांच लोगों को जगा आया
भगवान की आज्ञा के उल्लंघन से ... मेरी सारी साधना खत्म हो गई।

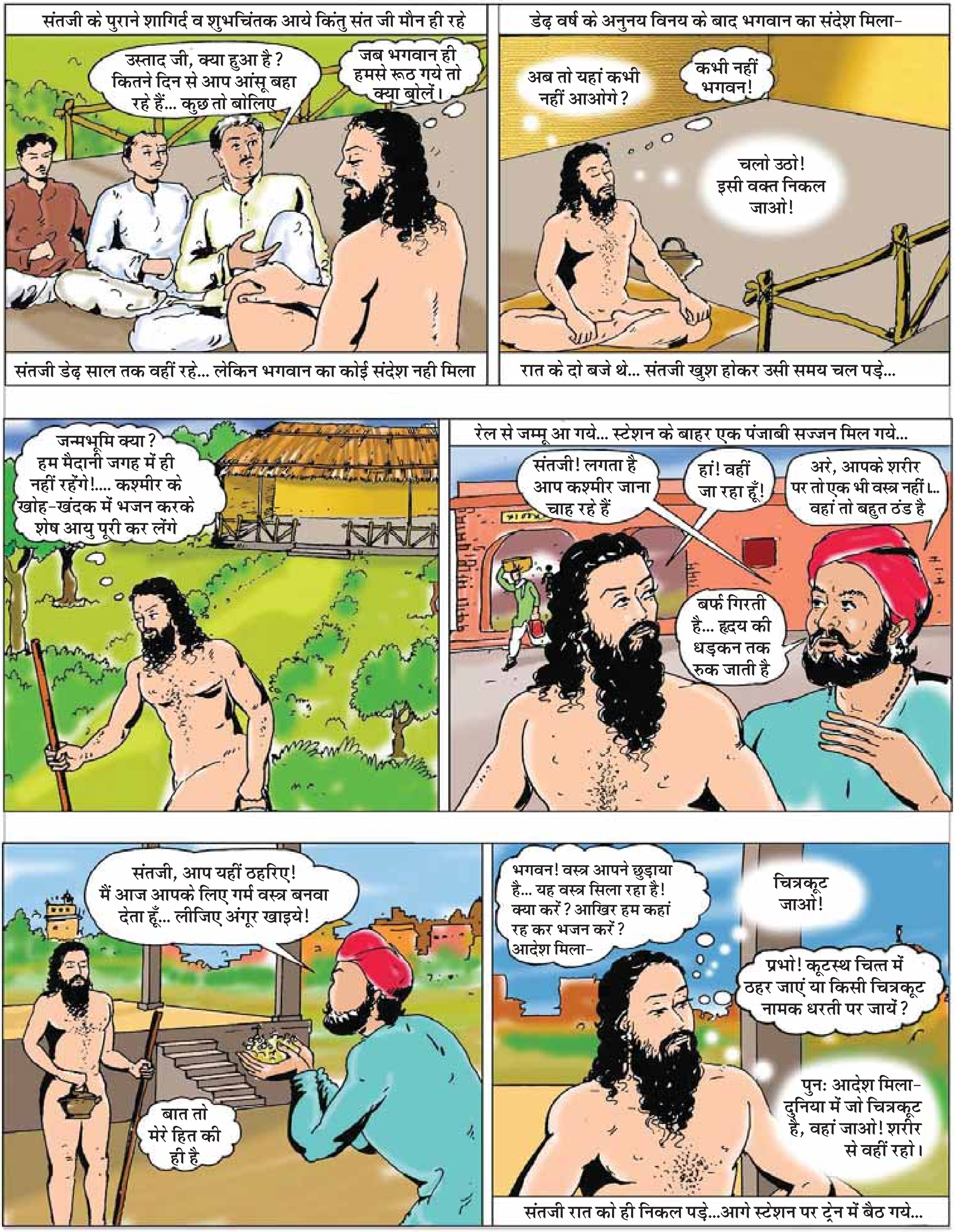
संतजी के पुराने शागिर्द व शुभचिंतक आये किंतु संत जी मौन ही रहे
उस्ताद जी, क्या हुआ है? कितने दिन से आप आंसू बहा रहे हैं... कुछ तो बोलिए
जब भगवान ही हमसे रूठ गये तो क्या बोलें।
संतजी डेढ़ साल तक वहीं रहे... लेकिन भगवान का कोई संदेश नही मिला
डेढ़ वर्ष के अनुनय विनय के बाद भगवान का संदेश मिला-
अब तो यहां कभी नहीं आओगे?
कभी नहीं भगवन!
चलो उठो! इसी वक्त निकल जाओ!
रात के दो बजे थे... संतजी खुश होकर उसी समय चल पड़े...
जन्मभूमि क्या? हम मैदानी जगह में ही नहीं रहेंगे!.... कश्मीर के खोह-खंदक में भजन करके शेष आयु पूरी कर लेंगे
रेल से जम्मू आ गये... स्टेशन के बाहर एक पंजाबी सज्जन मिल गये...
संतजी! लगता है आप कश्मीर जाना चाह रहे हैं
हां! वहीं जा रहा हूँ!
अरे, आपके शरीर पर तो एक भी वस्त्र नहीं!... वहां तो बहुत ठंड है
बर्फ गिरती है... हृदय की धड़कन तक रुक जाती है
संतजी, आप यहीं ठहरिए! मैं आज आपके लिए गर्म वस्त्र बनवा देता हूँ... लीजिए अंगूर खाइये!
बात तो मेरे हित की ही है
भगवन! वस्त्र आपने छुड़ाया है... यह वस्त्र सिला रहा है! क्या करें? आखिर हम कहां रह कर भजन करें? आदेश मिला-
चित्रकूट जाओ!
प्रभो! कूटस्थ चित्त में ठहर जाएं या किसी चित्रकूट नामक धरती पर जायें?
पुनः आदेश मिला- दुनिया में जो चित्रकूट है, वहां जाओ! शरीर से वहीं रहो।
संतजी रात को ही निकल पड़े...आगे स्टेशन पर ट्रेन में बैठ गये...

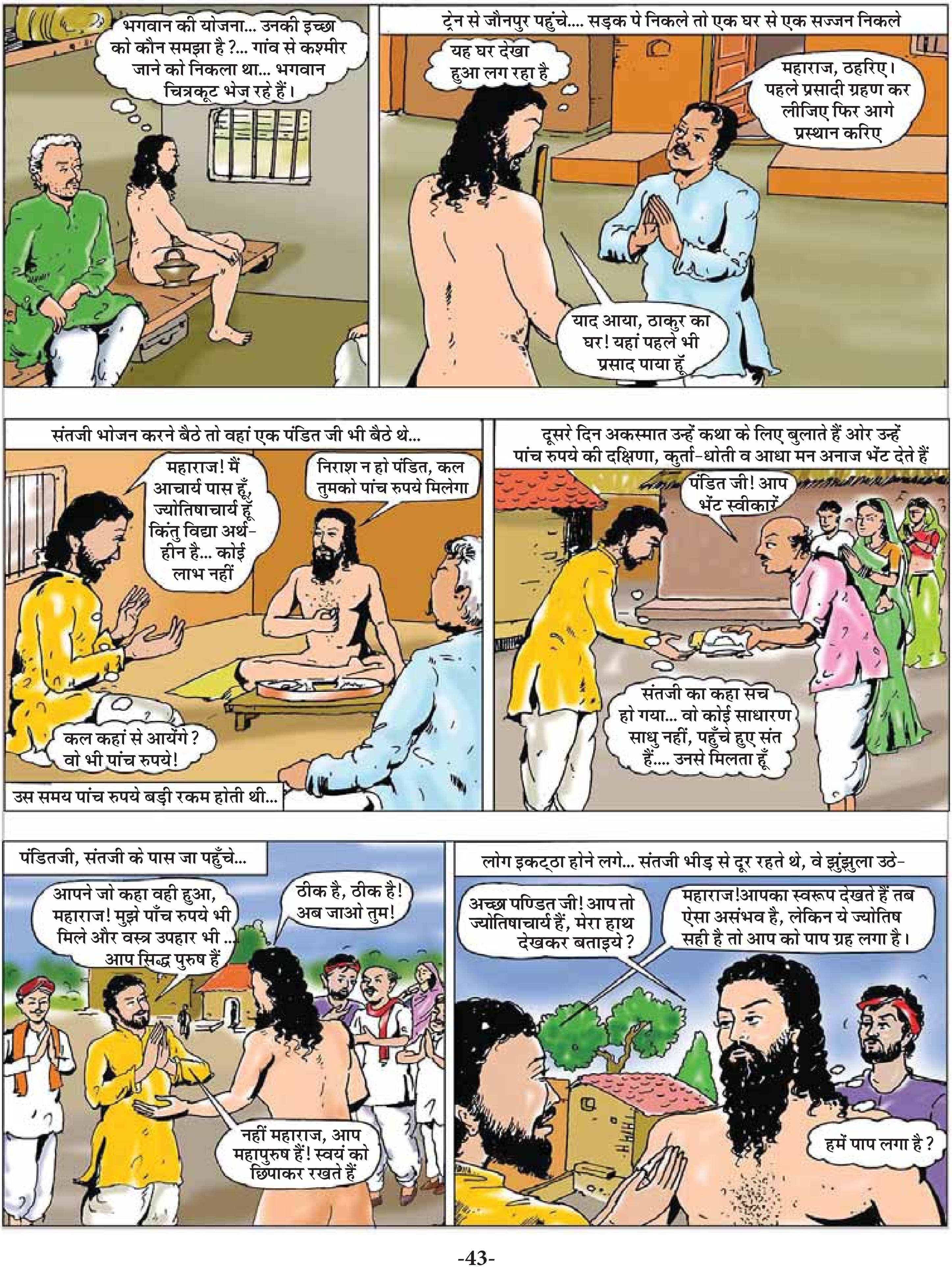

भगवान की योजना... उनकी इच्छा को कौन समझा है ?... गांव से कश्मीर जाने को निकला था... भगवान चित्रकूट भेज रहे हैं।
ट्रेन से जौनपुर पहुंचे.... सड़क पे निकले तो एक घर से एक सज्जन निकले
यह घर देखा हुआ लग रहा है
महाराज, ठहरिए। पहले प्रसादी ग्रहण कर लीजिए फिर आगे प्रस्थान करिए
याद आया, ठाकुर का घर! यहां पहले भी प्रसाद पाया हूँ
संतजी भोजन करने बैठे तो वहां एक पंडित जी भी बैठे थे...
महाराज! मैं आचार्य पास हूँ, ज्योतिषाचार्य हूँ किंतु विद्या अर्थ-हीन है... कोई लाभ नहीं
निराश न हो पंडित, कल तुमको पांच रुपये मिलेगा
कल कहां से आयेंगे ? वो भी पांच रुपये!
उस समय पांच रुपये बड़ी रकम होती थी...
दूसरे दिन अकस्मात उन्हें कथा के लिए बुलाते हैं ओर उन्हें पांच रुपये की दक्षिणा, कुर्ता-धोती व आधा मन अनाज भेंट देते हैं
पंडित जी! आप भेंट स्वीकारें
संतजी का कहा सच हो गया... वो कोई साधारण साधु नहीं, पहुँचे हुए संत हैं.... उनसे मिलता हूँ
पंडितजी, संतजी के पास जा पहुँचे...
आपने जो कहा वही हुआ, महाराज! मुझे पाँच रुपये भी मिले और वस्त्र उपहार भी ... आप सिद्ध पुरुष हैं
ठीक है, ठीक है! अब जाओ तुम!
नहीं महाराज, आप महापुरुष हैं! स्वयं को छिपाकर रखते हैं
लोग इकट्ठा होने लगे... संतजी भीड़ से दूर रहते थे, वे झुंझुला उठे-
अच्छा पण्डित जी! आप तो ज्योतिषाचार्य हैं, मेरा हाथ देखकर बताइये ?
महाराज!आपका स्वरूप देखते हैं तब ऐसा असंभव है, लेकिन ये ज्योतिष सही है तो आप को पाप ग्रह लगा है।
हमें पाप लगा है ?

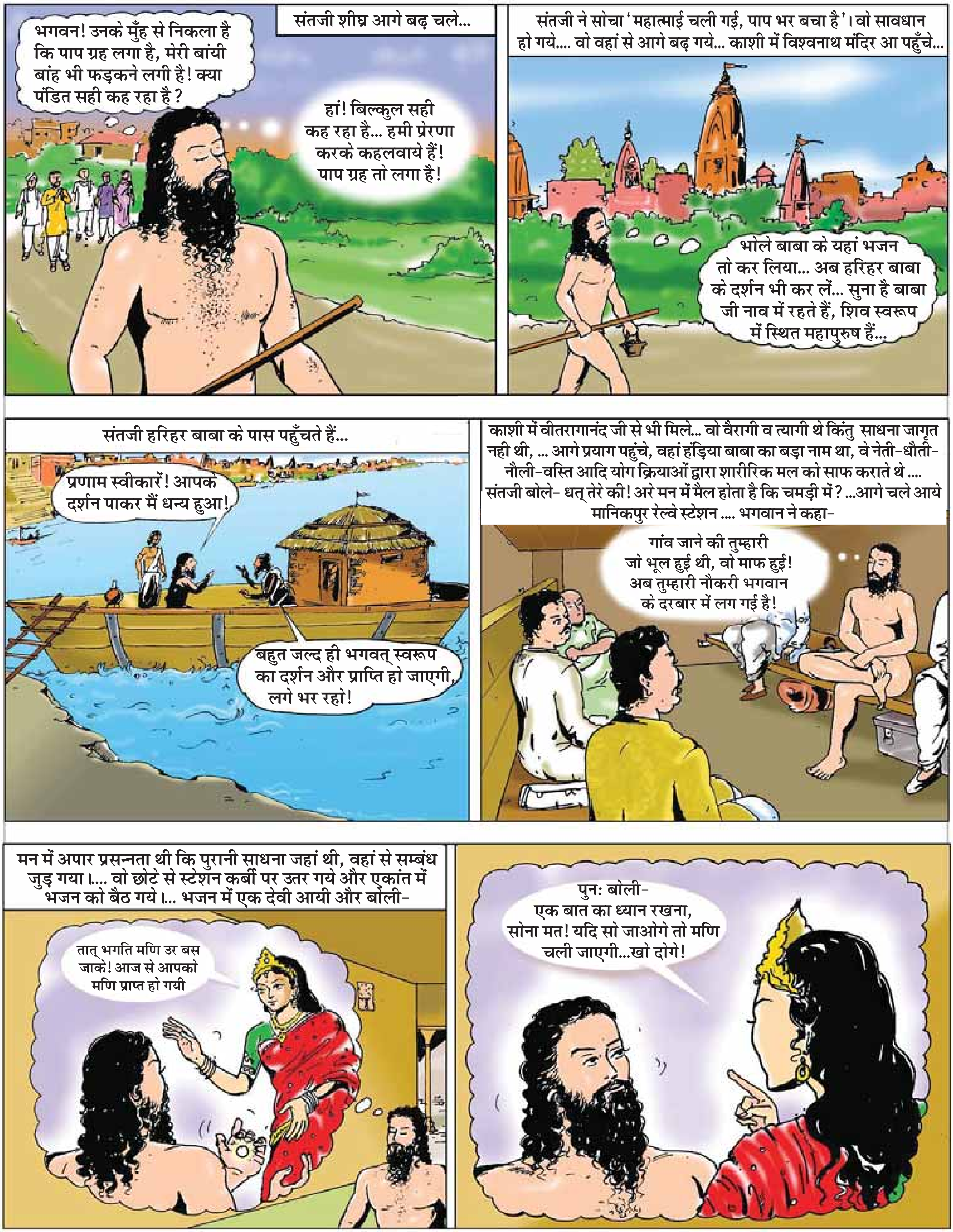

संतजी शीघ्र आगे बढ़ चले...
भगवन! उनके मुँह से निकला है कि पाप ग्रह लगा है, मेरी बांयी बांह भी फड़कने लगी है! क्या पंडित सही कह रहा है ?
हां! बिल्कुल सही कह रहा है... हमी प्रेरणा करके कहलवाये हैं! पाप ग्रह तो लगा है!
संतजी ने सोचा 'महात्माई चली गई, पाप भर बचा है'। वो सावधान हो गये.... वो वहां से आगे बढ़ गये... काशी में विश्वनाथ मंदिर आ पहुँचे...
भोले बाबा के यहां भजन तो कर लिया... अब हरिहर बाबा के दर्शन भी कर लें... सुना है बाबा जी नाव में रहते हैं, शिव स्वरूप में स्थित महापुरुष हैं...
संतजी हरिहर बाबा के पास पहुँचते हैं...
प्रणाम स्वीकारें! आपके दर्शन पाकर मैं धन्य हुआ!
बहुत जल्द ही भगवत् स्वरूप का दर्शन और प्राप्ति हो जाएगी, लगे भर रहो!
काशी में वीतरागानंद जी से भी मिले... वो वैरागी व त्यागी थे किंतु साधना जागृत नही थी, ... आगे प्रयाग पहुंचे, वहां हंड़िया बाबा का बड़ा नाम था, वे नेती-धौती-नौली-वस्ति आदि योग क्रियाओं द्वारा शारीरिक मल को साफ कराते थे .... संतजी बोले- धत् तेरे की! अरे मन में मैल होता है कि चमड़ी में? ...आगे चले आये मानिकपुर रेल्वे स्टेशन .... भगवान ने कहा-
गांव जाने की तुम्हारी जो भूल हुई थी, वो माफ हुई! अब तुम्हारी नौकरी भगवान के दरबार में लग गई है!
मन में अपार प्रसन्नता थी कि पुरानी साधना जहां थी, वहां से सम्बंध जुड़ गया।.... वो छोटे से स्टेशन कर्वी पर उतर गये और एकांत में भजन को बैठ गये।... भजन में एक देवी आयी और बोली-
तात् भगति मणि उर बस जाके! आज से आपको मणि प्राप्त हो गयी
पुनः बोली- एक बात का ध्यान रखना, सोना मत! यदि सो जाओगे तो मणि चली जाएगी...खो दोगे!

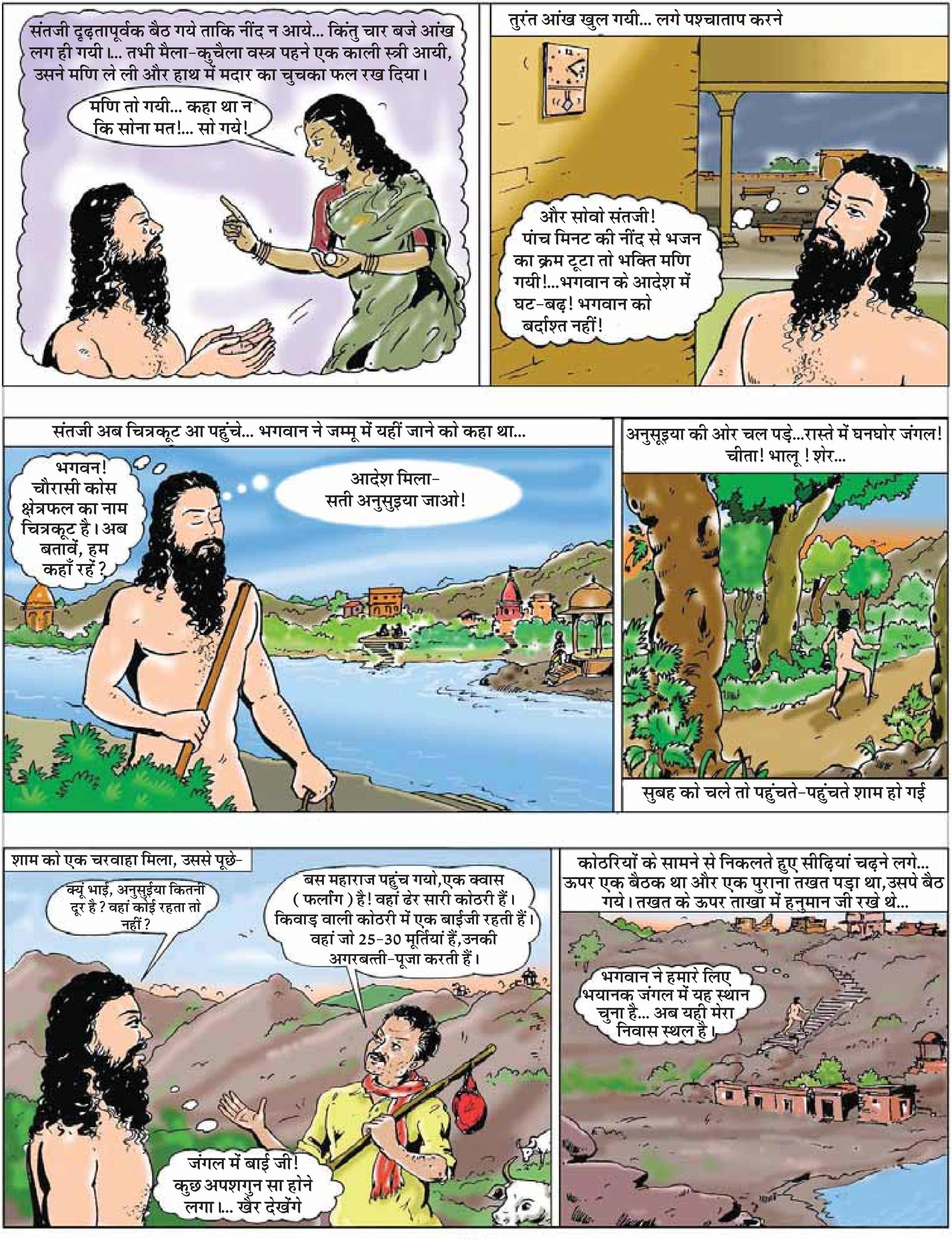

संतजी दृढ़तापूर्वक बैठ गये ताकि नींद न आये... किंतु चार बजे आंख लग ही गयी।... तभी मैला-कुचैला वस्त्र पहने एक काली स्त्री आयी, उसने मणि ले ली और हाथ में मदार का चुचका फल रख दिया।
मणि तो गयी... कहा था न कि सोना मत!... सो गये!
तुरंत आंख खुल गयी... लगे पश्चाताप करने
और सोवो संतजी! पांच मिनट की नींद से भजन का क्रम टूटा तो भक्ति मणि गयी!...भगवान के आदेश में घट-बढ़! भगवान को बर्दाश्त नहीं!
संतजी अब चित्रकूट आ पहुंचे... भगवान ने जम्मू में यहीं जाने को कहा था...
भगवन! चौरासी कोस क्षेत्रफल का नाम चित्रकूट है। अब बतावें, हम कहाँ रहें?
आदेश मिला- सती अनुसुइया जाओ!
अनुसूइया की ओर चल पड़े...रास्ते में घनघोर जंगल! चीता! भालू! शेर...
सुबह को चले तो पहुंचते-पहुंचते शाम हो गई
शाम को एक चरवाहा मिला, उससे पूछे-
क्यूं भाई, अनुसुईया कितनी दूर है? वहां कोई रहता तो नहीं?
बस महाराज पहुंच गयो,एक क्वास (फर्लांग) है! वहां ढेर सारी कोठरी हैं। किवाड़ वाली कोठरी में एक बाईजी रहती हैं। वहां जो 25-30 मूर्तियां हैं,उनकी अगरबत्ती-पूजा करती हैं।
जंगल में बाई जी! कुछ अपशगुन सा होने लगा।... खैर देखेंगे
कोठरियों के सामने से निकलते हुए सीढ़ियां चढ़ने लगे... ऊपर एक बैठक था और एक पुराना तखत पड़ा था,उसपे बैठ गये। तखत के ऊपर ताखा में हनुमान जी रखे थे...
भगवान ने हमारे लिए भयानक जंगल में यह स्थान चुना है... अब यही मेरा निवास स्थल है।

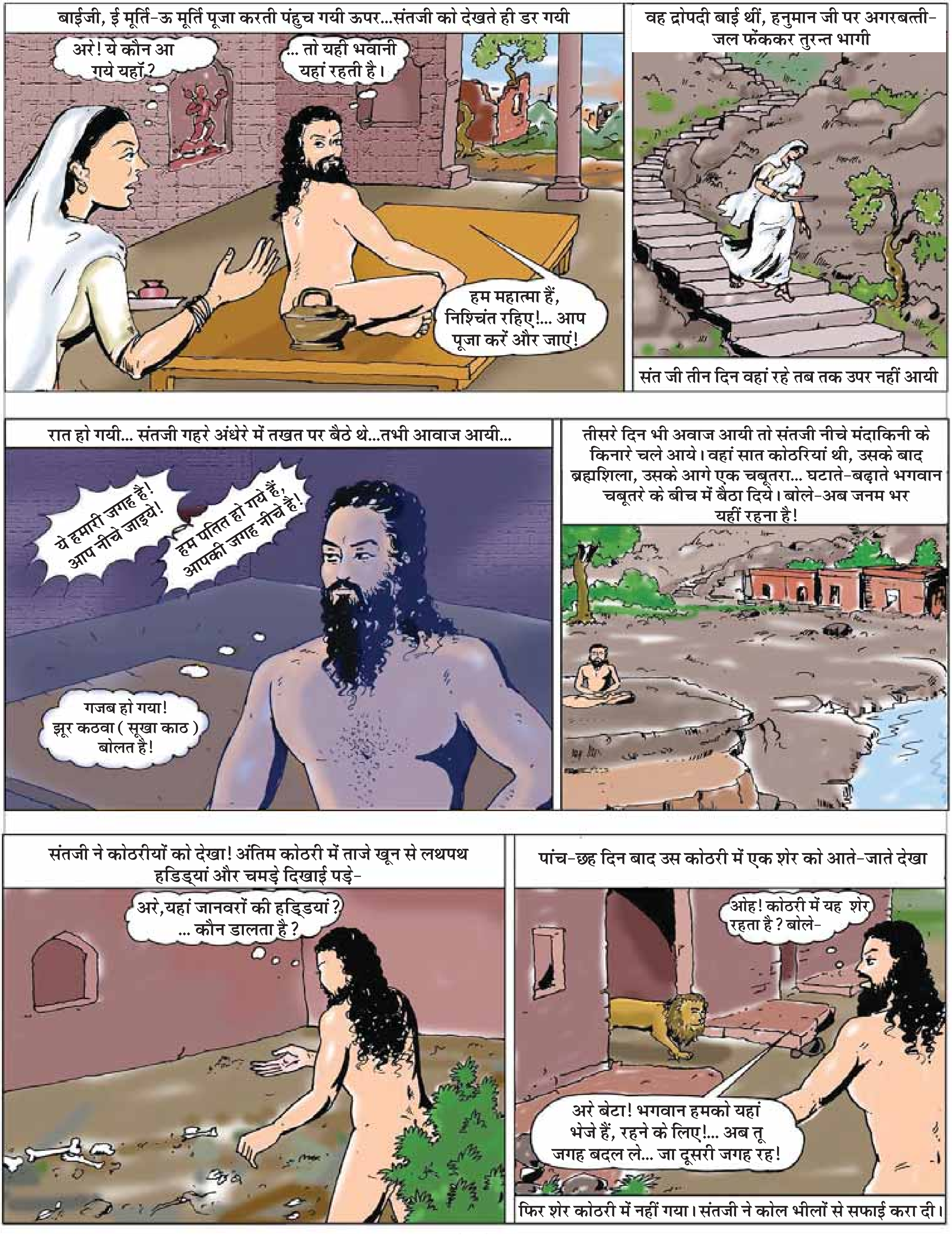

बाईजी, ई मूर्ति-ऊ मूर्ति पूजा करती पंहुच गयी ऊपर...संतजी को देखते ही डर गयी
अरे! ये कौन आ गये यहॉं?
... तो यही भवानी यहां रहती है।
हम महात्मा हैं, निश्चिंत रहिए!... आप पूजा करें और जाएं!
वह द्रोपदी बाई थीं, हनुमान जी पर अगरबत्ती-जल फेंककर तुरन्त भागी
संत जी तीन दिन वहां रहे तब तक उपर नहीं आयी
रात हो गयी... संतजी गहरे अंधेरे में तखत पर बैठे थे...तभी आवाज आयी...
ये हमारी जगह है! आप नीचे जाइये!
हम पतित हो गये हैं, आपकी जगह नीचे है!
गजब हो गया! झूर कठवा (सूखा काठ) बोलत है!
तीसरे दिन भी अवाज आयी तो संतजी नीचे मंदाकिनी के किनारे चले आये। वहां सात कोठरियां थी, उसके बाद ब्रह्मशिला, उसके आगे एक चबूतरा... घटाते-बढ़ाते भगवान चबूतरे के बीच में बैठा दिये। बोले-अब जनम भर यहीं रहना है!
संतजी ने कोठरीयों को देखा! अंतिम कोठरी में ताजे खून से लथपथ हडि्डयां और चमड़े दिखाई पड़े-
अरे,यहां जानवरों की हडि्डयां? ... कौन डालता है?
पांच-छह दिन बाद उस कोठरी में एक शेर को आते-जाते देखा
ओह! कोठरी में यह शेर रहता है? बोले-
अरे बेटा! भगवान हमको यहां भेजे हैं, रहने के लिए!... अब तू जगह बदल ले... जा दूसरी जगह रह!
फिर शेर कोठरी में नहीं गया। संतजी ने कोल भीलों से सफाई करा दी।

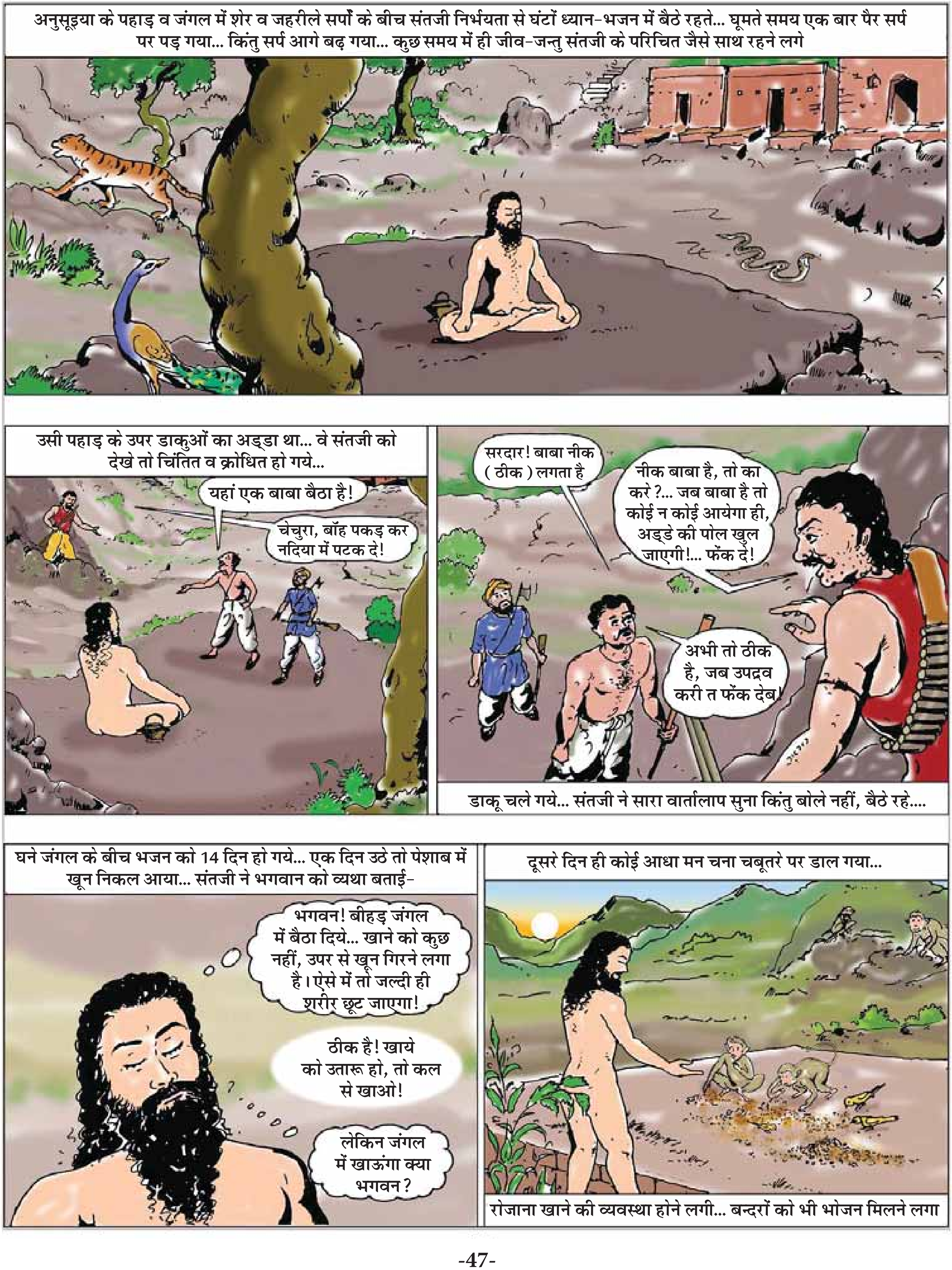
अनुसूइया के पहाड़ व जंगल में शेर व जहरीले सर्पों के बीच संतजी निर्भयता से घंटों ध्यान-भजन में बैठे रहते... घूमते समय एक बार पैर सर्प पर पड़ गया... किंतु सर्प आगे बढ़ गया... कुछ समय में ही जीव-जन्तु संतजी के परिचित जैसे साथ रहने लगे
उसी पहाड़ के उपर डाकुओं का अड्डा था... वे संतजी को देखे तो चिंतित व क्रोधित हो गये...
यहां एक बाबा बैठा है!
चेचुरा, बॉह पकड़ कर नदिया में पटक दे!
सरदार! बाबा नीक (ठीक) लगता है
नीक बाबा है, तो का करे ?... जब बाबा है तो कोई न कोई आयेगा ही, अड्डे की पोल खुल जाएगी!... फेंक दे!
अभी तो ठीक है, जब उपद्रव करी त फेंक देब!
डाकू चले गये... संतजी ने सारा वार्तालाप सुना किंतु बोले नहीं, बैठे रहे....
घने जंगल के बीच भजन को 14 दिन हो गये... एक दिन उठे तो पेशाब में खून निकल आया... संतजी ने भगवान को व्यथा बताई-
भगवन! बीहड़ जंगल में बैठा दिये... खाने को कुछ नहीं, उपर से खून गिरने लगा है। ऐसे में तो जल्दी ही शरीर छूट जाएगा!
ठीक है! खाये को उतारू हो, तो कल से खाओ!
लेकिन जंगल में खाऊंगा क्या भगवन?
दूसरे दिन ही कोई आधा मन चना चबूतरे पर डाल गया...
रोजाना खाने की व्यवस्था होने लगी... बन्दरों को भी भोजन मिलने लगा

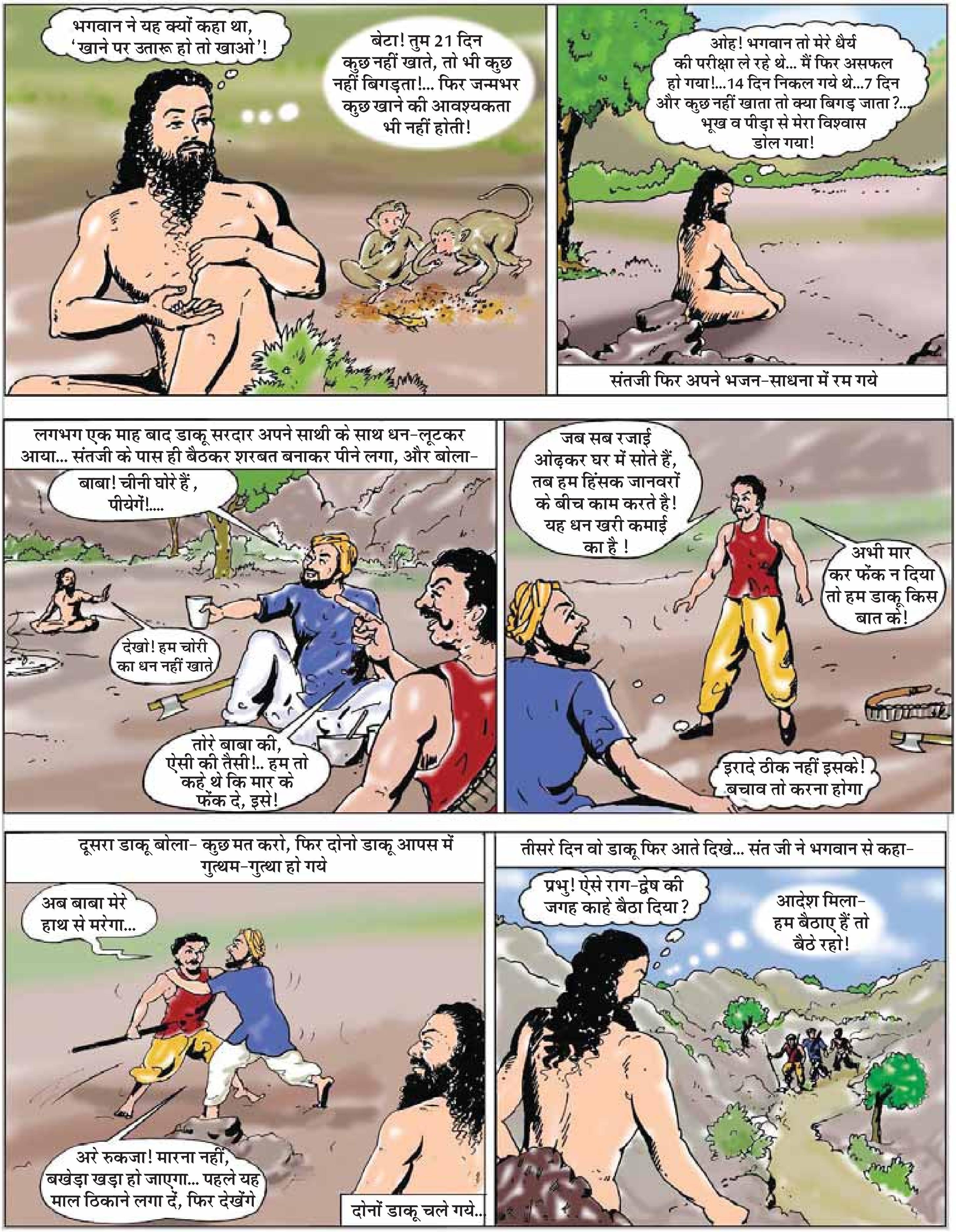
भगवान ने यह क्यों कहा था, 'खाने पर उतारू हो तो खाओ'!
बेटा! तुम 21 दिन कुछ नहीं खाते, तो भी कुछ नहीं बिगड़ता!... फिर जन्मभर कुछ खाने की आवश्यकता भी नहीं होती!
ओह! भगवान तो मेरे धैर्य की परीक्षा ले रहे थे... मैं फिर असफल हो गया!...14 दिन निकल गये थे...7 दिन और कुछ नहीं खाता तो क्या बिगड़ जाता?... भूख व पीड़ा से मेरा विश्वास डोल गया!
संतजी फिर अपने भजन-साधना में रम गये
लगभग एक माह बाद डाकू सरदार अपने साथी के साथ धन-लूटकर आया... संतजी के पास ही बैठकर शरबत बनाकर पीने लगा, और बोला-
बाबा! चीनी घोरे हैं, पीयेगें!....
देखो! हम चोरी का धन नहीं खाते
तोरे बाबा की, ऐसी की तैसी!.. हम तो कहे थे कि मार के फेंक दे, इसे!
जब सब रजाई ओढ़कर घर में सोते हैं, तब हम हिंसक जानवरों के बीच काम करते है! यह धन खरी कमाई का है !
अभी मार कर फेंक न दिया तो हम डाकू किस बात के!
इरादे ठीक नहीं इसके! बचाव तो करना होगा
दूसरा डाकू बोला- कुछ मत करो, फिर दोनो डाकू आपस में गुत्थम-गुत्था हो गये
अब बाबा मेरे हाथ से मरेगा...
अरे रुकजा! मारना नहीं, बखेड़ा खड़ा हो जाएगा... पहले यह माल ठिकाने लगा दें, फिर देखेंगे
दोनों डाकू चले गये..
तीसरे दिन वो डाकू फिर आते दिखे... संत जी ने भगवान से कहा-
प्रभु! ऐसे राग-द्वेष की जगह काहे बैठा दिया?
आदेश मिला- हम बैठाए हैं तो बैठे रहो!

डाकू आगे बढ ही रहे थे कि रास्ते में दो शेर लड़ते हुए दिखे...
वापस लौटने में ही भला है...
डाकू नदी किनारे पहुंचकर थोड़ा सुस्ताए...
अब तो शेर निकल गये होंगे... अब चलें।
मुझे तो सगुन ठीक नहीं लग रहा... यह बाबा कुछ जानता है!... ऐसा लगा जैसे शेर हमारी राह रोकने ही आये थे!
सरदार, मेरी तो हिम्मत नहीं है!
मैं भी नहीं जाऊंगा!
अकेला सरदार क्या करता ?.... सब अपने गांव लौट आये...
घर आते ही डाकू सरदार तेज बुखार से पीड़ित हो गया... तबियत अधिक बिगड़ी तो उसके साथी संतजी की शरण में आये...
महाराज! हमें संत की क्या पहचान ? हमारे सरदार के प्राण बचा लें!
ले ले यह विभूति! तू भी लगाले, खाले, और उसे भी खिलाना! विभूति पा गया तो नहीं मरेगा!
अनुसूईया से आठ किमी दूर गांव में सरदार को विभूति दी तो उसी दिन बुखार उतरने के साथ ही हृदय परिवर्तन भी हो गया
पहले मैं महात्मा जी के दर्शन करूँगा... उन्होंने मुझे प्राण दान दिया है!
हम लोग चलेंगे अनुसूईया...
सरदार के साथ गांव के लोग भी संतजी के दर्शन करने पहुँचे
महाराज! मुझे क्षमा करें, मैं आपका अपराधी था फिर भी आपने मेरे प्राण बचाए... अब हम कभी डकैती नहीं डालेंगे!
सब की चोरी डकैती छूट गई... गांव के लोगों में संतजी के लिए श्रद्धा जागृत हो गई

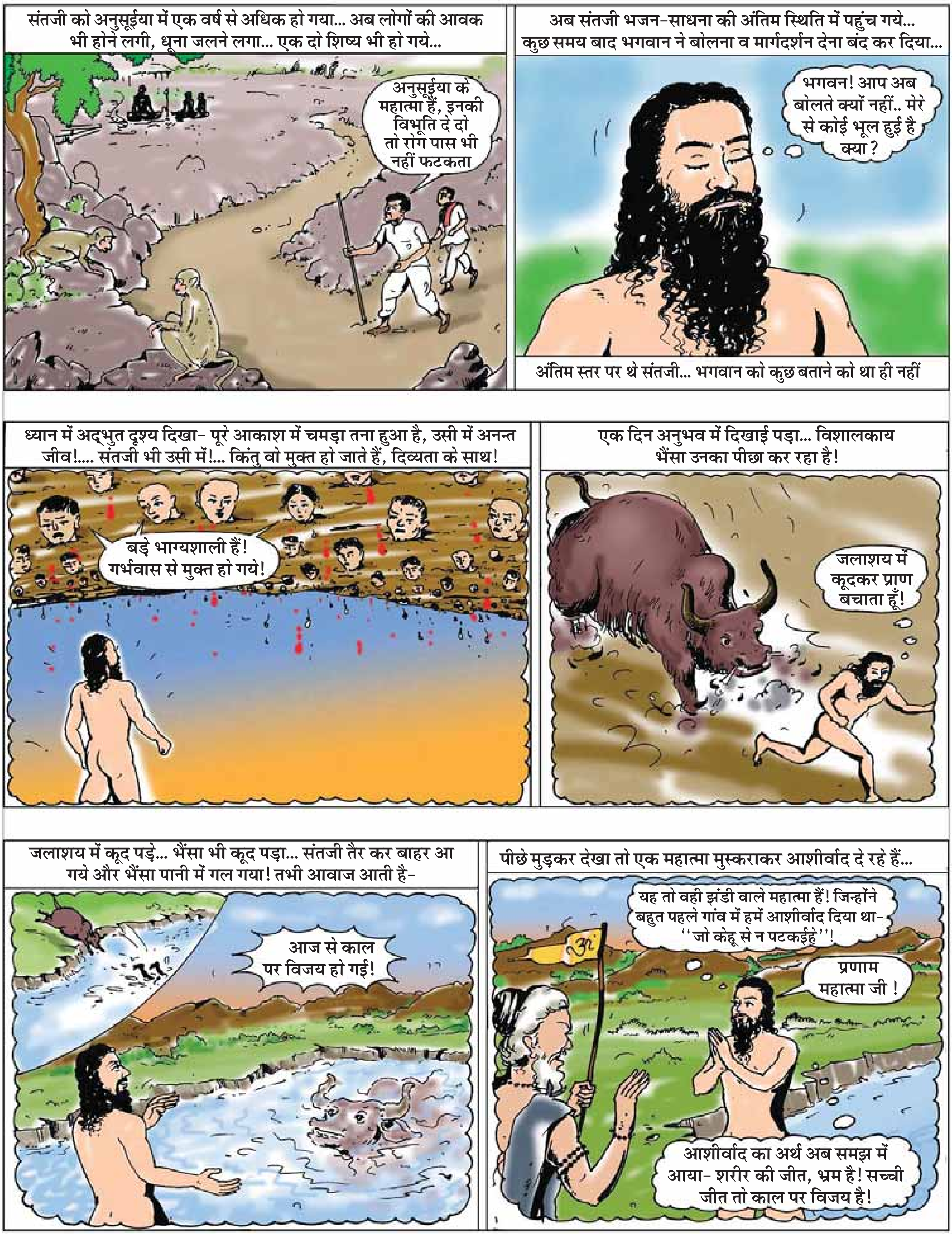
संतजी को अनुसूईया में एक वर्ष से अधिक हो गया... अब लोगों की आवक भी होने लगी, धूना जलने लगा... एक दो शिष्य भी हो गये...
अनुसूईया के महात्मा हैं, इनकी विभूति दे दो तो रोग पास भी नहीं फटकता
अब संतजी भजन-साधना की अंतिम स्थिति में पहुंच गये... कुछ समय बाद भगवान ने बोलना व मार्गदर्शन देना बंद कर दिया...
भगवन! आप अब बोलते क्यों नहीं.. मेरे से कोई भूल हुई है क्या?
अंतिम स्तर पर थे संतजी... भगवान को कुछ बताने को था ही नहीं
ध्यान में अद्भुत दृश्य दिखा- पूरे आकाश में चमड़ा तना हुआ है, उसी में अनन्त जीव!.... संतजी भी उसी में!... किंतु वो मुक्त हो जाते हैं, दिव्यता के साथ!
बड़े भाग्यशाली हैं! गर्भवास से मुक्त हो गये!
एक दिन अनुभव में दिखाई पड़ा... विशालकाय भैंसा उनका पीछा कर रहा है!
जलाशय में कूदकर प्राण बचाता हूँ!
जलाशय में कूद पड़े... भैंसा भी कूद पड़ा... संतजी तैर कर बाहर आ गये और भैंसा पानी में गल गया! तभी आवाज आती है-
आज से काल पर विजय हो गई!
पीछे मुड़कर देखा तो एक महात्मा मुस्कराकर आशीर्वाद दे रहे हैं...
यह तो वही झंडी वाले महात्मा हैं! जिन्होंने बहुत पहले गांव में हमें आशीर्वाद दिया था- ''जो केहू से न पटकईहे''!
प्रणाम महात्मा जी !
आशीर्वाद का अर्थ अब समझ में आया- शरीर की जीत, भ्रम है! सच्ची जीत तो काल पर विजय है!

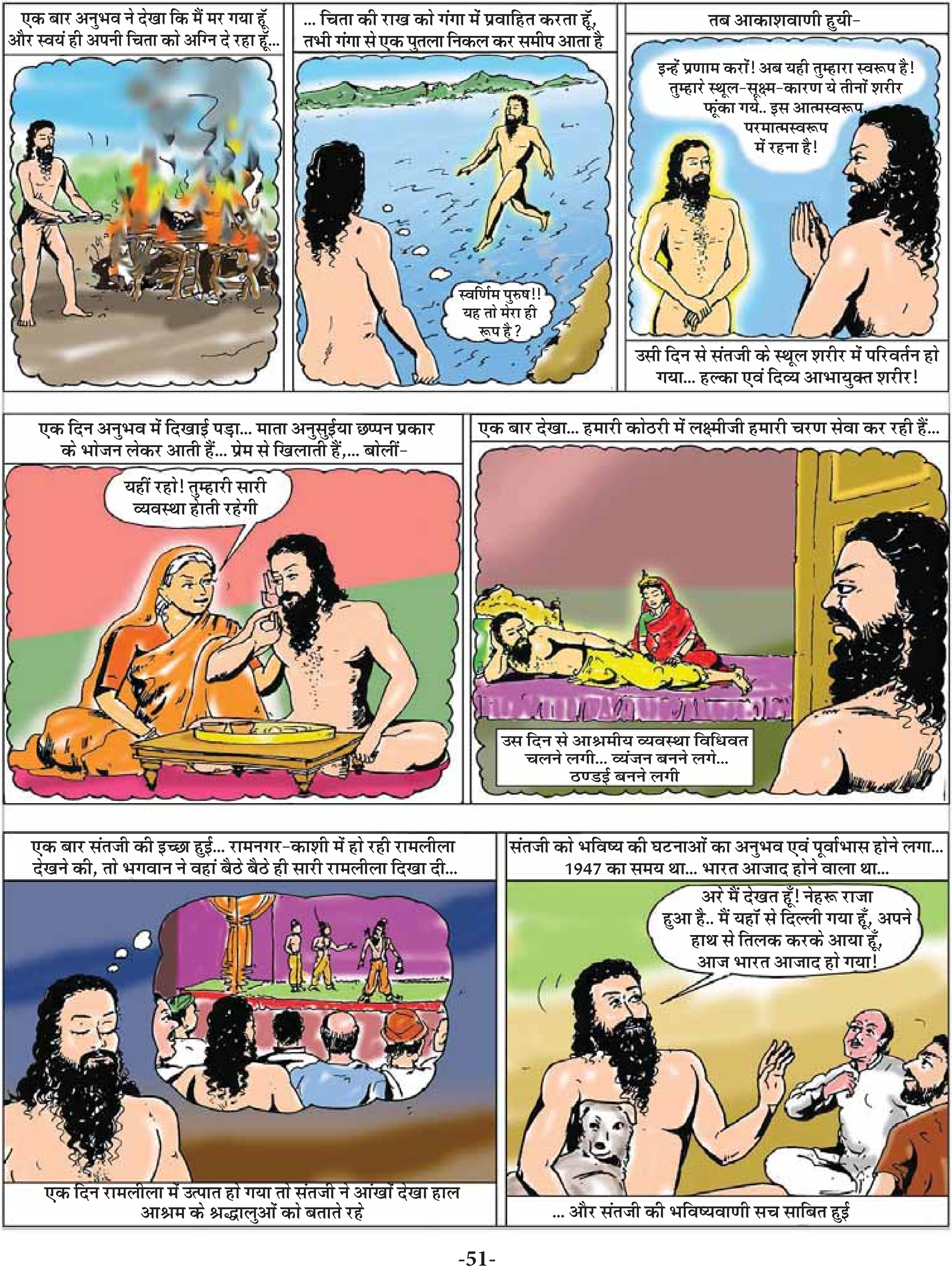
एक बार अनुभव ने देखा कि मैं मर गया हूँ और स्वयं ही अपनी चिता को अग्नि दे रहा हूँ...
... चिता की राख को गंगा में प्रवाहित करता हूँ, तभी गंगा से एक पुतला निकल कर समीप आता है
स्वर्णिम पुरुष!! यह तो मेरा ही रूप है ?
तब आकाशवाणी हुयी-
इन्हें प्रणाम करो! अब यही तुम्हारा स्वरूप है! तुम्हारे स्थूल-सूक्ष्म-कारण ये तीनों शरीर फूंका गये.. इस आत्मस्वरूप, परमात्मस्वरूप में रहना है!
उसी दिन से संतजी के स्थूल शरीर में परिवर्तन हो गया... हल्का एवं दिव्य आभायुक्त शरीर!
एक दिन अनुभव में दिखाई पड़ा... माता अनुसुईया छप्पन प्रकार के भोजन लेकर आती हैं... प्रेम से खिलाती हैं,... बोलीं-
यहीं रहो! तुम्हारी सारी व्यवस्था होती रहेगी
एक बार देखा... हमारी कोठरी में लक्ष्मीजी हमारी चरण सेवा कर रही हैं...
उस दिन से आश्रमीय व्यवस्था विधिवत चलने लगी... व्यंजन बनने लगे... ठण्डई बनने लगी
एक बार संतजी की इच्छा हुई... रामनगर-काशी में हो रही रामलीला देखने की, तो भगवान ने वहां बैठे बैठे ही सारी रामलीला दिखा दी...
एक दिन रामलीला में उत्पात हो गया तो संतजी ने आंखों देखा हाल आश्रम के श्रद्धालुओं को बताते रहे
संतजी को भविष्य की घटनाओं का अनुभव एवं पूर्वाभास होने लगा... 1947 का समय था... भारत आजाद होने वाला था...
अरे मैं देखत हूँ! नेहरू राजा हुआ है.. मैं यहाँ से दिल्ली गया हूँ, अपने हाथ से तिलक करके आया हूँ, आज भारत आजाद हो गया!
... और संतजी की भविष्यवाणी सच साबित हुई

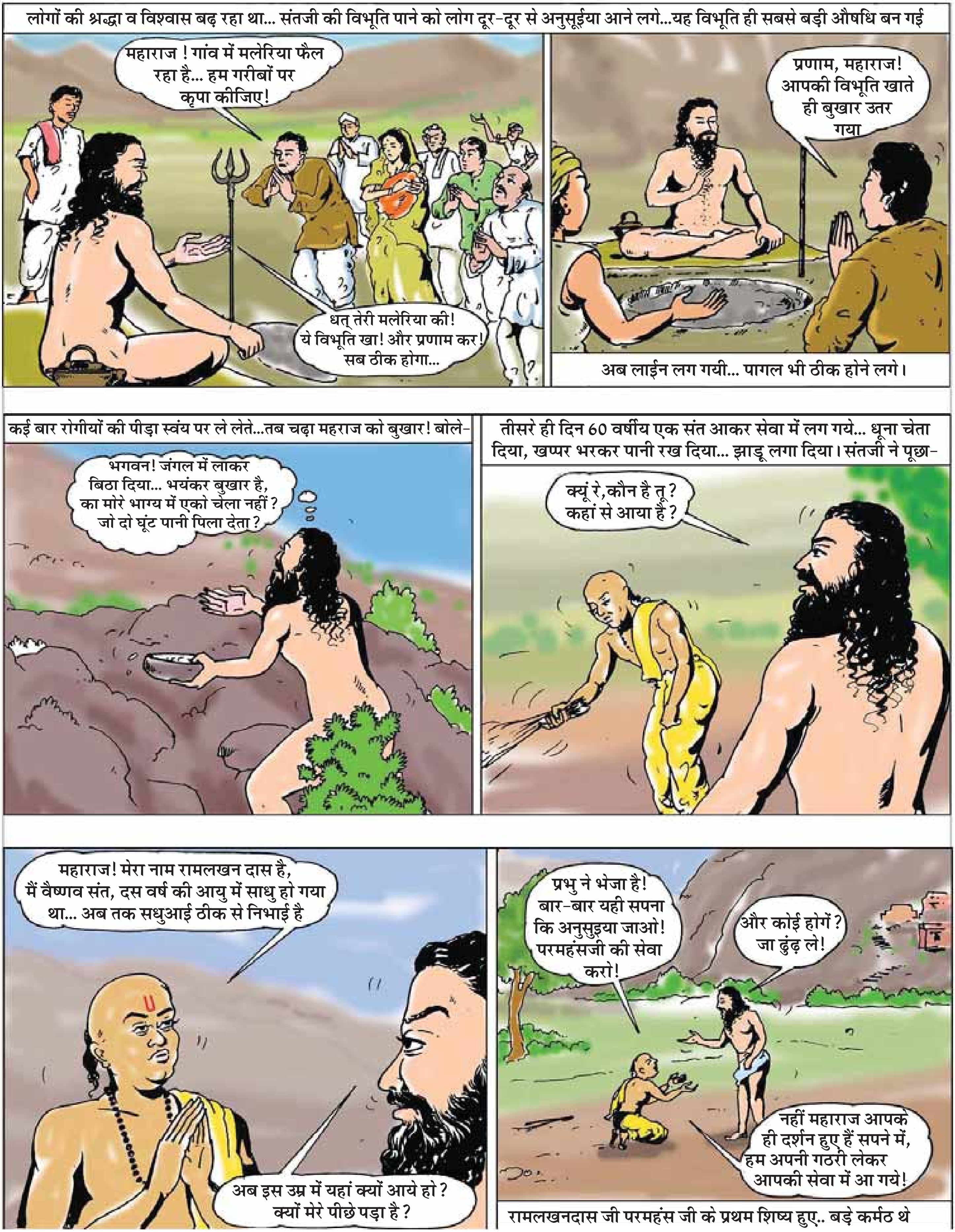
लोगों की श्रद्धा व विश्वास बढ़ रहा था... संतजी की विभूति पाने को लोग दूर-दूर से अनुसूईया आने लगे...यह विभूति ही सबसे बड़ी औषधि बन गई
महाराज ! गांव में मलेरिया फैल रहा है... हम गरीबों पर कृपा कीजिए!
धत् तेरी मलेरिया की! ये विभूति खा! और प्रणाम कर! सब ठीक होगा...
प्रणाम, महाराज! आपकी विभूति खाते ही बुखार उतर गया
अब लाईन लग गयी... पागल भी ठीक होने लगे।
कई बार रोगीयों की पीड़ा स्वंय पर ले लेते...तब चढ़ा महराज को बुखार! बोले-
भगवन! जंगल में लाकर बिठा दिया... भयंकर बुखार है, का मोरे भाग्य में एको चेला नहीं? जो दो घूंट पानी पिला देता?
तीसरे ही दिन 60 वर्षीय एक संत आकर सेवा में लग गये... धूना चेता दिया, खप्पर भरकर पानी रख दिया... झाडू लगा दिया। संतजी ने पूछा-
क्यूं रे,कौन है तू? कहां से आया है?
महाराज! मेरा नाम रामलखन दास है, मैं वैष्णव संत, दस वर्ष की आयु में साधु हो गया था... अब तक सधुआई ठीक से निभाई है
अब इस उम्र में यहां क्यों आये हो? क्यों मेरे पीछे पड़ा है?
प्रभु ने भेजा है! बार-बार यही सपना कि अनुसुइया जाओ! परमहंसजी की सेवा करो!
और कोई होगें? जा ढुंढ़ ले!
नहीं महाराज आपके ही दर्शन हुए हैं सपने में, हम अपनी गठरी लेकर आपकी सेवा में आ गये!
रामलखनदास जी परमहंस जी के प्रथम शिष्य हुए.. बड़े कर्मठ थे

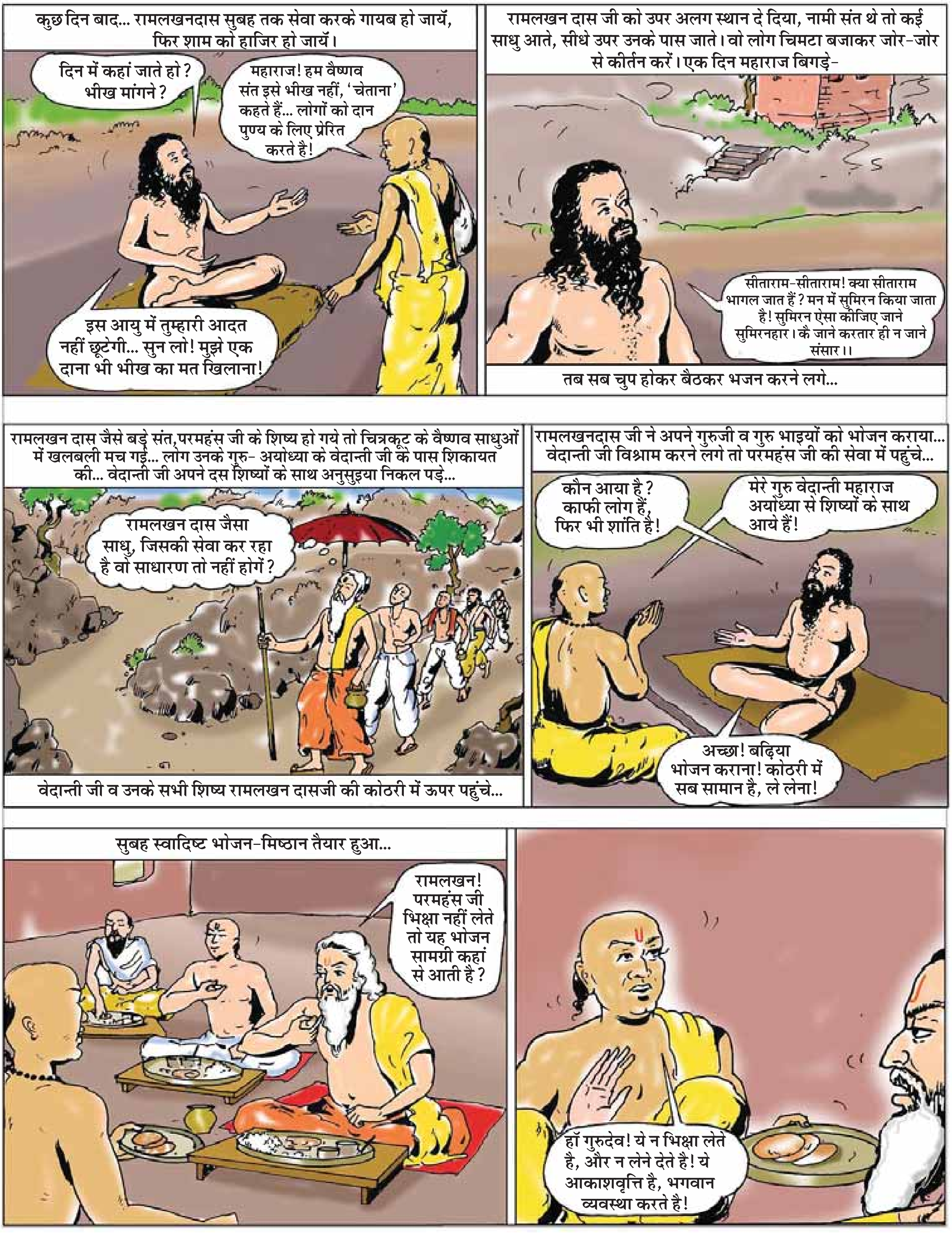
कुछ दिन बाद... रामलखनदास सुबह तक सेवा करके गायब हो जायें, फिर शाम को हाजिर हो जायें।
दिन में कहां जाते हो? भीख मांगने?
महाराज! हम वैष्णव संत इसे भीख नहीं, 'चेताना' कहते हैं... लोगों को दान पुण्य के लिए प्रेरित करते है!
इस आयु में तुम्हारी आदत नहीं छूटेगी... सुन लो! मुझे एक दाना भी भीख का मत खिलाना!
रामलखन दास जी को उपर अलग स्थान दे दिया, नामी संत थे तो कई साधु आते, सीधे उपर उनके पास जाते। वो लोग चिमटा बजाकर जोर-जोर से कीर्तन करें। एक दिन महाराज बिगड़े-
सीताराम-सीताराम! क्या सीताराम भागल जात हैं? मन में सुमिरन किया जाता है! सुमिरन ऐसा कीजिए जाने सुमिरनहार। कै जाने करतार ही न जाने संसार।।
तब सब चुप होकर बैठकर भजन करने लगे...
रामलखन दास जैसे बड़े संत,परमहंस जी के शिष्य हो गये तो चित्रकूट के वैष्णव साधुओं में खलबली मच गई... लोग उनके गुरु- अयोध्या के वेदान्ती जी के पास शिकायत की... वेदान्ती जी अपने दस शिष्यों के साथ अनुसुइया निकल पड़े...
रामलखन दास जैसा साधु, जिसकी सेवा कर रहा है वो साधारण तो नहीं होगें?
वेदान्ती जी व उनके सभी शिष्य रामलखन दासजी की कोठरी में ऊपर पहुंचे...
रामलखनदास जी ने अपने गुरुजी व गुरु भाइयों को भोजन कराया... वेदान्ती जी विश्राम करने लगे तो परमहंस जी की सेवा में पहुंचे...
कौन आया है? काफी लोग हैं, फिर भी शांति है!
मेरे गुरु वेदान्ती महाराज अयोध्या से शिष्यों के साथ आये हैं!
अच्छा! बढ़िया भोजन कराना! कोठरी में सब सामान है, ले लेना!
सुबह स्वादिष्ट भोजन-मिष्ठान तैयार हुआ...
रामलखन! परमहंस जी भिक्षा नहीं लेते तो यह भोजन सामग्री कहां से आती है?
हाँ गुरुदेव! ये न भिक्षा लेते है, और न लेने देते है! ये आकाशवृत्ति है, भगवान व्यवस्था करते है!

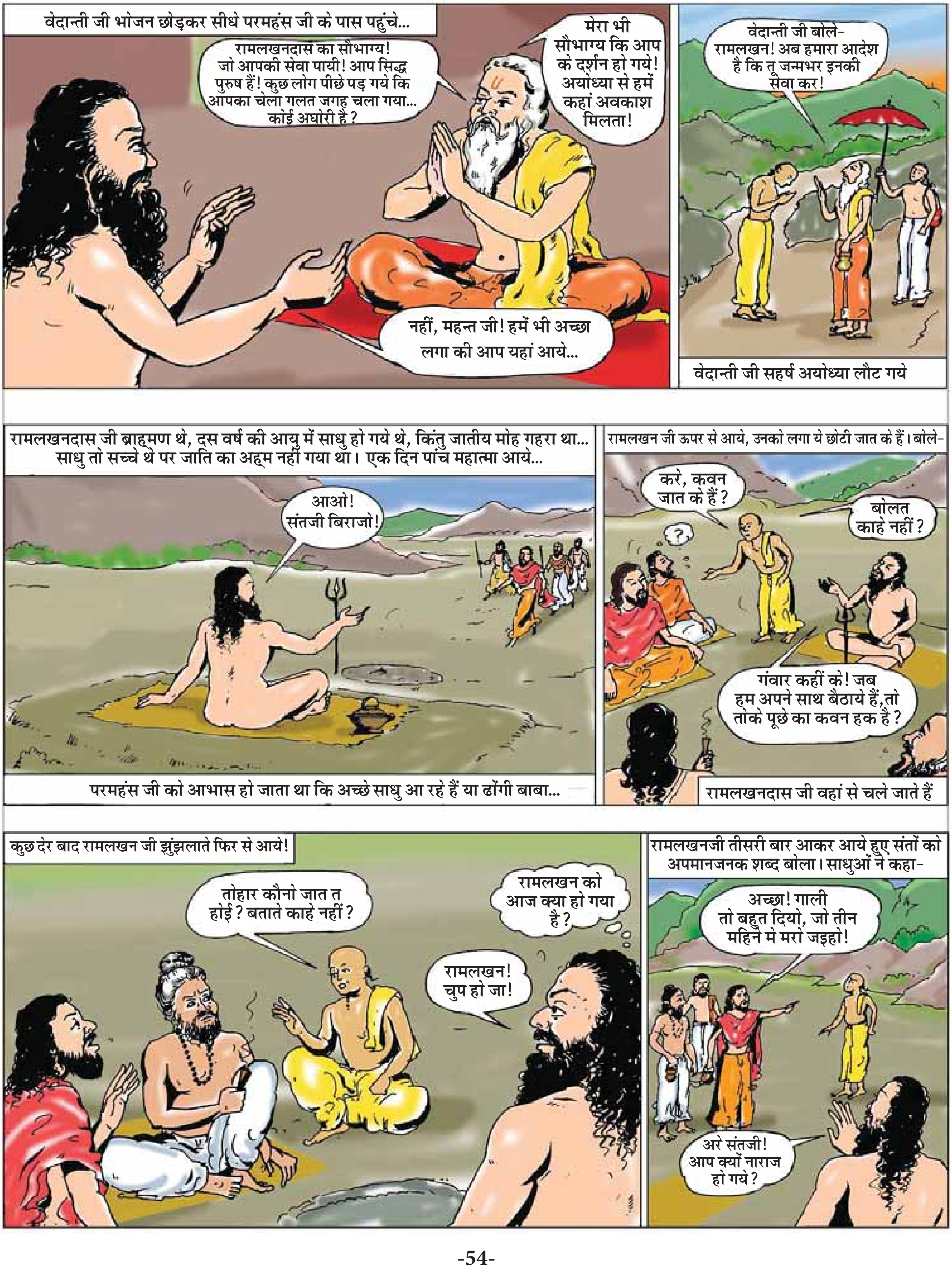

वेदान्ती जी भोजन छोड़कर सीधे परमहंस जी के पास पहुंचे...
रामलखनदास का सौभाग्य! जो आपकी सेवा पायी! आप सिद्ध पुरुष हैं! कुछ लोग पीछे पड़ गये कि आपका चेला गलत जगह चला गया... कोई अघोरी है?
मेरा भी सौभाग्य कि आप के दर्शन हो गये! अयोध्या से हमें कहां अवकाश मिलता!
नहीं, महन्त जी! हमें भी अच्छा लगा की आप यहां आये...
वेदान्ती जी बोले- रामलखन! अब हमारा आदेश है कि तू जन्मभर इनकी सेवा कर!
वेदान्ती जी सहर्ष अयोध्या लौट गये
रामलखनदास जी ब्राह्मण थे, दस वर्ष की आयु में साधु हो गये थे, किंतु जातीय मोह गहरा था... साधु तो सच्चे थे पर जाति का अह्म नहीं गया था। एक दिन पांच महात्मा आये...
आओ! संतजी बिराजो!
परमहंस जी को आभास हो जाता था कि अच्छे साधु आ रहे हैं या ढोंगी बाबा...
रामलखन जी ऊपर से आये, उनको लगा ये छोटी जात के हैं। बोले-
करे, कवन जात के हैं?
?
बोलत काहे नहीं?
गंवार कहीं के! जब हम अपने साथ बैठाये हैं, तो तोके पूछे का कवन हक है?
रामलखनदास जी वहां से चले जाते हैं
कुछ देर बाद रामलखन जी झुंझलाते फिर से आये!
तोहार कौनो जात त होई? बताते काहे नहीं?
रामलखन को आज क्या हो गया है?
रामलखन! चुप हो जा!
रामलखनजी तीसरी बार आकर आये हुए संतों को अपमानजनक शब्द बोला। साधुओं ने कहा-
अच्छा! गाली तो बहुत दियो, जो तीन महिने मे मरो जइहो!
अरे संतजी! आप क्यों नाराज हो गये?

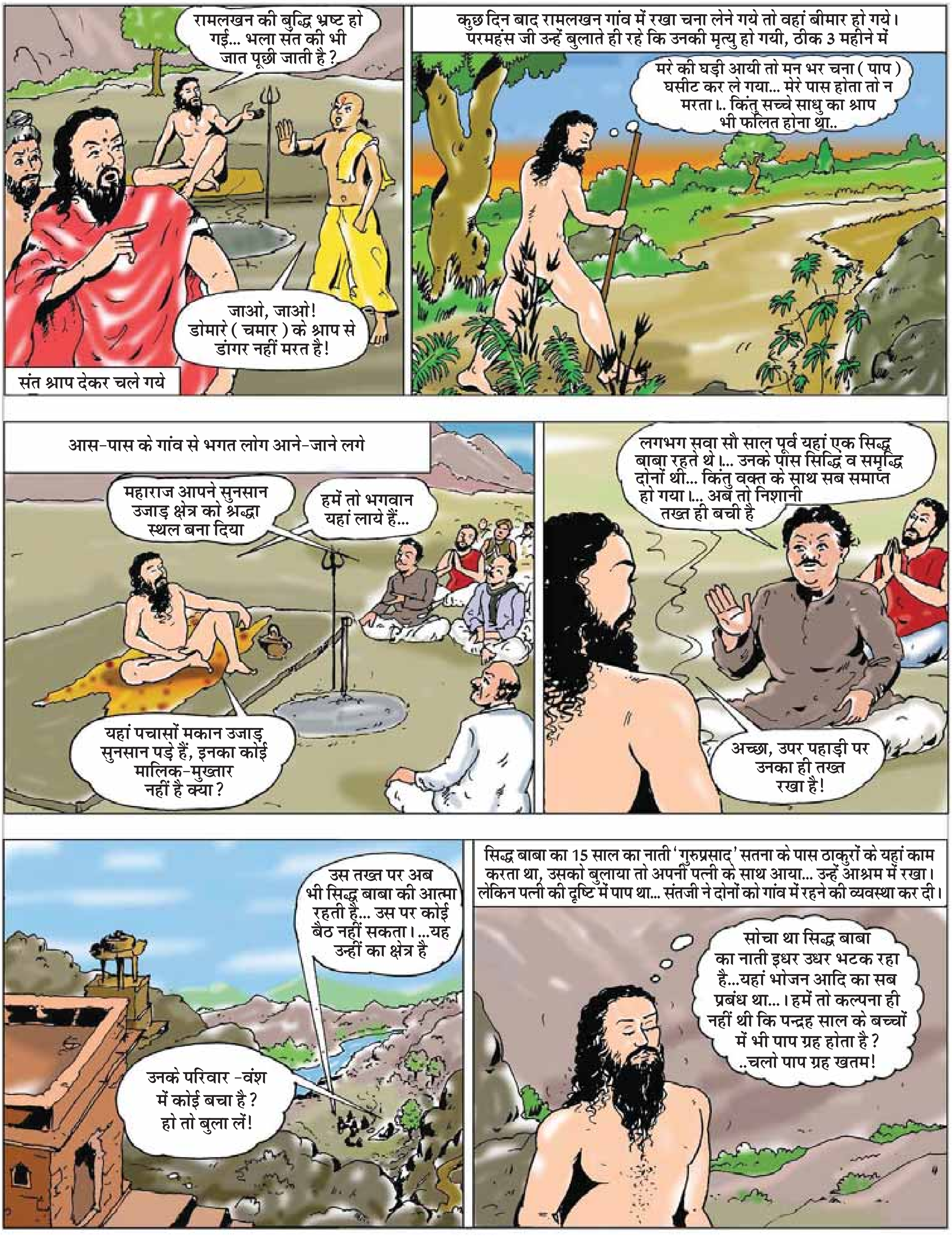
रामलखन की बुद्धि भ्रष्ट हो गई... भला संत की भी जात पूछी जाती है ?
जाओ, जाओ! डोमारे (चमार) के श्राप से डांगर नहीं मरत है!
संत श्राप देकर चले गये
कुछ दिन बाद रामलखन गांव में रखा चना लेने गये तो वहां बीमार हो गये। परमहंस जी उन्हें बुलाते ही रहे कि उनकी मृत्यु हो गयी, ठीक 3 महीने में
मरे की घड़ी आयी तो मन भर चना (पाप) घसीट कर ले गया... मेरे पास होता तो न मरता।.. किंतु सच्चे साधु का श्राप भी फलित होना था..
आस-पास के गांव से भगत लोग आने-जाने लगे
महाराज आपने सुनसान उजाड़ क्षेत्र को श्रद्धा स्थल बना दिया
हमें तो भगवान यहां लाये हैं...
यहां पचासों मकान उजाड़ सुनसान पड़े हैं, इनका कोई मालिक-मुख्तार नहीं है क्या ?
लगभग सवा सौ साल पूर्व यहां एक सिद्ध बाबा रहते थे।... उनके पास सिद्धि व समृद्धि दोनों थी... किंतु वक्त के साथ सब समाप्त हो गया।... अब तो निशानी तख्त ही बची है
अच्छा, उपर पहाड़ी पर उनका ही तख्त रखा है!
उस तख्त पर अब भी सिद्ध बाबा की आत्मा रहती है... उस पर कोई बैठ नहीं सकता। ...यह उन्हीं का क्षेत्र है
उनके परिवार -वंश में कोई बचा है ? हो तो बुला लें!
सिद्ध बाबा का 15 साल का नाती 'गुरुप्रसाद' सतना के पास ठाकुरों के यहां काम करता था, उसको बुलाया तो अपनी पत्नी के साथ आया... उन्हें आश्रम में रखा। लेकिन पत्नी की दृष्टि में पाप था... संतजी ने दोनों को गांव में रहने की व्यवस्था कर दी।
सोचा था सिद्ध बाबा का नाती इधर उधर भटक रहा है...यहां भोजन आदि का सब प्रबंध था...। हमें तो कल्पना ही नहीं थी कि पन्द्रह साल के बच्चों में भी पाप ग्रह होता है ? ..चलो पाप ग्रह खतम!

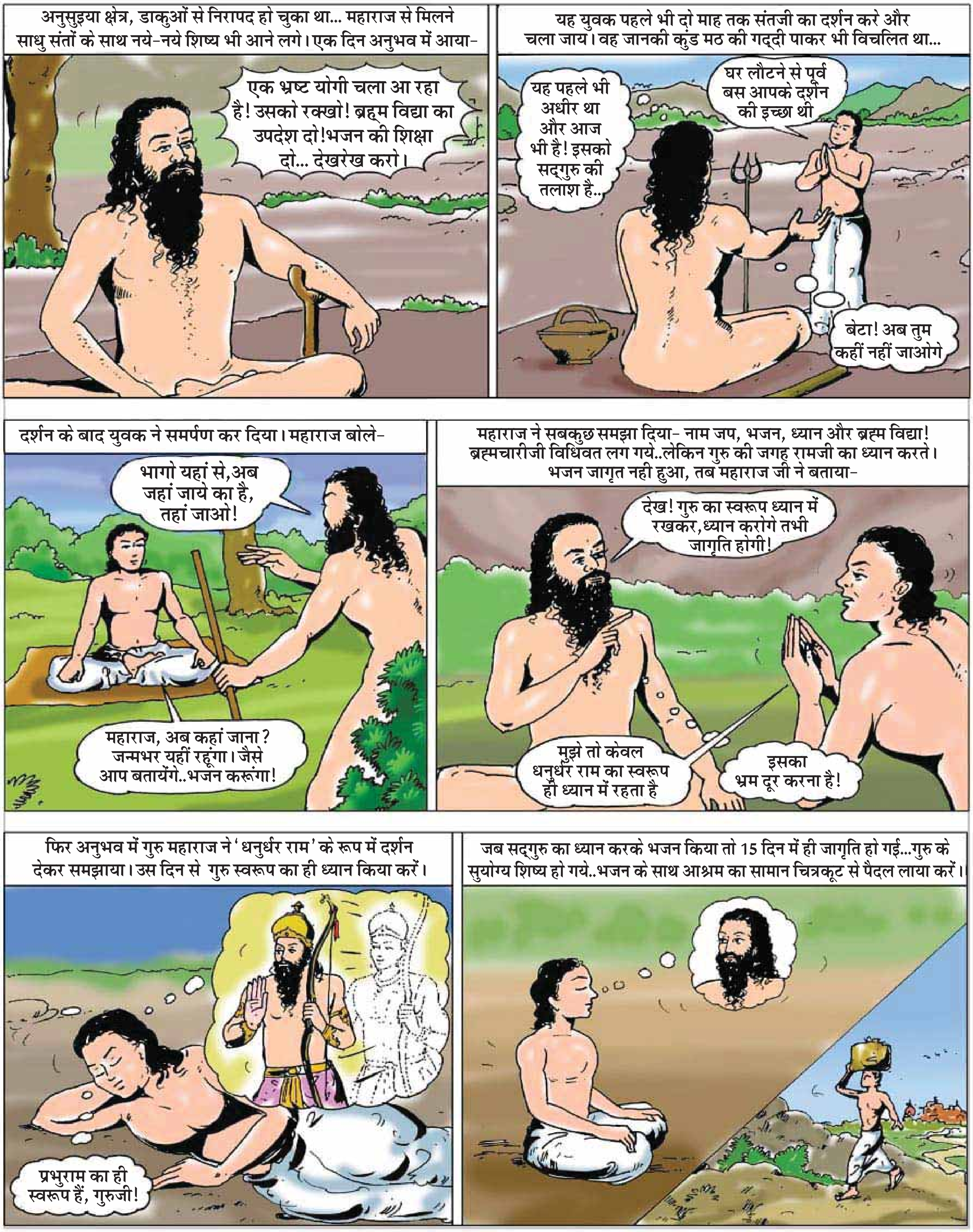
अनुसुइया क्षेत्र, डाकुओं से निरापद हो चुका था... महाराज से मिलने साधु संतों के साथ नये-नये शिष्य भी आने लगे। एक दिन अनुभव में आया-
एक भ्रष्ट योगी चला आ रहा है! उसको रक्खो! ब्रह्म विद्या का उपदेश दो!भजन की शिक्षा दो... देखरेख करो।
यह युवक पहले भी दो माह तक संतजी का दर्शन करे और चला जाय। वह जानकी कुंड मठ की गद्दी पाकर भी विचलित था...
यह पहले भी अधीर था और आज भी है! इसको सद्गुरु की तलाश है..
घर लौटने से पूर्व बस आपके दर्शन की इच्छा थी
बेटा! अब तुम कहीं नहीं जाओगे
दर्शन के बाद युवक ने समर्पण कर दिया। महाराज बोले-
भागो यहां से,अब जहां जाये का है, तहां जाओ!
महाराज, अब कहां जाना? जन्मभर यहीं रहूंगा। जैसे आप बतायेंगे..भजन करूंगा!
महाराज ने सबकुछ समझा दिया- नाम जप, भजन, ध्यान और ब्रह्म विद्या! ब्रह्मचारीजी विधिवत लग गये..लेकिन गुरु की जगह रामजी का ध्यान करते। भजन जागृत नही हुआ, तब महाराज जी ने बताया-
देख! गुरु का स्वरूप ध्यान में रखकर,ध्यान करोगे तभी जागृति होगी!
मुझे तो केवल धनुर्धर राम का स्वरूप ही ध्यान में रहता है
इसका भ्रम दूर करना है!
फिर अनुभव में गुरु महाराज ने ‘धनुर्धर राम’ के रूप में दर्शन देकर समझाया। उस दिन से गुरु स्वरूप का ही ध्यान किया करें।
प्रभुराम का ही स्वरूप हैं, गुरुजी!
जब सद्गुरु का ध्यान करके भजन किया तो 15 दिन में ही जागृति हो गई...गुरु के सुयोग्य शिष्य हो गये..भजन के साथ आश्रम का सामान चित्रकूट से पैदल लाया करें।

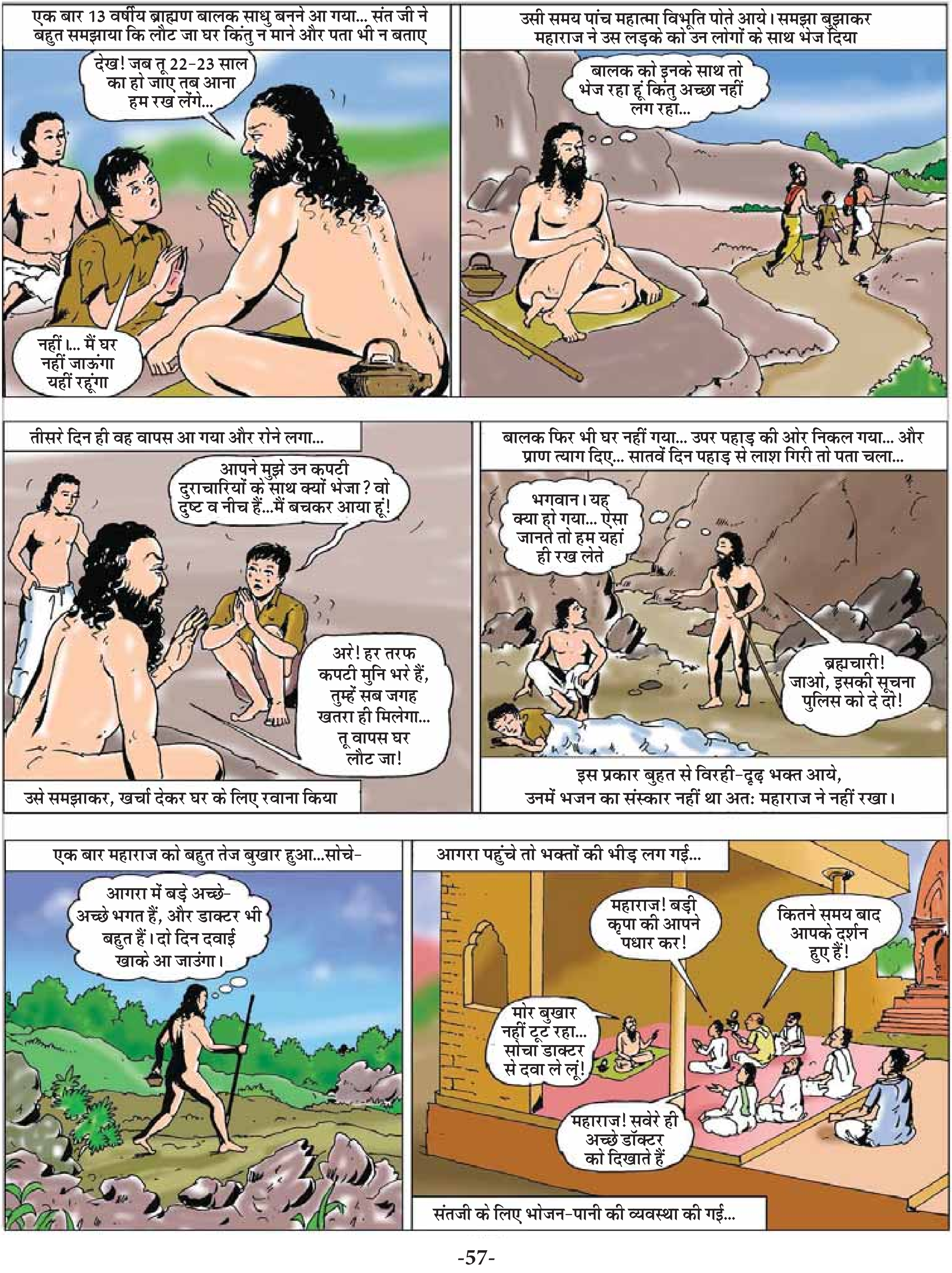
एक बार 13 वर्षीय ब्राह्मण बालक साधु बनने आ गया... संत जी ने बहुत समझाया कि लौट जा घर किंतु न माने और पता भी न बताए
देख! जब तू 22-23 साल का हो जाए तब आना हम रख लेंगे...
नहीं।... मैं घर नहीं जाऊंगा यहीं रहूंगा
उसी समय पांच महात्मा विभूति पोते आये। समझा बुझाकर महाराज ने उस लड़के को उन लोगों के साथ भेज दिया
बालक को इनके साथ तो भेज रहा हूं किंतु अच्छा नहीं लग रहा...
तीसरे दिन ही वह वापस आ गया और रोने लगा...
आपने मुझे उन कपटी दुराचारियों के साथ क्यों भेजा? वो दुष्ट व नीच हैं...मैं बचकर आया हूं!
अरे! हर तरफ कपटी मुनि भरे हैं, तुम्हें सब जगह खतरा ही मिलेगा... तू वापस घर लौट जा!
उसे समझाकर, खर्चा देकर घर के लिए रवाना किया
बालक फिर भी घर नहीं गया... उपर पहाड़ की ओर निकल गया... और प्राण त्याग दिए... सातवें दिन पहाड़ से लाश गिरी तो पता चला...
भगवान। यह क्या हो गया... ऐसा जानते तो हम यहां ही रख लेते
ब्रह्मचारी! जाओ, इसकी सूचना पुलिस को दे दो!
इस प्रकार बुहत से विरही-दृढ़ भक्त आये, उनमें भजन का संस्कार नहीं था अत: महाराज ने नहीं रखा।
एक बार महाराज को बहुत तेज बुखार हुआ...सोचे-
आगरा में बड़े अच्छे-अच्छे भगत हैं, और डाक्टर भी बहुत हैं। दो दिन दवाई खाके आ जाउंगा।
आगरा पहुंचे तो भक्तों की भीड़ लग गई...
महाराज! बड़ी कृपा की आपने पधार कर!
कितने समय बाद आपके दर्शन हुए हैं!
मोर बुखार नहीं टूट रहा... सोचा डाक्टर से दवा ले लूं!
महाराज! सवेरे ही अच्छे डॉक्टर को दिखाते हैं
संतजी के लिए भोजन-पानी की व्यवस्था की गई...

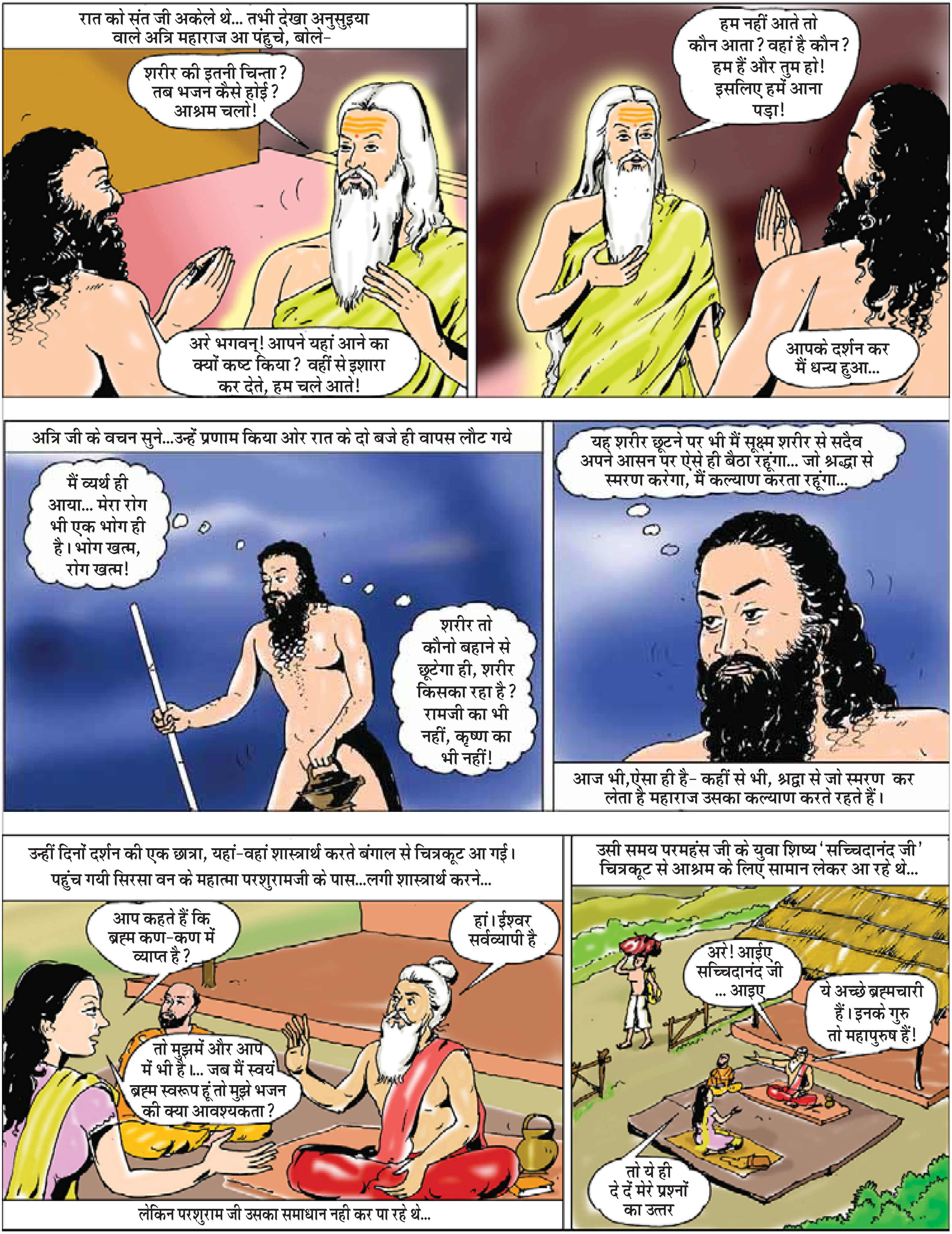

रात को संत जी अकेले थे... तभी देखा अनुसुइया वाले अत्रि महाराज आ पंहुचे, बोले-
शरीर की इतनी चिन्ता? तब भजन कैसे होई? आश्रम चलो!
अरे भगवन्! आपने यहां आने का क्यों कष्ट किया? वहीं से इशारा कर देते, हम चले आते!
हम नहीं आते तो कौन आता? वहां है कौन? हम हैं और तुम हो! इसलिए हमें आना पड़ा!
आपके दर्शन कर मैं धन्य हुआ...
अत्रि जी के वचन सुने...उन्हें प्रणाम किया ओर रात के दो बजे ही वापस लौट गये
मैं व्यर्थ ही आया... मेरा रोग भी एक भोग ही है। भोग खत्म, रोग खत्म!
शरीर तो कौनो बहाने से छूटेगा ही, शरीर किसका रहा है? रामजी का भी नहीं, कृष्ण का भी नहीं!
यह शरीर छूटने पर भी मैं सूक्ष्म शरीर से सदैव अपने आसन पर ऐसे ही बैठा रहूंगा... जो श्रद्धा से स्मरण करेगा, मैं कल्याण करता रहूंगा...
आज भी,ऐसा ही है- कहीं से भी, श्रद्वा से जो स्मरण कर लेता है महाराज उसका कल्याण करते रहते हैं।
उन्हीं दिनों दर्शन की एक छात्रा, यहां-वहां शास्त्रार्थ करते बंगाल से चित्रकूट आ गई। पहुंच गयी सिरसा वन के महात्मा परशुरामजी के पास...लगी शास्त्रार्थ करने...
आप कहते हैं कि ब्रह्म कण-कण में व्याप्त है?
हां। ईश्वर सर्वव्यापी है
तो मुझमें और आप में भी है।... जब मैं स्वयं ब्रह्म स्वरूप हूं तो मुझे भजन की क्या आवश्यकता?
लेकिन परशुराम जी उसका समाधान नही कर पा रहे थे...
उसी समय परमहंस जी के युवा शिष्य 'सच्चिदानंद जी' चित्रकूट से आश्रम के लिए सामान लेकर आ रहे थे...
अरे! आइए सच्चिदानंद जी ... आइए
ये अच्छे ब्रह्मचारी हैं। इनके गुरु तो महापुरुष हैं!
तो ये ही दे दें मेरे प्रश्नों का उत्तर

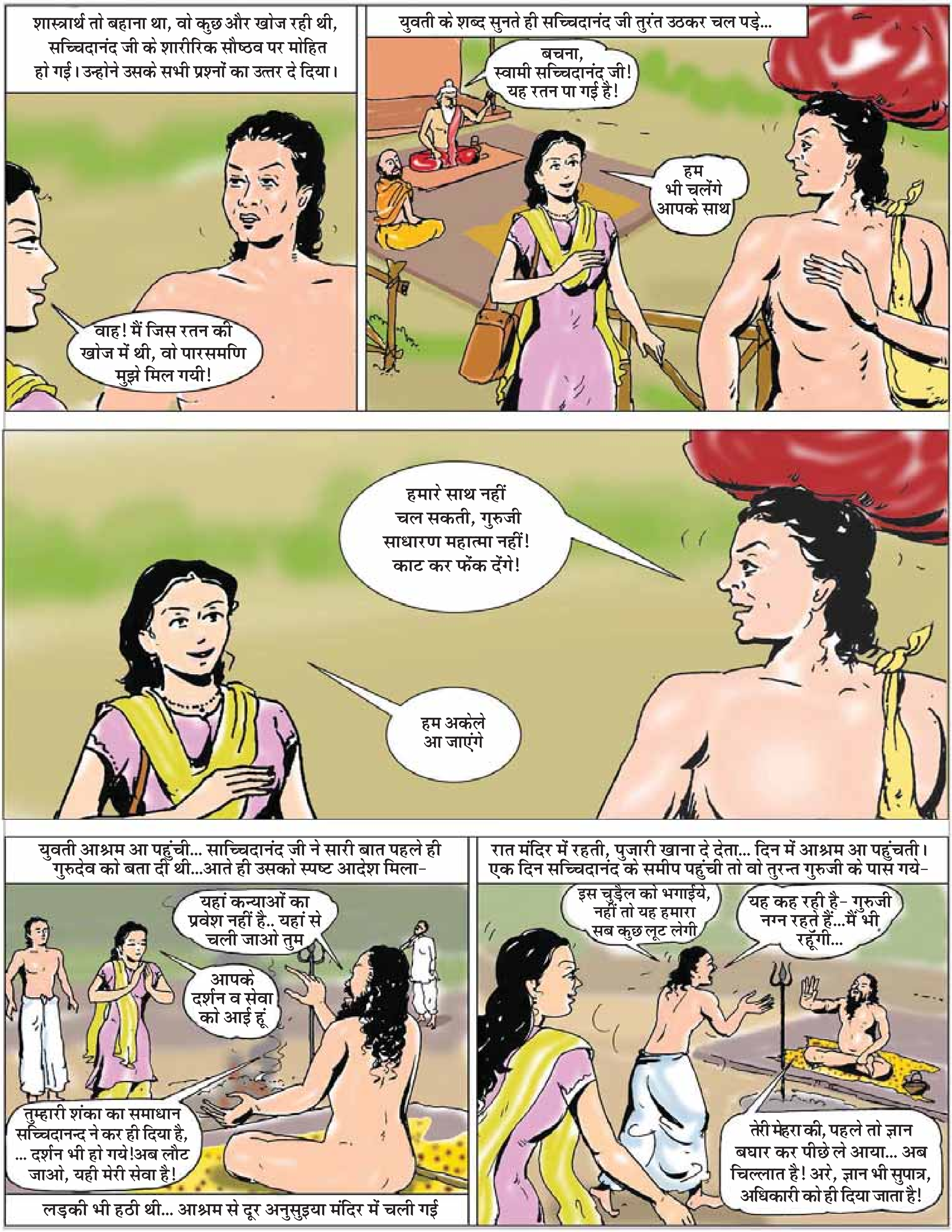
शास्त्रार्थ तो बहाना था, वो कुछ और खोज रही थी, सच्चिदानंद जी के शारीरिक सौष्ठव पर मोहित हो गई। उन्होने उसके सभी प्रश्नों का उत्तर दे दिया।
वाह! मैं जिस रतन की खोज में थी, वो पारसमणि मुझे मिल गयी!
युवती के शब्द सुनते ही सच्चिदानंद जी तुरंत उठकर चल पड़े...
बचना, स्वामी सच्चिदानंद जी! यह रतन पा गई है!
हम भी चलेंगे आपके साथ
हमारे साथ नहीं चल सकती, गुरुजी साधारण महात्मा नहीं! काट कर फेंक देंगे!
हम अकेले आ जाएंगे
युवती आश्रम आ पहुंची... साच्चिदानंद जी ने सारी बात पहले ही गुरुदेव को बता दी थी...आते ही उसको स्पष्ट आदेश मिला-
यहां कन्याओं का प्रवेश नहीं है.. यहां से चली जाओ तुम
आपके दर्शन व सेवा को आई हूं
तुम्हारी शंका का समाधान सच्चिदानन्द ने कर ही दिया है, ... दर्शन भी हो गये!अब लौट जाओ, यही मेरी सेवा है!
लड़की भी हठी थी... आश्रम से दूर अनुसुइया मंदिर में चली गई
रात मंदिर में रहती, पुजारी खाना दे देता... दिन में आश्रम आ पहुंचती। एक दिन सच्चिदानंद के समीप पहुंची तो वो तुरन्त गुरुजी के पास गये-
इस चुड़ैल को भगाईये, नहीं तो यह हमारा सब कुछ लूट लेगी
यह कह रही है- गुरुजी नग्न रहते हैं...मैं भी रहूँगी...
तेरी मेहरा की, पहले तो ज्ञान बघार कर पीछे ले आया... अब चिल्लात है! अरे, ज्ञान भी सुपात्र, अधिकारी को ही दिया जाता है!

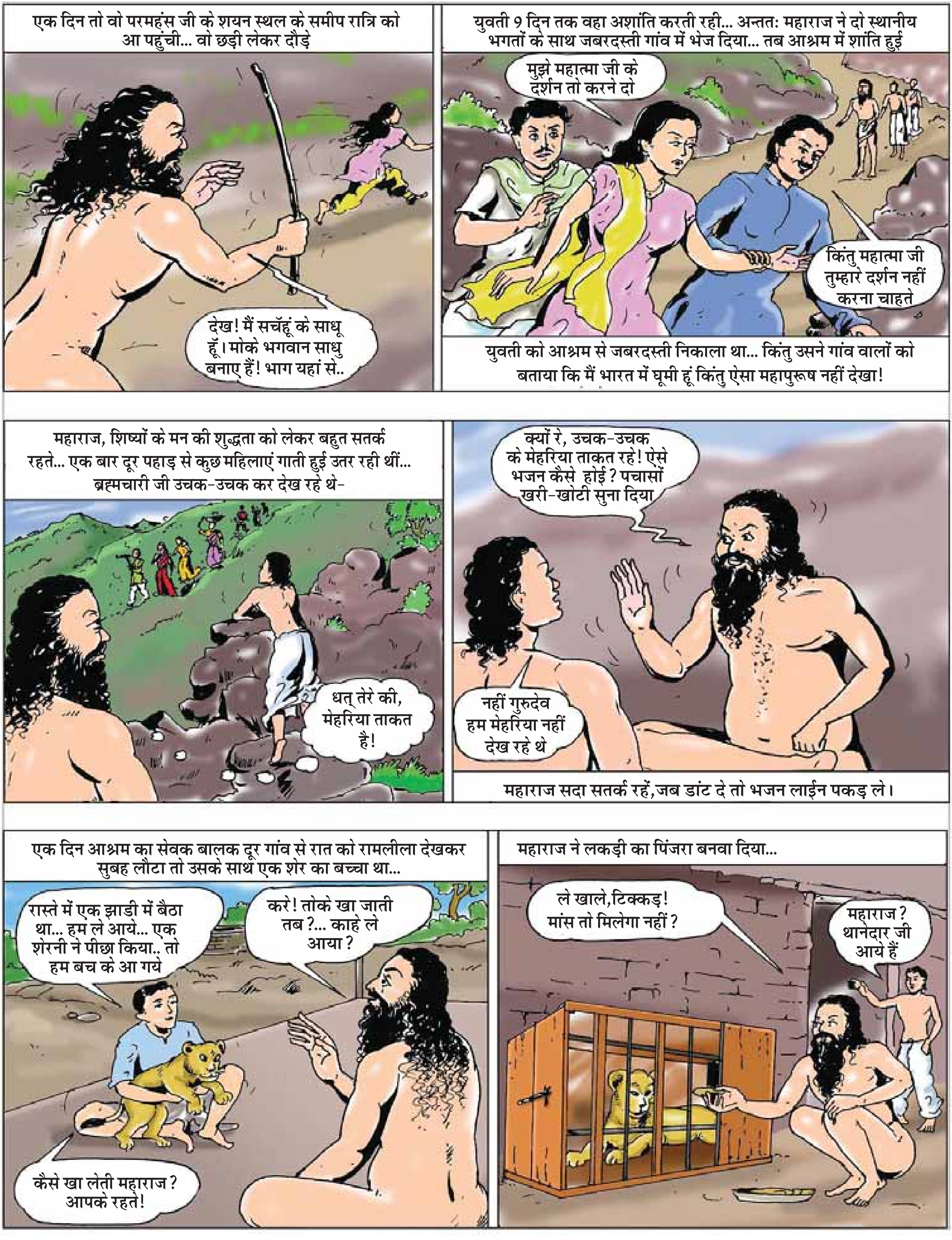

एक दिन तो वो परमहंस जी के शयन स्थल के समीप रात्रि को आ पहुंची... वो छड़ी लेकर दौड़े
देख! मैं सचॅहूं के साधू हूँ। मोके भगवान साधु बनाए हैं! भाग यहां से..
युवती 9 दिन तक वहा अशांति करती रही... अन्ततः महाराज ने दो स्थानीय भगतों के साथ जबरदस्ती गांव में भेज दिया... तब आश्रम में शांति हुई
मुझे महात्मा जी के दर्शन तो करने दो
किंतु महात्मा जी तुम्हारे दर्शन नहीं करना चाहते
युवती को आश्रम से जबरदस्ती निकाला था... किंतु उसने गांव वालों को बताया कि मैं भारत में घूमी हूं किंतु ऐसा महापुरूष नहीं देखा!
महाराज, शिष्यों के मन की शुद्धता को लेकर बहुत सतर्क रहते... एक बार दूर पहाड़ से कुछ महिलाएं गाती हुई उतर रही थीं... ब्रह्मचारी जी उचक-उचक कर देख रहे थे-
धत् तेरे की, मेहरिया ताकत है!
क्यों रे, उचक-उचक के मेहरिया ताकत रहे! ऐसे भजन कैसे होई? पचासों खरी-खोटी सुना दिया
नहीं गुरुदेव हम मेहरिया नहीं देख रहे थे
महाराज सदा सतर्क रहें, जब डांट दे तो भजन लाईन पकड़ ले।
एक दिन आश्रम का सेवक बालक दूर गांव से रात को रामलीला देखकर सुबह लौटा तो उसके साथ एक शेर का बच्चा था...
रास्ते में एक झाडी में बैठा था... हम ले आये... एक शेरनी ने पीछा किया.. तो हम बच के आ गये
करे! तोके खा जाती तब?... काहे ले आया?
कैसे खा लेती महाराज? आपके रहते!
महाराज ने लकड़ी का पिंजरा बनवा दिया...
ले खाले, टिक्कड़! मांस तो मिलेगा नहीं?
महाराज? थानेदार जी आये हैं

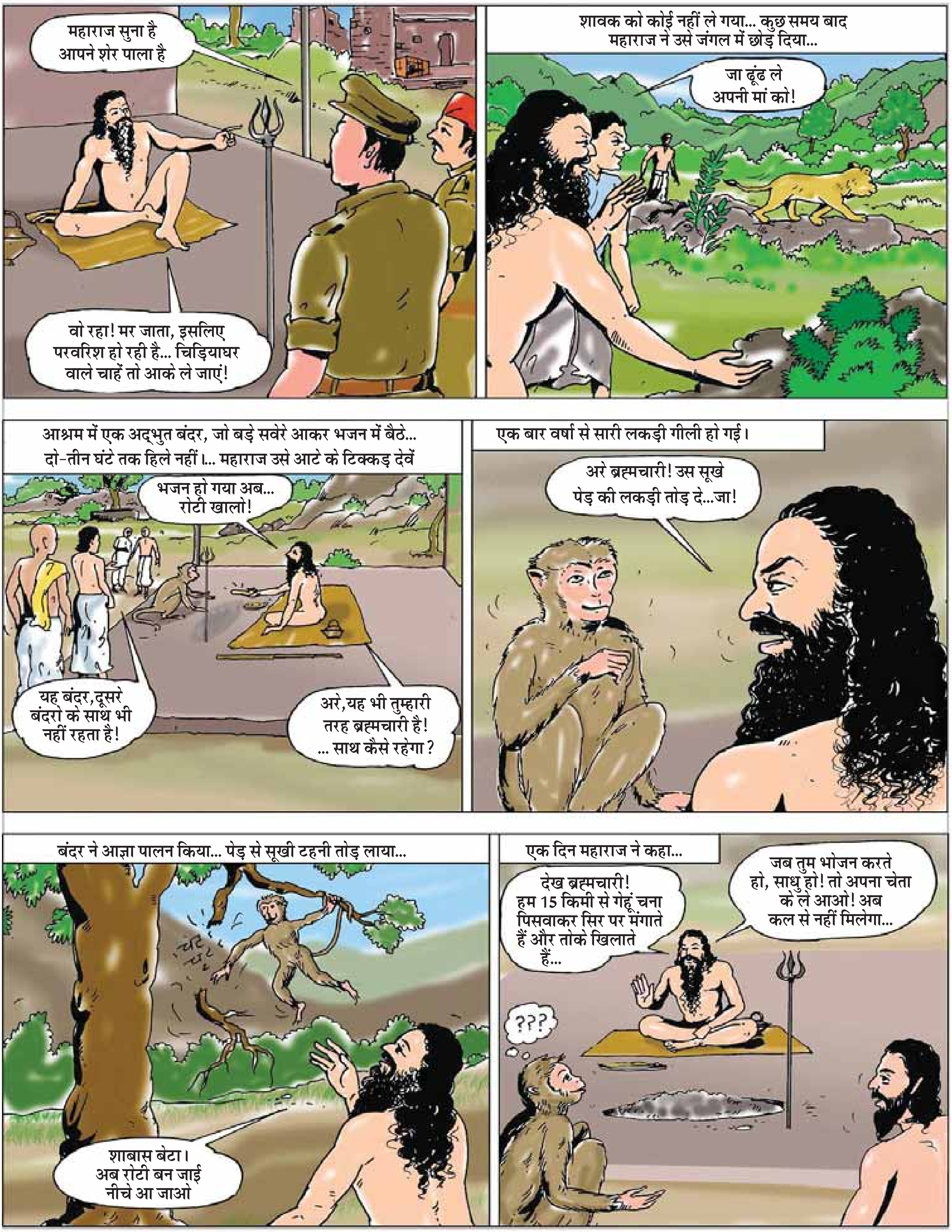
महाराज सुना है आपने शेर पाला है
वो रहा! मर जाता, इसलिए परवरिश हो रही है... चिड़ियाघर वाले चाहें तो आके ले जाएं!
शावक को कोई नहीं ले गया... कुछ समय बाद महाराज ने उसे जंगल में छोड़ दिया...
जा ढूंढ ले अपनी मां को!
आश्रम में एक अद्‌भुत बंदर, जो बड़े सवेरे आकर भजन में बैठे... दो-तीन घंटे तक हिले नहीं।... महाराज उसे आटे के टिक्कड़ देवें
भजन हो गया अब... रोटी खालो!
यह बंदर,दूसरे बंदरों के साथ भी नहीं रहता है!
अरे,यह भी तुम्हारी तरह ब्रह्मचारी है! ... साथ कैसे रहेगा ?
एक बार वर्षा से सारी लकड़ी गीली हो गई।
अरे ब्रह्मचारी! उस सूखे पेड़ की लकड़ी तोड़ दे...जा!
बंदर ने आज्ञा पालन किया... पेड़ से सूखी टहनी तोड़ लाया...
शाबास बेटा। अब रोटी बन जाई नीचे आ जाओ
एक दिन महाराज ने कहा...
देख ब्रह्मचारी! हम 15 किमी से गेहूं चना पिसवाकर सिर पर मंगाते हैं और तोके खिलाते हैं...
जब तुम भोजन करते हो, साधु हो! तो अपना चेता के ले आओ! अब कल से नहीं मिलेगा...
???

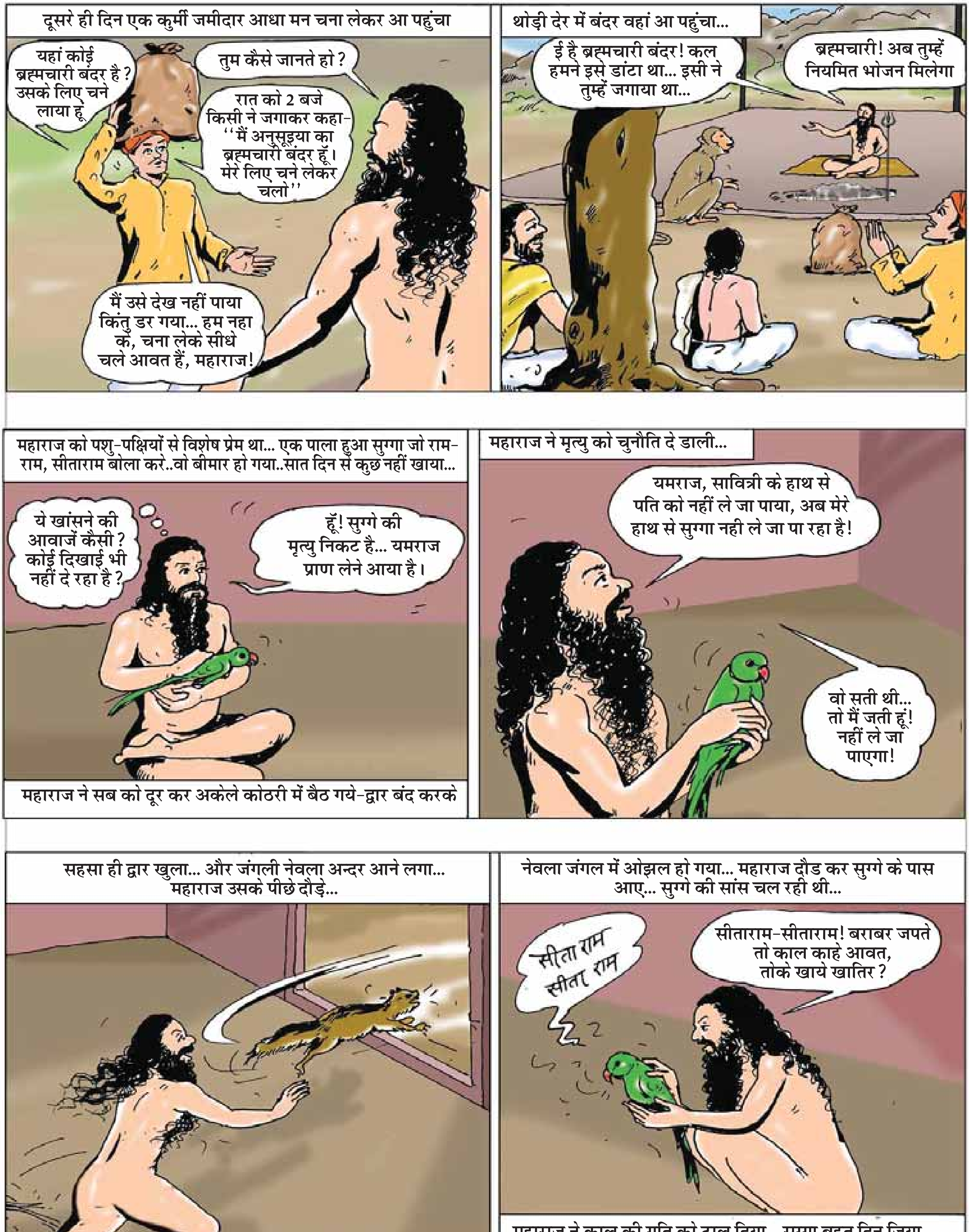
दूसरे ही दिन एक कुर्मी जमीदार आधा मन चना लेकर आ पहुंचा
यहां कोई ब्रह्मचारी बंदर है? उसके लिए चने लाया हूं
तुम कैसे जानते हो?
रात को 2 बजे किसी ने जगाकर कहा- ''मैं अनुसूइया का ब्रह्मचारी बंदर हूं। मेरे लिए चने लेकर चलो''
मैं उसे देख नहीं पाया किंतु डर गया... हम नहा के, चना लेके सीधे चले आवत हैं, महाराज!
थोड़ी देर में बंदर वहां आ पहुंचा...
ई है ब्रह्मचारी बंदर! कल हमने इसे डांटा था... इसी ने तुम्हें जगाया था...
ब्रह्मचारी! अब तुम्हें नियमित भोजन मिलेगा
महाराज को पशु-पक्षियों से विशेष प्रेम था... एक पाला हुआ सुग्गा जो राम-राम, सीताराम बोला करे..वो बीमार हो गया..सात दिन से कुछ नहीं खाया...
ये खांसने की आवाजें कैसी? कोई दिखाई भी नहीं दे रहा है?
हूँ! सुग्गे की मृत्यु निकट है... यमराज प्राण लेने आया है।
महाराज ने सब को दूर कर अकेले कोठरी में बैठ गये-द्वार बंद करके
महाराज ने मृत्यु को चुनौति दे डाली...
यमराज, सावित्री के हाथ से पति को नहीं ले जा पाया, अब मेरे हाथ से सुग्गा नही ले जा पा रहा है!
वो सती थी... तो मैं जती हूं! नहीं ले जा पाएगा!
सहसा ही द्वार खुला... और जंगली नेवला अन्दर आने लगा... महाराज उसके पीछे दौड़े...
नेवला जंगल में ओझल हो गया... महाराज दौड कर सुग्गे के पास आए... सुग्गे की सांस चल रही थी...
सीता राम सीता राम
सीताराम-सीताराम! बराबर जपते तो काल काहे आवत, तोके खाये खातिर?
महाराज ने काल की गति को टाल दिया... सुग्गा बहुत दिन जिया...

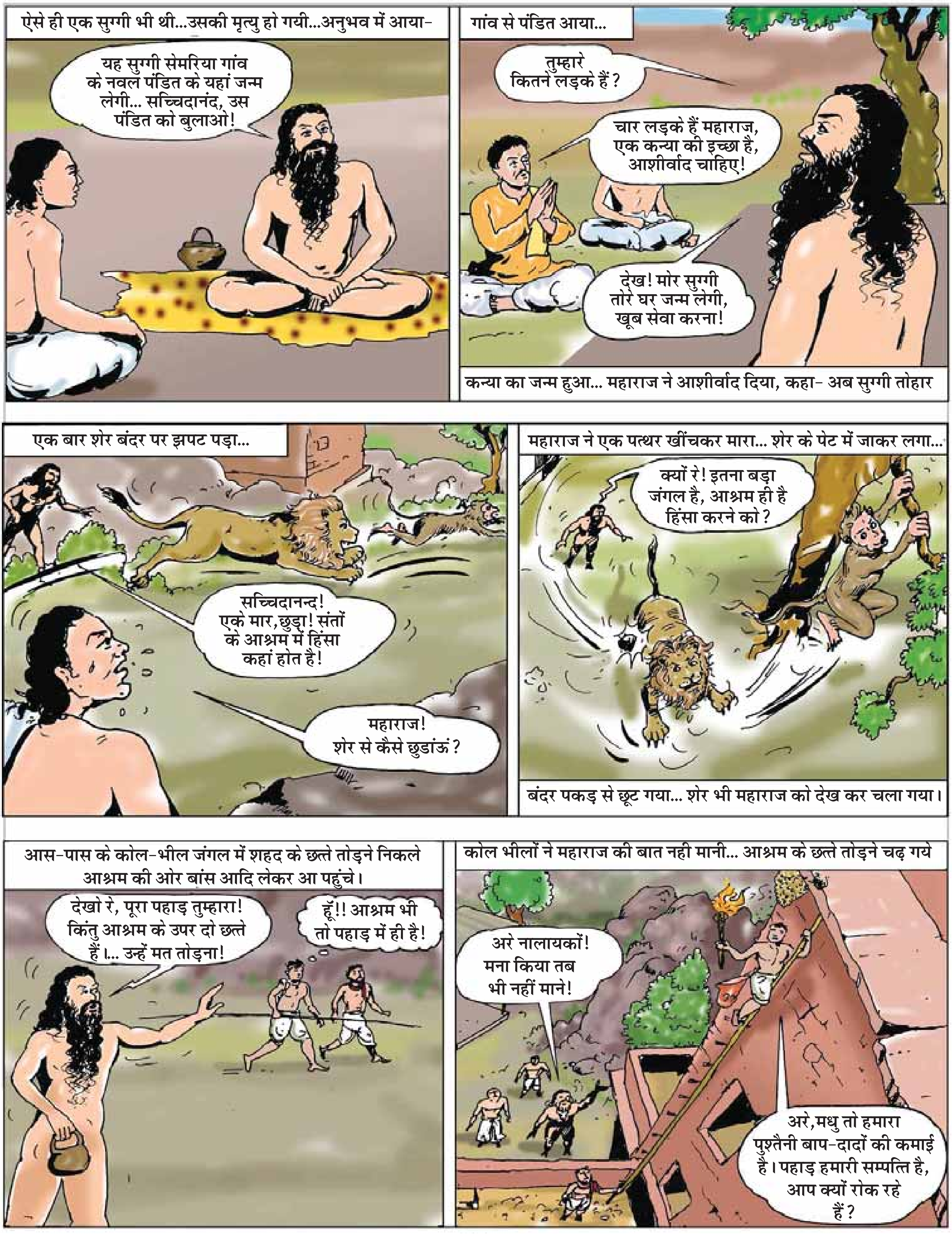
ऐसे ही एक सुग्गी भी थी...उसकी मृत्यु हो गयी...अनुभव में आया-
यह सुग्गी सेमरिया गांव के नवल पंडित के यहां जन्म लेगी... सच्चिदानंद, उस पंडित को बुलाओ!
गांव से पंडित आया...
तुम्हारे कितने लड़के हैं?
चार लड़के हैं महाराज, एक कन्या की इच्छा है, आशीर्वाद चाहिए!
देख! मोर सुग्गी तोरे घर जन्म लेगी, खूब सेवा करना!
कन्या का जन्म हुआ... महाराज ने आशीर्वाद दिया, कहा- अब सुग्गी तोहार
एक बार शेर बंदर पर झपट पड़ा...
सच्चिदानन्द! एके मार,छुड़ा! संतों के आश्रम में हिंसा कहां होत है!
महाराज! शेर से कैसे छुडाऊं?
महाराज ने एक पत्थर खींचकर मारा... शेर के पेट में जाकर लगा...
क्यों रे! इतना बड़ा जंगल है, आश्रम ही है हिंसा करने को?
बंदर पकड़ से छूट गया... शेर भी महाराज को देख कर चला गया।
आस-पास के कोल-भील जंगल में शहद के छत्ते तोड़ने निकले आश्रम की ओर बांस आदि लेकर आ पहुंचे।
देखो रे, पूरा पहाड़ तुम्हारा! किंतु आश्रम के उपर दो छत्ते हैं।... उन्हें मत तोड़ना!
हूँ!! आश्रम भी तो पहाड़ में ही है!
कोल भीलों ने महाराज की बात नही मानी... आश्रम के छत्ते तोड़ने चढ़ गये
अरे नालायकों! मना किया तब भी नहीं माने!
अरे,मधु तो हमारा पुश्तैनी बाप-दादों की कमाई है। पहाड़ हमारी सम्पत्ति है, आप क्यों रोक रहे हैं?

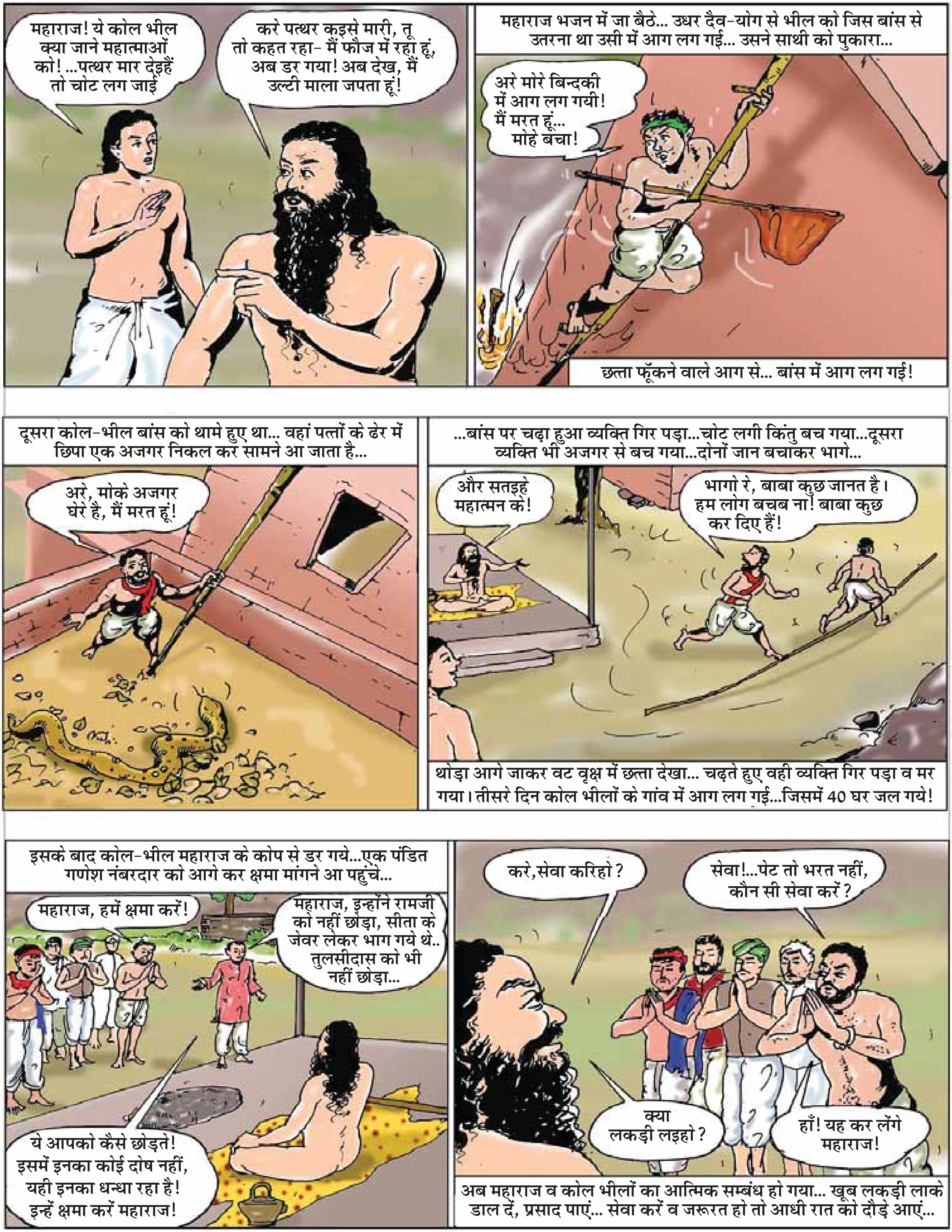
महाराज! ये कोल भील क्या जाने महात्माओं को! ...पत्थर मार देइहैं तो चोट लग जाई
करे पत्थर कइसे मारी, तू तो कहत रहा- मैं फौज में रहा हूं, अब डर गया! अब देख, मैं उल्टी माला जपता हूं!
महाराज भजन में जा बैठे... उधर दैव-योग से भील को जिस बांस से उतरना था उसी में आग लग गई... उसने साथी को पुकारा...
अरे मोरे बिन्दकी में आग लग गयी! मैं मरत हूं... मोहे बचा!
छत्ता फूंकने वाले आग से... बांस में आग लग गई!
दूसरा कोल-भील बांस को थामे हुए था... वहां पत्तों के ढेर में छिपा एक अजगर निकल कर सामने आ जाता है...
अरे, मोके अजगर घेरे है, मैं मरत हूं!
...बांस पर चढ़ा हुआ व्यक्ति गिर पड़ा...चोट लगी किंतु बच गया...दूसरा व्यक्ति भी अजगर से बच गया...दोनों जान बचाकर भागे...
और सतइहे महात्मन के!
भागो रे, बाबा कुछ जानत है। हम लोग बचब ना! बाबा कुछ कर दिए हैं!
थोड़ा आगे जाकर वट वृक्ष में छत्ता देखा... चढ़ते हुए वही व्यक्ति गिर पड़ा व मर गया। तीसरे दिन कोल भीलों के गांव में आग लग गई...जिसमें 40 घर जल गये!
इसके बाद कोल-भील महाराज के कोप से डर गये...एक पंडित गणेश नंबरदार को आगे कर क्षमा मांगने आ पहुंचे...
महाराज, हमें क्षमा करें!
महाराज, इन्होंने रामजी को नहीं छोड़ा, सीता के जेवर लेकर भाग गये थे.. तुलसीदास को भी नहीं छोड़ा...
ये आपको कैसे छोड़ते! इसमें इनका कोई दोष नहीं, यही इनका धन्धा रहा है! इन्हें क्षमा करें महाराज!
करे,सेवा करिहो ?
सेवा!...पेट तो भरत नहीं, कौन सी सेवा करें ?
क्या लकड़ी लइहो ?
हाँ! यह कर लेंगे महाराज!
अब महाराज व कोल भीलों का आत्मिक सम्बंध हो गया... खूब लकड़ी लाके डाल दें, प्रसाद पाएं... सेवा करें व जरूरत हो तो आधी रात को दौड़े आएं...

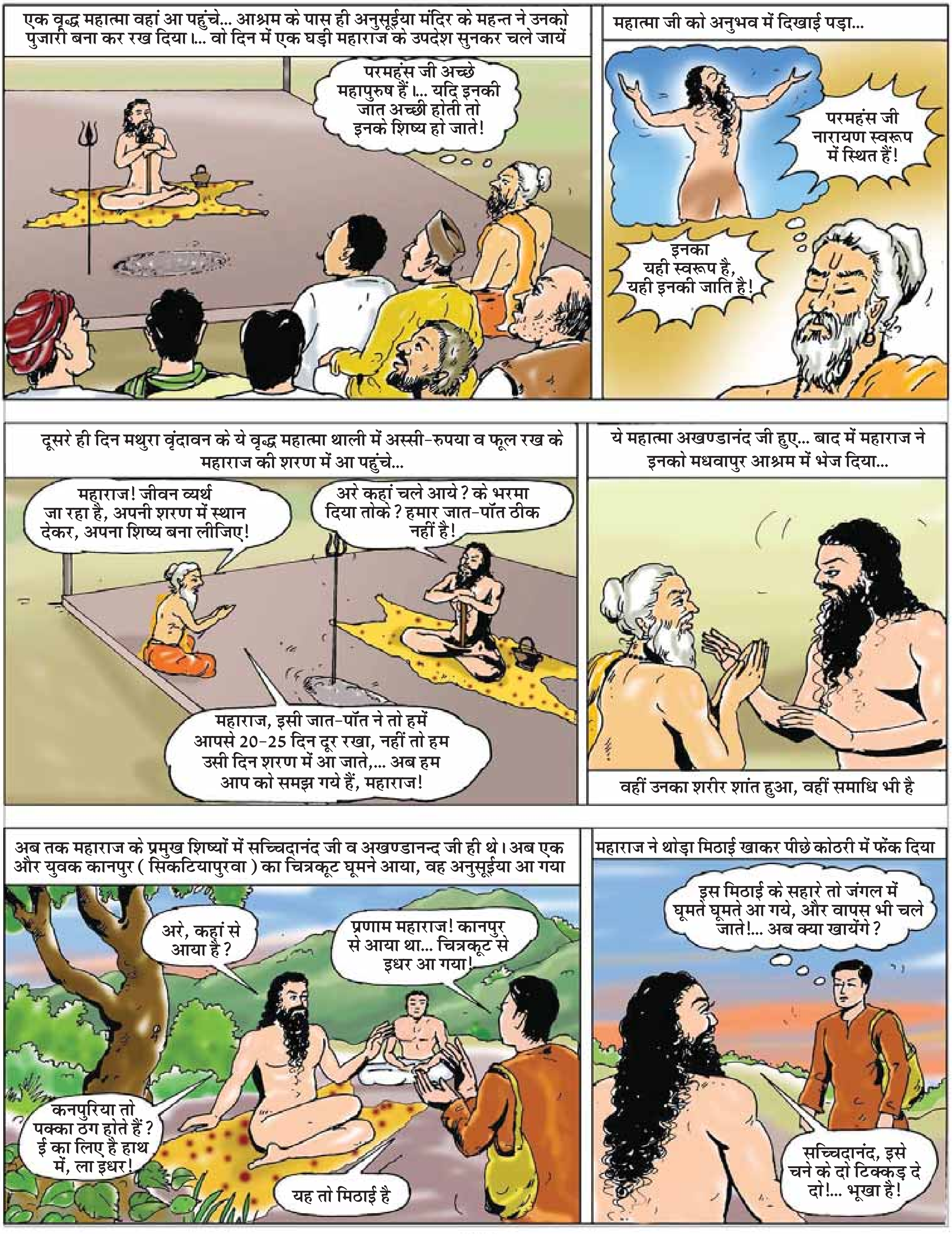
एक वृद्ध महात्मा वहां आ पहुंचे... आश्रम के पास ही अनुसूईया मंदिर के महन्त ने उनको पुजारी बना कर रख दिया।... वो दिन में एक घड़ी महाराज के उपदेश सुनकर चले जायें
परमहंस जी अच्छे महापुरुष हैं।... यदि इनकी जात अच्छी होती तो इनके शिष्य हो जाते!
महात्मा जी को अनुभव में दिखाई पड़ा...
परमहंस जी नारायण स्वरूप में स्थित हैं!
इनका यही स्वरूप है, यही इनकी जाति है!
दूसरे ही दिन मथुरा वृंदावन के ये वृद्ध महात्मा थाली में अस्सी-रुपया व फूल रख के महाराज की शरण में आ पहुंचे...
महाराज! जीवन व्यर्थ जा रहा है, अपनी शरण में स्थान देकर, अपना शिष्य बना लीजिए!
अरे कहां चले आये? के भरमा दिया तोके? हमार जात-पॉत ठीक नहीं है!
महाराज, इसी जात-पॉत ने तो हमें आपसे 20-25 दिन दूर रखा, नहीं तो हम उसी दिन शरण में आ जाते,... अब हम आप को समझ गये हैं, महाराज!
ये महात्मा अखण्डानंद जी हुए... बाद में महाराज ने इनको मधवापुर आश्रम में भेज दिया...
वहीं उनका शरीर शांत हुआ, वहीं समाधि भी है
अब तक महाराज के प्रमुख शिष्यों में सच्चिदानंद जी व अखण्डानन्द जी ही थे। अब एक और युवक कानपुर (सिकटियापुरवा) का चित्रकूट घूमने आया, वह अनुसूईया आ गया
अरे, कहां से आया है?
प्रणाम महाराज! कानपुर से आया था... चित्रकूट से इधर आ गया!
कनपुरिया तो पक्का ठग होते हैं? ई का लिए है हाथ में, ला इधर!
यह तो मिठाई है
महाराज ने थोड़ा मिठाई खाकर पीछे कोठरी में फेंक दिया
इस मिठाई के सहारे तो जंगल में घूमते घूमते आ गये, और वापस भी चले जाते!... अब क्या खायेंगे?
सच्चिदानंद, इसे चने के दो टिक्कड़ दे दो!... भूखा है!

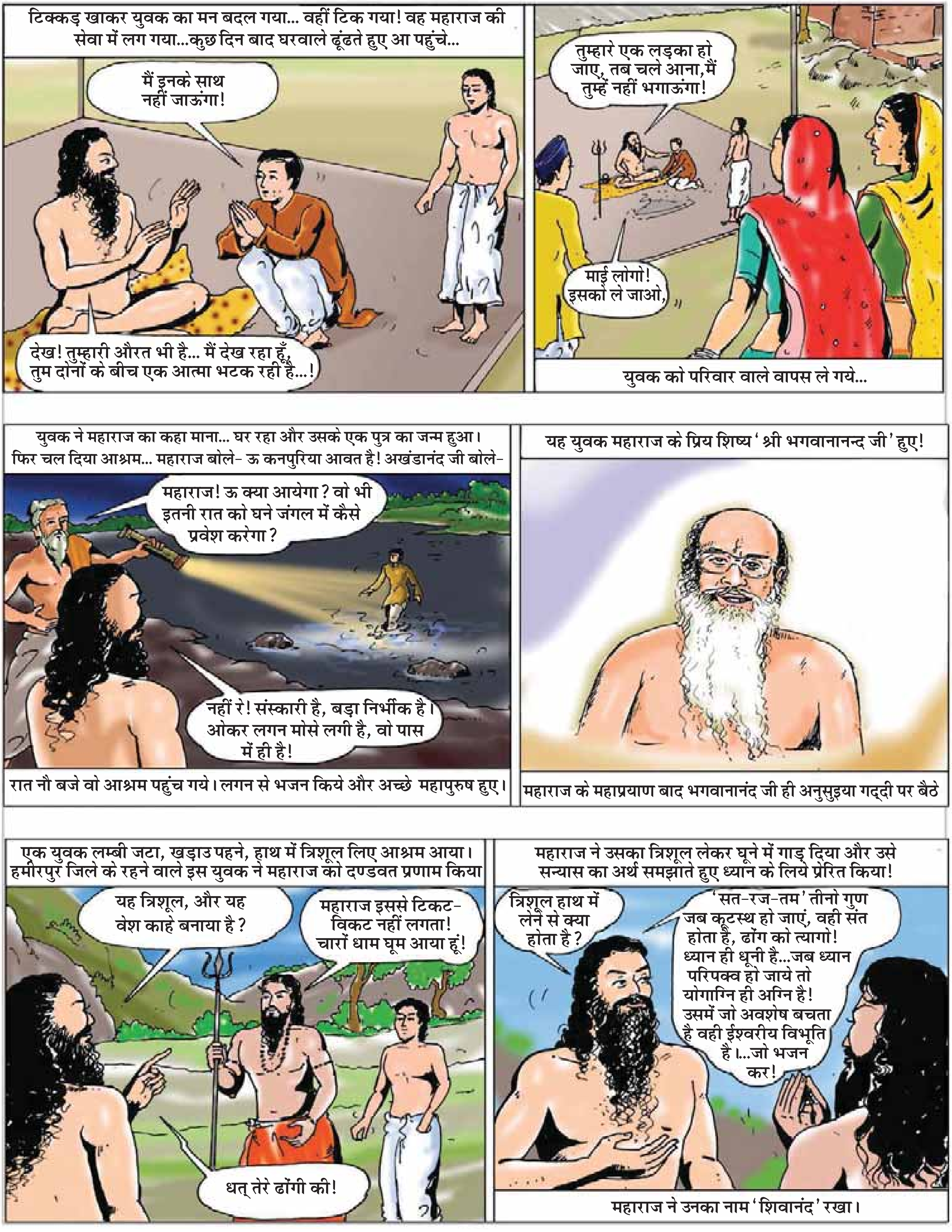

टिक्कड़ खाकर युवक का मन बदल गया... वहीं टिक गया! वह महाराज की सेवा में लग गया...कुछ दिन बाद घरवाले ढूंढते हुए आ पहुंचे...
मैं इनके साथ नहीं जाऊंगा!
देख! तुम्हारी औरत भी है... मैं देख रहा हूँ, तुम दोनों के बीच एक आत्मा भटक रही है...!
तुम्हारे एक लड़का हो जाए, तब चले आना, मैं तुम्हें नहीं भगाऊंगा!
माई लोगो! इसको ले जाओ,
युवक को परिवार वाले वापस ले गये...
युवक ने महाराज का कहा माना... घर रहा और उसके एक पुत्र का जन्म हुआ। फिर चल दिया आश्रम... महाराज बोले- ऊ कनपुरिया आवत है! अखंडानंद जी बोले-
महाराज! ऊ क्या आयेगा? वो भी इतनी रात को घने जंगल में कैसे प्रवेश करेगा?
नहीं रे! संस्कारी है, बड़ा निर्भीक है। ओकर लगन मोसे लगी है, वो पास में ही है!
रात नौ बजे वो आश्रम पहुंच गये। लगन से भजन किये और अच्छे महापुरुष हुए।
यह युवक महाराज के प्रिय शिष्य 'श्री भगवानानन्द जी' हुए!
महाराज के महाप्रयाण बाद भगवानानंद जी ही अनुसुइया गद्दी पर बैठे
एक युवक लम्बी जटा, खड़ाउ पहने, हाथ में त्रिशूल लिए आश्रम आया। हमीरपुर जिले के रहने वाले इस युवक ने महाराज को दण्डवत प्रणाम किया
यह त्रिशूल, और यह वेश काहे बनाया है?
महाराज इससे टिकट-विकट नहीं लगता! चारों धाम घूम आया हूं!
धत् तेरे ढोंगी की!
महाराज ने उसका त्रिशूल लेकर धूने में गाड़ दिया और उसे सन्यास का अर्थ समझाते हुए ध्यान के लिये प्रेरित किया!
त्रिशूल हाथ में लेने से क्या होता है?
'सत-रज-तम' तीनो गुण जब कूटस्थ हो जाएं, वही संत होता है, ढोंग को त्यागो! ध्यान ही धूनी है...जब ध्यान परिपक्व हो जाये तो योगाग्नि ही अग्नि है! उसमें जो अवशेष बचता है वही ईश्वरीय विभूति है।...जो भजन कर!
महाराज ने उनका नाम 'शिवानंद' रखा।

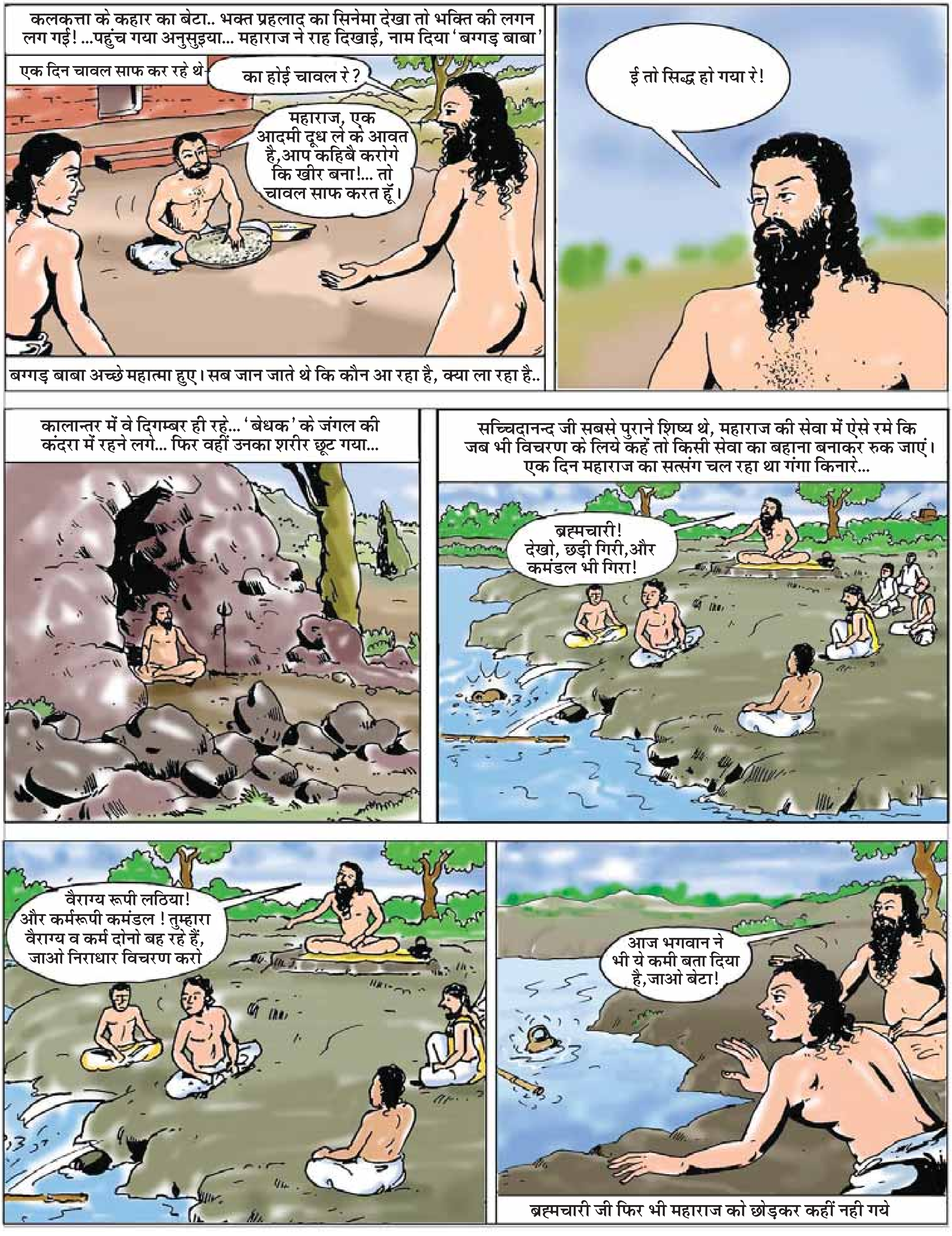
कलकत्ता के कहार का बेटा.. भक्त प्रहलाद का सिनेमा देखा तो भक्ति की लगन लग गई! ...पहुंच गया अनुसुइया... महाराज ने राह दिखाई, नाम दिया 'बग्गड़ बाबा'
एक दिन चावल साफ कर रहे थे-
का होई चावल रे ?
महाराज, एक आदमी दूध ले के आवत है, आप कहिबै करोगे कि खीर बना!... तो चावल साफ करत हूँ।
बग्गड़ बाबा अच्छे महात्मा हुए। सब जान जाते थे कि कौन आ रहा है, क्या ला रहा है..
ई तो सिद्ध हो गया रे!
कालान्तर में वे दिगम्बर ही रहे... 'बेधक' के जंगल की कंदरा में रहने लगे... फिर वहीं उनका शरीर छूट गया...
सच्चिदानन्द जी सबसे पुराने शिष्य थे, महाराज की सेवा में ऐसे रमे कि जब भी विचरण के लिये कहें तो किसी सेवा का बहाना बनाकर रुक जाएं। एक दिन महाराज का सत्संग चल रहा था गंगा किनारे...
ब्रह्मचारी! देखो, छड़ी गिरी,और कमंडल भी गिरा!
वैराग्य रूपी लठिया! और कर्मरूपी कमंडल ! तुम्हारा वैराग्य व कर्म दोनो बह रहे हैं, जाओ निराधार विचरण करो
आज भगवान ने भी ये कमी बता दिया है,जाओ बेटा!
ब्रह्मचारी जी फिर भी महाराज को छोड़कर कहीं नही गये

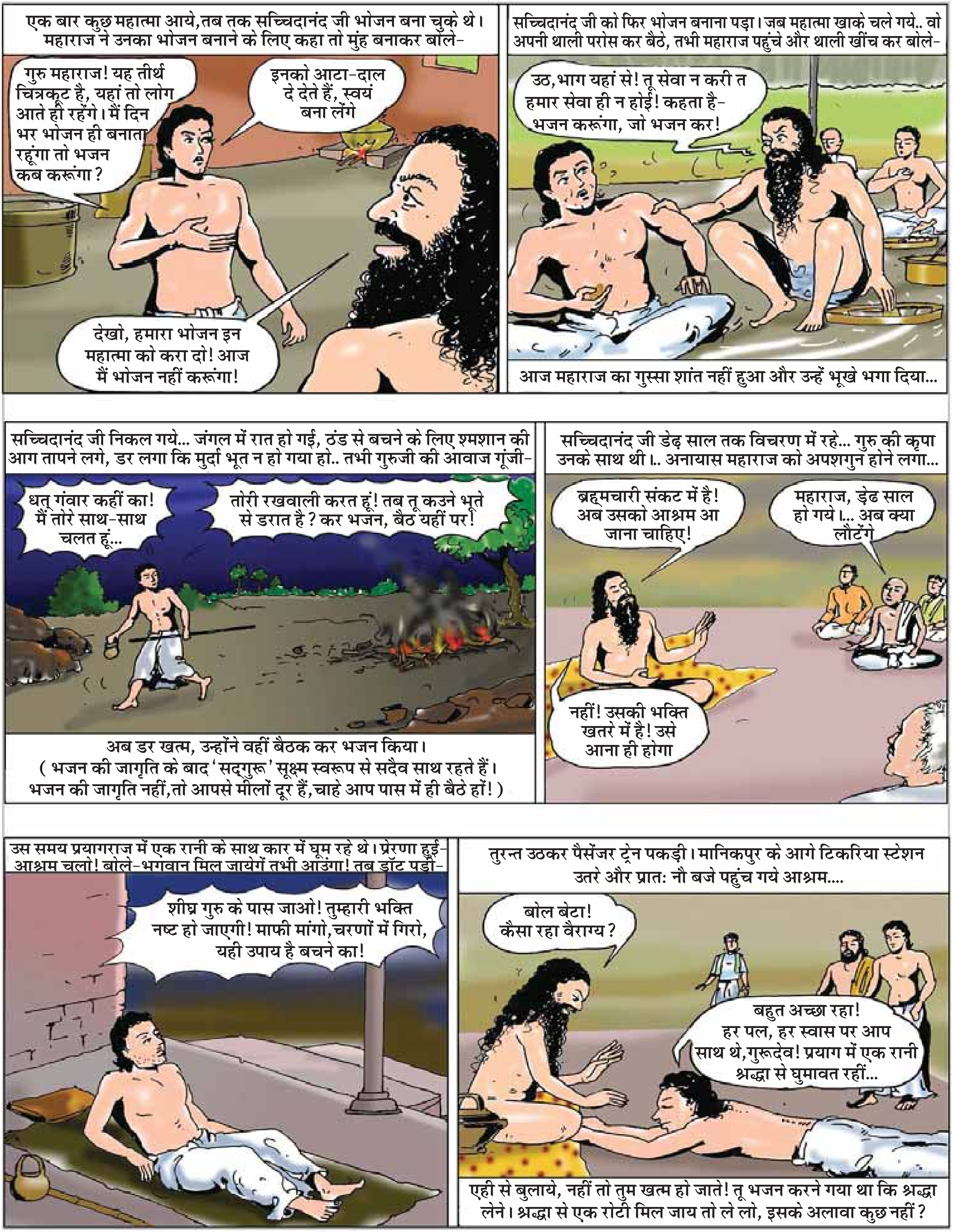
एक बार कुछ महात्मा आये,तब तक सच्चिदानंद जी भोजन बना चुके थे। महाराज ने उनका भोजन बनाने के लिए कहा तो मुंह बनाकर बोले-
गुरु महाराज! यह तीर्थ चित्रकूट है, यहां तो लोग आते ही रहेंगे। मैं दिन भर भोजन ही बनाता रहूंगा तो भजन कब करूंगा?
इनको आटा-दाल दे देते हैं, स्वयं बना लेंगे
देखो, हमारा भोजन इन महात्मा को करा दो! आज मैं भोजन नहीं करूंगा!
सच्चिदानंद जी को फिर भोजन बनाना पड़ा। जब महात्मा खाके चले गये.. वो अपनी थाली परोस कर बैठे, तभी महाराज पहुंचे और थाली खींच कर बोले-
उठ,भाग यहां से! तू सेवा न करी त हमार सेवा ही न होई! कहता है- भजन करूंगा, जो भजन कर!
आज महाराज का गुस्सा शांत नहीं हुआ और उन्हें भूखे भगा दिया...
सच्चिदानंद जी निकल गये... जंगल में रात हो गई, ठंड से बचने के लिए श्मशान की आग तापने लगे, डर लगा कि मुर्दा भूत न हो गया हो.. तभी गुरुजी की आवाज गूंजी-
धत् गंवार कहीं का! मैं तोरे साथ-साथ चलत हूं...
तोरी रखवाली करत हूं! तब तू कउने भूते से डरात है? कर भजन, बैठ यहीं पर!
अब डर खत्म, उन्होंने वहीं बैठक कर भजन किया। (भजन की जागृति के बाद 'सद्गुरू' सूक्ष्म स्वरूप से सदैव साथ रहते हैं। भजन की जागृति नहीं,तो आपसे मीलों दूर हैं,चाहे आप पास में ही बैठे हों!)
सच्चिदानंद जी डेढ़ साल तक विचरण में रहे... गुरु की कृपा उनके साथ थी।.. अनायास महाराज को अपशगुन होने लगा...
ब्रह्मचारी संकट में है! अब उसको आश्रम आ जाना चाहिए!
महाराज, डेढ साल हो गये।... अब क्या लौटेंगे
नहीं! उसकी भक्ति खतरे में है! उसे आना ही होगा
उस समय प्रयागराज में एक रानी के साथ कार में घूम रहे थे। प्रेरणा हुई- आश्रम चलो! बोले-भगवान मिल जायेगें तभी आऊंगा! तब डांट पड़ी-
शीघ्र गुरु के पास जाओ! तुम्हारी भक्ति नष्ट हो जाएगी! माफी मांगो,चरणों में गिरो, यही उपाय है बचने का!
तुरन्त उठकर पैसेंजर ट्रेन पकड़ी। मानिकपुर के आगे टिकरिया स्टेशन उतरे और प्रातः नौ बजे पहुंच गये आश्रम....
बोल बेटा! कैसा रहा वैराग्य?
बहुत अच्छा रहा! हर पल, हर स्वास पर आप साथ थे,गुरूदेव! प्रयाग में एक रानी श्रद्धा से घुमावत रहीं...
एही से बुलाये, नहीं तो तुम खत्म हो जाते! तू भजन करने गया था कि श्रद्धा लेने। श्रद्धा से एक रोटी मिल जाय तो ले लो, इसके अलावा कुछ नहीं?

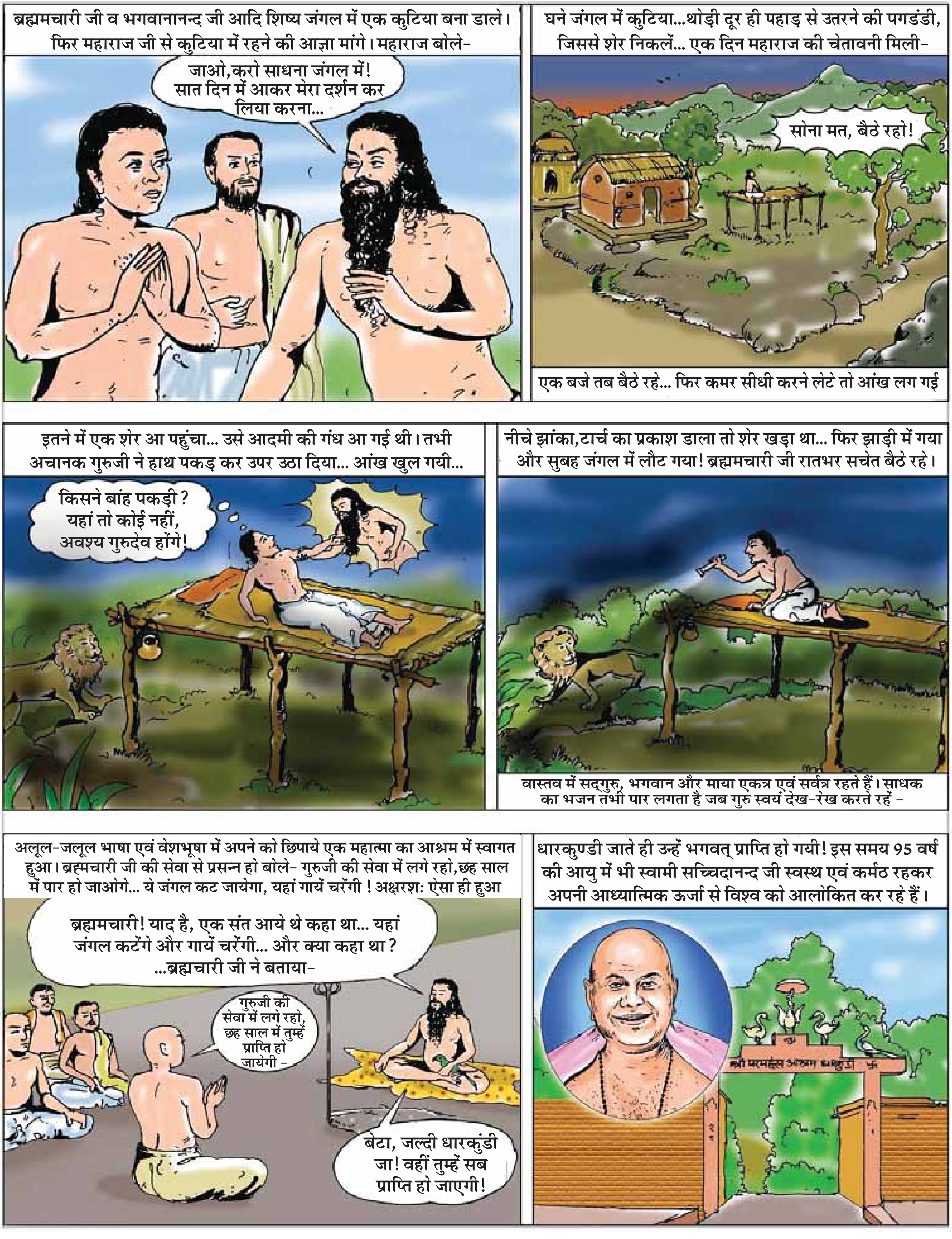
ब्रह्मचारी जी व भगवानानन्द जी आदि शिष्य जंगल में एक कुटिया बना डाले। फिर महाराज जी से कुटिया में रहने की आज्ञा मांगे। महाराज बोले-
जाओ, करो साधना जंगल में! सात दिन में आकर मेरा दर्शन कर लिया करना...
घने जंगल में कुटिया...थोड़ी दूर ही पहाड़ से उतरने की पगडंडी, जिससे शेर निकलें... एक दिन महाराज की चेतावनी मिली-
सोना मत, बैठे रहो!
एक बजे तब बैठे रहे... फिर कमर सीधी करने लेटे तो आंख लग गई
इतने में एक शेर आ पहुंचा... उसे आदमी की गंध आ गई थी। तभी अचानक गुरुजी ने हाथ पकड़ कर उपर उठा दिया... आंख खुल गयी...
किसने बांह पकड़ी? यहां तो कोई नहीं, अवश्य गुरुदेव होंगे!
नीचे झांका, टार्च का प्रकाश डाला तो शेर खड़ा था... फिर झाड़ी में गया और सुबह जंगल में लौट गया! ब्रह्मचारी जी रातभर सचेत बैठे रहे।
वास्तव में सद्‌गुरु, भगवान और माया एकत्र एवं सर्वत्र रहते हैं। साधक का भजन तभी पार लगता है जब गुरु स्वयं देख-रेख करते रहें -
अलूल-जलूल भाषा एवं वेशभूषा में अपने को छिपाये एक महात्मा का आश्रम में स्वागत हुआ। ब्रह्मचारी जी की सेवा से प्रसन्न हो बोले- गुरुजी की सेवा में लगे रहो, छह साल में पार हो जाओगे... ये जंगल कट जायेगा, यहां गायें चरेंगी ! अक्षरशः ऐसा ही हुआ
ब्रह्मचारी! याद है, एक संत आये थे कहा था... यहां जंगल कटेंगे और गायें चरेंगी... और क्या कहा था? ...ब्रह्मचारी जी ने बताया-
गुरुजी की सेवा में लगे रहो, छह साल में तुम्हें प्राप्ति हो जायेगी -
बेटा, जल्दी धारकुंडी जा! वहीं तुम्हें सब प्राप्ति हो जाएगी!
धारकुण्डी जाते ही उन्हें भगवत् प्राप्ति हो गयी! इस समय 95 वर्ष की आयु में भी स्वामी सच्चिदानन्द जी स्वस्थ एवं कर्मठ रहकर अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा से विश्व को आलोकित कर रहे हैं।

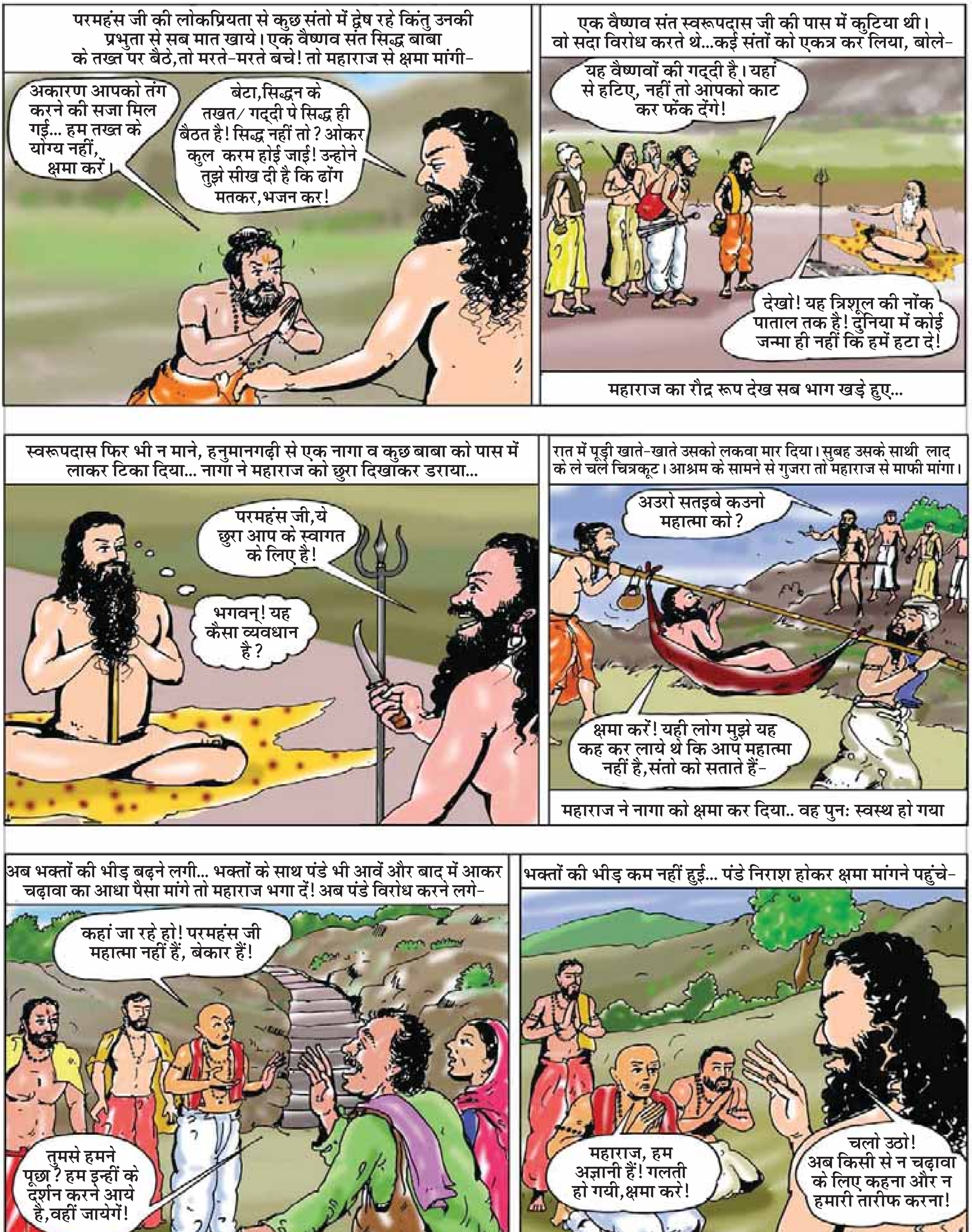
परमहंस जी की लोकप्रियता से कुछ संतो में द्वेष रहे किंतु उनकी प्रभुता से सब मात खाये। एक वैष्णव संत सिद्ध बाबा के तख्त पर बैठे, तो मरते-मरते बचे! तो महाराज से क्षमा मांगी-
अकारण आपको तंग करने की सजा मिल गई... हम तख्त के योग्य नहीं, क्षमा करें।
बेटा, सिद्धन के तखत/ गद्दी पे सिद्ध ही बैठत है! सिद्ध नहीं तो? ओकर कुल करम होई जाई! उन्होने तुझे सीख दी है कि ढोंग मतकर, भजन कर!
एक वैष्णव संत स्वरूपदास जी की पास में कुटिया थी। वो सदा विरोध करते थे...कई संतों को एकत्र कर लिया, बोले-
यह वैष्णवों की गद्दी है। यहां से हटिए, नहीं तो आपको काट कर फेंक देंगे!
देखो! यह त्रिशूल की नोंक पाताल तक है! दुनिया में कोई जन्मा ही नहीं कि हमें हटा दे!
महाराज का रौद्र रूप देख सब भाग खड़े हुए...
स्वरूपदास फिर भी न माने, हनुमानगढ़ी से एक नागा व कुछ बाबा को पास में लाकर टिका दिया... नागा ने महाराज को छुरा दिखाकर डराया...
परमहंस जी, ये छुरा आप के स्वागत के लिए है!
भगवन्! यह कैसा व्यवधान है?
रात में पूड़ी खाते-खाते उसको लकवा मार दिया। सुबह उसके साथी लाद के ले चले चित्रकूट। आश्रम के सामने से गुजरा तो महाराज से माफी मांगा।
अउरो सतइबे कउनो महात्मा को?
क्षमा करें! यही लोग मुझे यह कह कर लाये थे कि आप महात्मा नहीं है, संतो को सताते हैं-
महाराज ने नागा को क्षमा कर दिया.. वह पुनः स्वस्थ हो गया
अब भक्तों की भीड़ बढ़ने लगी... भक्तों के साथ पंडे भी आवें और बाद में आकर चढ़ावा का आधा पैसा मांगे तो महाराज भगा दें! अब पंडे विरोध करने लगे-
कहां जा रहे हो! परमहंस जी महात्मा नहीं हैं, बेकार हैं!
तुमसे हमने पूछा? हम इन्हीं के दर्शन करने आये है, वहीं जायेगें!
भक्तों की भीड़ कम नहीं हुई... पंडे निराश होकर क्षमा मांगने पहुंचे-
महाराज, हम अज्ञानी हैं! गलती हो गयी, क्षमा करे!
चलो उठो! अब किसी से न चढ़ावा के लिए कहना और न हमारी तारीफ करना!

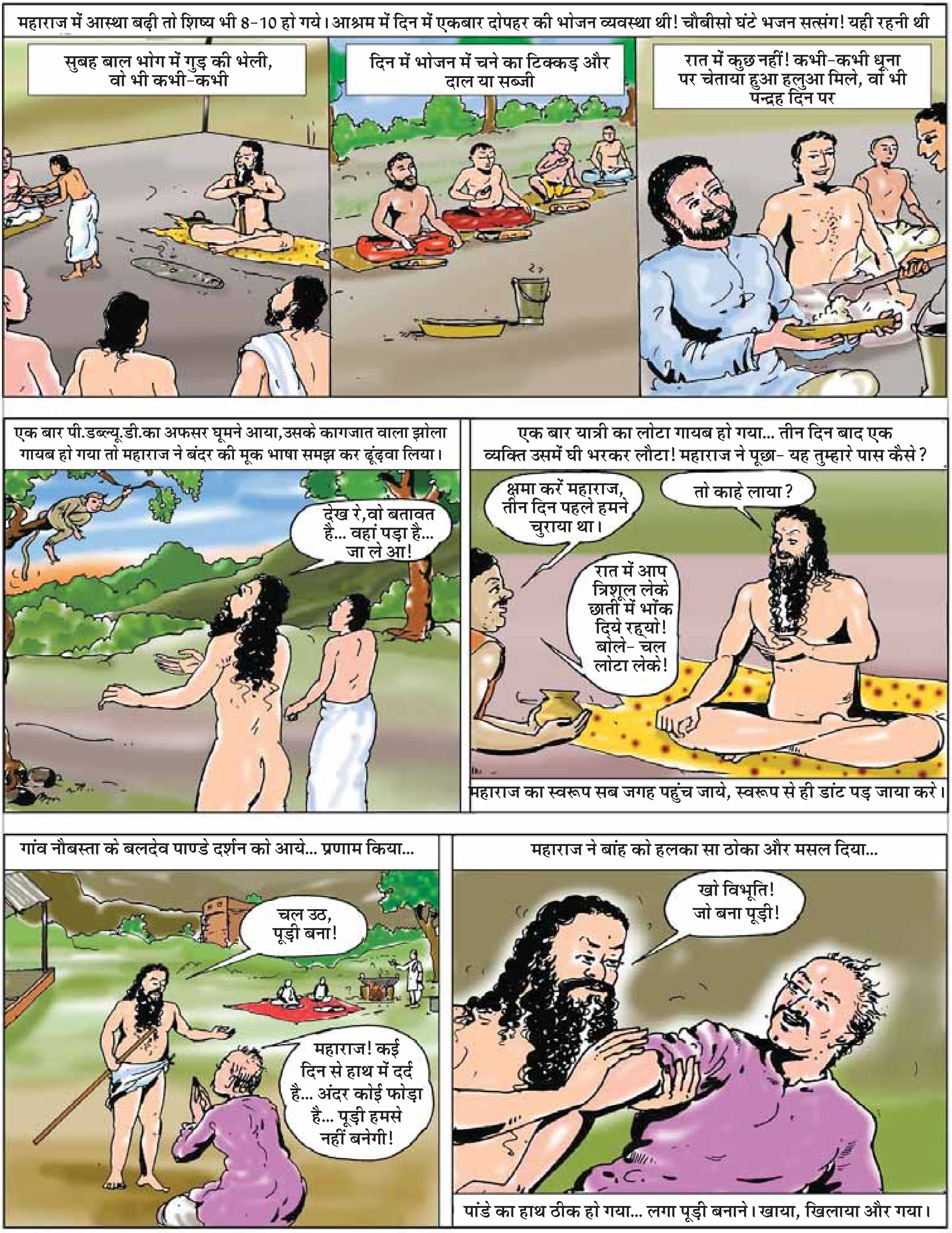
महाराज में आस्था बढ़ी तो शिष्य भी 8-10 हो गये। आश्रम में दिन में एकबार दोपहर की भोजन व्यवस्था थी! चौबीसो घंटे भजन सत्संग! यही रहनी थी
सुबह बाल भोग में गुड़ की भेली, वो भी कभी-कभी
दिन में भोजन में चने का टिक्कड़ और दाल या सब्जी
रात में कुछ नहीं! कभी-कभी धूना पर चेताया हुआ हलुआ मिले, वो भी पन्द्रह दिन पर
एक बार पी.डब्ल्यू.डी.का अफसर घूमने आया,उसके कागजात वाला झोला गायब हो गया तो महाराज ने बंदर की मूक भाषा समझ कर ढूंढ़वा लिया।
देख रे,वो बतावत है... वहां पड़ा है... जा ले आ!
एक बार यात्री का लोटा गायब हो गया... तीन दिन बाद एक व्यक्ति उसमें घी भरकर लौटा! महाराज ने पूछा- यह तुम्हारे पास कैसे?
क्षमा करें महाराज, तीन दिन पहले हमने चुराया था।
तो काहे लाया?
रात में आप त्रिशूल लेके छाती में भोंक दिये रह्यो! बोले- चल लोटा लेके!
महाराज का स्वरूप सब जगह पहुंच जाये, स्वरूप से ही डांट पड़ जाया करे।
गांव नौबस्ता के बलदेव पाण्डे दर्शन को आये... प्रणाम किया...
चल उठ, पूड़ी बना!
महाराज! कई दिन से हाथ में दर्द है... अंदर कोई फोड़ा है... पूड़ी हमसे नहीं बनेगी!
महाराज ने बांह को हलका सा ठोका और मसल दिया...
खो विभूति! जो बना पूड़ी!
पांडे का हाथ ठीक हो गया... लगा पूड़ी बनाने। खाया, खिलाया और गया।

उसी दिन महाराज के बांह में भंयकर दर्द व फोड़ा हो गया। नौवें दिन भगवान से पूछे-

महाराज जब भी किसी का दर्द हरते, उन्हें कष्ट झेलना पड़ता था।

तीर्थो में कुछ कुपात्र लोग महंत बने बैठे हैं। ऐसा ही एक कामतानाथ तीर्थ में... उनका बेटा मनबढ़ था, गाँव की बहू बेटियों पर बुरी नजर रखे। ... एक दिन एक पंडित दौड़ा आया...

उसी दिन आश्रम का तवा कुंए में गिर गया तो महाराज ने भक्तों से कहा, निकालो! शीतल पंडित ने सुना तो तुंरत कुंए में कूदकर निकाल लाया... पांव से खून निकल रहा था...

महाराज की जुबान से जो निकल जाता, भगवान पूरा कर देते थे। बाप बेटे को दस साल की सजा हुई, 7 वर्ष में दोनों छूटकर आ गये।

एकबार महाराज को जिज्ञासा हुई कि चित्रकूट में कौन-कौन सच्चे महात्मा हैं, तो अनुभव में दिखाई पड़ा- भगवान का दरबार! पुकार हुई-'अनुसूइया के परमहंस जी!' हम हाथी पर चढ़कर आये और ऊंचे आसन पर बैठाये गये। दूसरी पुकार पर 'पीली कोठी के अखंडानंदजी' आये और हमसे नीचे आसन पर बैठे। तीसरी पुकार पर 'जानकी कुंड के रणछोड़दास जी' आये, उनको थोड़ा और नीचे आसन पर बैठाया गया। फिर आवाज आई- चित्रकूट में तीन ही महात्मा हैं!

अर्थात उस समय परमहंस जी महाराज! पीली कोठी के अखंडानंदजी! जानकीकुंड के रणछोड़दास जी! पर ही भगवान की कृपा थी... महाराज उनमें प्रथम रहे

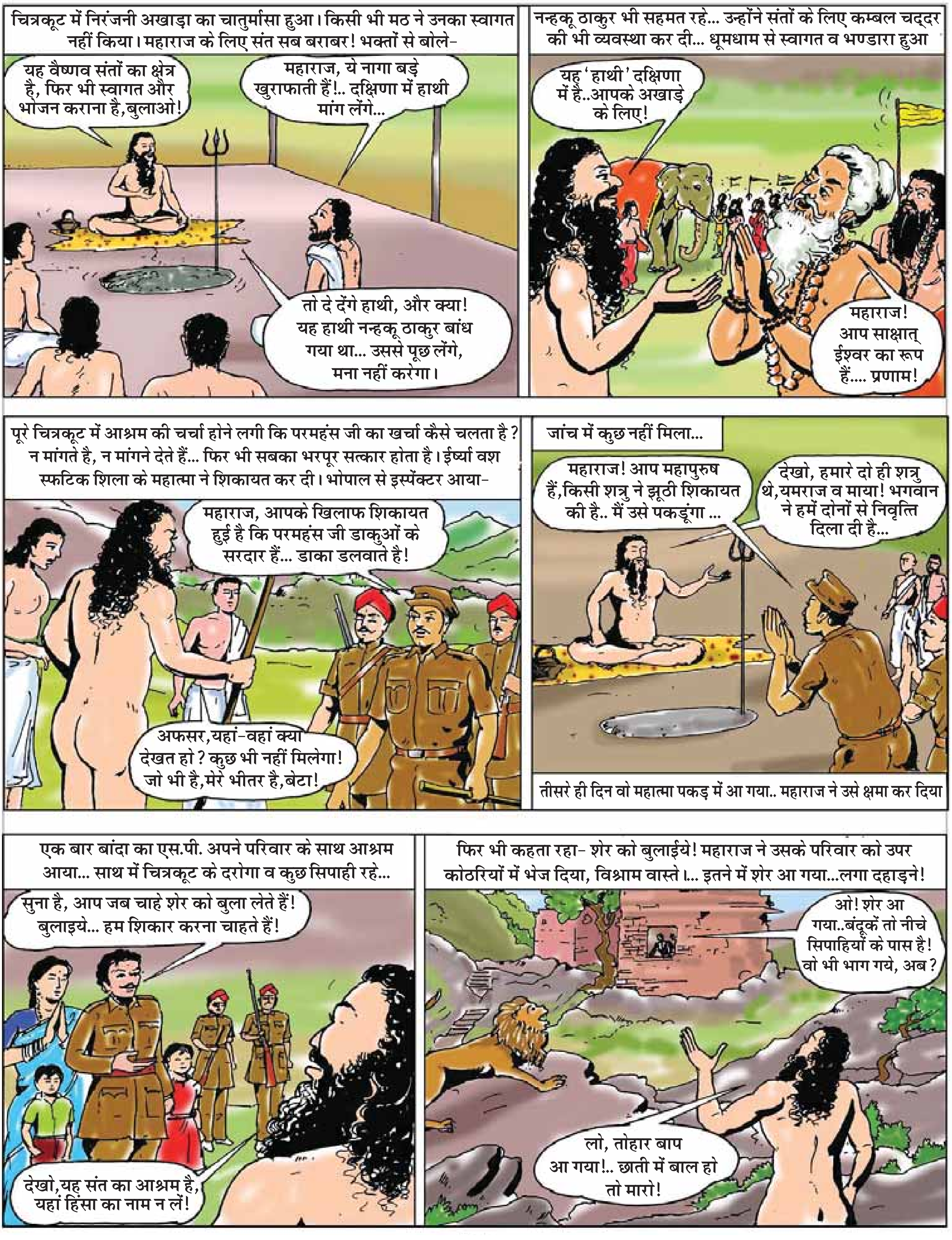

चित्रकूट में निरंजनी अखाड़ा का चातुर्मासा हुआ। किसी भी मठ ने उनका स्वागत नहीं किया। महाराज के लिए संत सब बराबर! भक्तों से बोले-
यह वैष्णव संतों का क्षेत्र है, फिर भी स्वागत और भोजन कराना है, बुलाओ!
महाराज, ये नागा बड़े खुराफाती हैं!.. दक्षिणा में हाथी मांग लेंगे...
तो दे देंगे हाथी, और क्या! यह हाथी नन्हकू ठाकुर बांध गया था... उससे पूछ लेंगे, मना नहीं करेगा।
नन्हकू ठाकुर भी सहमत रहे... उन्होंने संतों के लिए कम्बल चद्दर की भी व्यवस्था कर दी... धूमधाम से स्वागत व भण्डारा हुआ
यह 'हाथी' दक्षिणा में है..आपके अखाड़े के लिए!
महाराज! आप साक्षात् ईश्वर का रूप हैं.... प्रणाम!
पूरे चित्रकूट में आश्रम की चर्चा होने लगी कि परमहंस जी का खर्चा कैसे चलता है? न मांगते है, न मांगने देते हैं... फिर भी सबका भरपूर सत्कार होता है। ईर्ष्या वश स्फटिक शिला के महात्मा ने शिकायत कर दी। भोपाल से इस्पेक्टर आया-
महाराज, आपके खिलाफ शिकायत हुई है कि परमहंस जी डाकुओं के सरदार हैं... डाका डलवाते है!
अफसर, यहां-वहां क्या देखत हो? कुछ भी नहीं मिलेगा! जो भी है, मेरे भीतर है, बेटा!
जांच में कुछ नहीं मिला...
महाराज! आप महापुरुष हैं, किसी शत्रु ने झूठी शिकायत की है.. मैं उसे पकडूंगा ...
देखो, हमारे दो ही शत्रु थे, यमराज व माया! भगवान ने हमें दोनों से निवृत्ति दिला दी है...
तीसरे ही दिन वो महात्मा पकड़ में आ गया.. महाराज ने उसे क्षमा कर दिया
एक बार बांदा का एस.पी. अपने परिवार के साथ आश्रम आया... साथ में चित्रकूट के दरोगा व कुछ सिपाही रहे...
सुना है, आप जब चाहे शेर को बुला लेते हैं! बुलाइये... हम शिकार करना चाहते हैं!
देखो, यह संत का आश्रम है, यहां हिंसा का नाम न लें!
फिर भी कहता रहा- शेर को बुलाईये! महाराज ने उसके परिवार को उपर कोठरियों में भेज दिया, विश्राम वास्ते।... इतने में शेर आ गया...लगा दहाड़ने!
ओ! शेर आ गया..बंदूकें तो नीचे सिपाहियों के पास है! वो भी भाग गये, अब?
लो, तोहार बाप आ गया!.. छाती में बाल हो तो मारो!

पूरा परिवार कांपने लगा, पत्नी बोली-
काहे महाराज को छेड़ दिया!... दरोगा ने भी मना किया था... नही माने, भुगतो!
महाराज, हमें क्षमा कर दो! हमसे गलती हो गई ।
शेर को विदा कर दें
अच्छा, नरसिंह भगवान अब जाओ! होई गवा...
शेर चला गया, एस.पी. ने क्षमा मांगते हुए कहा – हम तो आपको परखने आये थे ।... बाद में उसने भेंट सामग्री भेजी किंतु महाराज ने नहीं स्वीकारा..
कर्बी जाते महाराज स्फटिक शिला पहुंच गये। वहां निर्मलदास संत रहें, बड़ी लम्बी जटा थी। रात तीन बजे से कामतानाथ की परिक्रमा करते थे... रोज नियम से!
तुम्हीं हो अनुसुईया के परमहंस जी! गाली क्यों देते हो? किस शास्त्र में लिखा है?
अरे! हम अपने आश्रम पर गाली देते हैं! यहां तो नहीं दे रहे! कोई कारण है इसलिए देते हैं!... हमें भी मालूम है कि साधु को गाली शोभा नहीं देता
महाराज ने उन्हें बहुत समझाया, शांत किया पर वे नहीं माने...
सिद्ध बनते हो! कौन सी सिद्धि जानते हो?
बहुत हो गया! हां, हम सचंहु के सिद्ध हैं!.. महिना भर में तोर सब करम न हो जाए तो हम साधु नहीं!
जाओ,जाओ! चमारे के सरापे से डांगर नहीं मरते हैं।
15 दिन बाद.... निर्मलदास जी स्फटिक शिला के पास मोहकमगढ़ के राम और लक्ष्मण से उलझ गये, उन्होंने उनकी जटा काट दी...
लक्ष्मण! इनके अहंकार की जड़ यह जटा ही है... इसे काट दो!
कुछ दिन बाद... अपने एक शिष्य को अपनी साधना वाली गुफा दिखाने ले गये,वहां निर्मलदास को भालू खा गया...
परमहंस जी के वचन सदैव सत्य फलित होते थे...

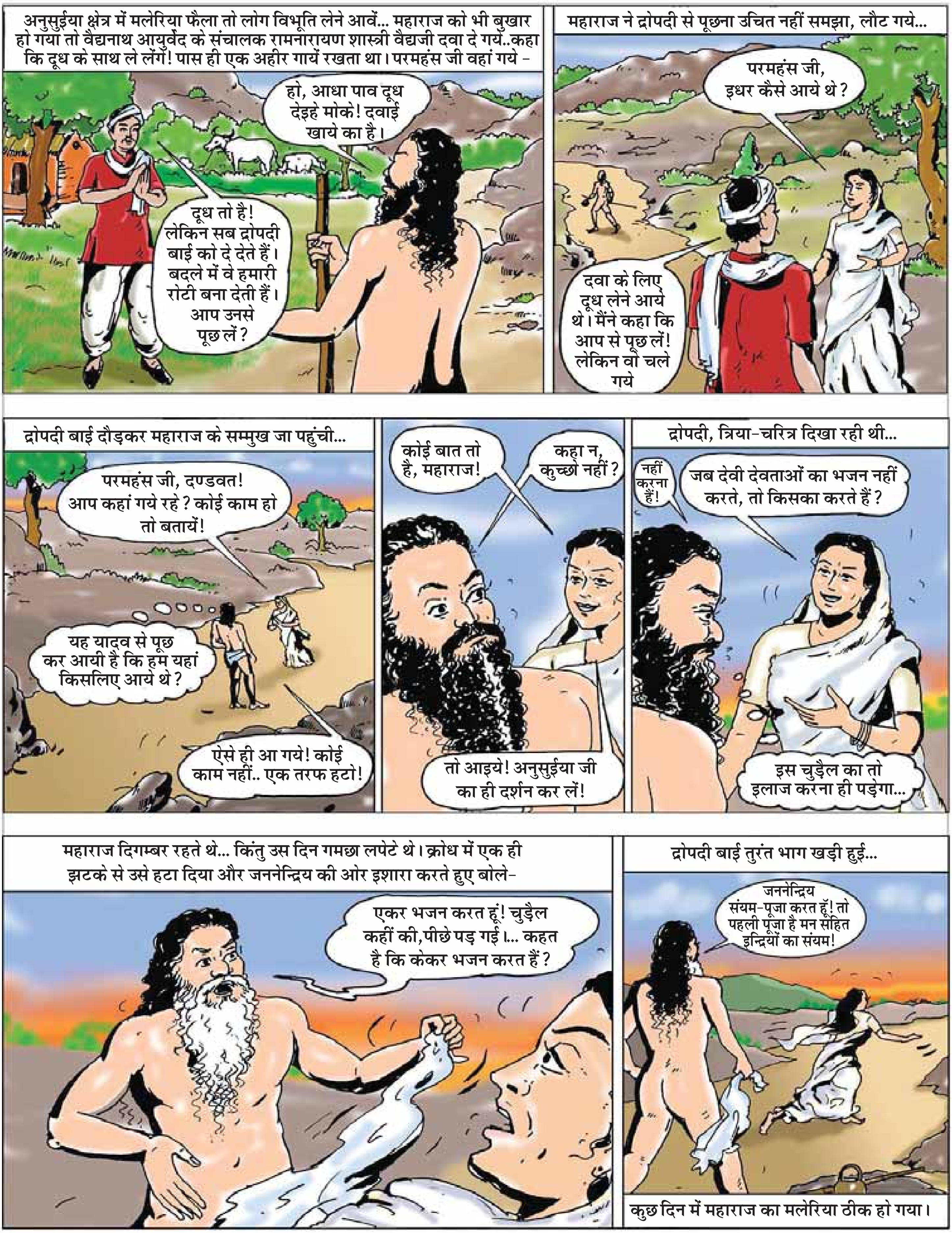
अनुसुईया क्षेत्र में मलेरिया फैला तो लोग विभूति लेने आवें... महाराज को भी बुखार हो गया तो वैद्यनाथ आयुर्वेद के संचालक रामनारायण शास्त्री वैद्यजी दवा दे गये..कहा कि दूध के साथ ले लेंगे! पास ही एक अहीर गायें रखता था। परमहंस जी वहां गये -
हो, आधा पाव दूध देइहे मोके! दवाई खाये का है।
दूध तो है! लेकिन सब द्रोपदी बाई को दे देते हैं। बदले में वे हमारी रोटी बना देती हैं। आप उनसे पूछ लें?
महाराज ने द्रोपदी से पूछना उचित नहीं समझा, लौट गये...
परमहंस जी, इधर कैसे आये थे?
दवा के लिए दूध लेने आये थे। मैंने कहा कि आप से पूछ लें! लेकिन वो चले गये
द्रोपदी बाई दौड़कर महाराज के सम्मुख जा पहुंची...
परमहंस जी, दण्डवत! आप कहां गये रहे? कोई काम हो तो बतायें!
यह यादव से पूछ कर आयी है कि हम यहां किसलिए आये थे?
ऐसे ही आ गये! कोई काम नहीं.. एक तरफ हटो!
कोई बात तो है, महाराज!
कहा न, कुच्छो नहीं?
तो आइये! अनुसुईया जी का ही दर्शन कर लें!
द्रोपदी, त्रिया-चरित्र दिखा रही थी...
नहीं करना हैं!
जब देवी देवताओं का भजन नहीं करते, तो किसका करते हैं?
इस चुड़ैल का तो इलाज करना ही पड़ेगा...
महाराज दिगम्बर रहते थे... किंतु उस दिन गमछा लपेटे थे। क्रोध में एक ही झटके से उसे हटा दिया और जननेन्द्रिय की ओर इशारा करते हुए बोले-
एकर भजन करत हूं! चुड़ैल कहीं की,पीछे पड़ गई।... कहत है कि केकर भजन करत हैं?
द्रोपदी बाई तुरंत भाग खड़ी हुई...
जननेन्द्रिय संयम-पूजा करत हूं! तो पहली पूजा है मन सहित इन्द्रियों का संयम!
कुछ दिन में महाराज का मलेरिया ठीक हो गया।

आश्रम के पास मैनहा जंगल में नौ बाबा आके रहने लगे। स्वरूपदास ने उनको भी भड़काया... उनमे से एक बाबा कालिख पोतकर द्रोपदी बाई के कोठरी में जा घुसा...
कौन हरामी है रे! रुक, अपनी सूरत तो दिखा जा!
वह परमहंस जी के पास गई तो बोले- हमें नहीं मालूम!..माता लोगों को जंगल में भजन नहीं करना चाहिए। वह नौ बाबाओं के पास गई...
तुम वैष्णव! हम वैष्णव! हम भला ऐसा कैसे कर सकते हैं ? वह परमहंस जी के आश्रम से आया होगा!
तुम परमहंस जी का नाम लगा दो! उन्हें पुलिस ले जाएगी, हम ठाठ से भजन करेंगे!
द्रोपदी बाई ने पुलिस में परमहंस जी की शिकायत कर दी। पुलिस आ गयी...
आपको हमारे साथ थाने चलना होगा
प्रभु! यह क्या बवाल है ?
भगवान ने कहा- चला जा! कुछ नहीं होगा
पथरा गांव का गणेश नम्बरदार, महाराज को छुड़ाने चांदी के रूपये लेकर थाने पहुंचा... प्रभु की लीला! द्रोपदी पगला गई, बयान भी बदल दिया...
साहब, इन्हीं बाबाओं ने मुझे बहका दिया था... परमहंस जी निर्दोष हैं!
दरोगा ने छोड़ दिया,महाराज बोले- लाया क्यों ? अब तू ही जनिहे!
एक बार इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से डॉ.रामकुमार वर्मा, जिनका कबीर साहित्य पर शोध था, आश्रम आना हुआ... विख्यात लेखक व महात्मा में खूब सत्संग हुआ-
कबीर के विचारों पर कुछ सुनाइये महाराज!
आपने तो कबीरजी की वाणी पर मनन किया है! हम तो जंगल में पड़े हैं, कहाँ पावें सुनने को ? हमहू के कुछ सुनाओ!
हम लोग सुनाने नहीं, सुनने आये हैं! महाराज!
महाराज ने भजन सुनाया, और उसकी व्याख्या की...
को कही कैसे कहीं को पतिआई
फुलवा को छुअत भंवा मर जाई
जोतिए न बोइए, सींचिए न सोई
बिनु डार बिनु पात फूल एक होई
वो कहने में नहीं आता, वो वाणी का विषय नहीं है। भगवान एक फूल है ! उसका स्पर्श करते ही भ्रमर रूपी मन सदा के लिये मिट जाता है, परमात्मा ही शेष बचता है!
परमात्मा ऐसा पुष्प है- उसे जोत-बोकर, सींचकर नहीं उगाया जा सकता, उसमें डाल-पत्ते भी नहीं... फूल भी दो चार नहीं, एक ही पुष्प भीतर खिलता है!

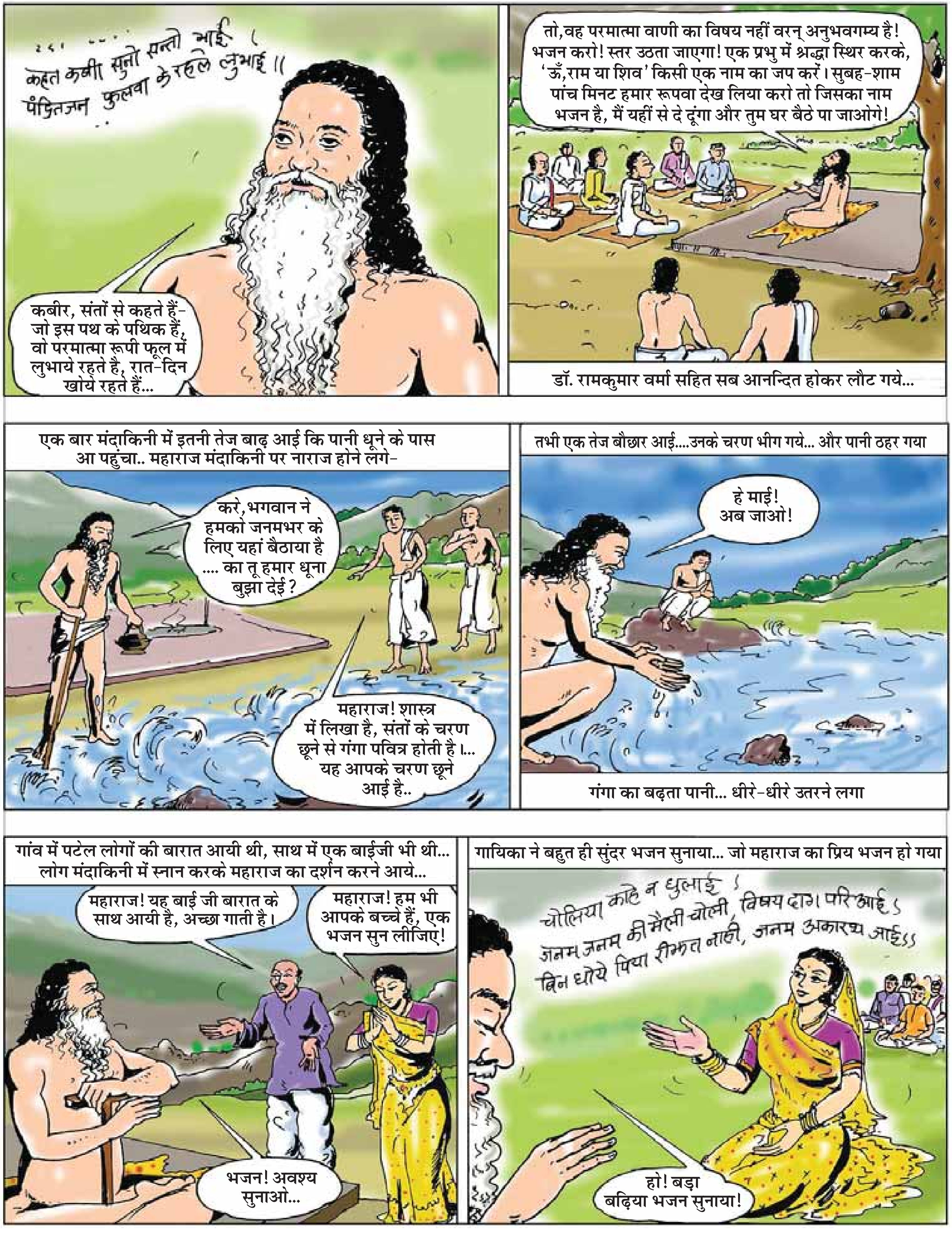

कहत कबीर सुनो सन्तो भाई ।
पंडितजन फुलवा के रहले लुभाई ।।
कबीर, संतों से कहते हैं- जो इस पथ के पथिक हैं, वो परमात्मा रूपी फूल में लुभाये रहते है, रात-दिन खोये रहते हैं...
तो, वह परमात्मा वाणी का विषय नहीं वरन् अनुभवगम्य है! भजन करो! स्तर उठता जाएगा! एक प्रभु में श्रद्धा स्थिर करके, 'ऊँ, राम या शिव' किसी एक नाम का जप करें। सुबह-शाम पांच मिनट हमार रूपवा देख लिया करो तो जिसका नाम भजन है, मैं यहीं से दे दूंगा और तुम घर बैठे पा जाओगे!
डॉ. रामकुमार वर्मा सहित सब आनन्दित होकर लौट गये...
एक बार मंदाकिनी में इतनी तेज बाढ़ आई कि पानी धूने के पास आ पहुंचा.. महाराज मंदाकिनी पर नाराज होने लगे-
करे, भगवान ने हमको जनमभर के लिए यहां बैठाया है .... का तू हमार धूना बुझा देई?
महाराज! शास्त्र में लिखा है, संतों के चरण छूने से गंगा पवित्र होती है।... यह आपके चरण छूने आई है..
तभी एक तेज बौछार आई....उनके चरण भीग गये... और पानी ठहर गया
हे माई! अब जाओ!
गंगा का बढ़ता पानी... धीरे-धीरे उतरने लगा
गांव में पटेल लोगों की बारात आयी थी, साथ में एक बाईजी भी थी... लोग मंदाकिनी में स्नान करके महाराज का दर्शन करने आये...
महाराज! यह बाई जी बारात के साथ आयी है, अच्छा गाती है।
महाराज! हम भी आपके बच्चे हैं, एक भजन सुन लीजिए!
भजन! अवश्य सुनाओ...
गायिका ने बहुत ही सुंदर भजन सुनाया... जो महाराज का प्रिय भजन हो गया
चोलिया काहे न धुलाई !
जनम जनम की मैली चोली, विषय दाग परि आई !
बिन धोये पिया रीझत नाहीं, जनम अकारथ आई।।
हो! बड़ा बढ़िया भजन सुनाया!

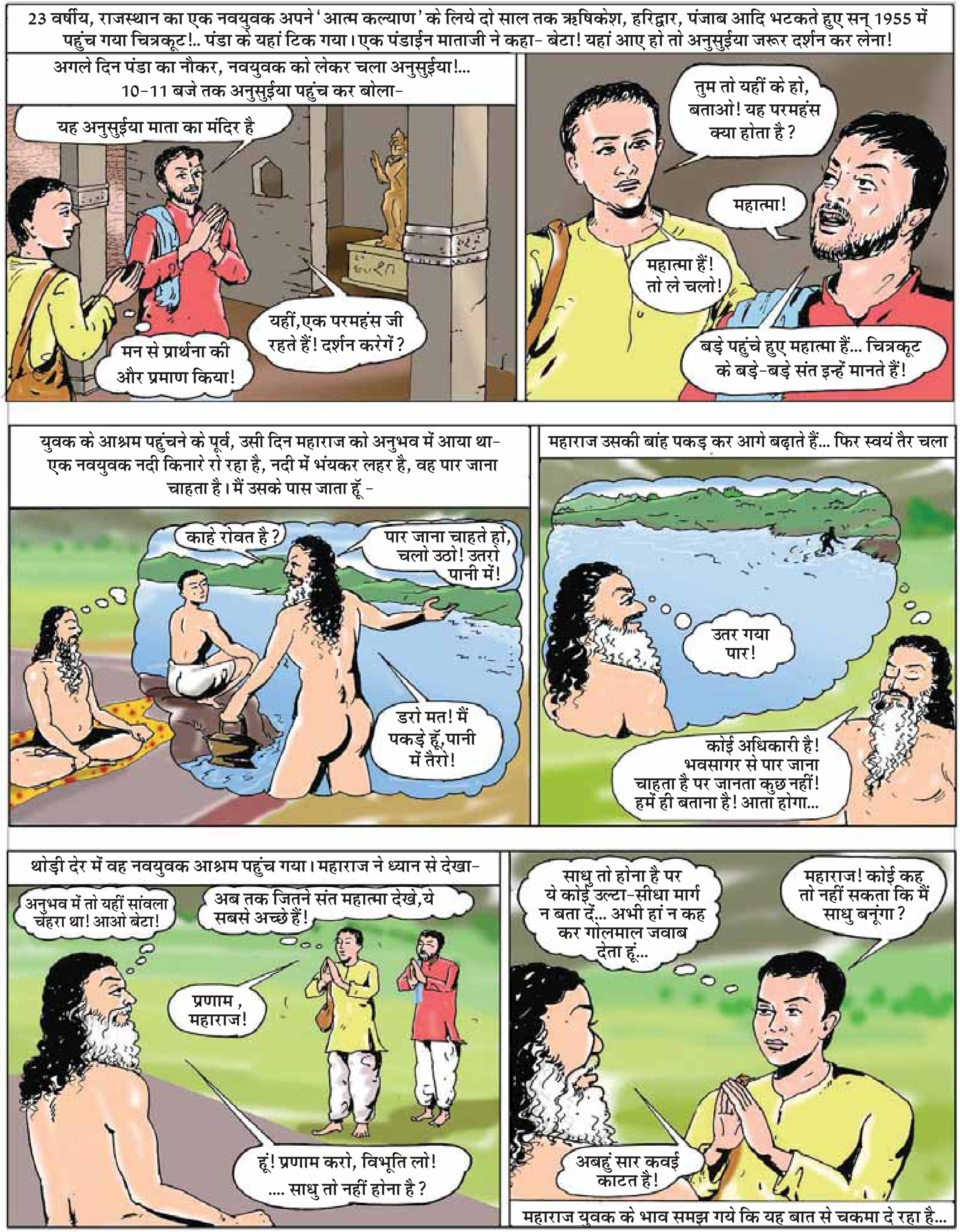
23 वर्षीय, राजस्थान का एक नवयुवक अपने 'आत्म कल्याण' के लिये दो साल तक ऋषिकेश, हरिद्वार, पंजाब आदि भटकते हुए सन् 1955 में पहुंच गया चित्रकूट!.. पंडा के यहां टिक गया। एक पंडाईन माताजी ने कहा- बेटा! यहां आए हो तो अनुसुईया जरूर दर्शन कर लेना!
अगले दिन पंडा का नौकर, नवयुवक को लेकर चला अनुसुईया!... 10-11 बजे तक अनुसुईया पहुंच कर बोला-
यह अनुसुईया माता का मंदिर है
मन से प्रार्थना की और प्रमाण किया!
यहीं, एक परमहंस जी रहते हैं! दर्शन करेगें?
तुम तो यहीं के हो, बताओ! यह परमहंस क्या होता है?
महात्मा!
महात्मा हैं! तो ले चलो!
बड़े पहुंचे हुए महात्मा हैं... चित्रकूट के बड़े-बड़े संत इन्हें मानते हैं!
युवक के आश्रम पहुंचने के पूर्व, उसी दिन महाराज को अनुभव में आया था- एक नवयुवक नदी किनारे रो रहा है, नदी में भंयकर लहर है, वह पार जाना चाहता है। मैं उसके पास जाता हूँ -
काहे रोवत है?
पार जाना चाहते हो, चलो उठो! उतरो पानी में!
डरो मत! मैं पकड़े हूँ, पानी में तैरो!
महाराज उसकी बांह पकड़ कर आगे बढ़ाते हैं... फिर स्वयं तैर चला
उतर गया पार!
कोई अधिकारी है! भवसागर से पार जाना चाहता है पर जानता कुछ नहीं! हमें ही बताना है! आता होगा...
थोड़ी देर में वह नवयुवक आश्रम पहुंच गया। महाराज ने ध्यान से देखा-
अनुभव में तो यहीं सांवला चेहरा था! आओ बेटा!
अब तक जितने संत महात्मा देखे, ये सबसे अच्छे हैं!
प्रणाम, महाराज!
हूं! प्रणाम करो, विभूति लो! .... साधु तो नहीं होना है?
साधु तो होना है पर ये कोई उल्टा-सीधा मार्ग न बता दें... अभी हां न कह कर गोलमाल जवाब देता हूं...
महाराज! कोई कह तो नहीं सकता कि मैं साधु बनूंगा?
अबहुं सार कवई काटत है!
महाराज युवक के भाव समझ गये कि यह बात से चकमा दे रहा है...

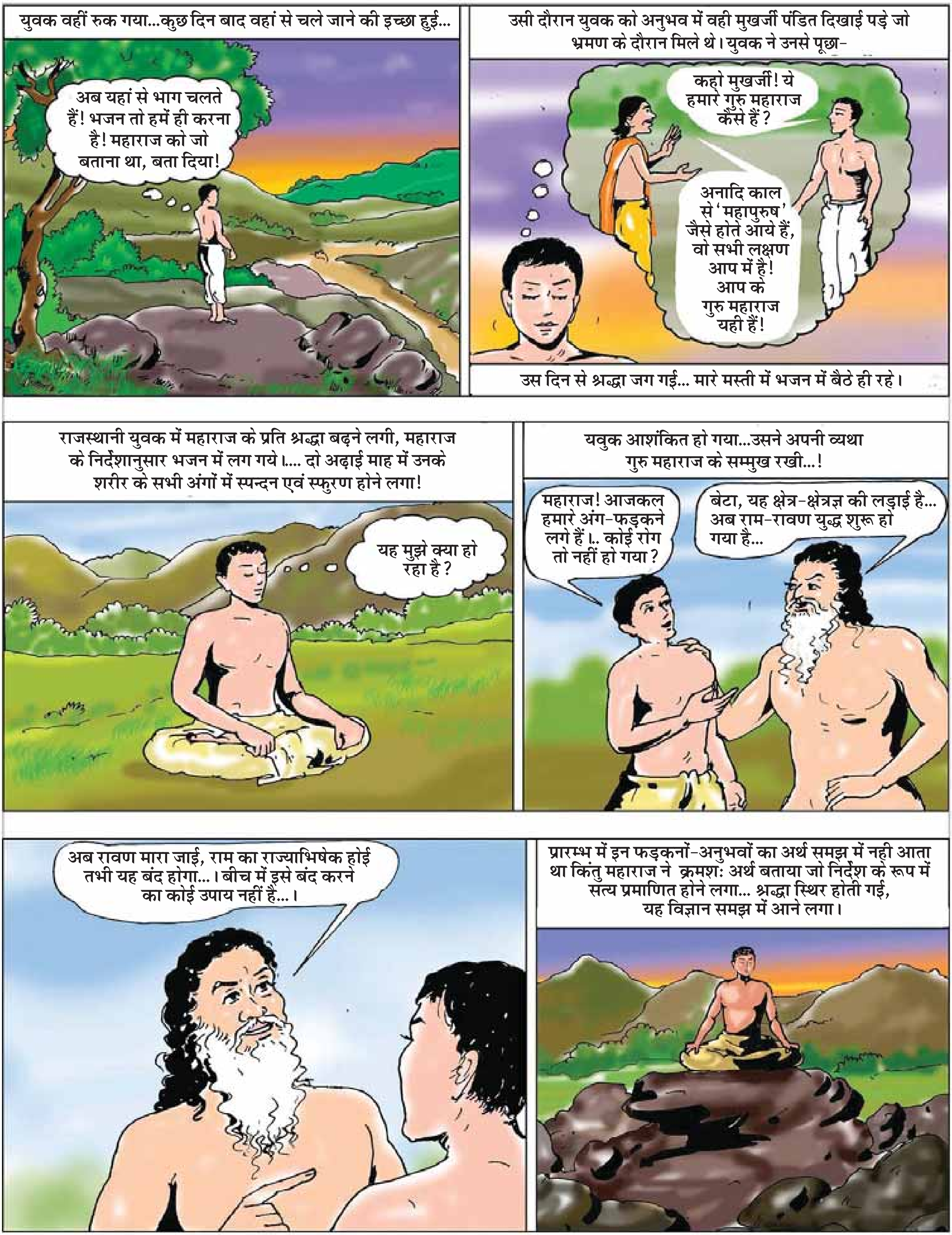
युवक वहीं रुक गया...कुछ दिन बाद वहां से चले जाने की इच्छा हुई...
अब यहां से भाग चलते हैं! भजन तो हमें ही करना है! महाराज को जो बताना था, बता दिया!
उसी दौरान युवक को अनुभव में वही मुखर्जी पंडित दिखाई पड़े जो भ्रमण के दौरान मिले थे। युवक ने उनसे पूछा-
कहो मुखर्जी! ये हमारे गुरु महाराज कैसे हैं?
अनादि काल से 'महापुरुष' जैसे होते आये हैं, वो सभी लक्षण आप में है! आप के गुरु महाराज यही हैं!
उस दिन से श्रद्धा जग गई... मारे मस्ती में भजन में बैठे ही रहे।
राजस्थानी युवक में महाराज के प्रति श्रद्धा बढ़ने लगी, महाराज के निर्देशानुसार भजन में लग गये।.... दो अढ़ाई माह में उनके शरीर के सभी अंगों में स्पन्दन एवं स्फुरण होने लगा!
यह मुझे क्या हो रहा है?
यवुक आशंकित हो गया...उसने अपनी व्यथा गुरु महाराज के सम्मुख रखी...!
महाराज! आजकल हमारे अंग-फड़कने लगे हैं।.. कोई रोग तो नहीं हो गया?
बेटा, यह क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ की लड़ाई है... अब राम-रावण युद्ध शुरू हो गया है...
अब रावण मारा जाई, राम का राज्याभिषेक होई तभी यह बंद होगा...। बीच में इसे बंद करने का कोई उपाय नहीं है...।
प्रारम्भ में इन फड़कनों-अनुभवों का अर्थ समझ में नही आता था किंतु महाराज ने क्रमशः अर्थ बताया जो निर्देश के रूप में सत्य प्रमाणित होने लगा... श्रद्धा स्थिर होती गई, यह विज्ञान समझ में आने लगा।

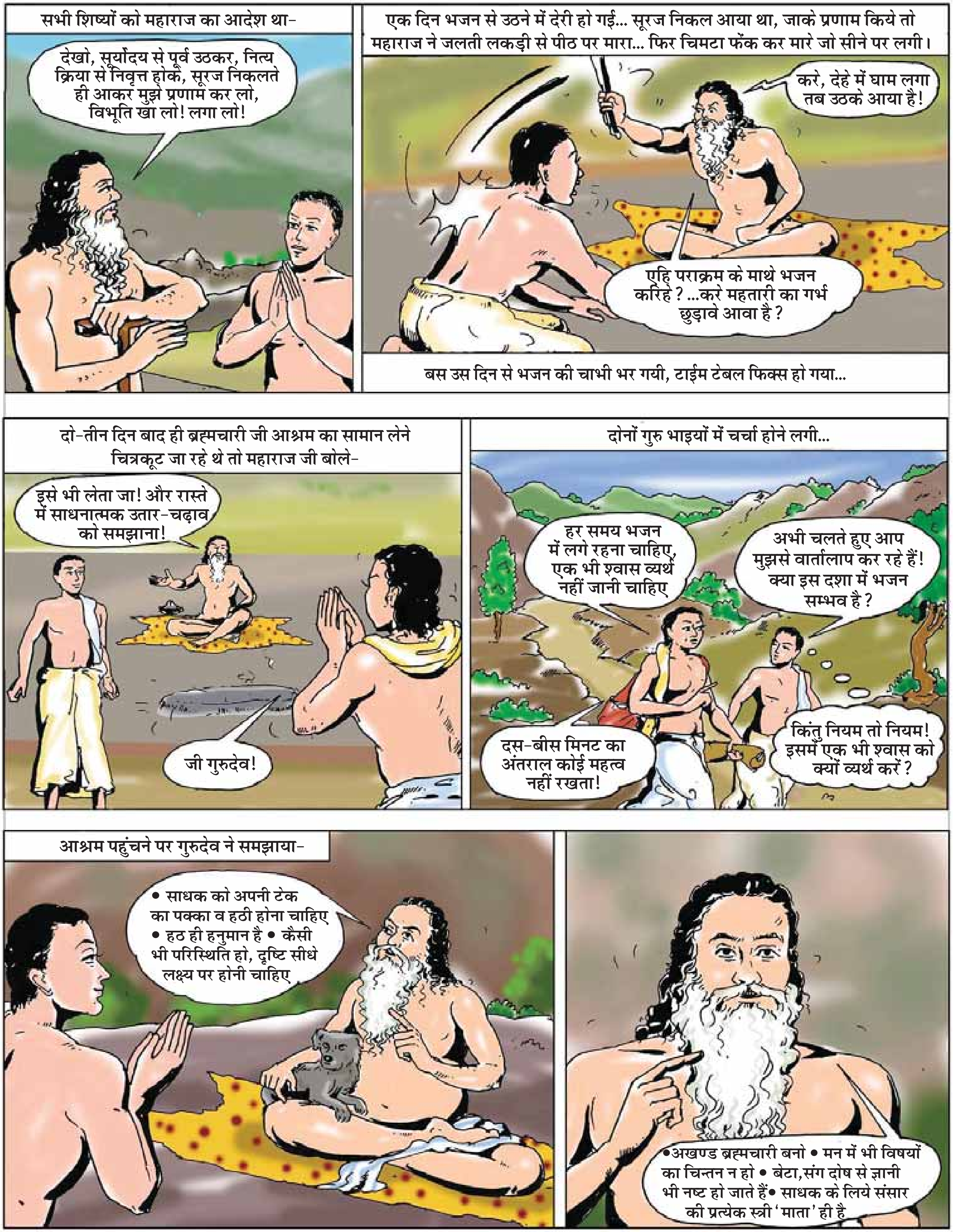
सभी शिष्यों को महाराज का आदेश था-
देखो, सूर्योदय से पूर्व उठकर, नित्य क्रिया से निवृत्त होके, सूरज निकलते ही आकर मुझे प्रणाम कर लो, विभूति खा लो! लगा लो!
एक दिन भजन से उठने में देरी हो गई... सूरज निकल आया था, जाके प्रणाम किये तो महाराज ने जलती लकड़ी से पीठ पर मारा... फिर चिमटा फेंक कर मारे जो सीने पर लगी।
करे, देहे में घाम लगा तब उठके आया है!
एहि पराक्रम के माथे भजन करिहे? ...करे महतारी का गर्भ छुड़ावे आवा है?
बस उस दिन से भजन की चाभी भर गयी, टाईम टेबल फिक्स हो गया...
दो-तीन दिन बाद ही ब्रह्मचारी जी आश्रम का सामान लेने चित्रकूट जा रहे थे तो महाराज जी बोले-
इसे भी लेता जा! और रास्ते में साधनात्मक उतार-चढ़ाव को समझाना!
जी गुरुदेव!
दोनों गुरु भाइयों में चर्चा होने लगी...
हर समय भजन में लगे रहना चाहिए, एक भी श्वास व्यर्थ नहीं जानी चाहिए
अभी चलते हुए आप मुझसे वार्तालाप कर रहे हैं! क्या इस दशा में भजन सम्भव है?
दस-बीस मिनट का अंतराल कोई महत्व नहीं रखता!
किंतु नियम तो नियम! इसमें एक भी श्वास को क्यों व्यर्थ करें?
आश्रम पहुंचने पर गुरुदेव ने समझाया-
• साधक को अपनी टेक का पक्का व हठी होना चाहिए • हठ ही हनुमान है • कैसी भी परिस्थिति हो, दृष्टि सीधे लक्ष्य पर होनी चाहिए
•अखण्ड ब्रह्मचारी बनो • मन में भी विषयों का चिन्तन न हो • बेटा,संग दोष से ज्ञानी भी नष्ट हो जाते हैं• साधक के लिये संसार की प्रत्येक स्त्री 'माता' ही है

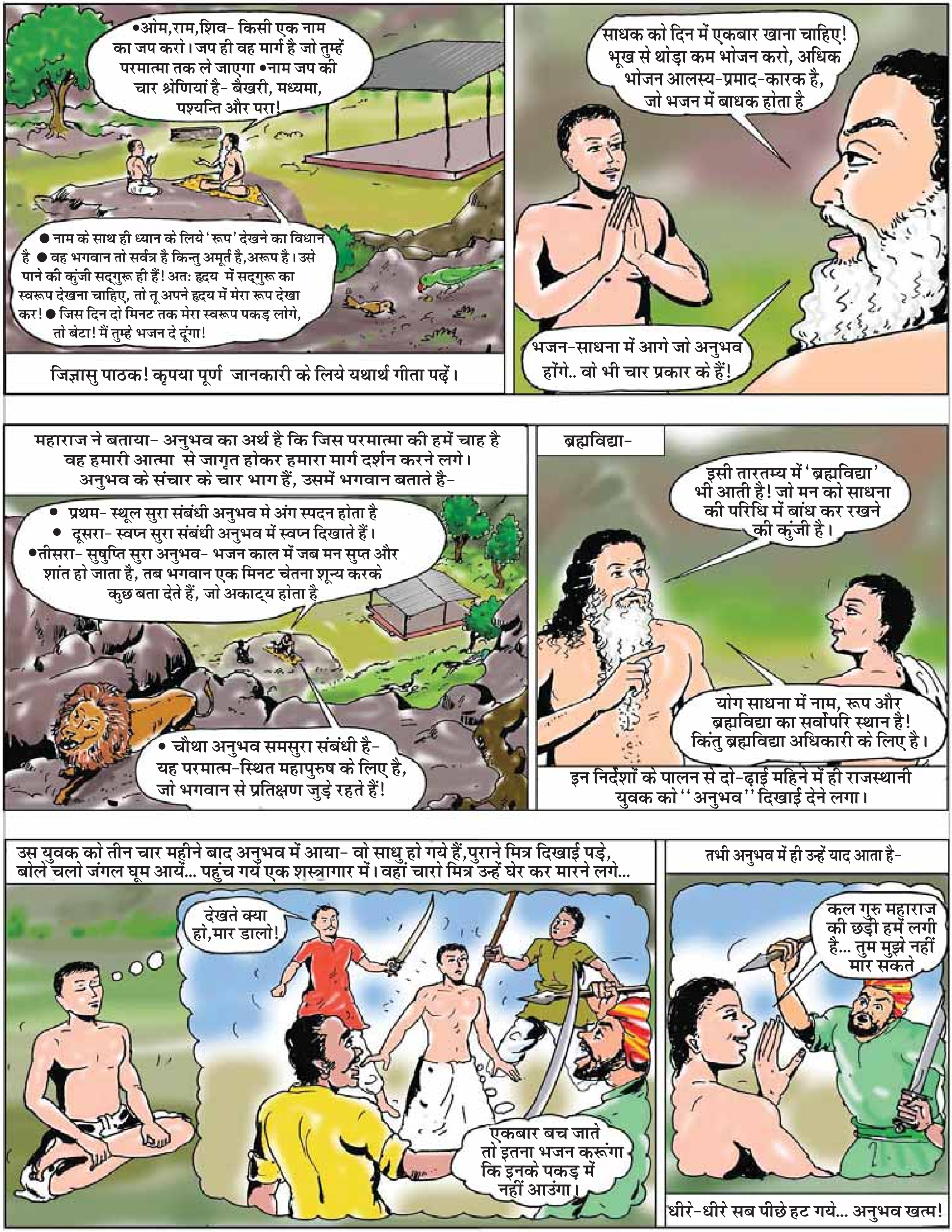
●ओम, राम, शिव- किसी एक नाम का जप करो। जप ही वह मार्ग है जो तुम्हें परमात्मा तक ले जाएगा ●नाम जप की चार श्रेणियां है- बैखरी, मध्यमा, पश्यन्ति और परा!
● नाम के साथ ही ध्यान के लिये 'रूप' देखने का विधान है ● वह भगवान तो सर्वत्र है किन्तु अमूर्त है, अरूप है। उसे पाने की कुंजी सद्गुरू ही हैं! अतः हृदय में सद्गुरू का स्वरूप देखना चाहिए, तो तू अपने हृदय में मेरा रूप देखा कर! ● जिस दिन दो मिनट तक मेरा स्वरूप पकड़ लोगे, तो बेटा! मैं तुम्हे भजन दे दूंगा!
जिज्ञासु पाठक! कृपया पूर्ण जानकारी के लिये यथार्थ गीता पढ़ें।
साधक को दिन में एकबार खाना चाहिए! भूख से थोड़ा कम भोजन करो, अधिक भोजन आलस्य-प्रमाद-कारक है, जो भजन में बाधक होता है
भजन-साधना में आगे जो अनुभव होंगे.. वो भी चार प्रकार के हैं!
महाराज ने बताया- अनुभव का अर्थ है कि जिस परमात्मा की हमें चाह है वह हमारी आत्मा से जागृत होकर हमारा मार्ग दर्शन करने लगे। अनुभव के संचार के चार भाग हैं, उसमें भगवान बताते है-
● प्रथम- स्थूल सुरा संबंधी अनुभव मे अंग स्पदन होता है ● दूसरा- स्वप्न सुरा संबंधी अनुभव में स्वप्न दिखाते हैं। ●तीसरा- सुषुप्ति सुरा अनुभव- भजन काल में जब मन सुप्त और शांत हो जाता है, तब भगवान एक मिनट चेतना शून्य करके कुछ बता देते हैं, जो अकाट्य होता है
● चौथा अनुभव समसुरा संबंधी है- यह परमात्म-स्थित महापुरुष के लिए है, जो भगवान से प्रतिक्षण जुड़े रहते हैं!
ब्रह्मविद्या-
इसी तारतम्य में 'ब्रह्मविद्या' भी आती है! जो मन को साधना की परिधि में बांध कर रखने की कुंजी है।
योग साधना में नाम, रूप और ब्रह्मविद्या का सर्वोपरि स्थान है! किंतु ब्रह्मविद्या अधिकारी के लिए है।
इन निर्देशों के पालन से दो-ढ़ाई महिने में ही राजस्थानी युवक को ''अनुभव'' दिखाई देने लगा।
उस युवक को तीन चार महीने बाद अनुभव में आया- वो साधु हो गये हैं, पुराने मित्र दिखाई पड़े, बोले चलो जंगल घूम आयें... पहुंच गये एक शस्त्रागार में। वहां चारो मित्र उन्हें घेर कर मारने लगे...
देखते क्या हो, मार डालो!
एकबार बच जाते तो इतना भजन करूंगा कि इनके पकड़ में नहीं आउंगा।
तभी अनुभव में ही उन्हें याद आता है-
कल गुरु महाराज की छड़ी हमें लगी है... तुम मुझे नहीं मार सकते
धीरे-धीरे सब पीछे हट गये... अनुभव खत्म!

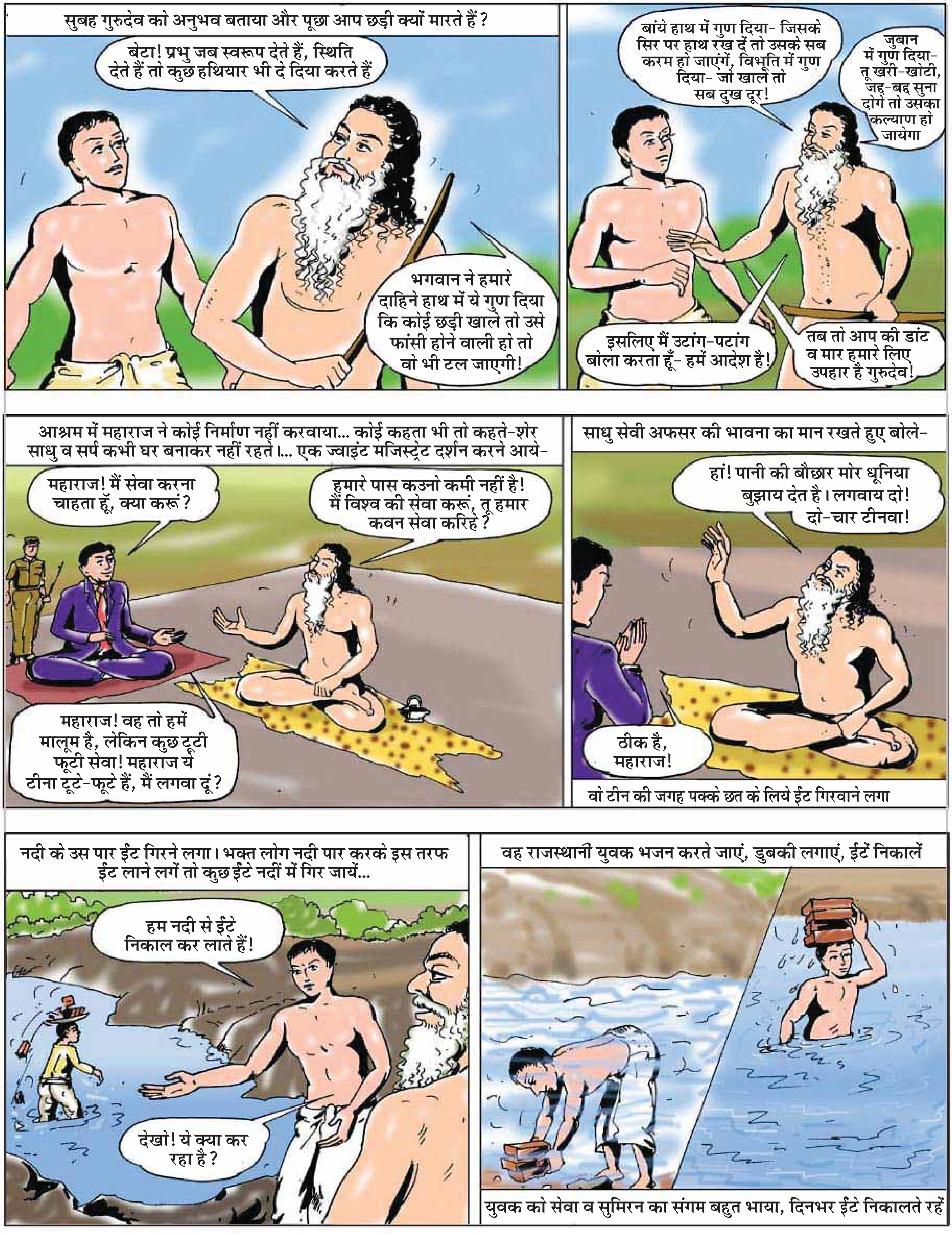
सुबह गुरुदेव को अनुभव बताया और पूछा आप छड़ी क्यों मारते हैं?
बेटा! प्रभु जब स्वरूप देते हैं, स्थिति देते हैं तो कुछ हथियार भी दे दिया करते हैं
भगवान ने हमारे दाहिने हाथ में ये गुण दिया कि कोई छड़ी खाले तो उसे फांसी होने वाली हो तो वो भी टल जाएगी!
बांये हाथ में गुण दिया- जिसके सिर पर हाथ रख दें तो उसके सब करम हो जाएंगें, विभूति में गुण दिया- जो खाले तो सब दुख दूर!
जुबान में गुण दिया- तू खरी-खोटी, जद्द-बद्द सुना दोगे तो उसका कल्याण हो जायेगा
इसलिए मैं उटांग-पटांग बोला करता हूँ- हमें आदेश है!
तब तो आप की डांट व मार हमारे लिए उपहार है गुरुदेव!
आश्रम में महाराज ने कोई निर्माण नहीं करवाया... कोई कहता भी तो कहते-शेर साधु व सर्प कभी घर बनाकर नहीं रहते।... एक ज्वाइंट मजिस्ट्रेट दर्शन करने आये-
महाराज! मैं सेवा करना चाहता हूँ, क्या करूं?
हमारे पास कउनो कमी नहीं है! मैं विश्व की सेवा करूं, तू हमार कवन सेवा करिहे?
महाराज! वह तो हमें मालूम है, लेकिन कुछ टूटी फूटी सेवा! महाराज ये टीना टूटे-फूटे हैं, मैं लगवा दूं?
साधु सेवी अफसर की भावना का मान रखते हुए बोले-
हां! पानी की बौछार मोर धूनिया बुझाय देत है। लगवाय दो! दो-चार टीनवा!
ठीक है, महाराज!
वो टीन की जगह पक्के छत के लिये ईंट गिरवाने लगा
नदी के उस पार ईंट गिरने लगा। भक्त लोग नदी पार करके इस तरफ ईंट लाने लगें तो कुछ ईंटे नदीं में गिर जायें...
हम नदी से ईंटे निकाल कर लाते हैं!
देखो! ये क्या कर रहा है?
वह राजस्थानी युवक भजन करते जाएं, डुबकी लगाएं, ईंटें निकालें
युवक को सेवा व सुमिरन का संगम बहुत भाया, दिनभर ईंटे निकालते रहें

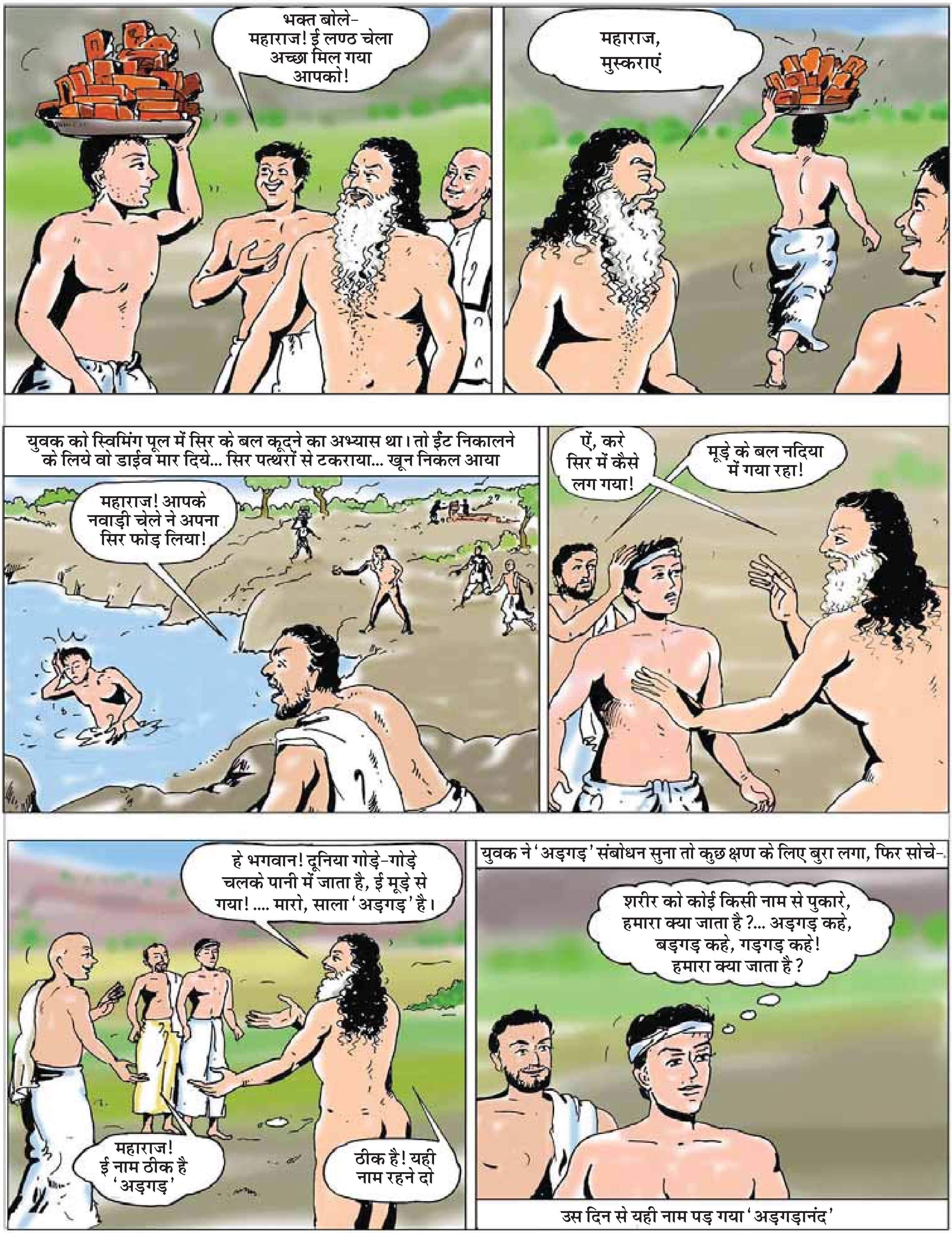
भक्त बोले–
महाराज! ई लण्ठ चेला अच्छा मिल गया आपको!
महाराज, मुस्कराएं
युवक को स्विमिंग पूल में सिर के बल कूदने का अभ्यास था। तो ईंट निकालने के लिये वो डाईव मार दिये... सिर पत्थरों से टकराया... खून निकल आया
महाराज! आपके नवाड़ी चेले ने अपना सिर फोड़ लिया!
ऐं, करे सिर में कैसे लग गया!
मूड़े के बल नदिया में गया रहा!
हे भगवान! दूनिया गोड़े–गोड़े चलके पानी में जाता है, ई मूड़े से गया! .... मारो, साला 'अड़गड़' है।
महाराज! ई नाम ठीक है 'अड़गड़'
ठीक है! यही नाम रहने दो
युवक ने 'अड़गड़' संबोधन सुना तो कुछ क्षण के लिए बुरा लगा, फिर सोचे–
शरीर को कोई किसी नाम से पुकारे, हमारा क्या जाता है ?... अड़गड़ कहे, बड़गड़ कहे, गड़गड़ कहे! हमारा क्या जाता है ?
उस दिन से यही नाम पड़ गया 'अड़गड़ानंद'

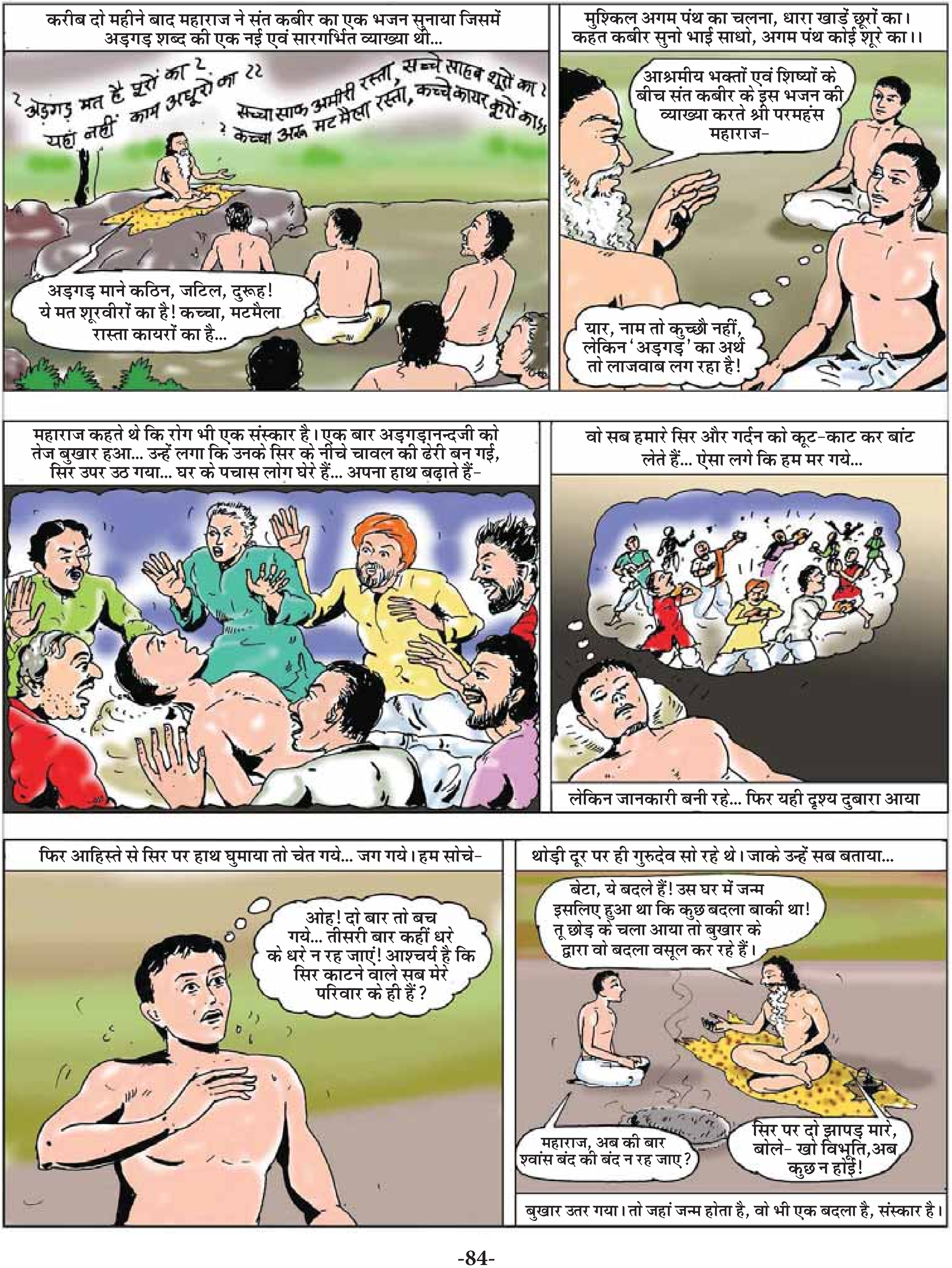
करीब दो महीने बाद महाराज ने संत कबीर का एक भजन सुनाया जिसमें अड़गड़ शब्द की एक नई एवं सारगर्भित व्याख्या थी...
अड़गड़ मत है पूरों का
यहां नहीं काम अधूरों का
सच्चा साफ अमीरी रस्ता, सच्चे साहब शूरों का
कच्चा अरू मटमैला रस्ता, कच्चे कायर क्रूरों का
अड़गड़ माने कठिन, जटिल, दुरूह! ये मत शूरवीरों का है! कच्चा, मटमैला रास्ता कायरों का है...
मुश्किल अगम पंथ का चलना, धारा खाडें छूरों का। कहत कबीर सुनो भाई साधो, अगम पंथ कोई शूरे का।।
आश्रमीय भक्तों एवं शिष्यों के बीच संत कबीर के इस भजन की व्याख्या करते श्री परमहंस महाराज–
यार, नाम तो कुच्छौ नहीं, लेकिन 'अड़गड़' का अर्थ तो लाजवाब लग रहा है!
महाराज कहते थे कि रोग भी एक संस्कार है। एक बार अड़गड़ानन्दजी को तेज बुखार हआ... उन्हें लगा कि उनके सिर के नीचे चावल की ढेरी बन गई, सिर उपर उठ गया... घर के पचास लोग घेरे हैं... अपना हाथ बढ़ाते हैं–
वो सब हमारे सिर और गर्दन को कूट-काट कर बांट लेते हैं... ऐसा लगे कि हम मर गये...
लेकिन जानकारी बनी रहे... फिर यही दृश्य दुबारा आया
फिर आहिस्ते से सिर पर हाथ घुमाया तो चेत गये... जग गये। हम सोचे–
ओह! दो बार तो बच गये... तीसरी बार कहीं धरे के धरे न रह जाएं! आश्चर्य है कि सिर काटने वाले सब मेरे परिवार के ही हैं?
थोड़ी दूर पर ही गुरुदेव सो रहे थे। जाके उन्हें सब बताया...
बेटा, ये बदले हैं! उस घर में जन्म इसलिए हुआ था कि कुछ बदला बाकी था! तू छोड़ के चला आया तो बुखार के द्वारा वो बदला वसूल कर रहे हैं।
महाराज, अब की बार श्वांस बंद की बंद न रह जाए?
सिर पर दो झापड़ मारे, बोले– खो विभूति,अब कुछ न होई!
बुखार उतर गया। तो जहां जन्म होता है, वो भी एक बदला है, संस्कार है।

करीब दो साल बीत गया... महाराज जी ने देखा कि अड़गड़ानन्द जी का मन भजन में लगने लगा है, सुरत अन्तर्मुख हो चली है! तो बोले-
देखो! सेवा दो प्रकार की होती है। एक तो बाहर वाली सेवा- झाड़ू, बर्तन और आश्रम की व्यवस्था! ये सेवा भी, भली प्रकार सेवा ही है। उससे भी सूक्ष्म और प्रत्यक्ष फलदायी, दूसरी सेवा है- हृदय में सेवा!
• हृदय में गुरू का स्वरूप पकड़ कर धूप-दीप करो
•भोग-राग लगाओ और श्वास में लग जाओ
•ब्रह्मविद्या का चिंतन करो •अपने सुरत (मन के ध्यान) को निरन्तर 'नाम-रूप-लीला-धाम' में लगाये रखो
•चिन्तन छोड़कर मन दाहिने-बायें बहकने न पाये
•हृदय में यही सेवा करना है। •भगवान संकेत और संदेश द्वारा सेवा करने की विधि बताते रहते हैं
•यह संकेत भगवान की आज्ञा है, और आज्ञा का पालन ही सेवा है!... बेटा, इसका ध्यान रखना! यही भजन-साधना है!... सेवा है!
भगत गणेश नम्बरदार आश्रम आये और एकादशी की चर्चा की- इस दिन अन्न नहीं खाते केवल फलाहार होता है। चार दिन बाद देवप्रबोधनी एकादशी आ गई-
करे, जब वैष्णव लोग साल में चौबीस एकादशी भूखे रहते हैं, तुम एक दिन नहीं रह सकते? ...चलो मनाओ एकादशी!
दिन में भोजन नहीं बना...
शाम को सब को भूख लगी तो महाराज ने फलाहार बनवा दिया, पांच प्रकार का फलाहार...सिंघाड़े का हलवा भी! सब खूब खाये-
महाराज! हर एकादशी रहा जाए, तब कैसा रहे!
एकादशी? बेटा, जब भगवान में स्थिति मिल जाये तो स्थाई एक-दशा मिल जाती है। यही है शुद्ध एकादशी!
तू लोग तो सिंघाडे के हलुए के लिए एकादशी रखोगे?
फिर हर साल देव प्रबोधनी एकादशी मनाया जाने लगा
महाराज के पास लोग हर तरह की मनोकामना लेकर आते ... एक बार 65 वर्षीय पुरुष व 58 वर्ष की महिला ने आकर प्रणाम किया...
महाराज, वंश चलाने के लिए एक लड़का मिल जाता।
धत्त गंवार कहीं का! जिंदगी बीत गई लड़का का प्रयास करते करते। अभी भड़बे नहीं किया!... अब हमसे मांगत है... चुडैल कहीं की!
महाराज ने कहा- विभूति खाले, फिर एक डंडा मार दिया...
चलो! अब भागो यहां से!
महाराज ने डंडा मार दिया... अब समझो इनको आशीर्वाद मिल गया!

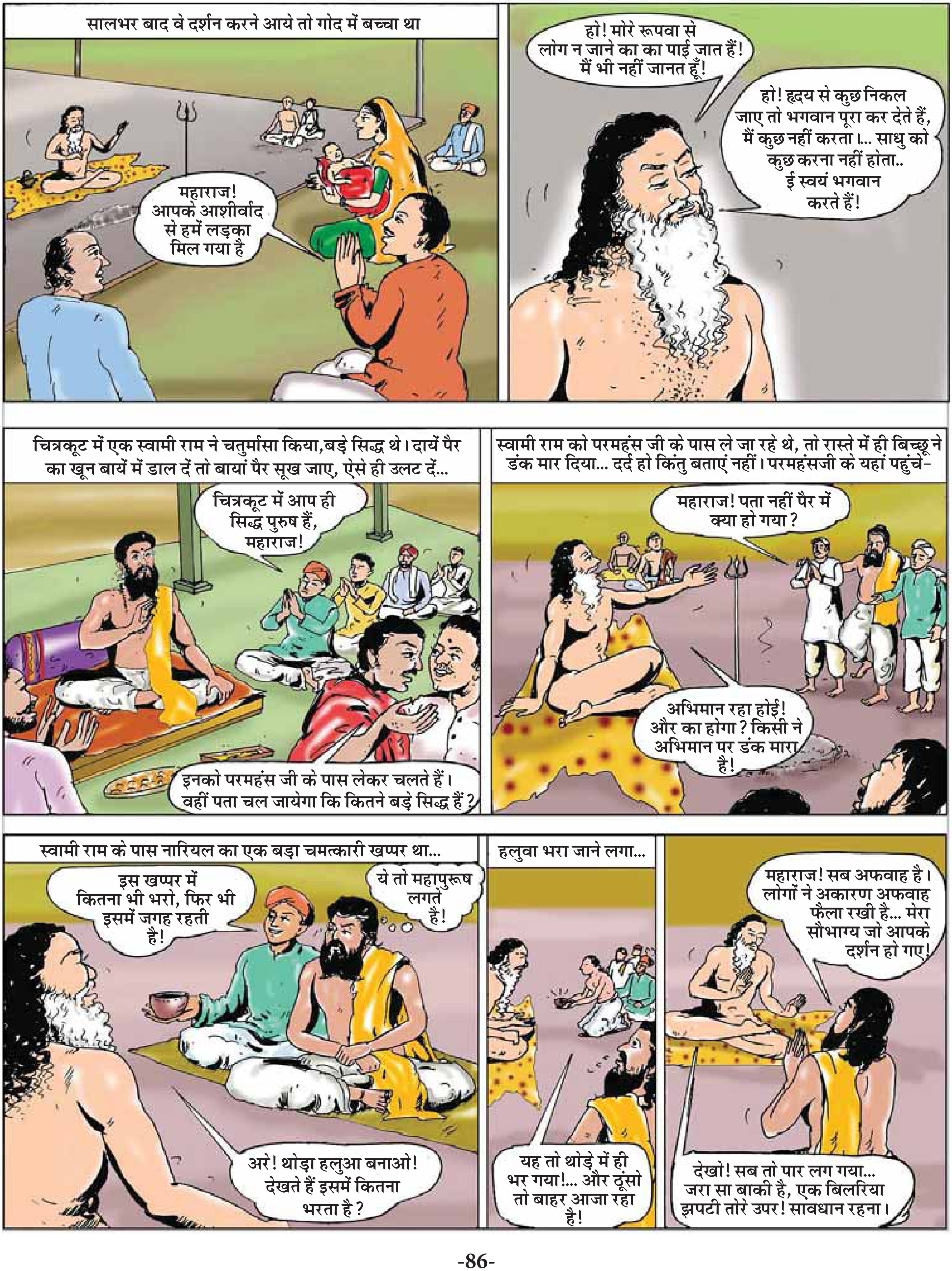

सालभर बाद वे दर्शन करने आये तो गोद में बच्चा था
महाराज! आपके आशीर्वाद से हमें लड़का मिल गया है
हो! मोरे रूपवा से लोग न जाने का का पाई जात हैं! मैं भी नहीं जानत हूँ!
हो! हृदय से कुछ निकल जाए तो भगवान पूरा कर देते हैं, मैं कुछ नहीं करता।... साधु को कुछ करना नहीं होता.. ई स्वयं भगवान करते हैं!
चित्रकूट में एक स्वामी राम ने चतुर्मासा किया, बड़े सिद्ध थे। दायें पैर का खून बायें में डाल दें तो बायां पैर सूख जाए, ऐसे ही उलट दें...
चित्रकूट में आप ही सिद्ध पुरुष हैं, महाराज!
इनको परमहंस जी के पास लेकर चलते हैं। वहीं पता चल जायेगा कि कितने बड़े सिद्ध हैं?
स्वामी राम को परमहंस जी के पास ले जा रहे थे, तो रास्ते में ही बिच्छू ने डंक मार दिया... दर्द हो किंतु बताएं नहीं। परमहंसजी के यहां पहुंचे-
महाराज! पता नहीं पैर में क्या हो गया?
अभिमान रहा होई! और का होगा? किसी ने अभिमान पर डंक मारा है!
स्वामी राम के पास नारियल का एक बड़ा चमत्कारी खप्पर था...
इस खप्पर में कितना भी भरो, फिर भी इसमें जगह रहती है!
ये तो महापुरूष लगते है!
अरे! थोड़ा हलुआ बनाओ! देखते हैं इसमें कितना भरता है?
हलुवा भरा जाने लगा...
यह तो थोड़े में ही भर गया!... और ठूंसो तो बाहर आजा रहा है!
महाराज! सब अफवाह है। लोगों ने अकारण अफवाह फैला रखी है... मेरा सौभाग्य जो आपके दर्शन हो गए!
देखो! सब तो पार लग गया... जरा सा बाकी है, एक बिलरिया झपटी तोरे उपर! सावधान रहना।

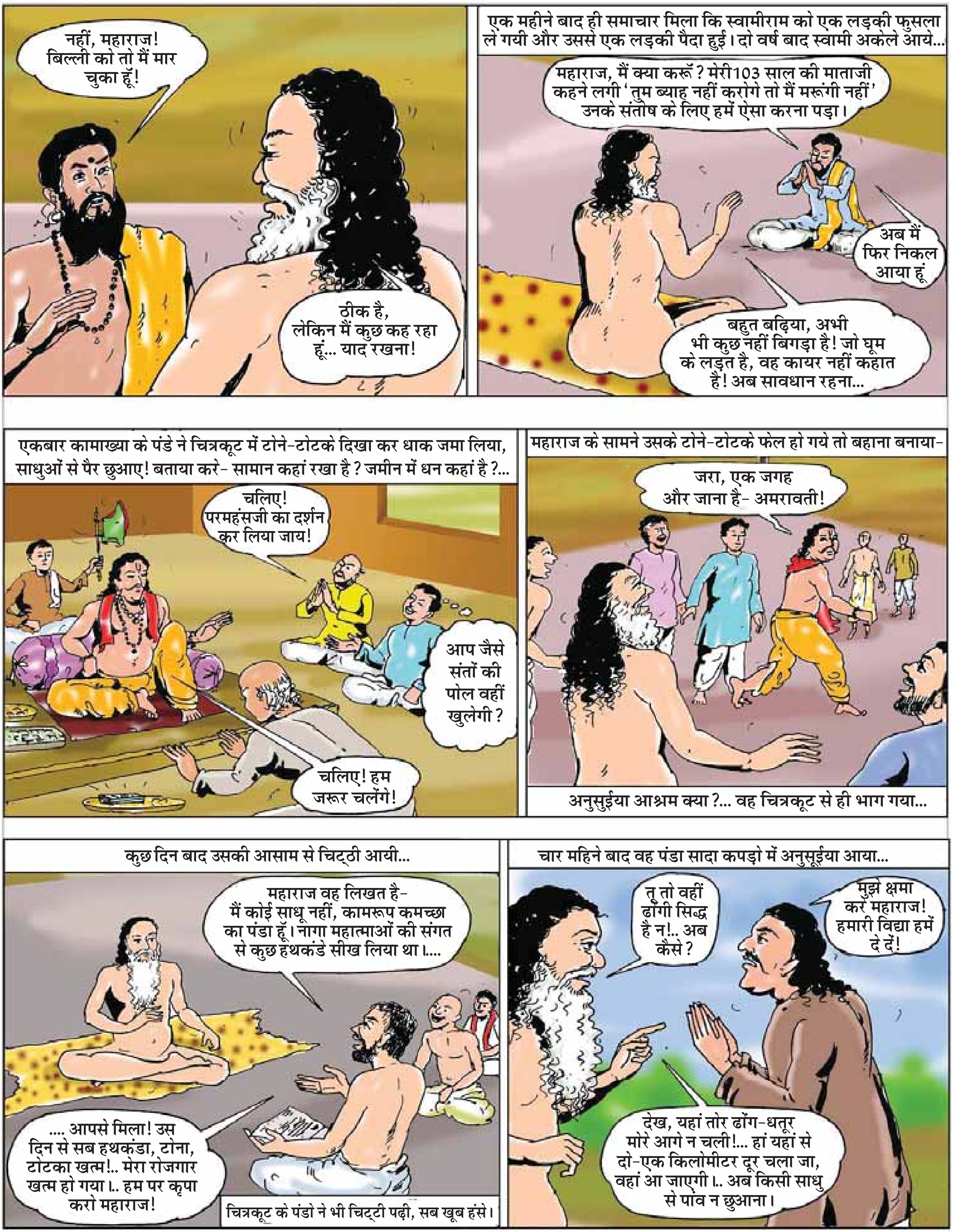

नहीं, महाराज! बिल्ली को तो मैं मार चुका हूं!
ठीक है, लेकिन मैं कुछ कह रहा हूं... याद रखना!
एक महीने बाद ही समाचार मिला कि स्वामीराम को एक लड़की फुसला ले गयी और उससे एक लड़की पैदा हुई। दो वर्ष बाद स्वामी अकेले आये...
महाराज, मैं क्या करूं? मेरी 103 साल की माताजी कहने लगी 'तुम ब्याह नहीं करोगे तो मैं मरूंगी नहीं' उनके संतोष के लिए हमें ऐसा करना पड़ा।
अब मैं फिर निकल आया हूं
बहुत बढ़िया, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है! जो घूम के लड़त है, वह कायर नहीं कहात है! अब सावधान रहना...
एकबार कामाख्या के पंडे ने चित्रकूट में टोने-टोटके दिखा कर धाक जमा लिया, साधुओं से पैर छुआए! बताया करे- सामान कहां रखा है? जमीन में धन कहां है?...
चलिए! परमहंसजी का दर्शन कर लिया जाय!
आप जैसे संतों की पोल वहीं खुलेगी?
चलिए! हम जरूर चलेंगे!
महाराज के सामने उसके टोने-टोटके फेल हो गये तो बहाना बनाया-
जरा, एक जगह और जाना है- अमरावती!
अनुसुईया आश्रम क्या?... वह चित्रकूट से ही भाग गया...
कुछ दिन बाद उसकी आसाम से चिट्ठी आयी...
महाराज वह लिखत है- मैं कोई साधू नहीं, कामरूप कमच्छा का पंडा हूं। नागा महात्माओं की संगत से कुछ हथकंडे सीख लिया था।....
.... आपसे मिला! उस दिन से सब हथकंडा, टोना, टोटका खत्म!.. मेरा रोजगार खत्म हो गया।.. हम पर कृपा करो महाराज!
चित्रकूट के पंडो ने भी चिट्ठी पढ़ी, सब खूब हंसे।
चार महिने बाद वह पंडा सादा कपड़ो में अनुसूईया आया...
तू तो वहीं ढोंगी सिद्ध है न!.. अब कैसे?
मुझे क्षमा करें महाराज! हमारी विद्या हमें दे दें!
देख, यहां तोर ढोंग-धतूर मोरे आगे न चली!... हां यहां से दो-एक किलोमीटर दूर चला जा, वहां आ जाएगी।.. अब किसी साधु से पांव न छुआना।

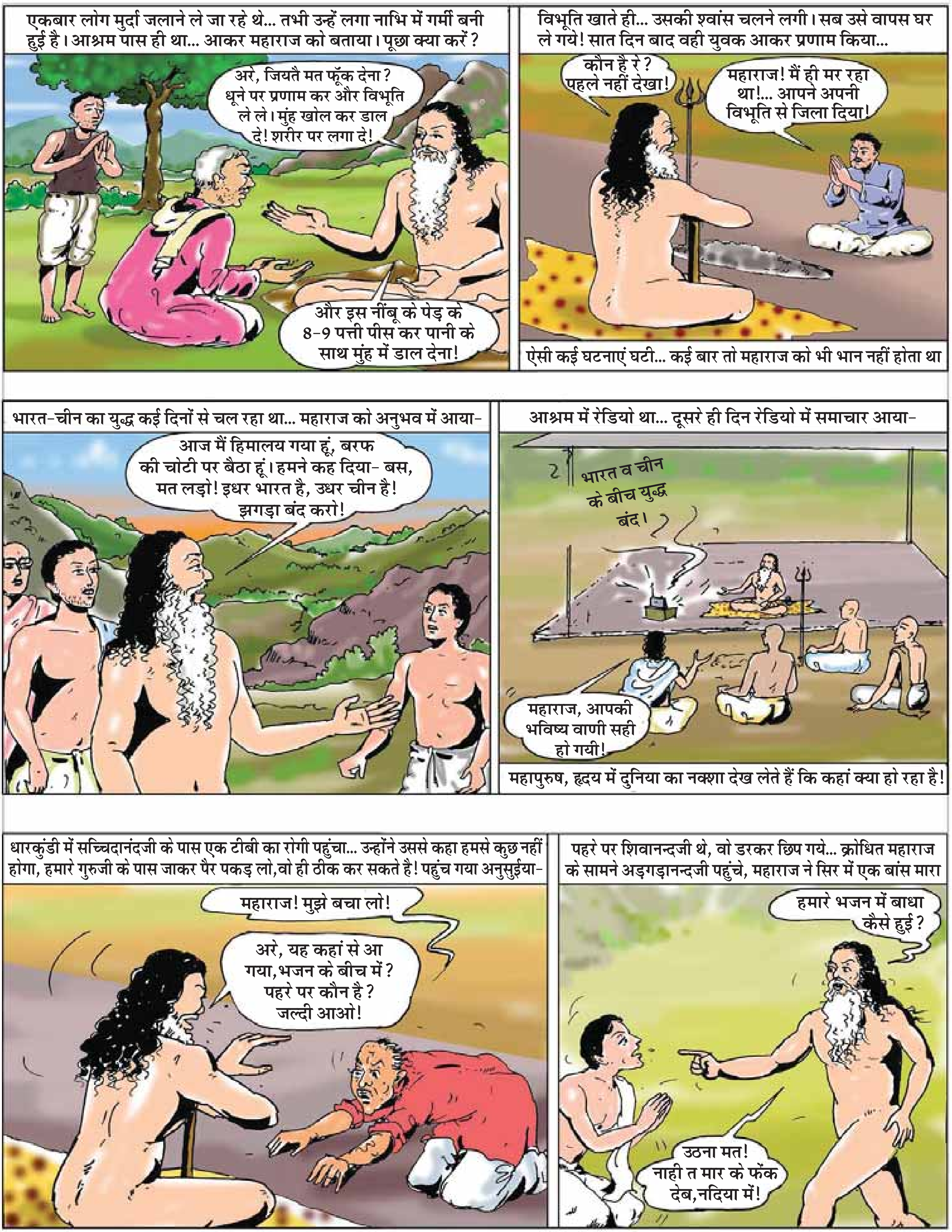
एकबार लोग मुर्दा जलाने ले जा रहे थे... तभी उन्हें लगा नाभि में गर्मी बनी हुई है। आश्रम पास ही था... आकर महाराज को बताया। पूछा क्या करें?
अरे, जियतै मत फूंक देना? धूने पर प्रणाम कर और विभूति ले ले। मुंह खोल कर डाल दे! शरीर पर लगा दे!
और इस नींबू के पेड़ के 8-9 पत्ती पीस कर पानी के साथ मुंह में डाल देना!
विभूति खाते ही... उसकी श्वांस चलने लगी। सब उसे वापस घर ले गये! सात दिन बाद वही युवक आकर प्रणाम किया...
कौन है रे? पहले नहीं देखा!
महाराज! मैं ही मर रहा था!... आपने अपनी विभूति से जिला दिया!
ऐसी कई घटनाएं घटी... कई बार तो महाराज को भी भान नहीं होता था
भारत-चीन का युद्ध कई दिनों से चल रहा था... महाराज को अनुभव में आया-
आज मैं हिमालय गया हूं, बरफ की चोटी पर बैठा हूं। हमने कह दिया- बस, मत लड़ो! इधर भारत है, उधर चीन है! झगड़ा बंद करो!
आश्रम में रेडियो था... दूसरे ही दिन रेडियो में समाचार आया-
भारत व चीन के बीच युद्ध बंद।
महाराज, आपकी भविष्य वाणी सही हो गयी!
महापुरुष, हृदय में दुनिया का नक्शा देख लेते हैं कि कहां क्या हो रहा है!
धारकुंडी में सच्चिदानंदजी के पास एक टीबी का रोगी पहुंचा... उन्होंने उससे कहा हमसे कुछ नहीं होगा, हमारे गुरुजी के पास जाकर पैर पकड़ लो, वो ही ठीक कर सकते है! पहुंच गया अनुसुईया-
महाराज! मुझे बचा लो!
अरे, यह कहां से आ गया, भजन के बीच में? पहरे पर कौन है? जल्दी आओ!
पहरे पर शिवानन्दजी थे, वो डरकर छिप गये... क्रोधित महाराज के सामने अड़गड़ानन्दजी पहुंचे, महाराज ने सिर में एक बांस मारा
हमारे भजन में बाधा कैसे हुई?
उठना मत! नाही त मार के फेंक देब, नदिया में!

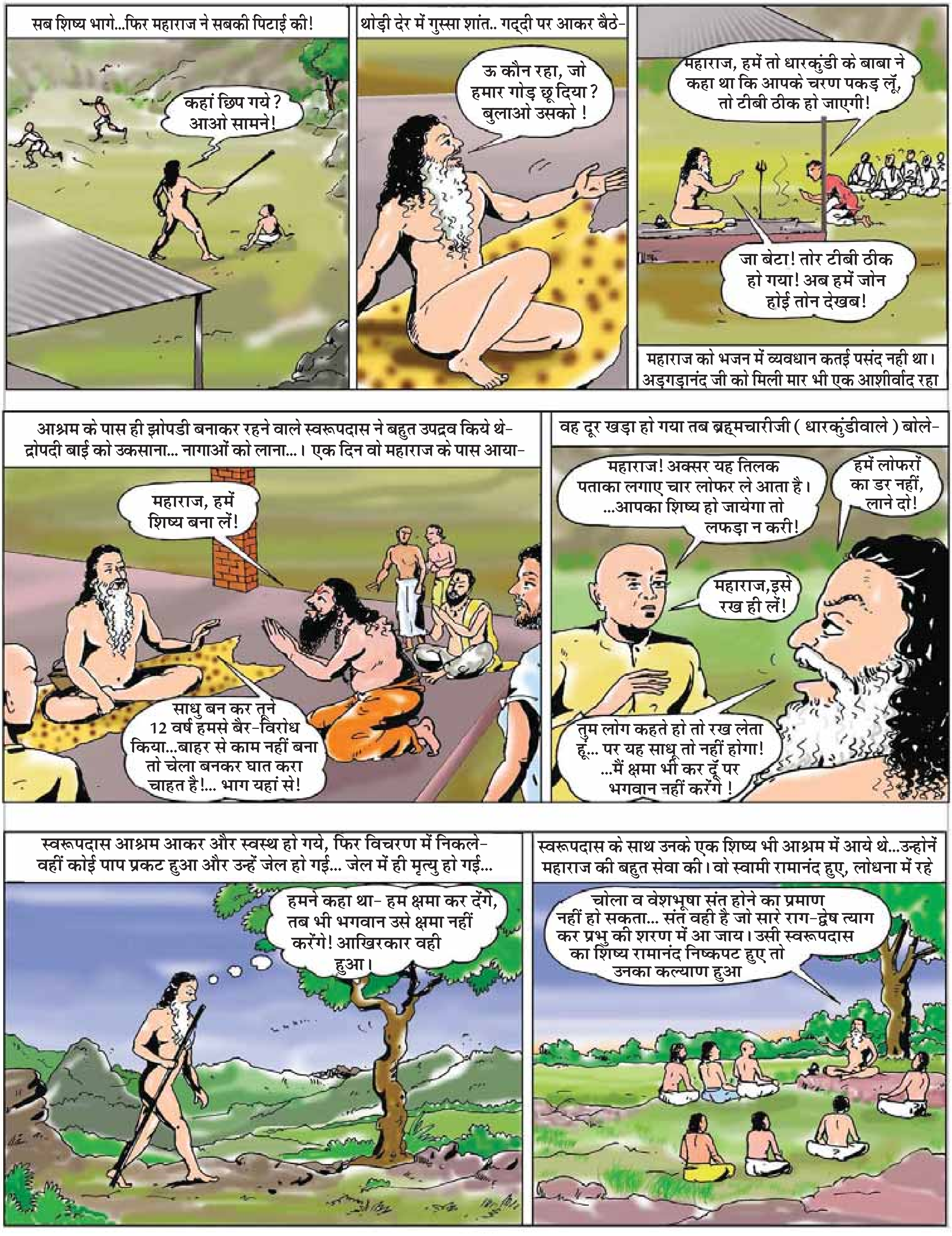
सब शिष्य भागे...फिर महाराज ने सबकी पिटाई की!
कहां छिप गये ? आओ सामने!
थोड़ी देर में गुस्सा शांत.. गद्दी पर आकर बैठे-
ऊ कौन रहा, जो हमार गोड़ छू दिया ? बुलाओ उसको !
महाराज, हमें तो धारकुंडी के बाबा ने कहा था कि आपके चरण पकड़ लूँ, तो टीबी ठीक हो जाएगी!
जा बेटा! तोर टीबी ठीक हो गया! अब हमें जोन होई तोन देखब!
महाराज को भजन में व्यवधान कतई पसंद नही था। अड़गड़ानंद जी को मिली मार भी एक आशीर्वाद रहा
आश्रम के पास ही झोपडी बनाकर रहने वाले स्वरूपदास ने बहुत उपद्रव किये थे- द्रोपदी बाई को उकसाना... नागाओं को लाना...। एक दिन वो महाराज के पास आया-
महाराज, हमें शिष्य बना लें!
साधु बन कर तूने 12 वर्ष हमसे बैर-विरोध किया...बाहर से काम नहीं बना तो चेला बनकर घात करा चाहत है!... भाग यहां से!
वह दूर खड़ा हो गया तब ब्रह्मचारीजी (धारकुंडीवाले) बोले-
महाराज! अक्सर यह तिलक पताका लगाए चार लोफर ले आता है। ...आपका शिष्य हो जायेगा तो लफड़ा न करी!
हमें लोफरों का डर नहीं, लाने दो!
महाराज,इसे रख ही लें!
तुम लोग कहते हो तो रख लेता हूं... पर यह साधु तो नहीं होगा! ...मैं क्षमा भी कर दूँ पर भगवान नहीं करेंगे !
स्वरूपदास आश्रम आकर और स्वस्थ हो गये, फिर विचरण में निकले- वहीं कोई पाप प्रकट हुआ और उन्हें जेल हो गई... जेल में ही मृत्यु हो गई...
हमने कहा था- हम क्षमा कर देंगे, तब भी भगवान उसे क्षमा नहीं करेंगे! आखिरकार वही हुआ।
स्वरूपदास के साथ उनके एक शिष्य भी आश्रम में आये थे...उन्होनें महाराज की बहुत सेवा की। वो स्वामी रामानंद हुए, लोधना में रहे
चोला व वेशभूषा संत होने का प्रमाण नहीं हो सकता... संत वही है जो सारे राग-द्वेष त्याग कर प्रभु की शरण में आ जाय। उसी स्वरूपदास का शिष्य रामानंद निष्कपट हुए तो उनका कल्याण हुआ

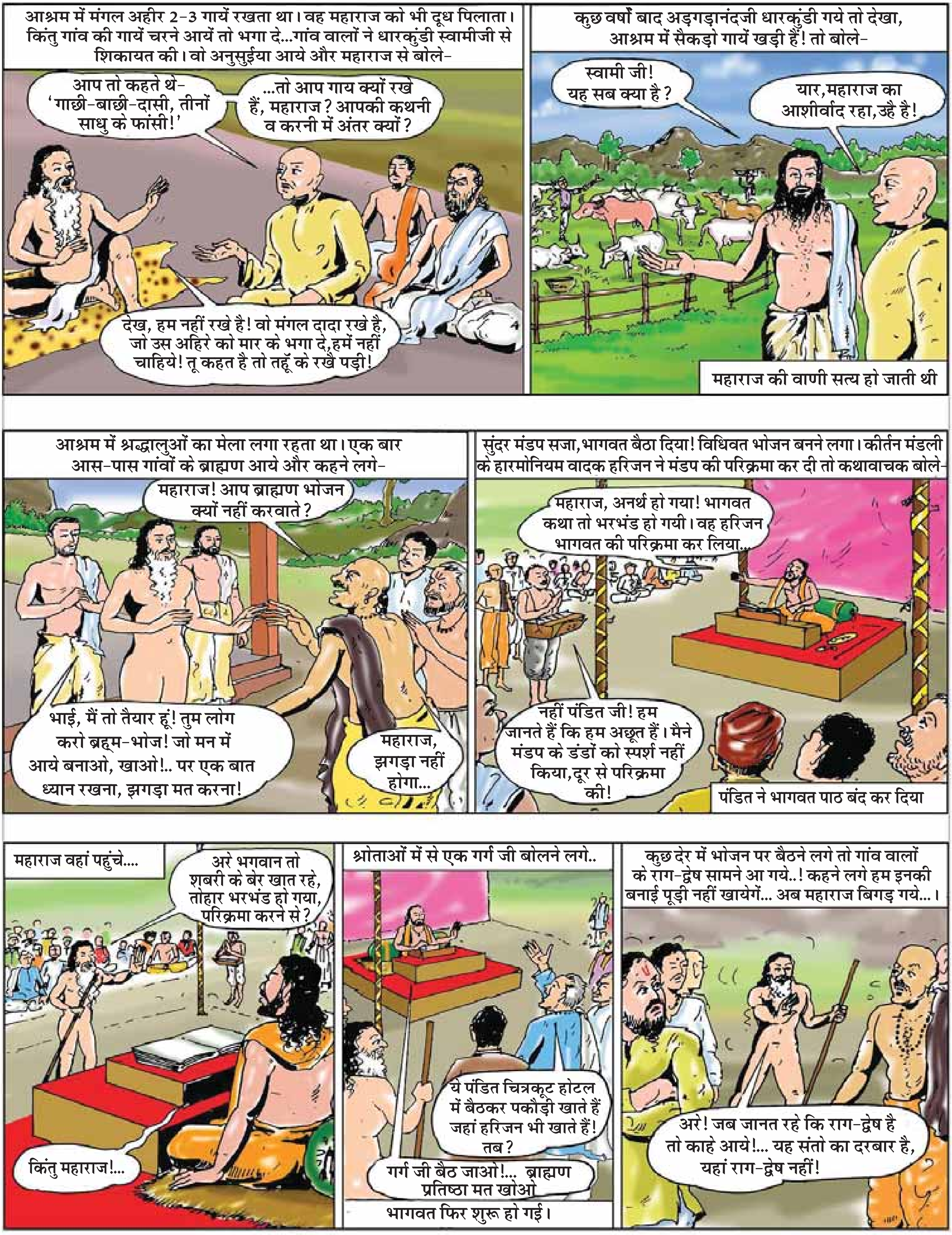

आश्रम में मंगल अहीर 2-3 गायें रखता था। वह महाराज को भी दूध पिलाता। किंतु गांव की गायें चरने आयें तो भगा दे...गांव वालों ने धारकुंडी स्वामीजी से शिकायत की। वो अनुसुईया आये और महाराज से बोले-
आप तो कहते थे- 'गाछी-बाछी-दासी, तीनों साधु के फांसी!'
...तो आप गाय क्यों रखे हैं, महाराज? आपकी कथनी व करनी में अंतर क्यों?
देख, हम नहीं रखे है! वो मंगल दादा रखे है, जो उस अहिरे को मार के भगा दे,हमें नहीं चाहिये! तू कहत है तो तहूँ के रखै पड़ी!
कुछ वर्षों बाद अड़गड़ानंदजी धारकुंडी गये तो देखा, आश्रम में सैकड़ो गायें खड़ी हैं! तो बोले-
स्वामी जी! यह सब क्या है?
यार,महाराज का आशीर्वाद रहा,उहै है!
महाराज की वाणी सत्य हो जाती थी
आश्रम में श्रद्धालुओं का मेला लगा रहता था। एक बार आस-पास गांवों के ब्राह्मण आये और कहने लगे-
महाराज! आप ब्राह्मण भोजन क्यों नहीं करवाते?
भाई, मैं तो तैयार हूं! तुम लोग करो ब्रह्म-भोज! जो मन में आये बनाओ, खाओ!.. पर एक बात ध्यान रखना, झगड़ा मत करना!
महाराज, झगड़ा नहीं होगा...
सुंदर मंडप सजा,भागवत बैठा दिया! विधिवत भोजन बनने लगा। कीर्तन मंडली के हारमोनियम वादक हरिजन ने मंडप की परिक्रमा कर दी तो कथावाचक बोले-
महाराज, अनर्थ हो गया! भागवत कथा तो भरभंड हो गयी। वह हरिजन भागवत की परिक्रमा कर लिया...
नहीं पंडित जी! हम जानते हैं कि हम अछूत हैं। मैने मंडप के डंडों को स्पर्श नहीं किया,दूर से परिक्रमा की!
पंडित ने भागवत पाठ बंद कर दिया
महाराज वहां पहुंचे....
अरे भगवान तो शबरी के बेर खात रहे, तोहार भरभंड हो गया, परिक्रमा करने से?
किंतु महाराज!...
श्रोताओं में से एक गर्ग जी बोलने लगे..
ये पंडित चित्रकूट होटल में बैठकर पकौड़ी खाते हैं जहां हरिजन भी खाते हैं! तब?
गर्ग जी बैठ जाओ!... ब्राह्मण प्रतिष्ठा मत खोओ
भागवत फिर शुरू हो गई।
कुछ देर में भोजन पर बैठने लगे तो गांव वालों के राग-द्वेष सामने आ गये..! कहने लगे हम इनकी बनाई पूड़ी नहीं खायेगें... अब महाराज बिगड़ गये...।
अरे! जब जानत रहे कि राग-द्वेष है तो काहे आये!... यह संतो का दरबार है, यहां राग-द्वेष नहीं!

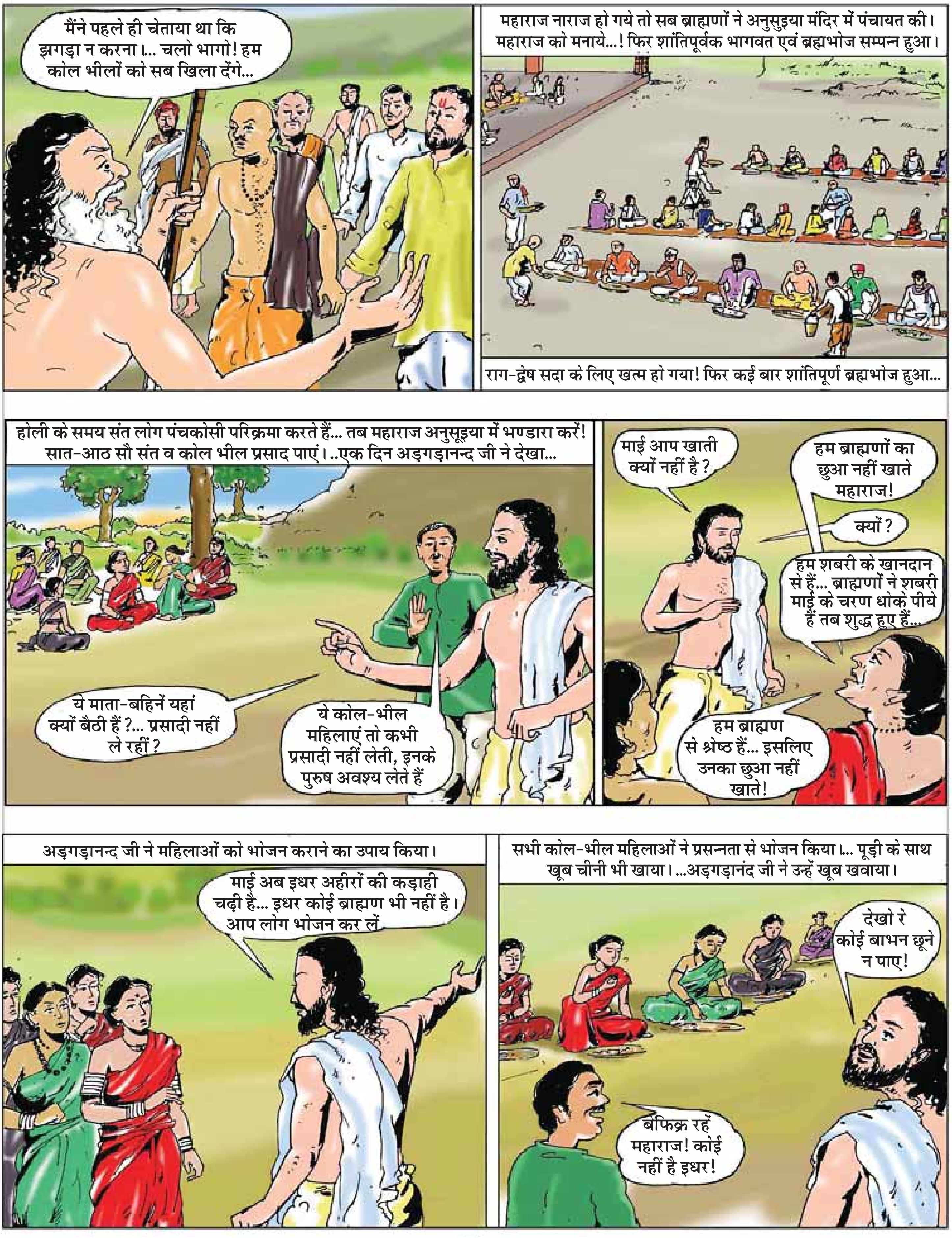
मैंने पहले ही चेताया था कि झगड़ा न करना।... चलो भागो! हम कोल भीलों को सब खिला देंगे...
महाराज नाराज हो गये तो सब ब्राह्मणों ने अनुसुइया मंदिर में पंचायत की। महाराज को मनाये...! फिर शांतिपूर्वक भागवत एवं ब्रह्मभोज सम्पन्न हुआ।
राग-द्वेष सदा के लिए खत्म हो गया! फिर कई बार शांतिपूर्ण ब्रह्मभोज हुआ...
होली के समय संत लोग पंचकोसी परिक्रमा करते हैं... तब महाराज अनुसूइया में भण्डारा करें! सात-आठ सौ संत व कोल भील प्रसाद पाएं। ..एक दिन अड़गड़ानन्द जी ने देखा...
ये माता-बहिनें यहां क्यों बैठी हैं ?... प्रसादी नहीं ले रहीं ?
ये कोल-भील महिलाएं तो कभी प्रसादी नहीं लेती, इनके पुरुष अवश्य लेते हैं
माई आप खाती क्यों नहीं है ?
हम ब्राह्मणों का छुआ नहीं खाते महाराज!
क्यों ?
हम शबरी के खानदान से हैं... ब्राह्मणों ने शबरी माई के चरण धोके पीये हैं तब शुद्ध हुए हैं...
हम ब्राह्मण से श्रेष्ठ हैं... इसलिए उनका छुआ नहीं खाते!
अड़गड़ानन्द जी ने महिलाओं को भोजन कराने का उपाय किया।
माई अब इधर अहीरों की कड़ाही चढ़ी है... इधर कोई ब्राह्मण भी नहीं है। आप लोग भोजन कर लें
सभी कोल-भील महिलाओं ने प्रसन्नता से भोजन किया।... पूड़ी के साथ खूब चीनी भी खाया। ...अड़गड़ानंद जी ने उन्हें खूब खवाया।
देखो रे कोई बाभन छूने न पाए!
बेफिक्र रहें महाराज! कोई नहीं है इधर!

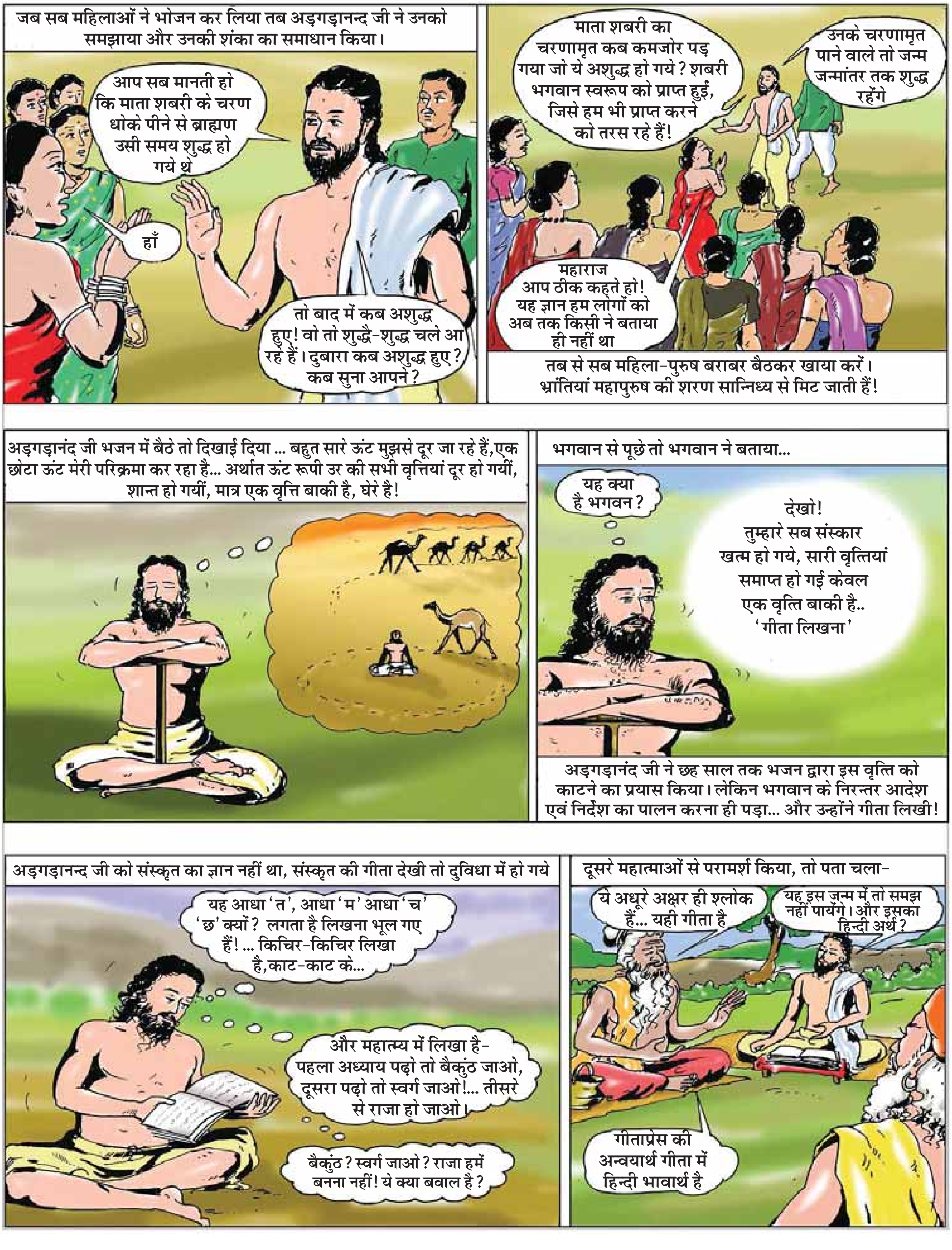
जब सब महिलाओं ने भोजन कर लिया तब अड़गड़ानन्द जी ने उनको समझाया और उनकी शंका का समाधान किया।
आप सब मानती हो कि माता शबरी के चरण धोके पीने से ब्राह्मण उसी समय शुद्ध हो गये थे
हाँ
तो बाद में कब अशुद्ध हुए! वो तो शुद्धै-शुद्ध चले आ रहे हैं। दुबारा कब अशुद्ध हुए? कब सुना आपने?
माता शबरी का चरणामृत कब कमजोर पड़ गया जो ये अशुद्ध हो गये? शबरी भगवान स्वरूप को प्राप्त हुईं, जिसे हम भी प्राप्त करने को तरस रहे हैं!
उनके चरणामृत पाने वाले तो जन्म जन्मांतर तक शुद्ध रहेंगे
महाराज आप ठीक कहते हो! यह ज्ञान हम लोगों को अब तक किसी ने बताया ही नहीं था
तब से सब महिला-पुरुष बराबर बैठकर खाया करें। भ्रांतियां महापुरुष की शरण सान्निध्य से मिट जाती हैं!
अड़गड़ानंद जी भजन में बैठे तो दिखाई दिया ... बहुत सारे ऊंट मुझसे दूर जा रहे हैं, एक छोटा ऊंट मेरी परिक्रमा कर रहा है... अर्थात ऊंट रूपी उर की सभी वृत्तियां दूर हो गयीं, शान्त हो गयीं, मात्र एक वृत्ति बाकी है, घेरे है!
भगवान से पूछे तो भगवान ने बताया...
यह क्या है भगवन?
देखो! तुम्हारे सब संस्कार खत्म हो गये, सारी वृत्तियां समाप्त हो गई केवल एक वृत्ति बाकी है.. 'गीता लिखना'
अड़गड़ानंद जी ने छह साल तक भजन द्वारा इस वृत्ति को काटने का प्रयास किया। लेकिन भगवान के निरन्तर आदेश एवं निर्देश का पालन करना ही पड़ा... और उन्होंने गीता लिखी!
अड़गड़ानन्द जी को संस्कृत का ज्ञान नहीं था, संस्कृत की गीता देखी तो दुविधा में हो गये
यह आधा 'त', आधा 'म' आधा 'च' 'छ' क्यों? लगता है लिखना भूल गए हैं! ... किचिर-किचिर लिखा है, काट-काट के...
और महात्म्य में लिखा है- पहला अध्याय पढ़ो तो बैकुंठ जाओ, दूसरा पढ़ो तो स्वर्ग जाओ!... तीसरे से राजा हो जाओ।
बैकुंठ? स्वर्ग जाओ? राजा हमें बनना नहीं! ये क्या बवाल है?
दूसरे महात्माओं से परामर्श किया, तो पता चला-
ये अधूरे अक्षर ही श्लोक हैं... यही गीता है
यह इस जन्म में तो समझ नहीं पायेंगे। और इसका हिन्दी अर्थ?
गीताप्रेस की अन्वयार्थ गीता में हिन्दी भावार्थ है

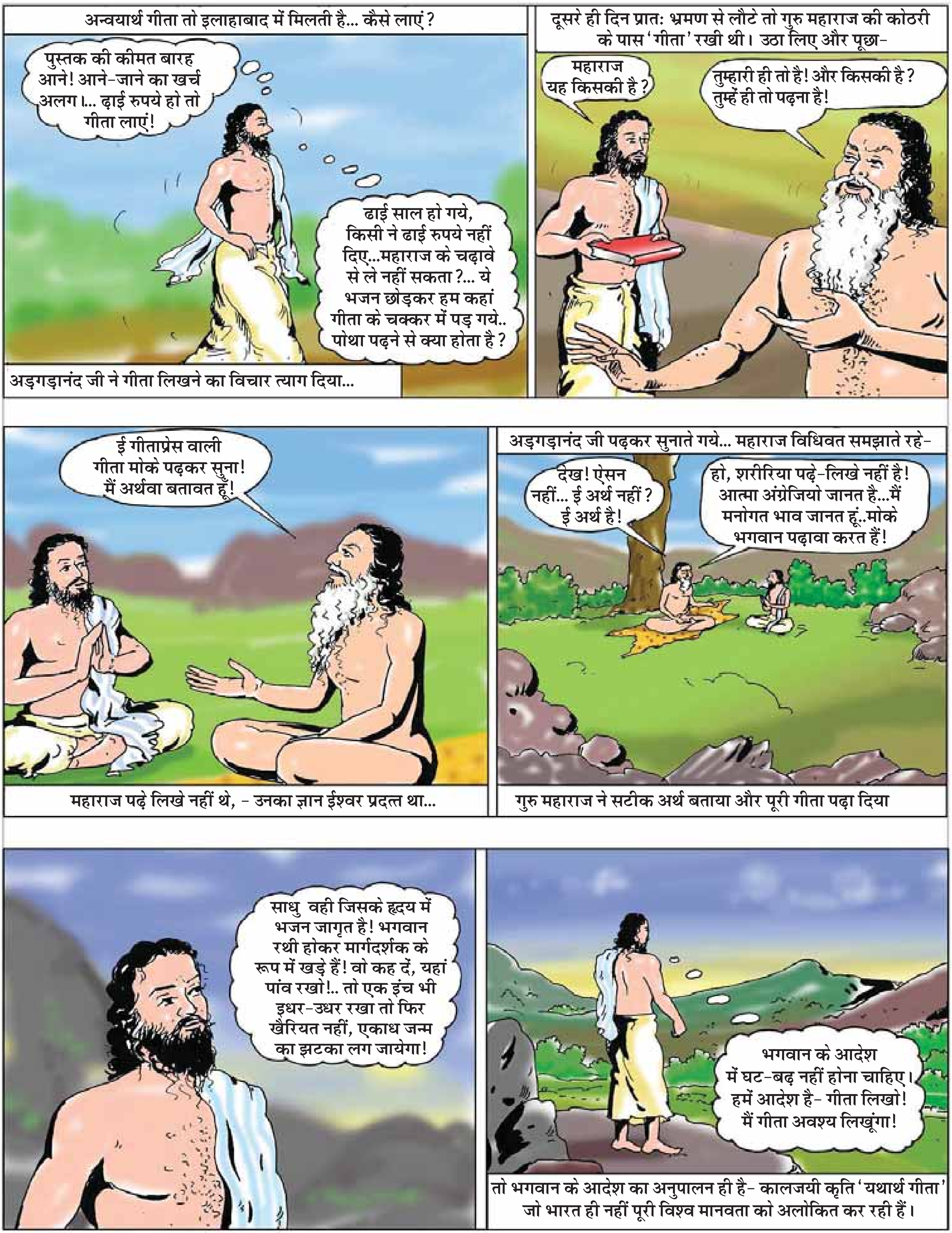
अन्वयार्थ गीता तो इलाहाबाद में मिलती है... कैसे लाएं?
पुस्तक की कीमत बारह आने! आने-जाने का खर्च अलग।... ढ़ाई रुपये हो तो गीता लाएं!
ढाई साल हो गये, किसी ने ढाई रुपये नहीं दिए...महाराज के चढ़ावे से ले नहीं सकता?... ये भजन छोड़कर हम कहां गीता के चक्कर में पड़ गये.. पोथा पढ़ने से क्या होता है?
अड़गड़ानंद जी ने गीता लिखने का विचार त्याग दिया...
दूसरे ही दिन प्रात: भ्रमण से लौटे तो गुरु महाराज की कोठरी के पास 'गीता' रखी थी। उठा लिए और पूछा-
महाराज यह किसकी है?
तुम्हारी ही तो है! और किसकी है? तुम्हें ही तो पढ़ना है!
ई गीताप्रेस वाली गीता मोके पढ़कर सुना! मैं अर्थवा बतावत हूँ!
महाराज पढ़े लिखे नहीं थे, - उनका ज्ञान ईश्वर प्रदत्त था...
अड़गड़ानंद जी पढ़कर सुनाते गये... महाराज विधिवत समझाते रहे-
देख! ऐसन नहीं... ई अर्थ नहीं? ई अर्थ है!
हो, शरीरिया पढ़े-लिखे नहीं है! आत्मा अंग्रेजियो जानत है...मैं मनोगत भाव जानत हूं..मोके भगवान पढ़ावा करत हैं!
गुरु महाराज ने सटीक अर्थ बताया और पूरी गीता पढ़ा दिया
साधु वही जिसके हृदय में भजन जागृत है! भगवान रथी होकर मार्गदर्शक के रूप में खड़े हैं! वो कह दें, यहां पांव रखो!.. तो एक इंच भी इधर-उधर रखा तो फिर खैरियत नहीं, एकाध जन्म का झटका लग जायेगा!
भगवान के आदेश में घट-बढ़ नहीं होना चाहिए। हमें आदेश है- गीता लिखो! मैं गीता अवश्य लिखूंगा!
तो भगवान के आदेश का अनुपालन ही है- कालजयी कृति 'यथार्थ गीता' जो भारत ही नहीं पूरी विश्व मानवता को अलोकित कर रही हैं।

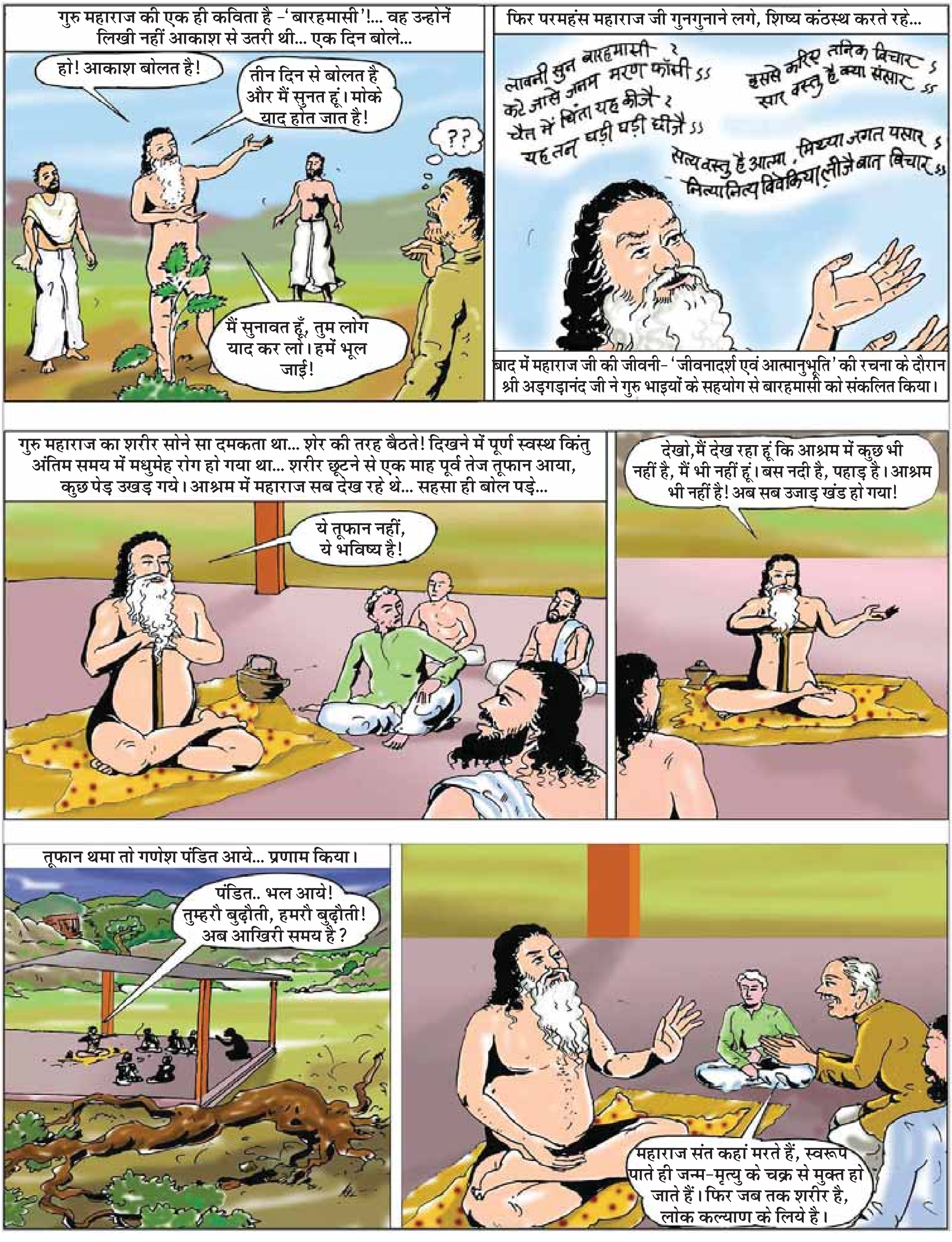
गुरु महाराज की एक ही कविता है –'बारहमासी'!... वह उन्होनें लिखी नहीं आकाश से उतरी थी... एक दिन बोले...
हो! आकाश बोलत है!
तीन दिन से बोलत है और मैं सुनत हूं। मोके याद होत जात है!
??
मैं सुनावत हूँ, तुम लोग याद कर लो। हमें भूल जाई!
फिर परमहंस महाराज जी गुनगुनाने लगे, शिष्य कंठस्थ करते रहे...
लावनी सुन बारहमासी २
कटे जासे जनम मरण फाँसी ऽऽ
चैत में चिंता यह कीजै २
यह तन घड़ी घड़ी छीजै ऽऽ
इससे करिए तनिक विचार ऽ
सार वस्तु है क्या संसार ऽऽ
सत्य वस्तु है आत्मा, मिथ्या जगत पसार ऽ
नित्यानित्य विवेकिया लीजे बात विचार ऽऽ
बाद में महाराज जी की जीवनी- 'जीवनादर्श एवं आत्मानुभूति' की रचना के दौरान श्री अड़गड़ानंद जी ने गुरु भाइयों के सहयोग से बारहमासी को संकलित किया।
गुरु महाराज का शरीर सोने सा दमकता था... शेर की तरह बैठते! दिखने में पूर्ण स्वस्थ किंतु अंतिम समय में मधुमेह रोग हो गया था... शरीर छूटने से एक माह पूर्व तेज तूफान आया, कुछ पेड़ उखड़ गये। आश्रम में महाराज सब देख रहे थे... सहसा ही बोल पड़े...
ये तूफान नहीं, ये भविष्य है!
देखो,मैं देख रहा हूं कि आश्रम में कुछ भी नहीं है, मैं भी नहीं हूं। बस नदी है, पहाड़ है। आश्रम भी नहीं है! अब सब उजाड़ खंड हो गया!
तूफान थमा तो गणेश पंडित आये... प्रणाम किया।
पंडित.. भल आये! तुम्हरौ बुढ़ौती, हमरौ बुढ़ौती! अब आखिरी समय है ?
महाराज संत कहां मरते हैं, स्वरूप पाते ही जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाते हैं। फिर जब तक शरीर है, लोक कल्याण के लिये है।

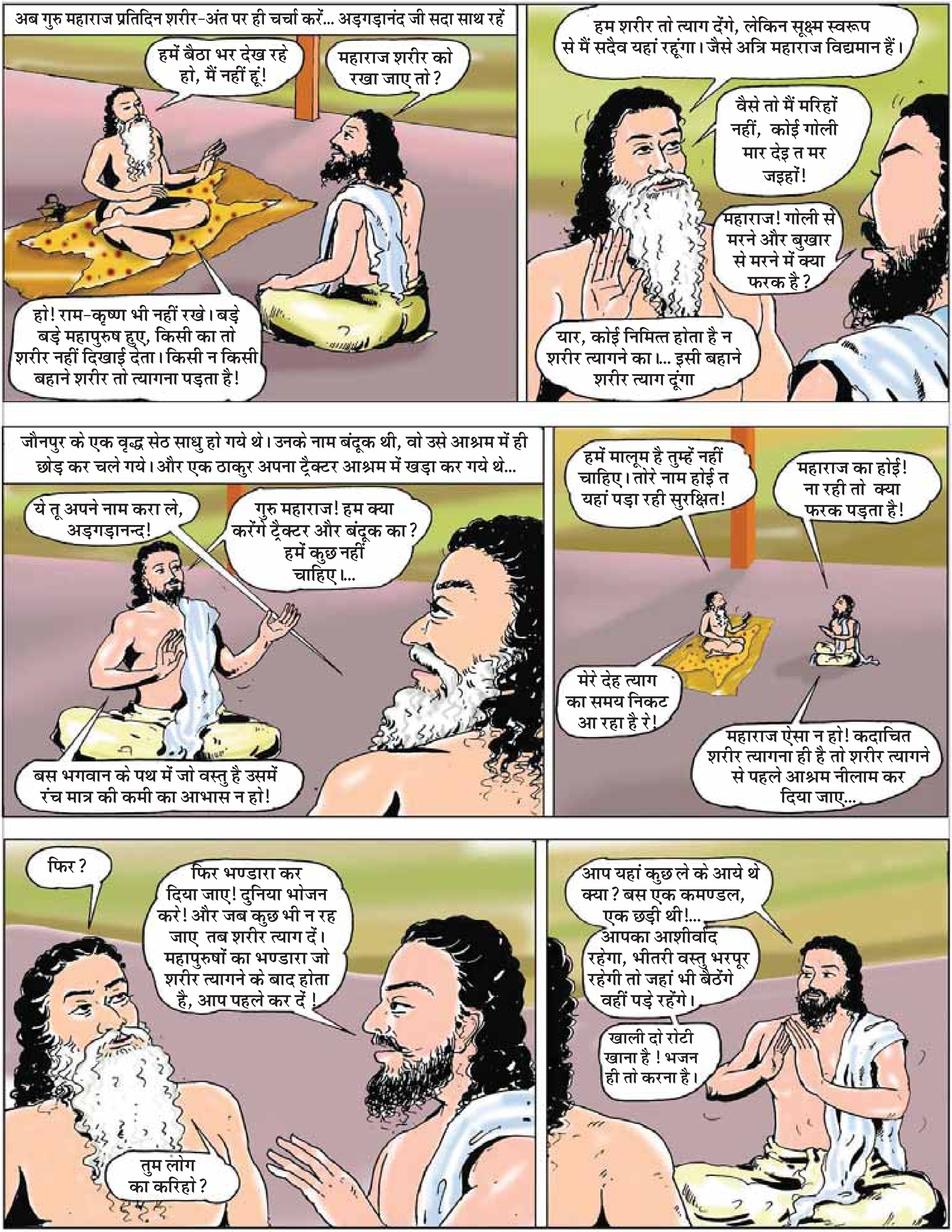

अब गुरु महाराज प्रतिदिन शरीर-अंत पर ही चर्चा करें... अड़गड़ानंद जी सदा साथ रहें
हमें बैठा भर देख रहे हो, मैं नहीं हूं!
महाराज शरीर को रखा जाए तो ?
हो! राम-कृष्ण भी नहीं रखे। बड़े बड़े महापुरुष हुए, किसी का तो शरीर नहीं दिखाई देता। किसी न किसी बहाने शरीर तो त्यागना पड़ता है!
हम शरीर तो त्याग देंगे, लेकिन सूक्ष्म स्वरूप से मैं सदैव यहां रहूंगा। जैसे अत्रि महाराज विद्यमान हैं।
वैसे तो मैं मरिहों नहीं, कोई गोली मार देइ त मर जइहों!
महाराज! गोली से मरने और बुखार से मरने में क्या फरक है ?
यार, कोई निमित्त होता है न शरीर त्यागने का।... इसी बहाने शरीर त्याग दूंगा
जौनपुर के एक वृद्ध सेठ साधु हो गये थे। उनके नाम बंदूक थी, वो उसे आश्रम में ही छोड़ कर चले गये। और एक ठाकुर अपना ट्रैक्टर आश्रम में खड़ा कर गये थे...
ये तू अपने नाम करा ले, अड़गड़ानन्द!
गुरु महाराज! हम क्या करेंगे ट्रैक्टर और बंदूक का ? हमें कुछ नहीं चाहिए।...
बस भगवान के पथ में जो वस्तु है उसमें रंच मात्र की कमी का आभास न हो!
हमें मालूम है तुम्हें नहीं चाहिए। तोरे नाम होई त यहां पड़ा रही सुरक्षित!
महाराज का होई! ना रही तो क्या फरक पड़ता है!
मेरे देह त्याग का समय निकट आ रहा है रे!
महाराज ऐसा न हो! कदाचित शरीर त्यागना ही है तो शरीर त्यागने से पहले आश्रम नीलाम कर दिया जाए...
फिर ?
फिर भण्डारा कर दिया जाए! दुनिया भोजन करे! और जब कुछ भी न रह जाए तब शरीर त्याग दें। महापुरुषों का भण्डारा जो शरीर त्यागने के बाद होता है, आप पहले कर दें !
तुम लोग का करिहो ?
आप यहां कुछ ले के आये थे क्या ? बस एक कमण्डल, एक छड़ी थी!...
आपका आशीर्वाद रहेगा, भीतरी वस्तु भरपूर रहेगी तो जहां भी बैठेंगे वहीं पड़े रहेंगे।
खाली दो रोटी खाना है ! भजन ही तो करना है।

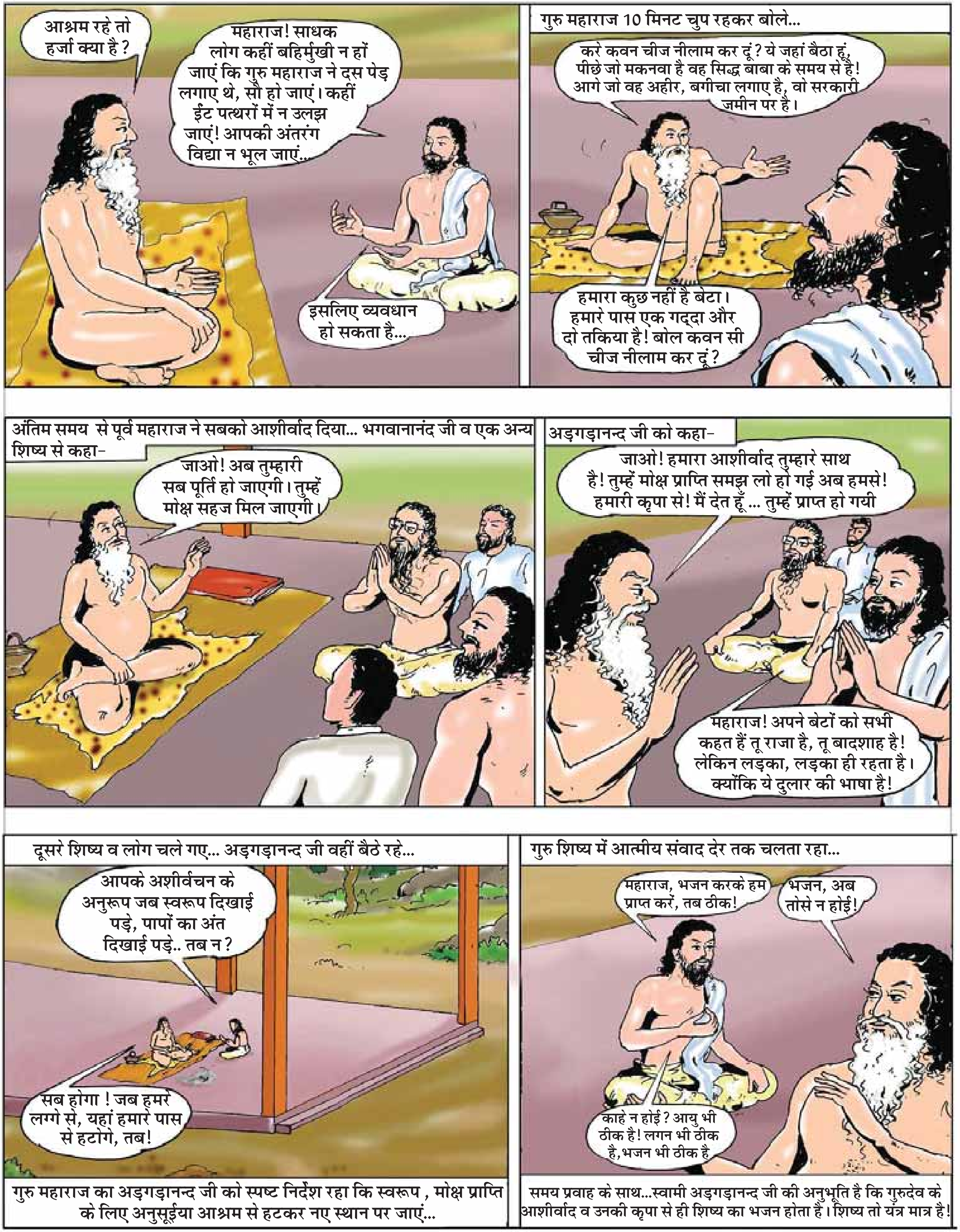

आश्रम रहे तो हर्जा क्या है?
महाराज! साधक लोग कहीं बहिर्मुखी न हों जाएं कि गुरु महाराज ने दस पेड़ लगाए थे, सौ हो जाएं। कहीं ईंट पत्थरों में न उलझ जाएं! आपकी अंतरंग विद्या न भूल जाएं...
इसलिए व्यवधान हो सकता है....
गुरु महाराज 10 मिनट चुप रहकर बोले...
करे कवन चीज नीलाम कर दूं? ये जहां बैठा हूं, पीछे जो मकनवा है वह सिद्ध बाबा के समय से है! आगे जो वह अहीर, बगीचा लगाए है, वो सरकारी जमीन पर है।
हमारा कुछ नहीं है बेटा। हमारे पास एक गद्दा और दो तकिया है! बोल कवन सी चीज नीलाम कर दूं?
अंतिम समय से पूर्व महाराज ने सबको आशीर्वाद दिया... भगवानानंद जी व एक अन्य शिष्य से कहा–
जाओ! अब तुम्हारी सब पूर्ति हो जाएगी। तुम्हें मोक्ष सहज मिल जाएगी।
अड़गड़ानन्द जी को कहा–
जाओ! हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है! तुम्हें मोक्ष प्राप्ति समझ लो हो गई अब हमसे! हमारी कृपा से! मैं देत हूँ ... तुम्हें प्राप्त हो गयी
महाराज! अपने बेटों को सभी कहत हैं तू राजा है, तू बादशाह है! लेकिन लड़का, लड़का ही रहता है। क्योंकि ये दुलार की भाषा है!
दूसरे शिष्य व लोग चले गए... अड़गड़ानन्द जी वहीं बैठे रहे...
आपके अशीर्वचन के अनुरूप जब स्वरूप दिखाई पड़े, पापों का अंत दिखाई पड़े.. तब न?
सब होगा ! जब हमरे लग्गे से, यहां हमारे पास से हटोगे, तब!
गुरु महाराज का अड़गड़ानन्द जी को स्पष्ट निर्देश रहा कि स्वरूप , मोक्ष प्राप्ति के लिए अनुसूईया आश्रम से हटकर नए स्थान पर जाएं...
गुरु शिष्य में आत्मीय संवाद देर तक चलता रहा...
महाराज, भजन करके हम प्राप्त करें, तब ठीक!
भजन, अब तोसे न होई!
काहे न होई? आयु भी ठीक है! लगन भी ठीक है,भजन भी ठीक है
समय प्रवाह के साथ...स्वामी अड़गड़ानन्द जी की अनुभूति है कि गुरुदेव के आशीर्वाद व उनकी कृपा से ही शिष्य का भजन होता है। शिष्य तो यंत्र मात्र है!

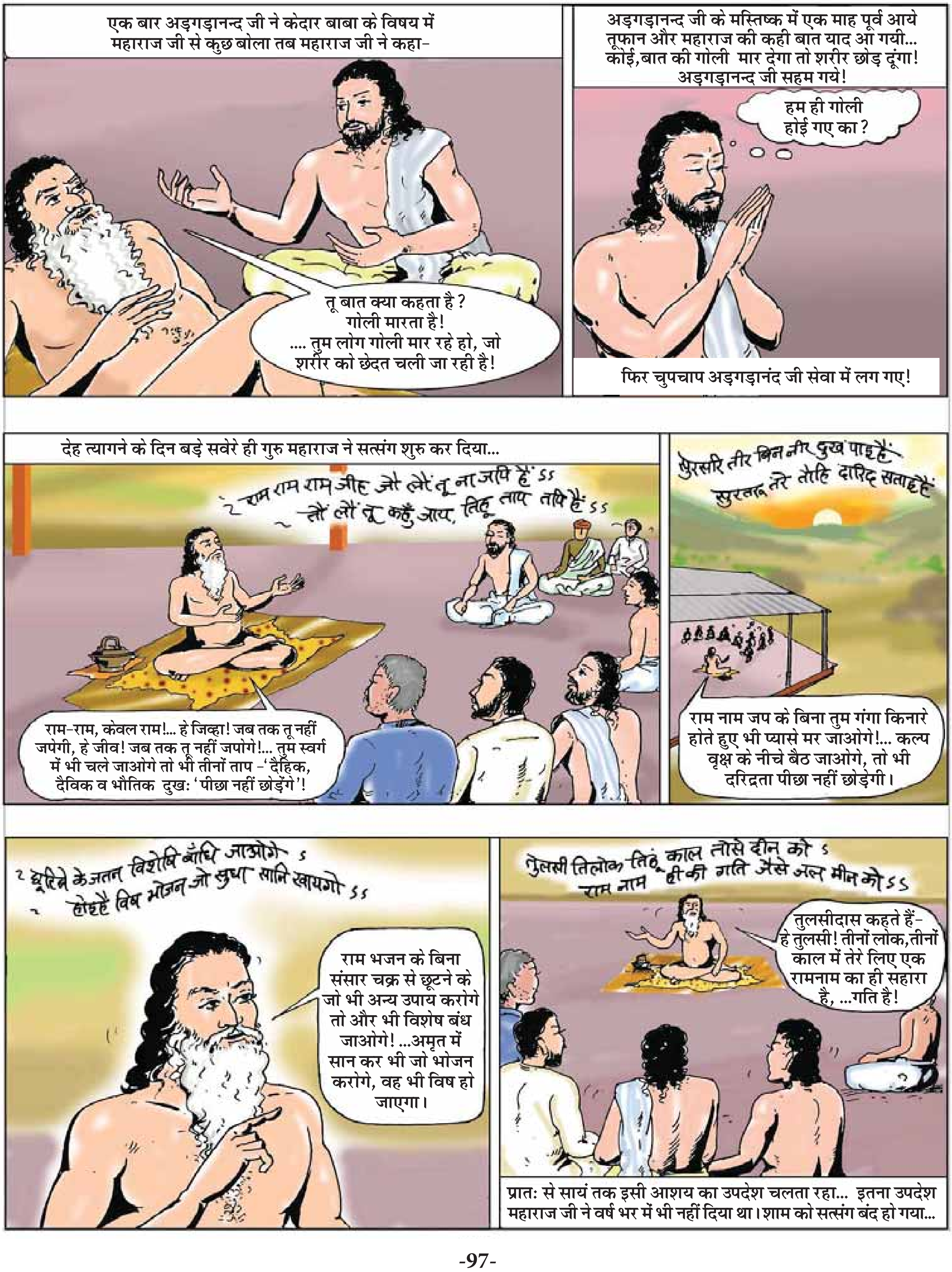
एक बार अड़गड़ानन्द जी ने केदार बाबा के विषय में महाराज जी से कुछ बोला तब महाराज जी ने कहा–
तू बात क्या कहता है ? गोली मारता है! .... तुम लोग गोली मार रहे हो, जो शरीर को छेदत चली जा रही है!
अड़गड़ानन्द जी के मस्तिष्क में एक माह पूर्व आये तूफान और महाराज की कही बात याद आ गयी... कोई, बात की गोली मार देगा तो शरीर छोड़ दूंगा! अड़गड़ानन्द जी सहम गये!
हम ही गोली होई गए का ?
फिर चुपचाप अड़गड़ानंद जी सेवा में लग गए!
देह त्यागने के दिन बड़े सवेरे ही गुरु महाराज ने सत्संग शुरु कर दिया...
राम राम राम जीह जौ लौं तू ना जपि है ऽऽ
तौ लौं तू कहुँ जाय, तिहु ताप तपि है ऽऽ
राम–राम, केवल राम!... हे जिव्हा! जब तक तू नहीं जपेगी, हे जीव! जब तक तू नहीं जपोगे!... तुम स्वर्ग में भी चले जाओगे तो भी तीनों ताप –'दैहिक, दैविक व भौतिक दुखः 'पीछा नहीं छोड़ेंगे'!
सुरसरि तीर बिन नीर दुख पाइहैं
सुरतरु तरे तोहि दारिद सताइहैं
राम नाम जप के बिना तुम गंगा किनारे होते हुए भी प्यासे मर जाओगे!... कल्प वृक्ष के नीचे बैठ जाओगे, तो भी दरिद्रता पीछा नहीं छोड़ेगी।
छूटिबे के जतन विशेषि बाँधि जाओगे ऽ
होइहै विष भोजन जो सुधा सानि खायगो ऽऽ
राम भजन के बिना संसार चक्र से छूटने के जो भी अन्य उपाय करोगे तो और भी विशेष बंध जाओगे! ...अमृत में सान कर भी जो भोजन करोगे, वह भी विष हो जाएगा।
तुलसी तिलोक तिहु काल तोसे दीन को ऽ
राम नाम ही की गति जैसे जल मीन को ऽऽ
तुलसीदास कहते हैं– हे तुलसी! तीनों लोक, तीनों काल में तेरे लिए एक रामनाम का ही सहारा है, ...गति है!
प्रातः से सायं तक इसी आशय का उपदेश चलता रहा... इतना उपदेश महाराज जी ने वर्ष भर में भी नहीं दिया था। शाम को सत्संग बंद हो गया...

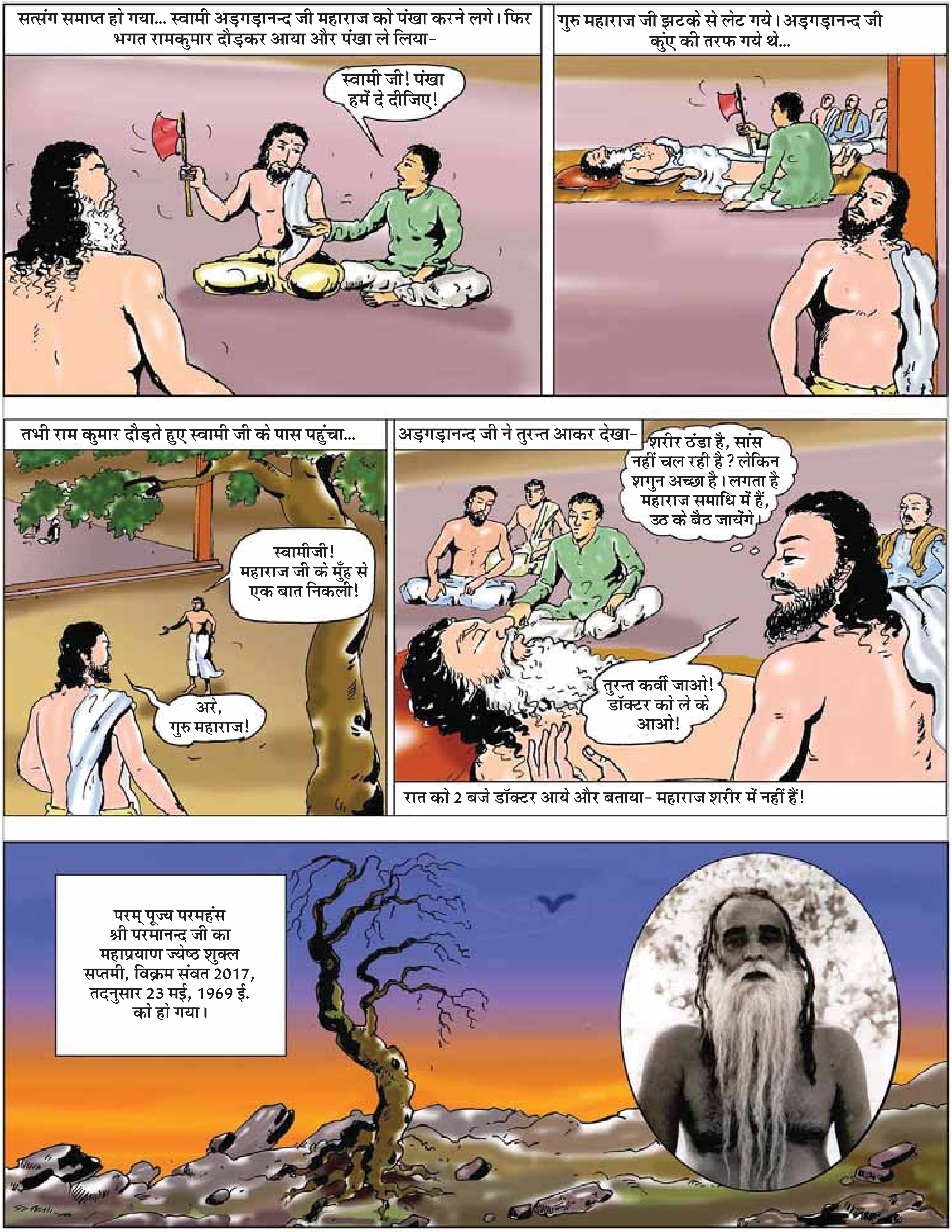
सत्संग समाप्त हो गया... स्वामी अड़गड़ानन्द जी महाराज को पंखा करने लगे। फिर भगत रामकुमार दौड़कर आया और पंखा ले लिया–
स्वामी जी! पंखा हमें दे दीजिए!
गुरु महाराज जी झटके से लेट गये। अड़गड़ानन्द जी कुंए की तरफ गये थे...
तभी राम कुमार दौड़ते हुए स्वामी जी के पास पहुंचा...
स्वामीजी! महाराज जी के मुँह से एक बात निकली!
अरे, गुरु महाराज!
अड़गड़ानन्द जी ने तुरन्त आकर देखा–
शरीर ठंडा है, सांस नहीं चल रही है? लेकिन शगुन अच्छा है। लगता है महाराज समाधि में हैं, उठ के बैठ जायेंगे।
तुरन्त कर्वी जाओ! डॉक्टर को ले के आओ!
रात को 2 बजे डॉक्टर आये और बताया– महाराज शरीर में नहीं हैं!
परम् पूज्य परमहंस श्री परमानन्द जी का महाप्रयाण ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी, विक्रम संवत 2017, तदनुसार 23 मई, 1969 ई. को हो गया।

अड़गड़ानन्द जी ने सुन रखा था कि दशरथ जी के शरीर को तेल में रखा गया था। तो लोहे का नाव बनवाये उसमें महाराज जी को लिटाकर तेल भरवा दिया। आश्रम के जो महात्मा दूर रहते थे उन्हें बुलाया गया...

धारकुंडी के स्वामी सच्चिदानंद जी, मधवापुर से भगवानानंद जी सहित सभी शिष्य, संत व भक्तों ने श्रद्धांजलि दी!

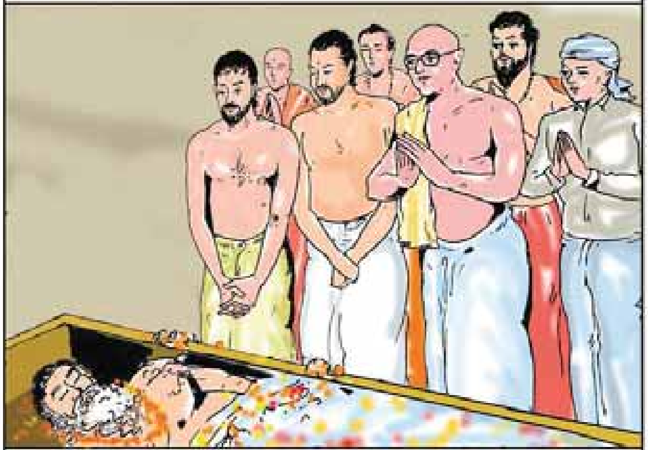

श्रद्धालुओं का मेला उमड़ पड़ा... चौथे दिन महाराज जी को समाधि दी गयी ... धूमधाम से भंडारा हुआ, जिसमें हजारों भाविकों ने श्रद्धांजलि दी।

परमहंस श्री परमानंद जी महाराज की समाधि स्थल का निर्माण होने लगा। आये हुए सभी शिष्य अपनी-अपनी कुटिया व स्थान पर चले गये... युवा शिष्य अड़गड़ानन्द जी अकेले रह गए।... पूज्य गुरुदेव की स्मृतियों के साथ समाधि निर्माण में लगे रहे। आश्रम में सूनापन देख उन्हें चिंता होने लगी।

चिंता के उन दिनों में अड़गड़ानंद जी ने देखा- परमहंस श्री परमानंद जी महाराज अपने आसन पर बैठे हुए हैं। बोले-

सद्गुरु के दर्शन व आशीर्वाद से अड़गड़ानंद जी आश्वस्त हो गये... समाधि भी बन गयी!

● यह है, परमहंस श्री परमानंद जी महाराज के जीवन का आदर्श एवं साधना की पराकाष्ठा द्वारा मानव मात्र के कल्याण पथ का सृजन! ● एक अद्वितीय महापुरुष की अद्वितीय जीवनी! ● विस्तृत जानकारी के लिये अवश्य पढ़ें, आश्रमीय पुस्तक- 'जीवनादर्श एवं आत्मानुभूति' और 'अनुसुइया के परमहंसजी'!

श्री अत्रि महाराज एवं श्री परमहंस जी, सूक्ष्म स्वरूप से आज भी विद्यमान हैं। श्रद्धा से स्मरण करने पर कल्याण करते रहते हैं।

श्री परमहंस चित्रकथा-सम्पूर्ण

॥ परमहंस स्वामी श्री परमानन्द जी महाराज ॥

के देदीप्यमान अन्तरंग शिष्य

॥ स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराज ॥

● आज से 66 वर्ष पूर्व अनुसुइया में पूज्य गुरुदेव के शरण, सानिध्य में भजन-साधना कर, उनके कृपा प्रसाद स्वरूप 'आप' अपने गुरुदेव की शिक्षा, साधना एवं सिद्धान्तों को भारत ही नहीं वरन् पूरे विश्व में प्रसारित कर रहे हैं।

● पूरे भारत में फैले आश्रमों में सैकड़ों की संख्या में गृह त्यागी, मुमुक्षु साधकों एवं शिष्यों की नर्सरी लगायी है, जो आपके निर्देशन में भजन-साधना में संलग्न हैं।

● मानव मात्र के आत्म कल्यार्थ आप द्वारा रचित एवं प्रकाशित पुस्तकों की श्रृंखला से भारत ही नहीं पूरा विश्व आलोकित हो रहा है।

स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी महाराज की युग प्रवर्तक अमर रचनाएँ

शंका समाधान- इस पुस्तक में स्वामी जी ने धर्म या धर्म के नाम पर समाज में प्रचलित सभी कुरीति, रूढ़ि, आडम्बर और अन्धविश्वासों का शमन एवं समाधान किया है। सन्तों व मुनियों की वाणी, गीता एवं रामायण में दिये गये वक्तव्यों का उदाहरण देकर सभी शंकाओं का समाधान, प्रश्नों के उत्तर एवं धार्मिक भ्रान्तियों का उन्मूलन किया है। अवश्य पढ़ें।

यथार्थ गीता - यूँ तो 'गीता' पर विश्व की सभी भाषाओं में हजारों विद्वानों ने टीकाएँ लिखी हैं, सभी आदरणीय हैं। किन्तु योगेश्वर श्रीकृष्ण के आशय को कोई उसी स्तर के महापुरुष ही समझ एवं समझा सकते हैं। स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी उसी कड़ी के महापुरुष हैं। स्वामी जी ने 'यथार्थ गीता' में श्रीकृष्ण की वाणी के आशय को भली प्रकार यथावत् समझाया है। यह एक कालजयी कृति है। इसकी 3-4 आवृत्ति और अनुशीलन आपमें अनन्त सम्भावनाओं के द्वार खोल देगी। 'यथार्थ गीता' हर घर व हर व्यक्ति के पास होनी चाहिये। प्रतिदिन इसका पाठ करें और चार श्लोक अर्थ सहित रोज पढ़ें।

जीवनादर्श एवं आत्मानुभूति- इस पुस्तक में स्वामी जी ने अपने पूज्य गुरु परमहंस स्वामी श्री परमानन्दजी महाराज का जीवन वृत्तान्त, उनकी अनुभूतियों एवं उपदेशों को संकलित किया है। साधकों के लिये यह बहुत उपयोगी ग्रन्थ है। अवश्य पढ़ें।

भजन किसका करें?- आदि धर्मशास्त्र 'गीता' एवं अन्य योग शास्त्रों के अनुसार एक परमात्मा की पूजा एवं उसकी प्राप्ति की एक निर्धारित क्रिया (नियत कर्म) के स्थान पर असंख्य पूजा पद्धतियाँ प्रचलन में हैं। लोग गाय, पीपल, देवी-देवता, भूत-भवानी की पूजा धर्म के नाम पर कर रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक में इन सभी भ्रान्तियों का निवारण करते हुए स्पष्ट किया गया है कि सनातन धर्म क्या है? इष्ट कौन है? भजन किसका करें व कैसे करें? पूर्वाग्रहों से मुक्त मस्तिष्क द्वारा इस पुस्तिका का अध्ययन एवं मनन आपको झकझोर देगी। भजन किसका करें, स्पष्ट हो जायेगा। साधना-पथ के पथिक की यह प्राथमिक पठनीय पुस्तक है।

अंग क्यों फड़कते हैं और क्या कहते हैं?– इस पुस्तक में मानव शरीर के विभिन्न हिस्सों में होनेवाले स्पन्दनों का कारण और उसके संकेतों का विश्लेषण किया गया है, जो कि साधना में काफी सहायक हैं।

अनछुए प्रश्न– इस पुस्तक में स्वामी जी द्वारा ऐसे विषयों को लिया गया है, जिन पर आज तक समाज का ध्यान नहीं गया। साथ ही वर्ण, मूर्तिपूजा, ध्यान, हठ, चक्र–भेदन और योग जैसे विषयों को स्पष्ट कर, भ्रमित समाज का मार्गदर्शन किया गया है।

एकलव्य का अंगूठा– इस पुस्तक में शिक्षा–गुरु और सद्गुरु के अन्तर को समझाया गया है। शिक्षक लोकजीवन की कला सिखाते हैं, जबकि सद्गुरु जीवन में समृद्धि के साथ परमश्रेय की जागृति और उस परमपद की प्राप्ति कराते हैं, जिससे पुरुष आवागमन से मुक्त हो जाता है।

योगदर्शन– प्रत्यक्षानुभूत व्याख्या– महर्षि पतंजलि कृत इस पुस्तक में बताया गया है कि 'योग' प्रत्यक्ष दर्शन है। यह लिखने या कहने में नहीं आता। क्रियात्मक चलकर ही साधक समझ पाता है कि जो कुछ महर्षि ने लिखा है उसका वास्तविक आशय क्या है? साधनोपयोगी पुस्तक है।

अहिंसा का स्वरूप– अहिंसा एक उलझा हुआ प्रश्न है। मूलत: यह यौगिक शब्द है, आन्तरिक साधना का शब्द है। समाज में सुख से जीने के लिये दया, सद्भाव, सहयोग, मैत्री, सहिष्णुता, पर दु:खकातरता, जीवदया आदि सद्गुण आवश्यक हैं,किन्तु यह अहिंसा नहीं है। इस पुस्तक में हम पायेंगे कि हमारे पूर्वज महापुरुषों ने अहिंसा को किस सन्दर्भ में लिया है।

बाल गीता : विश्व के सभी विद्यार्थियों के लिए – दो भागों में प्रकाशित इस पुस्तिका द्वारा विश्व के सभी भावी नागरिकों– बच्चों को विश्व के प्राचीनतम महान् ज्ञान 'श्रीमद्भगवद्गीता' से परिचित कराया गया है। पूज्य स्वामीजी के प्रवचनों से संकलित और आपके ही निर्देशन में प्रकाशित ये पुस्तिकायें, विद्यार्थियों के संस्कार वर्द्धन एवं पुण्य–पुरुषार्थ की वृद्धि में सहायक हैं।

अमृतवाणी– परम आराध्य सद्गुरुदेव स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी महाराज के श्रीमुख से प्रसारित सत्संगों का संकलन ही 'अमृतवाणी' है। आपकी वाणी में विश्व के सभी महापुरुषों के यथार्थ को सरलता से बोध करा देने की एक अप्रतिम क्षमता है। आपने संत कबीर एवं अन्यान्य संतों की गूढ़ वाणियों को सरलता से समझाया है। अब तक अमृतवाणी संकलन के सात भाग प्रकाशित हो चुके हैं।

विशेष– उपरोक्त पुस्तकें भारत की प्रमुख भाषाओं और विश्व की प्रमुख भाषाओं में अनुवादित एवं उपलब्ध हैं। विशेषत: 'यथार्थ गीता' एवं आपके अमृत प्रवचनों का संकलन, 'अमृतवाणी'. इन्टरनेट , यू–ट्यूब, मेमोरी कार्ड एवं पेन ड्राइव में भी उपलब्ध है।

***

|| श्री मद्भगवद्गीता ||

|| यथार्थ गीता ||

प्रमुख सिद्धांत

● एक परमात्मा ही सत्य है (अर्थात् सच्चाई है),शाश्वत है (अर्थात् अजर, अमर, अविनाशी हैं) और सनातन है (अर्थात् सदा से रहा है, है, और रहेगा)। – यथार्थ गीता 2/24

इसी एक परमात्मा को आत्मा, ईश्वर, ब्रह्म, गॉड या खुदा भी कहते हैं। सभी उस एक ईश्वर को ही सम्बोधित नाम है..... देश–काल–भाषा के अनुसार अलग–अलग नामकरण है।

● हम सब उसी एक परमात्मा के अंश हैं, उसकी ही संतान हैं। – यथार्थ गीता 15/7

अत: हम सभी को जात–पांत, ऊँच–नीच, छोटा–बड़ा, अमीर–गरीब और रिलिजन–मत के भेदभाव को खत्म कर देना चाहिए और समानता के आधार पर आपसी व्यवहार करना चाहिए।

● वह परमात्मा या ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में निवास करता है। – यथार्थ गीता 18/61,15/15

अत: हृदय में स्थित उस एक ईश्वर के ही शरण में जाना चाहिए और सम्पूर्ण भाव के साथ उसका ध्यान–पूजन–भजन करना चाहिए, ऐसा नहीं कि अन्य देवी–देवता में अपने श्रद्धाभाव को बांट दें! पूर्णश्रद्धा और समर्पण के साथ एक ईश्वर को पूजने वाला सब कुछ प्राप्त करता है,...ईश्वर को भी!

– यथार्थ गीता 18/62

● ईश्वर को अनन्य भक्ति (अन्य न अर्थात् एक ईश्वर के अलावा कोई और देवी–देवता नहीं) द्वारा देखा जा सकता है, जाना जा सकता है और उसे प्राप्त भी किया जा सकता है। – यथार्थ गीता 11/54

● जो अन्य देवी–देवताओं को पूजते हैं, वे अविवेकी हैं और उनका पूजन विधि पूर्वक नहीं है इसलिए नष्ट हो जाता है। – यथार्थ गीता 7/20, 9/23, 7/23

● पूजा की नियत विधि है–

ऊँ का जप, एक परमात्मा का स्मरण (ध्यान) और किसी सन्त, महापुरुष की शरण और सेवा! बस इतना ही है 'ध्यान–पूजन–भजन' की निर्धारित विधि। – यथार्थ गीता 8/13

● एक परमात्मा के भजन से आपके सभी कामनाओं की पूर्ति हो जायेगी। – यथार्थ गीता 9/20

● बड़े भाग्य से यह मानव शरीर मिलता है जो देवताओं को भी दुर्लभ है। इस मानव तन की सार्थकता है– एक ईश्वर के भजन द्वारा सब कुछ पा लेना.... 'ईश्वर' को भी। – यथार्थ गीता 9/33

● विश्व के सभी मनुष्यों का और आपका भी धर्मशास्त्र 'गीता' है। – यथार्थ गीता 15/20

● सृष्टि के आरम्भ से प्रसारित इस दिव्यज्ञान को महर्षि वेदव्यास ने लगभग 5200 वर्षों पूर्व संकलित करके निर्णय दिया कि गीता धर्मशास्त्र है– 'गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यै: शास्त्रविस्तरै:।'

अर्थात् जब ईश्वरीय गायन गीताशास्त्र है तो फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार में जाने की क्या जरूरत है? अत: मानवमात्र के आदि धर्मशास्त्र 'गीता' का अनुसरण करें।

***

आश्रमीय पुस्तक- भजन किसका करें ?... से उद्धृत-

..... एक बार भगवान राम ने सभा बुलाई- गुरु, मुनि,द्विज,सज्जन सभी बैठे थे। तब भक्तों के जन्म-मरण का दु:ख दूर करने वाले राम बोले -

बड़े भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सबग्रन्थन्हि गावा ॥
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा। पाइ न जेहिं परलोक सँवारा ॥
(रामचरित मानस 7/42/7-8)

बड़े भाग्य से मनुष्य-शरीर मिला है। यह देवताओं को भी दुर्लभ है। देवता अच्छी करनी के फलस्वरूप भोग मात्र भोगते हैं, लेकिन स्वर्ग भी स्वल्प है इसलिए देवता भी मानव-तन से आशावान हैं। यह शरीर साधन का धाम है, मुक्ति का दरवाजा है। इसको पाकर जिसने अपना परलोक नहीं सुधारा, वह जन्मान्तरों में दु:ख पाता है। सिर पीट-पीटकर पछताता है। काल,कर्म और ईश्वर को व्यर्थ ही दोष देता है। वस्तुत: यदि मनुष्य शरीर उपलब्ध है और वह परलोक सँवारने के लिए उद्योग नहीं करता तो न काल का दोष है, न कर्म का दोष है और न ईश्वर का। सब दोष उसी का है।

प्राय: दो-तीन बहाने मनुष्य करता है कि मेरे तो कर्म में ही नहीं लिखा है- कर्म को दोष देना, समय अनुकूल नहीं है- काल को दोष देना और कर्ता-धर्ता तो भगवान हैं- ईश्वर को दोष देना। लेकिन भगवान राम स्वयं कहते हैं कि यदि मानव-तन उपलब्ध हैं तो इनमें से किसी का भी दोष नहीं, दोष अपना है। अन्यत्र कहते हैं -

नर तन भव वारिधि कहुँ बेरो। सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥
करनधार सद्गुर दृढ़ नावा। दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥
जो न तरै भवसागर, नर समाज अस पाई।
सो कृत निंदक मंदमति, आत्माहन गति जाई ॥ (मानस 7/44)

यह मानव-शरीर संसार-सागर से पार होने के लिए बेड़ा है, जहाज है। सद्गुरु नाविक हैं। मेरी कृपा अनुकूल वायु है। ऐसे दुर्लभ संयोग, व्यवस्था को पाकर जो भवसागर पार नहीं हो जाता वह अपने पौरुष का निन्दक अकर्मण्य है, मन्दमति है और अपनी आत्मा का हत्यारा है।

लेकिन पार होने का उपाय क्या है? इस पर कहते हैं -

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू। सुनि मम वचन हृदय दृढ़ गहहु ॥
सुलभ सुखद मारग यह भाई। भगति मोरि पुरान श्रुति गाई ॥
(मानस 7/44/2-3)

यदि आप परलोक चाहते हैं, परम श्रेय शाश्वत धाम चाहते हैं, अमृत तत्त्व प्राप्त करना चाहते हैं अथवा इसी लोक में अपने कामनाओं की पूर्ति चाहते हैं, तो मेरा वचन सुनें और दृढ़ता के साथ धारण करें। भला वह है क्या? सिर्फ एक ही रास्ता हैं दोनों के लिए कि 'भगति मोरि'- मेरी भक्ति करो। शेषनाग की नहीं, किसी देवता की नहीं, मेरी भक्ति करो। यही श्रुतियों ने गाया है। अत: इष्ट कौन है? एक परमतत्त्व परमात्मा! (इसके सिवाय अनिष्टों से बचाने वाला कोई है ही नहीं, हमारी दरिद्रता का कारण है कि हम उस प्रभु को नहीं मानते।)....

***

***

॥ अनुसुइया के परमहंस जी ॥
अमर चित्रकथा से उद्धृत साधनात्मक सूत्र

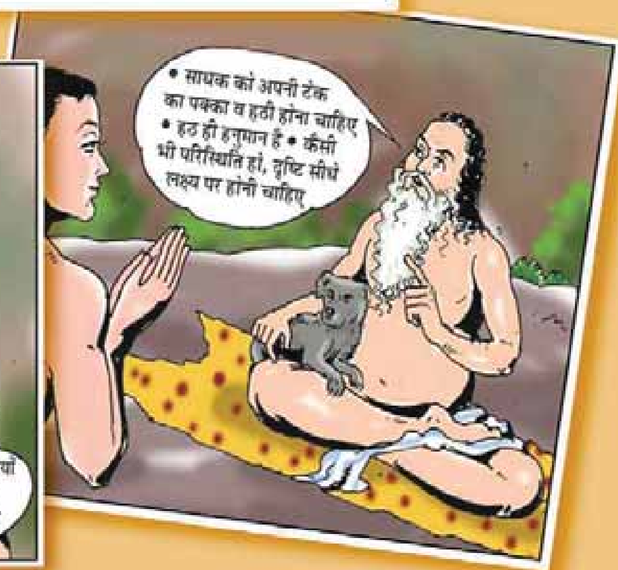

श्री परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्दजी आश्रम ट्रस्ट

न्यू अपोलो स्टेट, गाला नं. 5 एवं 11, मोगरा लेन (रेलवे सब वे के पास) अंधेरी (पूर्व), मुम्बई – 400069

फोन : (022) 28255300

ई-मेल : contact@yatharthgeeta.com वेब साईट : www.yatharthgeeta.com